शेर-ओ-शायरी

[उर्दूके सर्वोत्तम अशआर और नज़्म]

प्राचीन और वर्त्तमान उर्दू-कवियोंमे सर्वप्रधान
लोकप्रिय ३१ कलाकारोंके मर्मस्पर्शी
पद्योंका संकलन और उर्दू कविताकी
गति-विधिका आलोचनात्मक
परिचय

प्रस्तावना-लेखक
महापण्डित श्री० राहुल सांकृत्यायन
सभापति, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
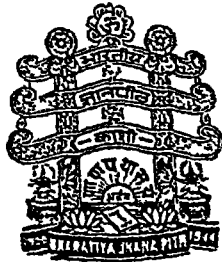
भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

निकला हूँ साथ लेके शकिस्ता किताबे दिल ।
हर-हर वरक में शरहे तमन्ना लिये हुए ।।

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला, हिन्दी-ग्रन्थाङ्क—५

शेर-ओ-शायरी

•

अयोध्याप्रसाद गोयलीय

सस्नेह भेंट

प्रिय सुमत बाबू !

यूँ तो न जाने कितने मुशायरे देखे थे, परन्तु १५ जून १९३३ का वह दिन कितना सुखद और भव्य था, जब हम दोनो एक साथ प्रथम बार गाजियाबाद मुशायरेमे गये थे। मुशायरेमे जाते समय तो यूँ ही इत्तफाकिया साथ हो लिये थे, परन्तु वहाँसे लौटे तो दोनो अभिन्न हृदय मित्र बनकर। उन ३-४ घण्टोमे इतने शीघ्र कैसे हमने एक-दूसरेको पहचान लिया, कैसे बिना प्रयासके आत्मीय बन गये, स्मरण करके आश्चर्य होता है।

उस दिनके बाद कितने मुशायरे और कवि-सम्मेलन साथ-साथ देखे, और दिखाये, साहित्यिक उत्सवोमे गये, और लोगोको अपने यहाँ बुलाया, कुछ याद है ?

तब तुम बी० ए०के विद्यार्थी थे और अब ६-१० वर्षसे मजिस्ट्रेट। परन्तु साहित्यिक अभिरुचि वही बनी हुई है। कॉलेजमे रहे तो वहाँ मुशायरो, कविसम्मेलनो, और साहित्यिक गोष्ठियोकी धूम मचा दी। मजिस्ट्रेट हुए तो उस रुचिमे और भी चार चाँद लग गये—रौनके बज्मे अदब बन गये।

इस पुस्तकमे सैकडो ऐसे शेर है जो हम दोनोंने झूम-झूम कर सुने है. पढे है, पचासो शेर समय-समय पर अपने पत्रोमें लिखे है। जिस शेरो-शायरीकी वजहसे हम दोनो आत्मीय बने, उस शेरो-शायरीको इस रूपमे भेट करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

अपने वडे भाईकी इस भेंटको तुम किस आदर और चावसे लोगे, और उपयोग करोगे, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। यह जवाहरपारे योग्य पारखीके हाथमे दे रहा हूँ। इस सूझसे मुझे अत्यन्त सन्तोष मिल रहा है।

"कि जौहर हूँ और जौहरी चाहता हूँ।"

—गोयलीय

विषय-सूची

	पृष्ठ
प्रस्तावना—	
श्री राहुल-साकृत्यायन	ण
एक नजर—श्री लक्ष्मीचद्र	
जैन एम० ए०	३
दो शब्द—लेखक	५

१—उद्गम

	पृष्ठ
उर्दू-शायरीका सक्षिप्त परिचय	१७
राष्ट्रीय भाषाके जनक	१६
अमीर खुसरो	१६
कबीर .	२०
जायसी ..	२१
रहीम ..	२१
हिन्दी : हिन्दवी ..	२०
उर्दूके आदि कवि ..	२०
वली ..	२३
रेख्ता ..	२३
उर्दू .	२३
उर्दू-गद्य ..	२४
गजल ..	२४
मतला, काफिया, रदीफ, शेर	२८
मक्ता ..	२६
रेख्ती ..	२६
कसीदा .	३१
मसनवी .	३१
मर्सिया	३१
नात	३२
तसव्वुफ .	३२
रुबाई	३३
तारीख .	३४
नज्म ..	३५
खुदासे जुदा (भ्रामक शब्द)	३६

२—तरंग

	पृष्ठ
(उर्दू-शायरीका मर्म)	४३
गुलशन .	४८
चमन .	४६
गुल .	५०
बुलबुल	५१
आशियाँ	५२
कफस	५४

	पृष्ठ
बागवाँ	५५
गुलची	५७
सैयाद	५८
मयख़ाना	६२
शराब	६४
जाहिद	६६
नासेह	६७
शेख़	६७
वाइज	६८
बिरहमन	६६
इश्क़	७०
हकीकी इश्क़	७१
मजाजी इश्क	७५
आशिक़	७८
वस्लोदीदार	८०
फुरकत	८१
रोना-बिसूरना	८३
काहीदगी	८४
बदगुमानी	८६
उदू	८६
दरबान	८७
कासिद	८८
दीवानगी, आवारगी	६०
मृत्युकी इच्छा	६१
खुद्दारी	६३
हश्र	६५
माशूक़	६६
रूप, शोखी, अदा	६६
कमसिन	६७
शर्मीला	६७
नाजुक	६८
शोख	१००
बेअदब	१०३
बेवफा	१०३
जालिम	१०४
बेमुरव्वत	१०५
वायदा फरामोश	१०५
बुत	१०५
कातिल	१०५
हरजाई	१०६
पर्देदार	१०६
शमा-परवाना	१०७
सहरा	११०
आदम	११०
हव्वा	११०
शैतान	१११
खिज्र	१११
ईसा	१११
लैला-मजनू	१११
जुलेखा-यूसुफ	११३
शीरी-फरहाद	११३

पृष्ठ

३—उद्घाटन

उर्दू-शायरीका विकास . ११७
उर्दू-शायरीके पोषक ११६
गज़लके बादशाह ११६
१—मीर १२१
२—दर्द १३५

४—संगम

उर्दूका प्रथम भारतीय विशुद्ध कवि

३—नज़ीर १४३
कामुक वृद्ध १४५
तन्दुरुस्ती और आबरू १४६
कलियुग १४६
आटे-दालकी फ़िक्र १४६
रोटियाँ १४६
कौडीका महत्त्व १४७
पैसेकी इज्ज़त १४७
होली १४८
दूसरी बहरमे होली १४८
फकीरकी सदा . १४८
मृत्युकी आमद १४६
खाकका पुतला .. १४६
आदमीनामा . १५०
राखी
मुफ़्लिसी . १५२
बनजारानामा . १५२
कुछ दोहे १५३

५—ज्योत्स्ना

उर्दू-शायरी जवानीकी चौखट पर—सन् १८०० से १६०० तकके अमर कलाकार

४—ज़ौक़ १५७
५—ग़ालिब . १७०
६—मोमिन . १६७
७—अमीर मीनाई २०६
८—दाग .. २१७

६—नव प्रभात

उर्दू-शायरीमे अभूतपूर्व परिवर्त्तन

१८५७के विप्लवके पश्चात् युगान्तरकारी शायर २२६

६—आज़ाद . २३२
हुब्बेवतन २३४
१०—हाली . २३८
मुसद्दस . २४२

	पृष्ठ
जमीमा ..	२५३
फुटकर	२५५
११—अकबर	२५८
१२—इक़बाल	२७१
बच्चोंका कौमी गीत	२७३
तरानये हिन्दी .	२७३
नया शिवाला .	२७४
आफताबे सुबह	२७४
सर सैयदकी लोह-तुरबत	२७५
तसवीरे दर्द	२७६
शमअ	२७७
एक आरजू ..	२७८
कुछ और नमूने	२७९
शिकवा	२८३
जवाबे शिकवा	२८६
दुआ .	२८८
शमअ	२८९
फूल ..	२९१
कुछ और नमूने .	२९१
हास्य रस	२९४
साम्प्रदायिक मनोवृत्तिके कुछ शेर	२९७
१३—चकबस्त	३११
खाके हिन्द .	३१६
वतनका राग .	३१८

	पृष्ठ
पयामे वफा .	३१९
फरियादे क़ौम .	३२०
फूल-माला .	३२२
फुटकर .	३२४
कौमी मुसद्दस ..	३२५
मजहबे शायर	३२६
फुटकर	३२६
७—जागरण	
सन् १९१४के महासमरके बाद राजनैतिक चेतना	
साम्राज्य-विरोधी, मजदूर-किसान-हितैषी शायर .	३३५
राजनैतिक चेतना ..	३३७
१४—जोश मलीहाबादी	३४०
गुलामोसे खिताब	३४५
मुल्कोके रजज .	३४६
मुस्तकबिलके गुलाम	३४७
पस्त कौम .	३४७
रवीन्द्रनाथ टैगोर .	३४७
सज्जादसे ..	३४८
हुब्बेवतन और मुसलमान ..	३४८
गद्दारसे खिताब .	३४९
भूखा हिन्दोस्तान ..	३५०
चलाए जा तलवार .	३५०

	पृष्ठ		
मकतले कानपुर	३५१	ख्वाव आश्नाये जमूदसे	
दर्दे मुश्तरक	३५२	गद्दारे कौम और वतन	३७२
नाजुक अन्दमाने कॉलिजसे खिताव	३५२	फुटकर	३७३
		मजदूर	३७४
किसान और मजदूर	३५३	शायरे इमरोज	३७५
ज़वाले जहाँबानी	३५५	हिन्दुस्तानी माँका पैगाम	३७५
ईद मिलनेवाले	३५५	गजलोंके कुछ शेर	३७६
मुफलिसोंकी ईद	३५६	**१६—अहसान बिन दानिश**	३८१
दीने आदमीयत	३५७	नाख्वान्दा खातून	३८५
वनवासी बाबू	३५८	मजदूरकी मौत	३८८
दुनियामे आग लगी है	३५९	एक शिकारीसे	३९१
साँस लो या खुश रहो	३६०	नौ उरूसे बेवा	३९२
हमारी सैर	३६१	कुत्ता और मज़दूर	३९४
फुटकर	३६२	**१७—बर्क़ देहलवी**	३९६
रुबाइयात	३६४	नसीमे सुबह	४००
गुज़र जा	३६५	मिट्टीका चिराग	४०१
गज़ले	३६६	जुगनूँ	४०१
रेशये पीरी	३६७	शफक	४०२
इबादत	३६८	सुबहे उम्मीद	४०३
१५—सीमाब अकबराबादी	३६९	अहले हिन्द	४०३
दुआ	३७०	तेगे हिन्द	४०४
जगी तराना	३७०	पयामे शौक	४०५
वतन	३७१	सब्जये बेगाना	४०६
दावते इन्कलाब	३७१	दर्देदिले आश्ना	४०८
जवानाने वतन	३७२	जेबुन्निसाकी कब्र	४०८

	पृष्ठ
बच्चेकी गुलाबी मुस्कराहट	४०९
अब्रे करम बरस	४१०
कारे खैर	४११
कुछ शेर	४१४

८—सफल प्रयास

उर्दू-शायरी एक नये मोड़ पर—सरल भाषाके समर्थक	
भाषा उर्दू, मगर आसान	४१७
उर्दूमें हिन्दी शब्द	४१८
केवल हिन्दी	४१८
१८—हफ़ीज जालन्धरी	४२०
जल्वये सहर	४२६
तूफानी किश्ती	४२६
ईदका चाँद	४३१
शामे रंगी	४३२
खैबरका दर्राह	४३३
तसवीरे काश्मीर	४३३
प्रीतका गीत	४३४
गजलोंके नमूने	४३५
१९—सागर निजामी	४४०
चन्द गजलोंके नमूने	४४२
सगतराशका गीत	४४६
अहद	४४८
कौमी तराना	४५०

	पृष्ठ
पनघटकी रानी	४५६
हुस्ने गुजरान	४५७
औरत	४५७
बुझा हुआ दीपक	४५८
नाग	४५९
महात्मा गान्धी	४६३
पुजारिन	४६४
२०—अख्तर शीरानी	४६७
मुझे बद्दुआ न दे	४६८
नग्मये सहर	४६८
ऐ इश्क	४६९
सलमा	४७०
आखिरी उम्मीद	४७२
मदर्सेकी लड़कियोंकी दुआ	४७३
औरत	४७३
दुनिया	४७५
२१—अर्श मलसियानी	४७६
क्या मानी ?	४७६
जागा सब संसार	४७७
मेरे मनकी आशा जाग	४७८

९—प्रगतिशील युग

प्राचीन इश्किया शायरी नवीन प्रेम-मार्ग पर वर्त्तमान युगके उदीयमान कवि	४८१

	पृष्ठ
बाजपुर्स	.. ४८५
महनूवसे	.. ४८५
इकबाल सलमाका एक गीत	४८६
पमे मजर	.. ४८६
दावने खुदी	. ४९०
डूबती नैया	.. ४९०
छूटनेवाले	. ४९१
सबा मथरात्रीकी नज्म	. ४९३
२२—फ़ैज	.. ४९६
मौजूए सखुन	४९७
रकीवसे	. ४९८
पहली-सी मुहब्बत	४९९
चन्द रोज और	.. ४९९
कुत्ते	.. ५००
खुदा वोह वक्त न लाए	५०१
हुस्न और मौत	. ५०१
तनहाई	५०२
२३—मजाज	. ५०४
मजबूरियां	५०५
नौजवां खातूनसे	. ५०६
नौजवानोंसे	५०७
आवारा	५०७
विदेशी मेहमानसे	. ५०९
रात और रेल	. ५०९
नन्ही पुजारिन	. ५१०

	पृष्ठ
नूरा नर्म	५११
फुटकर	५१४
२४—जज्बी	५१५
ऐ काश !	५१५
गजलोंके शेर	५१६
२५—साहिर लुधियानवी	५२१
ताज महल	. ५२३
कभी-कभी	५२४
फरार	५२६
हिरास	. ५२७
शकिस्त	. ५२८
एक तसवीरे रंग	५३०
मादाम	५३१

१०—मधुर प्रवाह

अतीत युगकी गजलके वर्त्त-मान समर्थ शायर	.
सलाम मछली शहरीकी नज्म	५३६
गायत्री देवीकी नज्म	. ५३६
२६—साकिब लखनवी	.. ५४०
२७—हसरत मोहानी	. ५५१
२८—फानी बदायूनी	. ५६०
२९—असगर गोण्डवी	५६९
३०—जिगर मुरादाबादी	५७८
३१—फ़िराक़ गोरखपुरी	५८७
गजलोंके कुछ अशआर	.. ५८९

	पृष्ठ		पृष्ठ
रूप	५९४	गमे अयादत	५९७
आज दुनिया पै रात भारी है	५९५	क्या कहना !	५९८
नई आवाज	५९६	आधी रातको	५९९
तकदीरे आदम	५९६	सहायक ग्रन्थ-सूची	६०३
कुछ गमे जानाँ कुछ गमे दौराँ	५९७	अनुक्रमणिका	६०९

प्रस्तावना

"शेरोशायरी"के छः सौ पृष्ठोमे गोयलीयजीने उर्दू कविताके विकास और उसके चोटीके कवियोका काव्य-परिचय दिया। यह एक कवि हृदय साहित्य-पारखीके आधे जीवनके परिश्रम और 'साधनाका फल है। हिन्दीको ऐसे ग्रन्थोंकी कितनी आवश्यकता है, इसे कहनेकी आवश्यकता नही। जितना जल्दी हो सके, हमे उर्दूके सारे महान् कवियोको नागरी अक्षरोमे प्रकाशित कर देना है। गोयलीयजीका यह ग्रन्थ हिन्दीके उस कार्यकी भूमिका है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन शीघ्र ही उर्दूके एक दर्जन श्रेष्ठ कवियोके परिचय-ग्रन्थ निकालनेकी इच्छा रखता है, फिर हमें उनकी पूरी ग्रन्थावलियोंको नागरी अक्षरोंमे लाना है। हमारे **महाप्रदेशने** सस्कृतनिष्ठ हिन्दीको अपनी राज-भाषा स्वीकृत किया है, किन्तु उसका यह अर्थ नही, कि हमारे महाप्रदेश (युक्तप्रदेश, बिहार, महाकोसल, विन्ध्यप्रदेश, मालवसघ, राजस्थानसघ, मत्स्यसघ, हिमाचलप्रदेश, पूर्व-पजाब और फुलकिया सघ)की सन्तानोने अपनी प्रतिभाका जो चमत्कार साहित्यके किसी भी क्षेत्रमे दिखलाया है, उसे अपनी वस्तुके तौरपर प्ररक्षित करना हिन्दीभाषियोका कर्त्तव्य नही है। जिस तरह भाषाकी कठिनाई होनेपर भी सरह, स्वयभू, पुष्पदन्त, अब्दुर्रहमान आदि अपभ्रश कवियोको हिन्दीकाव्य-प्रेमियोसे सुपरिचित कराना हमारा कर्त्तव्य है; उसी तरह उर्दूके महाकवियोकी कृतियोसे काव्यरसिकोंको वञ्चित नही होने देना चाहिये। व्यक्तिके लिये भी बीस-पच्चीस साल अधिक नही होते, जातिके लिये तो वह मिनट-सेकेन्डके बराबर है। १९७०-७५ ई० तक अरबी अक्षरोमे उर्दू-कविता पढनेवाले बहुत कम ही आदमी हमारें यहाँ मिल पायेगे। आजतक दुर्राष्ट्रीय भावनाओके कारण हिन्दी-मुसलमानोकी विचारधारा चाहे कैसी ही रही हो, किन्तु अब वह हिन्दीमे वही स्थान लेने जा रहे है, जो उनके पूर्वजो जायसी, रहीम आदिने लिया था, और जो उनके सहधर्मियोंने बग-साहित्यमे ले रखा है। हिन्दीको एक संप्रदाय-विशेषकी भाषा माननेवाले गलतीपर है। समय दूर नही है, जब

हिन्दीमें भी नजरुल्इस्लाम-परम्परा चलेगी। मुसलमान बन्धुओंकी प्रतिभा, जो उर्दूके क्षेत्रमे अपना चमत्कार दिखलाती थी, अब वह हिन्दीकी होने जा रही है। इसीलिये मै हिन्दीवालोसे जोर देकर कहना चाहता हूँ, कि कमसे कम आप अपने साहित्य-क्षेत्रमे साम्प्रदायिक सकीर्णताको स्थान न दे।

उर्दूकी 'सत्कविता हमारे लिये इतिहासके विस्मृत पृष्ठ न बनेगी, न वैसा होना चाहिये। ऐसा करनेके लिये अत्यावश्यक है, कि वह नागरी वेश-भूषामे हमारे सामने आ जाय। "शेरोशायरी"के पढ़नेवालोके लिये यह कहनेकी आवश्यकता नही, कि मीर-दर्द-नज़ीरने काव्यगगनमे कितनी उड़ान की, जौक-गालिब-मोमिनने अपने ध्वन्यालोकोसे काव्य-जगतको कितना आलोकित किया, दाग-हाली-अकबरने कविता-सुन्दरी-को कितने अलकारोसे अलकृत किया और चकबस्त-जोश-सागरने देशके तरुणोको कितनी अन्त प्रेरणा दी।

अधिकाश उर्दू कवियोने जहाँतक हो सका, अपनी कविताको विदेशी साँचेमे ढालना चाहा। कोई बुरी बात नही थी, यदि वह अरबी छन्दोका भी उपयोग करते, किन्तु हिन्दीके छन्दोका सर्वथा बायकाट करना कभी उचित नही था। पहिली अवस्थामे हिन्दी छन्दशास्त्र और समृद्ध होता, किंतु दूसरी बातने कवियोके पैरको उनकी जन्म-भूमिसे उखाड दिया। आखिर हिन्दीसगीतको मुसल्मान सगीतकारोकी देन कम नही है। उत्तरी भारतमे पिछले चार सौ वर्षोसे प्रचलित सगीत, वही सगीत नही है, जो कि मुसल्मानो के आनेके पहिले भारतमे प्रचलित था। लेकिन सगीत-क्षेत्रमे मुस्लिम कलावन्तोने बायकाटकी नीति नही अपनाई। उन्होने सपूर्ण भारतीय सगीतको अपनाया और उसमे अरबी, ईरानी और उजबेकी सगीतका पुट देकर उसे और समृद्ध किया। इसी तरह वीणा और मृदगको उन्होने जला नही दिया, बल्कि साथ-साथ उनसे सितार और तबलेकी सृष्टि कर भारतीय वाद्य-यन्त्रोमे कुछ सुन्दर यन्त्रो-की वृद्धि की। उपमा, अलकरण और उपजीव्य कथानकमे भी उर्दू कवियोने स्वदेशी बायकाट और विदेशी स्वीकारकी नीतिको बड़ी कठो-रतासे अपनाया। यदि अपने देशके कृतित्वके साथ-साथ बाहरी वस्तुएँ

भी ली जाती, तो वह हमारी दृष्टिको विशाल करनेमे सहायक होतीं। मै यहाँ शिकायतोका लेखा प्रस्तुत करनेके लिये इन बातोंको नही कह रहा हूँ। छन्द, काव्यशैली, दृष्टान्त, और काव्योपजीव्य कथानकसे परिचित होनेपर सहृदय व्यक्तिके लिये काव्यरसका आस्वादन करना सरल हो जाता है। उर्दू-कवितासे प्रथम परिचय प्राप्त करनेवालोके लिये इन बातोका जानना अत्यावश्यक है। गोयलीयजी जैसे उर्दू-कविताके मर्मज्ञ-का ही यह काम था, जो कि इतने सक्षेपमें उन्होंने उर्दू "छन्द और कविता"-का चतुर्मुखीन परिचय कराया।

"वली"ने उत्तरीय भारतके मुसल्मान कवियोका मुँह फारसीकी तरफसे हटाकर उर्दूकी ओर मोडा था। गोयलीयजीने अपने सग्रहमे "मीर" (१७०९-१८०९)से लेकर अभी भी हमारे बीचमे वर्त्तमान उर्दूके श्रेष्ठ कवियो और उनकी कविताके विकासको लिया है, किन्तु यह काव्य-धारा न "मीर"से आरम्भ होती है, न "वली" (१७०० ई०)से ही। वह उससे भी पहिले "दकनी" कवियो तक पहुँचती है। दकनी कवि और उनकी कृतियाँ उर्दूमें भी बहुत कम प्रकाशित हुई है, हिन्दीके लिये तो वह सर्वथा अपरिचित है। उर्दूमें उनके काव्य इसीलिये सर्वप्रिय नही हो सके, कि वह हिन्दी-शब्दोका सर्वथा बायकाट नही करते थे, और उन शब्दोंको अरबी अक्षरोमें शुद्धतापूर्वक लिखा-पढा नही जा सकता था। "दकनी" काव्योमेसे अत्यधिकने अभी छापेका मुँह नही देखा, वह अब भी हैदराबादके कुछ पुस्तकालयोंकी आलमारियोमे बन्द है। हमे कामना करनी चाहिये, कि निजामकी धर्मान्धताकी अग्निमे निज़ामकी भाँति उनकी भी भेंट न चढ जाये। हमारे "अग्रेज मित्र" तो समस्या-को खटाईमे ही नही रखना बल्कि उसे और भीषण बनाना चाहते रहे। यह जनतन्त्रताके दावेदार हैदराबादकी ८७% जनताके अस्तित्वसे इन्कार कर रहे थे, किन्तु हमने समस्याको पाँच दिनमे हल करके छोडा। आगे यही करना है, कि आजके निजाम हटाये जाये और हैदराबादमे जबर्दस्ती मिलाये आन्ध्र, कर्नाटक और महाराष्ट्रके भागोको अपने अपने प्रदेशोमे लौटनेके लिये स्वतत्रता मिले। निजामके कैदखानेमे

बन्द जनताको जिस तरह मुक्त किया गया है, उसी तरह हैदराबादकी आलमारियोंमे बन्द "दकनी" कविताको भी प्रकाशमे लाना है। इस कामके लिये गोयलीयजीसे बढ़कर योग्य पुरुष मिलना मुश्किल क्या असम्भव है। वही ऐसे व्यक्ति है, जिनकी उर्दू-हिन्दीके साहित्यमे सर्वतोमुखीन प्रवृत्ति है, वही अरबी लिपि-द्वारा विकृत किये गये तत्सम, तद्भव शब्दोकी परख करके उन्हे असली रूपमे ला सकते है। भार बहुत बडा है, इसमे सन्देह नही; किन्तु गोयलीयजीके कन्धे इसके लिये समर्थ है। हमे आशा है कि वह हिन्दीको निराश नही करेगे और "दकनी कवि और उनकी कविता"का परिचय हिन्दी पाठकोको उनसे मिलके रहेगा।

गोयलीयजीके सग्रहकी पक्ति-पक्तिसे उनकी अन्तर्दृष्टि और गम्भीर अध्ययनका परिचय मिलता है। मै तो समझता हूँ, इस विषयपर ऐसा ग्रन्थ वही लिख सकते थे। उनके बारेमे मेरे एक मित्रने अपने पत्रमे लिखा है "गोयलीयजी (समाज और साहित्यकी) गतिविधिमे गत पच्चीस वर्षोसे भाग ले रहे है। उनके सीनेकी आग आज भी उसी तरह गरम है। समाज, देश, धर्म और साहित्यसेवाकी दीवानगी आज भी बदस्तूर कायम है। जेल भी हो आये है। सादा मिजाज, स्पष्ट और कठोर (उनकी विशेपता) है। वे धर्मशास्त्र, हिन्दी, उर्दू और इतिहासके अच्छे पडित है। 'कथा कहानी', 'राजपूतानेके जैनवीर', 'मौर्यसाम्राज्य'-का इतिहास आदि इनके मशहूर ग्रन्थ है। 'दास' उपनामसे इनकी लिखी हुई हिन्दी-उर्दू कविताओका सग्रह प्रकाशित हो चुका है। उर्दू शायरीसे उनकी खास दिलचस्पी है। (उन्होने) सामाजिक जागृतिके क्षेत्रमे कार्यकर्त्ताओको जोशीले गाने और उत्साहप्रद कविताये तथा युवकोकी भावनाओको सिंहनादका स्वर दिया। (वह है) पुरुषार्थके पुतले, असाम्प्रदायिक दृष्टिवादी, सदा जवान।"

लेखककी असाम्प्रदायिक दृष्टि और दूसरे गुण उनकी कृतिमे प्रतिविंबित है। उनकी सदा जवानीसे हम 'दकनी' कविता-संग्रहकी आशा रखते है।

प्रयाग
१७-६-४८

राहुल सांकृत्यायन

एक नज़र

'शेरोशायरी के ६२० पृष्ठों और १० परिच्छेदों मे उर्दू के ३१ श्रेष्ठ कवियोके सर्वोत्तम काव्याशोंका सकलन और तत्सम्बन्धी साहित्यिक अध्ययनका सार है। इसके अतिरिक्त प्रसगवश तथा सकलनको व्यापक बनानेके लिए लगभग १५० कवियोके काव्याशोके उद्धरण दिये गए है। पुस्तकमे कुल मिलाकर लगभग डेढ हज़ार शेर (अशआर) और १६० नज्में तथा गीत होगे——सब अपनी जगह पर चुस्त, फडकते हुए और नमूने के! जैसा कि महापडित राहुल साकृत्यायनने अपनी प्रस्तावनामे लिखा है——"यह एक कवि-हृदय साहित्य-पारखीके आधे जीवनके परिश्रम और साधनाका फल है। गोयलीयजीके सग्रहकी पक्ति-पंक्तिसे उनकी अन्तर्दृष्टि और गम्भीर अध्ययनका परिचय मिलता है"। हमारा विश्वास है कि उर्दू साहित्यकी गतिविधिका अनुभवपूर्ण दिग्दर्शन करानेवाली और नामी कवियोकी चुनी हुई काव्य-वाणीका इतना सुन्दर, प्रामाणिक और व्यापक सग्रह प्रस्तुत करनेवाली इस जोडकी कोई दूसरी पुस्तक हिन्दीमे अभी तक प्रकाशित नही हुई।

'शेरोशायरी'की कल्पना इसके निर्माता, श्री अयोध्याप्रसाद 'गोयलीय'के मनमे आजसे १८ वर्ष पूर्व उदित हुई जब कि वह राष्ट्रीय आन्दोलनके 'सरगर्म कार्यकर्त्ता'के रूपमें देहलीकी सैण्ट्रल जेलमे अन्य स्थानीय नेताओ और बन्दी मित्रोके साथ साहित्यचर्चा किया करते थे। उस समय तक गोयलीयजी सफल लेखक, प्रभावशाली वक्ता और उर्दू काव्यके प्रामाणिक अध्येताके रूपमे ख्याति पा चुके थे। यह हिन्दीके अनेक स्थानीय पत्रोके लिए नियमित रूपसे उर्दूके शेरोका सकलन किया करते थे और 'मधु-सचय', 'चयनिका' तथा महफिल आदि स्तम्भोंका सम्पादन किया करते थे। तबसे अबतक श्री गोयलीयजी-

का अध्ययन जारी रहा और उसके साथ-साथ 'शेरोशायरी'का पुलिन्दा वढता गया। सन् १९४४ मे जब देशकी समस्याओने नया रूप धारण किया और जब आजादीकी मजिल करीब आती हुई दिखाई दी, तब देशके नेताओका ध्यान देशकी जनता के साहित्यिक मेलजोल और हिन्दी-उर्दूकी समस्याके समाधानकी ओर गया। उस समय अनेक मित्रोने श्री गोयलीयजीसे अनुरोध किया कि वह 'शेरोशायरी'को जल्दी पूरा कर ले। परिस्थितियोका तकाजा था कि ऐसी पुस्तक शीघ्र प्रकाशमे आ जाये। सोचा गया कि सारे सग्रहको कई जिल्दोमे प्रकाशित कर दिया जाये, पर कागज और छपाईकी समस्या आडे आई। तव निश्चय किया गया कि लेखक सारी सामग्री के आधार पर एक सकलन तय्यार कर दे जो तात्कालिक समस्या की पूर्त्ति तो कर ही दे, पर चीज ऐसी वन जाये कि एक ओर तो वह उर्दूके साहित्यिक अध्ययनके लिए प्रमाणिक, सर्वांगीण पृष्ठभूमि देने और दूसरी ओर सामान्य पाठको की सुविधाके लिए उर्दूके सव रगके और सव मुख्य कवियोके बेहतरीन चुने हुए शेरोका सग्रह प्रस्तुत कर दे।

इस प्रकारका सकलन कितना कष्ट-साध्य है इसे साहित्यकोमे भी केवल भुक्तभोगी ही जान सकेगे। जो साहित्य पिछले ३०० वर्षोमे बादशाहों और नवावोकी छत्रछायामे पनपा, जो साहित्य नये साम्राज्यो और सामाजिक सस्थाओंके ध्वस और निर्माणके दौरसे गुजरा और जिस साहित्यके हृदय, आत्मा, परिधान, अलकार और उद्देश्य मे युगान्त-कारी परिवर्त्तन हुए—और फिर भी जिसका तारतम्य शताब्दियोकी घनी तहोको पार कर आजके अनेक गजल-गो शायरोकी कवितामे गुँथा हुआ है—उसके युग-निर्माता और युग-पोषक कवियोको छाँटना और छोड़ना और छाँटे हुए कवियोके दीवानो और सग्रहोमेसे अमुक शेरको रखना और अमुकको रद करना वडा टेढा और, यदि कहूँ तो, सकलनकर्त्ताकी साहित्यिक ख्यातिको खतरेमे डाल देनेवाला काम है।

नि सन्देह श्री गोयलीयजीने इस कामको अधिकमे अधिक सफलताके साथ निभाया है। आज जव यह किताव छपकर तय्यार है तो हम

सन् १९४५ से १९४८ मे आ पहुँचे है। कलतक जो 'इन्कलाब' महज एक ख्याल था और जिसकी जिन्दाबादीकी सदा हम पुरजोश जुलूसोमे महज नारोके रूपमे लगाते थे, आज वह इन्कलाब मुजस्सिम और साकार हमारे सामने है। अभी कितने इन्कलाब आस्मानसे झाँक रहे है—

"आँख जो कुछ देखती है, लब पै आ सकता नहीं।
महवे-हैरत हूँ कि दुनिया क्यासे क्या हो जायेगी।"

—इक़बाल

कल जिस 'शेरोशायरी'की आवश्यकता राजनैतिक आन्दोलनकी सहकारिताके लिए थी, आज हम उसका मूल्य अपने स्वतत्र और विशाल देशकी गत तीन शताब्दियोके उर्दूके साहित्यिक उत्तराधिकारके रूपमे आँकेगे। देशके बँटवारेके बाद जो मुसलमान भाई आज हिन्दुस्तानमे रह गए है वह खालिस हिन्दुस्तानी ही वनकर रहेगे, उनके लिए अब कोई दूसरा रास्ता नही। कवि और साहित्यकार सदा ही सब वर्गोंमे होते है जो अपनी साहित्यिक परम्पराको नई परिस्थितियोके अनुरूप विकसित करते है। क्या हिन्दुस्तानी मुसलमान शायर चुप होकर बैठ जायेगा, इसलिए कि हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा हिन्दी है? मुसलमानके लिए हिन्दी 'हौआ' नही है—या यो कहे कि मुसलमान 'आदम'के लिए हिन्दी ही 'हौआ' होगी। हिन्दी आखिर खुसरो, जायसी, रसखान और रहीमकी भाषा है, हिन्दीने नजीरके कलामको चमकाया और हफीज जालन्धरी, सागिर निजामी और अख्तर शीरानीके गीतोको मधुर बनाया। हिन्दीकी जादूभरी छैनीसे 'फिराक' गोरखपुरी और दूसरे कवि उर्दूका नया दिलकश बुत तराश रहे है। आख़िर लिपिका भेद दो चार सालमे जव मिट जायेगा, तो उर्दू और हिन्दीमे कोई फर्क न रह जायेगा, हिन्दू और मुसलमान सबकी राष्ट्रीयभाषा एक होगी। तब 'शेरोशायरी' राष्ट्रके परम्परागत साहित्यके अग-विशेषकी झाँकी और अध्ययनके लिए अत्यन्त उपयोगी परिचयात्मक पुस्तक प्रमाणित ही होगी।

'शेरोशायरी'की सबसे बडी विशेषता यह है कि यह उर्दू साहित्यसे

सर्वथा अपरिचित व्यक्तिको भी उस साहित्यकी पृष्ठभूमि, उसके अलकरण, उपमाओ, काव्य-प्रसगों, किवदन्तियों और कवियोकी कलात्मक सृष्टिसे सुबोधशैलीमे परिचित करा देती है। पुस्तकके पहले ११४ पृष्ठ—'उद्गम' और 'तरग' शीर्षक परिच्छेद—इस दृष्टिसे बहुत महत्वपूर्ण है, जिनमे 'गुलशन', 'मैखाना', 'इश्क' और 'सहरा'के अन्तर्गत उर्दू कविताके सारे उपकरणो, उपमाओ, तरकीबो और महावरोको विस्तारसे समझाया है। हिन्दीके पाठक जिन प्रचलित उर्दू शब्दोको गलत बोलते है और जिनके कारण प्राय· उपहास-पस्त वन जाते है, उन लगभग १५० शब्दोकी सूची भी इस अध्यायमे दे दी है।

कवियोके परिचयका 'उद्घाटन' मीर मुहम्मद तकी 'मीर' (सन् १७०६-१८०६ ई० तक) से किया है, क्योकि उर्दू कविता अपने वर्त्तमान निखरे रूपमें यहीसे या इसी कालसे प्रारम्भ होती है। 'वली' और उनके समकालीन अन्य शायर भी युगप्रवर्त्तकोमे है, किन्तु 'मीर' उस निखरे हुए युगके सर्वश्रेष्ठ गजल-गो कवि माने गए है। 'वली'से पहले उर्दू कविताका विकास 'दक्षिणमे जिस रूपमे हुआ था, वह प्राय 'स्वदेशी' उर्दू थी, अर्थात् उसमे हिन्दीके शब्दो और प्रान्तीय तरकीबो और मुहा-वरोकी प्रधानता थी। वह कहलाती भी 'हिन्दी' या 'हिन्दवी' थी। किन्तु उत्तरके शाही दरवारोमे जहाँ अरवी और फारसीको सस्कृति और उत्कृष्ट सामाजिक स्थितिकी भाषा माना जाता था, इस 'हिन्दी'-को अरवी और फारसीके साँचेमे ढाला जाने लगा और इस तरह एक ऐसी काव्य-शैलीको जन्म दिया गया जिसमे अरवी और फारसी भाषा-के शब्दो और उस साहित्यकी कल्पनाओ, कवि-पद्धतियों, छन्दो और अलकारोको आरोपित किया गया।

अपने वैभवकी स्थितिमे उर्दू कविता वहुत कुछ हिन्दीकी रीति-कालीन शृगारिक कविताके ढंगकी चीज़ है। दोनो रीतिकालीन कवि-ताओका लालन-पालन राजदरबारोमे हुआ, दोनोंने पुरुषार्थकी अपेक्षा प्रेम और विरहके श्वास-नि श्वासोको प्रतिध्वनित किया और दोनो-ने अपने निश्चित उपकरणोको नये अलकारोसे चमत्कृत किया। यदि

उर्दूकी कविता अश्लील है तो इस प्रकारकी हिंदी कवितामे कम अश्लीलता न पाइयेगा—हाँ, हिन्दी कविताके शृंगारका रूप स्वाभाविक और परिधान परिष्कृत है। उर्दू कविताका यह रीतिकालीन युग महान साहित्यिक कलाकारोंका युग है। 'मीर'की कविताकी दर्दीली पैनी धार, ज़ौककी सुघराई, गालिबकी दार्शनिक गहराई और कल्पनाकी उडान, मोमिनकी सादा बयानीका चमत्कार और दागकी भाषा-माधुरीके दर्शन इसी युगकी कवितामे मिलते है। इनके शेरकी ख़ूबीका क्या क़हना! शेरके बँधे छदमे, नपे-तुले शब्दोमे वह बात और वह चमत्कार पैदा करते है कि आदमी सकतेमे आ जाये। बिहारीके दोहोकी तरह, "देखतमें छोटे लगे घाव करे गभीर"।

डालमियानगर मे अपनी तरहकी एक छोटी-सी सगत है। कभी यह 'साहित्य-गोष्ठी' हो जाती है, और कभी 'बज्मेअदब'। इस अदबी बज्म के 'पीरेमुगाँ' है गोयलीयजी और 'रिन्दो' मे शामिल है डालमिया-नगर की बड़ी से बड़ी हस्तियाँ (जिसमे ज्ञानपीठ के सस्थापक और अध्यक्षा भी शामिल है)। गालिब, दाग, इकबाल और अकबरके एक एक शेर-पर हम लोग मुद्दतों अश-अश किए है और दुहराते-तिहराते रहे है। इस सकलनमे इस तरहके सैकडो शेर है। कुछेक शेरोके अर्थकी गहराई, शब्दोंकी सुघराई और आशयका चमत्कार, इसी पुस्तकमे आप देखेंगे —

ग़ालिब— 'कोई मेरे दिलसे पूछे तेरे तीरे नीम-कशको।
ये ख़लिश कहाँसे होती, जो जिगरके पार होता॥

× × ×

मैं और बज्मेमयसे[1] यूँ तिश्नाकाम[2] आऊँ।
गर मैंने तौबा[3] की थी, साक़ीको क्या हुआ था?

× × ×

[1] मधुशालासे; [2] प्यास लिये हुए; [3] शराब न पीनेकी प्रतिज्ञा।

चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेज़-रौके[1] साथ ।
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबरको[2] मैं ।।

× × ×

न लुटता दिनको तो कब रातको यूँ बेख़बर सोता ।
रहा खटका न चोरीका दुआ देता हूँ रहज़नको[3] ।।

× × ×

मोमिन— माँगा करेंगे अबसे दुआ हिज्रेयारकी[4] ।
आख़िर तो दुश्मनी है असरको दुआके साथ ।।

× × ×

अकबर— हरचन्द बगोला मुज़तिर[5] है, इक जोश तो उसके अन्दर है ।
इक वज्द[6] तो है, इक रक़्स[7] तो है, बेचैन सही, बरबाद सही ।।

× × ×

कह गए हैं खूब भाई घूरन ।
दुनिया रोटी है और मज़हब चूरन ।।

इक़बाल— खुदी[8] को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीरसे पहले ।
खुदा बन्देसे खुद पूछे, बता तेरी रज़ा[9] क्या है ।।

उर्दू कविताके जो दो कलाकार सदा अमर रहेंगे, वह है गालिब और इक़बाल। 'शेरोशायरी'मे दोनोकी कविताओका संकलन विशेष रुचिके साथ किया गया है, और व्याख्यामे परिश्रम किया गया है। हमारा खयाल है कि इकबालका मर्तबा आनेवाली पीढियोकी निगाह-में गालिबसे भी ऊँचा होगा। प्रस्तुत संकलनमे लेखकने इकबालके जीवनको तीन दौरोमे विभक्त करके, हर दौरकी नुमाइन्दा कविताओ-के उद्धरण दिए है। प्रारंभमे इकबालने भारतके राष्ट्रीय आन्दोलन-को अपने व्यक्तित्वका समर्थन और अपनी वाणीका बल दिया।

---

[1] तेज़ चलनेवालेके; [2] नेताको; [3] चोरको; [4] प्रेयसीके विरहकी; [5] परेशान; [6] तन्मयता; [7] नृत्य; [8] अपनी आत्माको; [9] सम्मति, अभिलाषा।

'सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा'—इकबालका ही दिया हुआ राष्ट्रीय गीत है। इकबालने ही आत्मविभोर होकर पुकारा था—

"खाके वतनका मुझको हर जर्रा देवता है।"

बादमे वही इकबाल फिर्कापरस्त बन गए और उन्होने नई प्रार्थना ईजाद की —

"यारब! दिले मुस्लिमको वोह जिन्दा तमन्ना दे।
जो क़ल्बको[1] गरमा दे, जो रूहको[2] तड़पा दे।"

इन शब्दोकी ओर ध्यान दीजिए। इकबालने मुसलमानोके लिए एक 'तमन्ना' माँगी—एक चाह, एक खयाल, एक उद्देश्य—जिसके पीछे वह दीवाने हो सके, जिसके लिए उनके कलेजेमे गरमी आ सके और जो उनकी आत्मामे उस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए एक तडप पैदा कर दे।

आखिर पाकिस्तान इस 'जिन्दा तमन्ना'की शक्लमे सामने आया। पाकिस्तानकी खाली खाली कल्पनामे इकबालने ही रूह फूँकी।

हमारी पीढी इस इतिहासके इतने निकट है कि हम सभवतया पाकिस्तानकी मूल भावनाओका सही-सही अन्दाजा नही लगा सकते। इकबालकी कविताओका सकलन हमारे सामने है। उनका एक शेर है —

"बनायें क्या समझकर शाखेगुलपर आशियाँ[3] अपना?
चमनमें आह! क्या रहना, जो हो बे-आबरू रहना?"

(पृष्ठ २७७)

यह पहले दौर का शेर है। इसका अर्थ गम्भीर है।

इकबाल मुसलमानोके लिए इस युगके पैगम्बरसे कम नही। अगर इकबाल दूर तक भविष्यमे झाँक सकते थे और उन्होने पेशीनगोई की है, तो हमें और भी देखना चाहिए कि उन्होंने क्या कहा है। इसी सग्रहके चन्द और शेर मुलाहिजा हो। 'जिन्दा तमन्ना'को इकबालने और आगे बढाया और कहा था —

---

[1] अपनी आत्माको; [2] हृदयको, आत्माको; [3] घोंसला।

"कैफ़ियत बाक़ी पुराने कोहो[1]-सहरामें नहीं।
है जुनूँ[2] तेरा नया, पैदा नया वीराना कर॥"

(पृष्ठ २८६)

और सुनिये :—

"मुझे रोकेगा तू ऐ नाखुदा[3] क्या ग़र्क़ होनेसे ?
कि जिनको डूबना हो, डूब जाते हैं सफ़ीनोंमें[4] ॥"

(पृष्ठ २८१)

× × ×

तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजरसे आपही खुदकशी करेगी।
जो शाखे नाज़ुकपै आशियाना बनेगा, ना पाएदार होगा॥

(पृष्ठ २८३)

और फिर 'शिकवे' का आखिरी बन्द :—

बुत[5] सनमख़ानो[6]में कहते हैं, "मुसलमान गए"।
है ख़ुशी उनको कि काबेके निगहबान[7] गए॥
मंज़िलेदहरसे[8] ऊँटोके, हदीख्वान गए।
अपनी बगलोंमें दबाये हुए कुरआन गए॥
खन्दाज़न[9] कुफ़्र[10] है, अहसास तुझे है कि नहीं।
अपनी तौहीदका कुछ पास तुझे है कि नहीं!

काश! इकबाल बादकी सियासतको शायरीसे दूर रखते! वह अमर तो है ही; उन्हे सब पूजते भी।

इस संग्रहकी एक और विशेषता है कि इसमे उर्दू कविताके वर्त्तमान प्रगतिशील युगका उचित प्रतिनिधित्व किया गया है। आजके माहौल, आजके ज़माने और वातावरणमे उर्दू कविताने जो उन्नति की है, हिन्दी-के बहुत कम साहित्यिकोंको इस बात का सही-सही अन्दाज़ा है। अभी

---

[1] पर्वतों-जंगलोंमें; [2] उन्माद, उमंग; [3] नाविक; [4] नौकाओंमें; [5] हिन्दू देवी-देवता; [6] मन्दिरोंमें; [7] पहरेदार, रक्षक; [8] काबेके मार्गसे; [9] मुस्करा रहे हैं; [10] ग़ैरमुस्लिम, हिन्दू।

तक हिन्दीके ९० प्रतिशत पाठक उर्दूको महज 'हुस्नोइश्क' और 'गुलो-बुलबुल'की शायरी समझते है। वर्त्तमान नवयुवक कवियोमे, विशेषकर फैज, मजाज, जज्बी, साहिर और फिराकने आज उर्दू शायरीको किसी भी भाषाके तरक़्क़ीपसन्द युग-साहित्यके हमपल्ले ला बिठाया है। आजका उर्दू कवि युगका और जनताकी आवाज़का प्रतिनिधि है। उसने आदमीको ख़ुद्दारी और आत्मगौरव दिया है। वह भगवानसे भी आदर माँगता है :—

हश्र[1]में भी ख़ुस[2]रवाना, शानसे जायेंगे हम।
और अगर पुरसिश[3] न होगी तो पलट आयेंगे हम॥

—जोश (पृष्ठ ३४३)

सजदे करूँ, सवाल करूँ, इल्तजा करूँ।
यूँ दे तो कायनात मेरे कामकी नहीं॥
वो खुद अता करे तो जहन्नुम भी है बहिश्त।
माँगी हुई निजात मेरे कामकी नहीं॥

—सीमाब (पृष्ठ ३७३)

आज भी उर्दू शायरीमे मोहब्बतका चर्चा है, मगर यह अब अकेले भोगनेकी चीज नही रही :—

अपनी हस्तीका सफीना[4] सूयेतूफ़ाँ[5] कर लें।
हम मोहब्बतको शरीकेग़मे-इन्साँ कर लें॥

—मौज (पृष्ठ ४८५)

आजका इन्सान इश्ककी महफ़िलमे न शमाकी तरह जलता है, न परवानेकी तरह फुंकता है। उसे मुहब्बतकी नाकामीका डर नही, वह सरेतूफान ज़िन्दगीकी मौजोपर अठखेलियाँ करता हुआ चलता है —

मुझको कहने दो कि मै आज भी जी सकता हूँ।
इश्क नाकाम सही, ज़िन्दगी नाकाम नहीं॥

—साहिर (पृष्ठ ५२७)

---

[1] प्रलयवाले दिन ईश्वरके समक्ष; [2] बादशाही; [3] आवभगत; [4] नाव; [5] तूफ़ानकी ओर।

दरियाकी ज़िन्दगीपर, सदके हज़ार जानें।
मुझको नहीं गवारा, साहिलकी[1] मौत मरना ॥
—जिगर (पृष्ठ ५८६)

आधुनिक प्रगतिशील कविताके अन्य विषयोपर मसलन मजदूर किसानोकी तबाही, देशभक्ति, मानवप्रेम, जागरण, आत्मगौरव आदिपर उर्दूमे जो लिखा गया है उसके अनेक सुन्दर उदाहरण इस सकलनमे यथास्थान दिए गए है।

श्री गोयलीयजीके इस सग्रहमे जहॉ अध्ययनकी गहराई, अनुभवकी परिपक्वता और साहित्यकी सच्ची परखकी खूबियॉ है, वहाँ उनकी निराली टकसाली शैलीका चमत्कार भी कम आकर्षक नही। उनके कुछ परिचय देखिए :—

मयख़ाना—

झिझकिये नही, जब आ ही गये तो खुलकर बैठिये। यहॉ ऊँच-नीचका भेद-भाव नही। ज़ाहिद, नासेह, शेख, और वाइजकी परवा न कीजिये। वे तो यहाँ खुद ही चोरी-चुपके आते है, और जल्दीसे दुम दबाकर भाग जाते है। यह बुजुर्ग तो पीरेमुगाँ है। इनकी कृपादृष्टि तो गरीब-अमीर सबपर यकसॉ रहती है। ये जो सुराही लिये आ रहे है, यही साकी है। उधर वे रिन्द बैठे हुए है। उनके हाथोमे सागिर और पैमाने है जिनमे सुर्ख मय भरी हुई है। इधर ये शराबसे भरे हुए खुम और कूजे रखे हुए है। जब उमरखय्याम और हाफिज जिन्दा थे, यहाँ रोज आते थे।

नज़ीर—

नजीर ने अजान भी दी, और शख भी फूँका। तसबीह भी ली और जनेऊ भी पहना। मुहर्रममे रोये तो होलीमे भडवे भी बने। रमजानमे रोजे रखे और सलूनोपर राखी बॉधनेको मचल पडे। शब्बरात-पर महताबियाँ छोडी तो दीवालीपर दीप सँजोये। नबी, रसूल, वली, पीर, पैग़म्बरके लिए जी भरकर लिखा, तो कृष्ण महादेव, नरसी, भैरो

[1] किनारा (भावार्थ सुख शान्तिसे अधर्मकोंकी तरह)।

और नानकपर भी श्रद्धाञ्जलि चढाई। गुलोबुलबुलपर कहा तो आम और कोयलको पहले याद रखा। पर्देके साथ बसन्ती साडी भी याद रही। और तो और, गर्मी, बरसात और सर्दीपर भी लिखा। बच्चोके लिए रीछका बच्चा, कौआ और हिरन, गिलहरीका बच्चा, तरबूज, पतगबाज़ी, बुलबुलोकी लड़ाई, ककड़ी, तैराकी, तिलके लड्डूपर लिखने बैठे तो बच्चे बन गये। हरएक बालक गली-कूचोमे गाता फिर रहा है। जवानो और बुड्ढोको नसीहत देने बैठे तो लोग वज्दमे आ गये। मानों कुरान, हदीस, वेद, गीता, उपनिषद्, पुराण सब घोलकर पी जानेवाला कोई सिद्ध पुरुष बोल रहा है।

हफ़ीज़—"मिसरी जैसी भाषा, कन्यासी अछूती कल्पना और कृष्णकन्हाई-की बाँसुरीसे निकले हुएसे मादक गीत आनन्दविभोर कर देनेके लिए काफी है" (पृष्ठ ४२८)

जिगर—"मालूम होता है अल्लाहमियाँ जब अपने बन्दोको हुस्न तकसीम कर रहे थे, तब हज़रते जिगर कौसरपर बैठे पी रहे थे। उन्हे जिगर-की यह मस्ती और बेपरवाही शायद पसन्द न आई और कुढकर हुस्नके एवज इश्क अता फरमाया ताकि जिगर उम्रभर जलते और बुझते रहे" (पृष्ठ ५७८)

इस प्रकारका हर परिचय अपने आपमे एक कविता है। इन्हे पढकर और गोयलीयजीके परिश्रमके सफल परिणामको देखकर उनके सम्बन्धमें कहनेको जी चाहता है —

बड़ी मुश्किलसे होता है चमनमें दीदावर पैदा।

(?—

यह बात नही कि पुस्तकमे छोटी-मोटी खामियाँ नहीं रह गई हैं। कोई भी 'सकलन' निर्दोष नही हो सकता। जो दोष रह गये हैं, लेखक उनको जानता है और उनके बारेमे उसकी अपनी सफाई भी है। पर, रुचिके प्रश्नपर या साधनोंकी सीमितताके आधारपर सफाईका प्रश्न उठता ही नही। सकलनमे जो सावधानी बरती गई है, बाज वक्त एक-एक शेरके इन्तखावमे जो लम्बी बहसे झेलनी पडी है और हर ज़ौक (रुचि)

और हर स्तरके पाठकोका ध्यान रखनेमे लेखकको जब-जब जी मसोसकर रह जाना पडा है, वह दास्तान मुझे मालूम है। इसीलिए मै जानता हूँ कि यह सकलन कितना सुन्दर और कितना रगीन है।

"दास्ताँ उनकी अदाओंकी है रंगी, लेकिन।
उसमें कुछ खूनेतमन्ना भी है शामिल अपना॥"

—असग़र

भारतीय ज्ञानपीठ, इस सकलनको बहुत प्रसन्नताके साथ पाठकोके हाथोमे समर्पित करता है। हमारा यह सौभाग्य है कि इस सकलनकी प्रस्तावना अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त, धुरधर विद्वान और अनथक पुरुषार्थी महापडित राहुल साकृत्यायनने लिखनेकी कृपा की है। वह हिन्दी साहित्य सम्मेलनके सभापति भी है। इस सग्रहकी प्रामाणिकता, राष्ट्रीय साहित्यकी समृद्धि और मूल्याकनके लिए इस सग्रहकी उपयोगिता तथा लेखककी अद्वितीय सफलताके सम्बन्धमे श्री राहुलजीने प्रस्तावनामे जो कहा है वह ज्ञानपीठके प्रकाशनके लिए गौरवकी वात है। हम महापडित राहुलजीके प्रति हृदयसे आभारी है।

इस सग्रहमे गोयलीयजीने इस वातका ध्यान रखा है कि पुस्तक सव प्रकारसे प्रामाणिक और सर्वोपयोगी हो। यह पुस्तक साहित्यके विद्यार्थियोंके लिए, परीक्षालयों और पुस्तकालयोके लिए, व्याख्याताओं, लेखकों और पत्रकारोके लिए विशेष रूपसे उपयोगी है। सामान्य पाठकके लिए इसे अधिकसे अधिक सुबोध वनानेका प्रयत्न किया गया है। पुस्तक आपके लिए है, यदि आप आगे वढकर इसे लेनेका कष्ट करे —

"ये बज़्मे मय है, याँ कोताह दस्तीमें है महरूमी।
जो वढ़कर खुद उठा ले हाथमें, मीना उसीका है॥"

डालमियानगर
३० सितम्वर १९४८

लक्ष्मीचन्द्र जैन
सम्पादक
लोकोदय ग्रंथमाला

दो शब्द

जनवरी १९४४ मे मेरे परमहितैषी सहृदय दानवीर सेठ शान्ति-प्रसादजीकी अभिलाषा हुई कि उर्दूके कुछ सुभाषित उनकी डायरीमे नोट करा दिए जाएँ। परन्तु डायरीमे नोट करनेका उनके पास समय ही कहाँ था ? अत बात आई-गई हुई। किन्तु उनकी यह अभिलाषा मुझे भा गई। वही प्रेरणा आज इस रूपमे प्रस्तुत है।

भारतीय ज्ञानपीठके हिन्दी-विभागके सुयोग्य विद्वान सम्पादक प्रियवर बाबू लक्ष्मीचन्द्रजी एम० ए०के साथ प्रात.कालीन सैरमे शेरो-शायरीकी पुरलुत्फ चर्चाएँ रही है। पुस्तकका इतना मौजू नाम भी उन्होने ही सुझाया है। जब लिखने-पढनेसे मन ऊब गया है, तब उन्हीके प्रेमाग्रहों ने लिखनेको बाध्य किया है। और अब वही इसे अपनी ग्रन्थ-मालामे प्रकाशित कर रहे है। यदि उनका आग्रह न होता, और ज्ञानपीठकी अध्यक्षा स्नेहमयी श्रीमती रमारानी जैनने प्रकाशनकी अनुमति न दी होती, तो मेरी पुस्तक इस कागज और प्रेसके अकालमे कौन छापता ?

"ऊँचे-ऊँचे मुजरिमोकी पूछ होगी हश्रमें।
कौन पूछेगा मुझे मैं किन गुनहगारोंमें हूँ॥"

श्री प० देवीशरणजी पाण्डेय शास्त्री और श्री पं० रामाधारजी दुबे 'साहित्य-भूषण'ने सुवाच्य अक्षरोमे मेरे हस्त-लेखकी प्रतिलिपि करके खोये जानेके भयसे मुझे मुक्त किया है, और कम्पोजिङ्गमे सुविधा पहुँचाई है। अनुक्रमणिका और विषय-सूची बनानेमे भी सहायता दी है। दुबेजीने फाइनल प्रूफ देखनेमे भी मुझे पूर्ण सहयोग दिया है।

श्री कुलभूषण जैन 'कौसर'ने 'गालिब', 'माकिब', 'फानी', 'असगर' के कलाम-चयनमें सहायता दी है। पढते-लिखते जब थक गया हूँ, तो कई लेख उन्होंने स्वय पढकर सुनाए है। श्री मृगाककुमार राय एम० ए०, बी० एल०, श्री श्यामलाल बी० ए०, एल-एल० बी०, और प्रिय बन्धु नेमिचन्द्र जैन एम० एस-सी०ने निरन्तर प्रेरणा देकर पुस्तक समाप्त करने और प्रेसमे देनेको बाध्य किया है।

लेबर वेलफेयर सेण्टरके उत्साही और परिश्रमी पुस्तकालयाध्यक्ष बाबू रामप्रसादसिह अध्ययनके लिये यथावश्यक ग्रन्थ देते रहे है।

धन्यवाद देने और आभार माननेका साहस मुझमे नही है। मै तो अपने आकुल मनको भुलाये रखनेके लिये पढ़ने-लिखनेमे खोया रहा हूँ। यदि मैने यह प्रयास न किया होता तो :—

"मेरी नाजुक तबीयत पर यह दुनियाँ बार हो जाती।"

अत· पुस्तक उपादेय बन पड़ी हो, तो उसका श्रेय मेरे इन आत्मीय बन्धुओं, हितैषी मित्रों, और प्रिय सहयोगियोको है। भूलों और त्रुटियो-की जिम्मेवारीसे मै चाहूँ तो भी बरी नही हो सकता।

पहाड़ीधीरज, देहली
वर्त्तमान
डालमियानगर, (विहार)

अयोध्याप्रसाद गोयलीय
२६ सितम्बर, १६४८

उद्गम
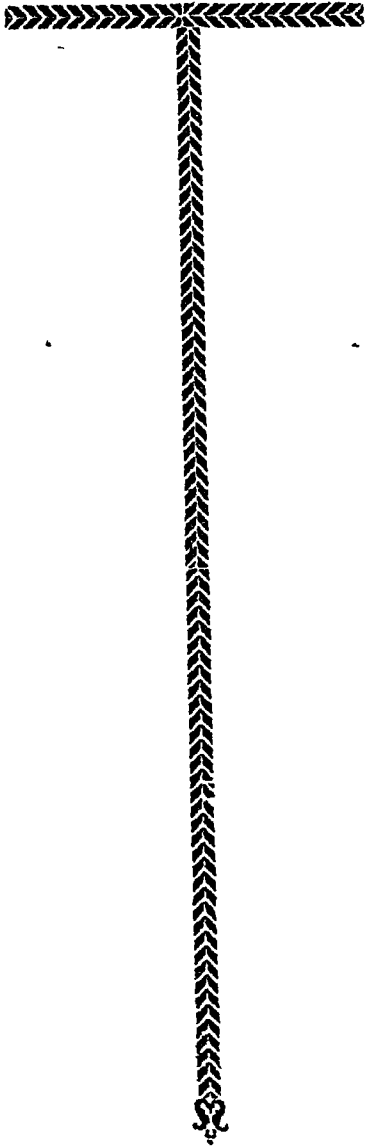
: १ :

[उर्दू-शायरीका संक्षिप्त परिचय]

उर्दू-शायरीका परिचय

राष्ट्रीय भाषाके जनक—अमीर खुसरोको हिन्दी-साहित्यिक हिन्दी-कविताका और उर्दू-अदीब उर्दू-शायरीका जनक मानते हैं। खुसरोसे पूर्व हिन्दू कवि संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, व्रज या प्रान्तीय भाषाओंमें और मुस्लिम कवि अरबी-फारसीमे रचना किया करते थे। आवश्यकता एक ऐसी भाषा की थी, जो समूचे राष्ट्रकी भाषा कहलाई जा सके और जिसमे हिन्दू-मुसलमान समान रूपसे अपने भाव व्यक्त कर सके।

अमीर खुसरो यद्यपि फारसीके ख्याति-प्राप्त कवि थे, परन्तु उन्होने इस आवश्यकताको अनुभव करते हुए कुछ इस तरहकी कविताएँ लिखी जो संस्कृत या फ़ारसी मिश्रित न होकर सर्वसाधारणके समझने योग्य सार्वजनिक प्रचलित शब्दोमे थी।[1]

खुसरोने जिस राष्ट्र-भाषाको जन्म दिया, उसका उन्होंने स्वयं हिन्दी या हिन्दवी नाम रखा। ख्याति-प्राप्त आलोचक साहित्याचार्य

---

[1] **अमीर खुसरो**—(जन्म सन् १२५३, मृत्यु सन् १३२५ ई०)
इन्होने गयासुद्दीनके शासनकालसे मुहम्मद तुगलकके शासन तक ११ बादशाहोके दरबार देखे थे। इनकी कविताके नमूने :—

चकवा चकवी दो जनें इन मत मारो कोय।
यह मारे करतारके रैन-बिछोवा होय॥
गोरी सोवे सेजपर मुखपर डाले केस।
चल खुसरू घर आपने रैन भई चहुँ देस॥
खुसरो रैन सुहागकी, जागी पीके संग।
तन मेरो; मन पीउको दोऊ भये इकरंग॥

पं० पद्मसिंहजी शर्मा लिखते है—"हिन्दी नामकी सृष्टी हिन्दुओने नही की और न उन्होंने इसका प्रचार ही किया है। हिन्दू लेखको ने इसके लिए

हिन्दी : हिन्दवी

प्राय. सर्वत्र भाषाका प्रयोग किया है। भाषाके लिए हिन्दी शब्दके सर्वप्रथम नामकरणका सारा श्रेय मुसलमान लेखकों और कवियोको ही दिया जा सकता है। 'उर्दूए कदीम' 'तारीखे नस्रे उर्दू' 'पंजाबमे उर्दू' इत्यादि ग्रन्थोके विद्वान लेखकोने बडी खोजके साथ यह साबित कर दिया है कि उर्दूका सबसे पुराना नाम हिन्दी ही है। अमीर खुसरोकी खालिक़बारी (हिन्दी-उर्दूके सबसे पुराने कोप) में सब जगह हिन्दी या हिन्दवी आया है। उसमे 'उर्दू' 'रेख्ता' या और किसी नामका कही भी उल्लेख नही है। खालिकबारीमे १२ बार हिन्दी और ५५ बार हिन्दवी शब्दका प्रयोग हुआ है। हिन्दीका अर्थ है हिन्दकी भाषा और हिन्दवीसे मतलब है हिन्दुओ या हिन्दुस्तानियोकी भाषा।....कविवर सौदाके उस्ताद शाहहातमने भी १७५० ईस्वीमे 'हिन्दवी' या 'हिन्दी भाषा' हिन्दुस्तानकी भाषाके अर्थमे इस्तेमाल किया है।"[1]

उर्दूके आदि कवि—अमीर खुसरोने जिस राष्ट्र-भाषाको जन्म दिया, उसका लालन पालन कबीर[2],

---

[1] हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी पृ० १८।

[2] **कबीर**—(जन्म सन् १३९१ मृत्यु १५१८ ई०)

ये जातिके जुलाहे थे और उच्चकोटिके सन्त और सुधारक थे। इनकी कविताएँ प्रेम, भक्ति, वैराग्य और नीति-सम्बन्धी बड़ी मर्मस्पर्शिनी है। कविताका नमूना :—

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहारकी, साँस लेत बिन प्रान॥

जायसी,[1] रहीम,[2] वगैरहने इस तरह किया कि उसे से

प्रेम छिपाया ना छिपै, जाघट परघट होय।
जो पै मुख बोले नहीं, नैन देत है रोय॥

आजा प्यारे नैनमें, पलक ढाँप तोय लूँ।
ना मैं देखूँ औरको, ना तोय देखन दूँ॥

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-परजा जिहि रुचै, सीस देइ ले जाय॥

प्रेम-प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीनो रहै, प्रेम कहावे सोय॥

प्रेम-पियाला जो पिये, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेमका लेय॥

कबिरा खड़े बजारमें, लिये लुकाटी हाथ।
जो घर फूँके आपनो, चले हमारे साथ॥

[1] **मलिक मुहम्मद जायसी**—(कविता-काल सन् १५१८से १५४३ ई० तक)

पद्मावत इन्हीकी प्रसिद्ध रचना है। १४ कृतियाँ आपकी लिखी मिलती हैं।

हाड़ भये सब काँकरी, नसें भई सब ताँत।
रोम-रोमसे धुनि उठे, कहूँ बिरह किह भाँत॥

[2] **अब्दुल रहीम खानखाना**—(जन्म सन् १५५३ कविता-काल १५८३)

रहीम बैरमखाँके पुत्र और अकबर बादशाहके नवरत्नोमेंसे एक थे। ये अकबरके समस्त दलके सेनापति और मन्त्री थे। बडे भद्र और दानी थे। कहा जाता है कि गंग कविको एक ही छन्दके बनानेपर ३६ लाख रुपये इन्होने उसे पुरस्कार-स्वरूप दिये थे। गग कवि बडे स्वच्छन्द प्रकृतिके

अपना समझकर अपनाया। परन्तु ४०० वर्षके बाद यानी सत्रहवी सदीमें राष्ट्रीय भाषाको विदेशी रूप दिया जाने लगा। यानी

थे। पर इनकी गुण-ग्राहकतापर रीझकर उन्होने इनका काफी गुण-गान किया। रहीम इतने निरभिमानी और विनयशील थे कि गंगके पूछनेपर :—

सीखे कहाँ नवाबजू! ऐसी दैनी दैन।
ज्यों-ज्यों कर ऊँचे करो, त्यों-त्यों नीचे नैन॥

सकुचाते हुए उत्तर दिया :—

देनहार कोऊ और है, भेजत सो दिन-रैन।
लोग भरम हमपर धरें, याते नीचे नैन॥

इनके एक दर्जनके करीब ग्रन्थ पाये जाते है। इनकी कविता का नमूना—

थोरो किए बड़ेनकी, बड़ी बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमंतको, गिरिधर कहे न कोय॥
खैर, खून, खाँसी, खुसी, बैर, प्रीति, मधुपान।
रहिमन दाबे ना दबै, जानत सकल जहान॥
रहिमन चाक कुम्हारको, माँगे दिया न देइ।
छेदमें डंडा डारिकै, चाहै नाद लइ लेइ॥
फरजी साह न ह्वै सकै, गति-टेढ़ी तासीर।
रहिमन सूधी चालते, प्यादो होत वजीर॥
जेहि अंचल दीपक दुरचो, हन्यो सो ताही गात।
रहिमन कुसमयके परे, मित्र शत्रु ह्वै जात॥
उरग, तुरंग, नारी, नृपति, नीच जात, हथियार।
रहिमन इन्हें सँभारिये, पलटत लगे न वार॥

अमीर खुसरोकी निर्विकार भाषा रूपी बालिकाको 'वली'ने अरबी-फारसी शब्दों और भावोंके वस्त्रोंमे लपेट दिया। इसीलिये 'वली' उर्दूके आदि कवि माने जाते हैं। किन्तु वलीके जीवनकालमे इस अभारतीय भाषाका नाम उर्दूकी बजाय 'रेख्ता' शब्द प्रचलित था। वलीका समय ई० स० १६६८से १७४४ तक माना गया है। हिन्दी-हिन्दवीके बजाय भाषाके लिये 'रेख्ता' शब्दका प्रयोग सबसे पहले 'सादी' दक्खनीके कलाममे मिलता है। शाह मुबारिक, आबरू, मीर, सौदा, गालिब, जुरअ़त और कायमने भी अपनी कवितामें 'रेख्ता' शब्दका ही प्रयोग किया है।[1]

रेख्ता

तुर्की भाषामें 'उर्दू' लश्कर (छावनी)को कहते हैं। प्रारम्भमें मुगल और तुर्क बादशाह छावनीमें रहा करते थे। उनका दरबार और रनवास सब लश्करोमें ही होता था। इस विशेषताके कारण वहाँकी मिली-जुली भाषा—लश्करी या उर्दू जबान भी कहलाने लगी। दिल्लीमे लाल किलेके सामने शाही छावनी थी, उसका नाम उर्दूका बाजार पड़ गया, जो आजकल भी प्रचलित है। फौजमे हर प्रान्त, हर मजहब और हर जातिके लोग रहते थे, इसलिए उनकी उस मिली-जुली खिचडी भाषाको लोग लश्करी या उर्दू ज़बान कहने लगे। नवाब शुजाउद्दौला और आसफुद्दौलाके शासनकाल (१७९७ ई०)में सैयद अताहुसेन 'तह-सीन,'ने 'चहारदरवेश'का तर्जुमा किया था। उसमे उन्होंने अपनी ज़बानके लिए—'रेख्ता', 'हिन्दी' और 'जबान उर्दू-ए-मोअल्ला'—

उर्दू

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जिय सोस।
महिमा घटी समुद्रकी, रावन बस्यो परोस॥

[1] हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी पृ० १९-२२।

इन तीन नामोंका प्रयोग एक ही प्रसग और एक ही पृष्ठमें साथ-साथ किया है। केवल 'उर्दू' शब्द उनकी किताबमें कही नही पाया जाता। यदि उर्दू शब्द उस युगमें व्यापक और रूढ़ हो गया होता तो 'तहसीन' साहब इन तीन शब्दोके झमेलेमे न पड़कर केवल उर्दू शब्दसे काम चला लेते। इससे मालूम होता है कि उर्दू शब्दका प्रयोग इस कालमें अच्छी तरहसे नही हुआ था। अलबत्ता इस समयको उर्दू शब्दके प्रचारका आरम्भकाल कहा जा सकता है। इसके बाद शनैः-शनैः यह शब्द भाषाके अर्थमें प्रयुक्त होने लगा।[१]

उर्दू-पद्य—का प्रारम्भ गजलसे हुआ। फिर धीरे-धीरे कसीदे, मसनवी, मर्सिया, नज्म, गीत, सॉनेट (१४ पक्तिका लघु छन्द), आजाद नज्म (मुक्ति छन्द) भी लिखे जाने लगे। उर्दू-गजलमें १६ बहरे (छन्द) होती है।

ग़ज़ल—का अर्थ है इश्किया अशआर कहना, औरतोका वर्णन करना। यानी वह कविता जिसमें :—

वस्ल	=	मिलन
फिराक़	=	विरह
इश्क़	=	प्रेम
इश्तयाक	=	चाहत
हसरत	=	कामना, आशा
यास	=	निराशा—

का वर्णन हो। गजलको हिन्दीमे शृगारिक कविता कहा जा सकता था, यदि गजलमें एकाकी होनेका दोष न होता। हिन्दी शृगारिक कविताके प्रेमी और प्रेमपात्र दोनो समान रूपसे प्रेम अथवा विरह-ज्वालामे सुलगते रहते है। उर्दू-गजलमें केवल पुरुप इश्को-हिज्रके

---

[१] हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी, पृ० २५-२८।

सदमे उठाता रहता है। स्त्रीको इस ओर लेशमात्र भी लगाव नही होता।

उर्दू-गजलका आशिक़ ठीक उन दिलफेंक छोकरोंकी तरह होता है, जो कॉलेजकी छोकरियो, राह चलती युवतियों, पास-पड़ोसकी बहू-बेटियो, सीनेमाएक्ट्रेसो पर दिल दे बैठते है; और उन बेचारियोको पता भी नहीं होता कि हमपर कितने कामुक छोकरे दिल निछावर किये बैठे है। जब यही इकतरफ़ा इश्क बढ़ने लगता है तो जुनूँ (उन्माद-पागलपन)की शक्ल अख्तियार कर लेता है। राह चलते हुए आवाजें कसना, कुचेष्टायें करना, पत्र लिखना, मित्रोंमें उसके सौन्दर्य और नख-शिखका वर्णन करना, अपनी इस इकतरफा मुहब्बतको उसकी लापरवाही, बेवफाई समझना, उसे प्राप्त करनेके हथकण्डे तलाश करना, उसके वास्तविक प्रेमी या पतिको उदू (प्रतिद्वन्द्वी) समझकर उसकी बर्बादीके उपाय सोचना; अपनी कामुकताके कारण ऐसी हरकतें करना जिससे अपने और उसके कुटुम्ब दोनो बदनाम होकर, परेशानियोमे मुब्तिला हो जाएँ, यही गज़लमें वर्णित आशिकका काम है।

उर्दूके प्रसिद्ध आलोचक डा० अन्दलीब शादानी एम० ए०, पी-एच० डी० का कथन है कि—"जो आशिक और माशूक दोनोंके दिलोंमे यकसाँ सुलग रही हो, उसीको मुहब्बत कहा जा सकता है। इकतर्फा मुहब्बत जुनूँ है, मुहब्बत नही।"[1] और इस दुतर्फा मुहब्बतका वास्तविक आनन्द तभी आता या आ सकता है, जब कि इसका प्रारम्भ स्त्रीकी ओरसे हुआ हो। क्योंकि यदि स्त्री प्रेम करती है तो वह सैकडो उपायों द्वारा प्रेम जाहिर करके प्रेमपात्रको अपनी ओर आकर्षित कर सकती है। मिलनका कोई न कोई मार्ग खोज निकालती है; और यदि

[1] आजकल-उर्दू (१५ अप्रैल १९४६) पृ० ११-१२मे प्रकाशित जनाब अताउल्लाह पालवीके लेखसे।

पुरुष इस रोगमे पहले फँसता है, तो वह तिल-तिलकर घुटता है, उसे सफलता बहुत कम प्राप्त होती है।[1]

उर्दू-ग़जलमें माशूक (प्रेमपात्र) तीन रूपमें दिखाई देता है। :—

(१) स्त्री, (२) संदिग्ध, स्त्री है या पुरुष, (३) स्पष्टतया पुरुष।

१—जिन अशआरमें माशूकका स्त्रित्व प्रकट हो, ऐसे शेर बहुत कम है।

२—कुछ अशआर ऐसे है, जिनसे स्पष्ट प्रकट नही होता कि माशूक स्त्री है या पुरुष।

३—सबसे अधिक संख्या ऐसे अशआरकी है, जिसमें माशूक साफ सरीहन मर्द नज़र आता है।

हिन्दी शायरीमे भी माशूक (प्रेमपात्र) मर्द ही नज़र आता है। किन्तु गजल और शृगारिक कवितामें बहुत बड़ा अन्तर ये है कि हिन्दी कवितामे वर्णित आशिक स्त्री और माशूक पुरुष होता है। गजलमे आशिक स्त्री न होकर पुरुष होता है, और माशूक भी अक्सर पुरुष। स्त्रीकी ओरसे पुरुषके लिए या पुरुषकी ओरसे स्त्रीके लिए प्रेम होना तो स्वाभाविक है; किन्तु पुरुषकी ओरसे पुरुषके लिए कामवासनाकी इच्छा 'अमरद[2]-परस्ती' (अप्राकृतिक व्यभिचार) है। और उसपर भी तुर्रा यह कि यह अप्राकृतिक प्रेम भी दुतर्फा न होकर इकतर्फा होता है। उर्दू-गजलका माशूक अपने आशिकसे घृणा और उपेक्षा रखता है। आशिकके अस्तित्वको अपने लिए अनिष्टकर समझता है।[3]

उर्दू शायरीका जन्म भारतकी अधःमुखी दशामें हुआ। इसलिए

---

[1] आजकल-उर्दू (१५ अप्रैल १६४६) पृ० ११-१२मे प्रकाशित जनाव अताउल्लाह पालवीके लेखका भावानुवाद।

[2] अमरद—जिसकी मूँछ न निकली हो—लौंडा, नौ उम्र।

[3] आजकल-उर्दू (१५ अप्रैल १६४६) पृ० ११-१२ में प्रकाशित जनाव अताउल्लाह पालवीके लेखका भावानुवाद।

इसमें उस समयके सभी—विलासिता, अकर्मण्यता, कायरता, प्रतिद्वन्द्विता आदि—अवगुण प्रवेश कर गए। बादशाहों, नवाबोका कुपित होना—उनके आश्रित शायर, उसे माशूकका रूठना तसव्वुर करके झूठा आत्मसतोष करते रहे। राजनैतिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय होनेके कारण शाही दरवारोमे किसीकी भी स्थिति स्थायी नही थी। हर एक एकदूसरेको नीचा दिखाने और मिटानेमे लगा रहता था। एक दूसरेके खिलाफ षड्यन्त्र रचता रहता था। बादशाह, नवाब और रईस हियेके अन्धे और कानके कच्चे होते थे। इनके यहाँ अक्सर निरपराध सजा और धूर्त्त तथा गुनहगार पुरस्कार पाते थे। जो भी कूटनीति, धूर्त्तता, जालसाजी, षड्यन्त्र और चापलूसीमें उस्ताद होता वही शाही दरबारोमे इज्जत पाता, और जो इन हुनरोमे दक्ष न होता, वह जलील और रुसवा होता। यहाँ तक कि दरबारसे निकाल दिया जाता। इस दरबारको शायरोने 'महफिले माशूक' और बेइज्जतीसे निकलवानेवाले मुँह लगे मुसाहबोको उदू (प्रतिद्वन्द्वी) कहकर दिलकी जलन बुझानेका प्रयास किया है:—

तेरी महफ़िल से उठाता ग़ैर मुझको क्या मजाल।
देखता था मै कि तूने ही इशारा कर दिया॥

—'हसरत' मोहानी

इस तरहके माशूक जो महफिलसे निकाल देनेका इशारा कर दे और गैर (प्रतिद्वन्द्वी) तत्काल निकाल दे; बादशाहों, नवाबो, रईसो या चरित्र-भ्रष्ट ज़नाने छोकरोके सिवा कोई और नही हो सकता। किसी सद्गृहस्थकी कन्या या स्त्री इस्लामी दुनियामें ऐसी नही हुई जो अनेक आशिकोके झुण्डमे बैठकर बेहयाईको भी हया आ जानेवाली इस तरहकी हरकत करे। इतना गया-गुजरा जीवन और व्यवहार वेश्याका भी नही होता। वह पैसेके लिए अनेक पुरुषोके समक्ष गाती, नाचती और परिहास करती है, सभीको भरमाती है। किसीको भी महफिलसे उठनेका विचार

तक नही लाने देती। जो पैसा नही दे पाता, उससे उपेक्षा कर लेती है और वह स्वय ही फिर नही आता। यदि कोई बेहया आया भी तो चुपचाप बूढी नायिका न आनेके लिए संकेत कर देती है और कह देती है "हुजूर! इस पापी पेटके लिए हम अस्मत-फरोशी जैसा गुनाह करती है। अगर उसीको कुछ न मिला तब बताइए यूँ गुजर कब तक होगी ?" भरी महफिलमें जिससे तय हो जाता है उसे लेकर वेश्या स्वय ही महफिलसे उठकर अपने दूसरे कमरेमें चली जाती है और बाकी तमाशबीन नाच-गाना सुनकर यथास्थान चले जाते हैं। ऐसे हरजाई और उर्दूकी कल्पना तो शाही दरबारों और वहाँके कुचक्रियोंपर ही सही फिट होती है।

गजलमे कमसे कम १ मतला ३ शेर और १ मकता आवश्यक समझा जाता है। मतला गजल के प्रारम्भमें होता है। इसके दोनो मिसरे (चरण) काफिया रदीफसे सयुक्त होते है :—

मतला

> कमर बाँधे हुए चलनेको याँ सब यार बैठे हैं।
> बहुत आगे गये बाकी जो हैं तैयार बैठे हैं॥

यह मतला है क्योकि इसके ऊले (पहले) मिसरेमे **यार** और सानी (द्वितीय)मे **तैयार** काफिये हैं। और दोनो मिसरोमे **बैठे है** रदीफ मौजूद है। **काफ़ियेको** तुक कहा जा सकता है। यार, तैयार, वेजार, दो चार, नाचार, इस गजलमे काफिये हैं। **रदीफ़** काफ़ियेके वाद रहती है और यह ज्यो की त्यो रहती है, काफियेकी तरह वदलती नहीं। इस गजलमे वैठे हैं रदीफ़ हैं।

शेरमे भी मिसरे दो ही होते हैं। पहले मिसरेमे काफिया और रदीफ न होकर केवल दूसरे चरणमे होते हैं :—

शेर

> न छेड़ ऐ निगहते वादे वहारी! राह लग अपनी।
> तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम वेजार बैठे हैं॥

मक़्ता

गजलमे शायरका तख़ल्लुस (उपनाम) जिस शेरमे हो उसे मक़्ता कहते हैं। मतले और शेर तो गजलमे अधिक लिखे जाते हैं परन्तु मक्ता हर गजलमे एक ही होता है और वह गजलके अन्तमे रहता है :—

भला गर्दिश फ़लककी चैन देती है किसे 'इन्शा' ?
गनीमत है कि हम-सूरत यहाँ दो चार बैठे हैं ॥

यह मक़्ता है क्योकि इसमे 'इन्शा' शायरका नाम आया है।

रेख़्ती

ग़ज़लमें प्रेमका इजहार अक्सर पुरुषकी ओरसे होता है। कुछ लोगोने औरतोके जज्बात (भावो)को गजलमे समोनेका असफल प्रयत्न किया। वे भाषा तो जनानी लिख सके, परन्तु भाव स्त्रियोचित न ला सके, और उसमे ऐसी हास्यास्पद कविता की, कि वह उर्दू-साहित्यका कलक बनकर रह गई। इसी अश्लील जनानी कविताको रेख़्ती कहते थे।[1]

---

[1] हिन्दी क़वितामे स्त्रियोचित भावोके मर्मस्पर्शी स्थलोसे प्रभावित होकर जनाब अताउल्लाह पालवी फर्माते हैं। :—

"हिन्दी शायरीको दुनियाकी तमाम जबानोकी शायरीमे महमूद और मुमताज (श्लाध्य और श्रेष्ठ) दर्जा मिलनेकी महज वजह यह थी कि वह अपने जज्बोअसर (भावव्यक्त करने और मर्मस्थलको छूने)मे सारी दुनियाकी शायरीसे यगाना (अनुपम, बेजोड) और मुनफ़रद (निराली) थी। और इसका सबब सिर्फ यह था कि हिन्दीमे जज्वाते मुहब्बत (प्रेम-भाव) औरतकी तरफसे और औरतकी जबानसे अदा होते थे। और इसमे मुख़ातिब माशूक (यानी हिन्दी कवितामे वर्णित प्रेम-पात्र) मर्द बल्कि शौहर हुआ करता था। जिस वजहसे वह 'मुहब्बत' एक तरफ़ तो फितरी (स्वाभाविक) तसलीम की जाती थी और दूसरी जानिब इकतर्फा होनेके इल्जामसे भी बरी थी।

हिन्दी-हिन्दवी शब्दके बाद और उर्दू शब्द रूढ़ होनेसे पूर्व भाषाके लिए 'रेख़्ता' शब्द व्यवहृत होता था। चूँकि उन दिनों गद्यकी अपेक्षा पद्य ही अधिक लिखा जाता था, इसलिए 'रेख़्ता' शब्द पद्यके लिए रूढ़ हो गया था। बादमें यही रेख़्ता शब्द 'उर्दू-गज़ल'में परिवर्त्तित हो गया। रेख़्तामें पुरुषोंके प्रेम, विरह आदिका वर्णन रहता था, अतः

बिला शुबह जज्वाती हैसियत (भावमय होने)से हिन्दीके यह अशआर हद दर्जेके चुटीले अलबेले और रसीले होते थे। और इस वजह से उनको जो दर्जा दुनियाकी शायरीमें मिला वह इसके मुस्तहक (अधिकारी) थे। (आजकल-उर्दू १५ अप्रैल १९४६, पृ० ११)

उर्दू-अदीव 'बट' साहव लिखते हैं :—

'हिन्दी ज़बानमे तरन्नुम[१] और मौसीकी[२] इस कदर है कि किसी दूसरी जवानको मयस्सर नही। हिन्दीका शायर मामूलीसे मामूली वातको भी निहायत ही पुरलुत्फ अन्दाजमे वयान करता है। मुख़्तसिर अल्फाजमे वहुतसे मतालिव अदा किये जा सकते हैं। डाक्टर अजीमके नजदीक तो "भाषाकी शायरी हुस्नो इश्क, फलसफा[३], और खुद्दारी,[४] मनाजिरे[५] कुदरतकी मुसव्वरी,[६] विरोग[७]मौसीकी, और दर्दोगमकी एक दिलगुदाज[८] तसवीर है।" शम्स उलउल्मा मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद ने तो यहाँ तक कह दिया कि—"सादगी, इजहार और असलियतको उर्दू दाँ भाषासे सीखें। जज्वातकी सादगी शायरीकी हकीक़ी रूह[९] है और इसमे हिन्दी शायरीको कोई ज़बान नही पहुँच सकती।"[१०]

---

[१] गाना, गीत; [२] संगीत; [३] दर्शन; [४] स्वाभिमान; [५] प्राकृतिक दृश्य; [६] कला, [७] विरह-संगीत; [८] हृदयको द्रवित करने-वाली; [९] आत्मा।

[१०] हिन्दीके मुसलमान शायर, पृ० १५।

स्त्रियोचित भाव-भाषावाली कविताको 'रेख़्ती' नाम दिया गया। हमने ऐसी कुरुचिपूर्ण कविताको प्रस्तुत पुस्तकमें स्थान नहीं दिया है। नमूना देते हुए भी जी खराब होता है :—

दस घर तो छुट चुके है, कहाँ तक करूँ ख़सम।
किस जा बिठाये देखिये, अब आस्माँ मुझे॥

—नाज़नीन

क़सीदा—जिसमे १५से अधिक चरण हो और जिसमे किसीकी प्रशसा आदि की गई हो, उसे कसीदा कहते है। बादशाहोके आश्रयमे रहनेवाले कवियोको—जन्मगाँठ, विजयोत्सव, तथा अनेक ख़ुशीके अवसरोपर बादशाहो, नवाबोकी प्रशसात्मक कविता करनी पड़ती थी, उसीको कसीदा कहते थे। जो कवि कसीदा लिखनेमे जितना निपुण होता था, वह उतनी ही अधिक प्रतिष्ठा पाता था। यहाँ तक कसीदा न लिख सकनेवाला कवि, कवि ही नही समझा जाता था। कसीदा लिखनेमे 'सौदा,' 'इन्शाँ,' और 'जौक'-काफ़ी सिद्धहस्त हुए है। हमे प्रशसात्मक चापलूसी कवितासे नफरत है। अतः प्रस्तुत पुस्तकमे कसीदेका उल्लेख नही हुआ है।

मसनवी—उस कविताको कहते है जिसमे दो चरण एक साथ रहते है, और दोनोमे तुकान्त मिलाया जाता है। किसीकी जीवनी या कल्पित कथा मसनवीमे होती है। उर्दूमे प० दयाशंकर 'नसीम' और 'मीरहसन'-की मसनवी काफी प्रसिद्ध है। एक ज़माना हुआ जब इन दोनो मसनवियोके पक्ष-विपक्षमे आलोचनाओकी एक वाढ-सी आगई थी, और उर्दू-दुनियामे काफी कटुता उत्पन्न हो गई थी। मसनवी लिखनेका रिवाज अब प्रायः वन्द-सा हो गया है। वर्त्तमानमे इस तरहका उल्लेख जिस ढगसे किया जाता है, उसकी झाँकी **नवप्रभात** परिच्छेदसे मिलने लगेगी।

मर्सिया—रंजोगमका वर्णन, मृत्यु सम्वन्धी उल्लेख जिस कवितामे हो उसे मर्सिया कहते है। विशेषतया हजरतअलीके पुत्रोकी शहादत

(वीर-गति) सम्बन्धी जो कविताएँ लिखी जाती है, उन्हें मर्सिया कहते है। मर्सियोमे युद्धका ओजस्वी वर्णन, शहीदोकी वीरताका रोमांचकारी गुणगान, करबला (जहाँ यह युद्ध हुआ उस युद्धस्थल)का करुण चित्र होता है। मर्सियोके 'अनीस' और 'दबीर' श्रेष्ठ कवि हुए है। मर्सिये केवल एक सम्प्रदाय (मुसलमानोंमे 'शिया' फिरके)से सम्बन्ध रखते है। सार्वजनिक हित और रुचिसे नही, इसलिए प्रस्तुत पुस्तकमे इनका उल्लेख नही किया है।

नात—नातका अर्थ है प्रशसा या खूबी बयान करना। मुसलमान कट्टर मजहबी होते है। इसलिए प्रारम्भसे ही प्रेम-विरह-वर्णनकी तरह धार्मिक-उल्लेख भी गजलोमे होने लगा; हजरत मुहम्मदकी प्रशंसा, ईश्वर-भक्ति या इस्लामका गुण-गान जिन गजलोमे होता है वे नातिया गजल कहलाती है। यूँ तो हर शायर अपने दीवानके प्रारम्भमे मगला-चरणस्वरूप नातिया ग़ज़ल लिखते ही थे; परन्तु वहुतसे कट्टरपन्थी केवल नातिया गजल ही लिखते थे। यह रग 'अमीर मीनाई' तक रहा। सम्भवत. 'अजीज' लखनवीका 'गुलकदा' पहला दीवान है, जो नातिया गजलसे कतई मुक्त है।

तसव्वुफ़—तसव्वुफका अर्थ है सव कामनाओसे रहित होना और सव वस्तुओमे ईश्वरका अस्तित्व समझना। यह सूफियोका सिद्धान्त है। सूफ़ी दिव्य प्रेमके भिक्षुक है। न इन्हे कुफ्रसे मतलव है न ईमानसे। क्योकि यह दोनोको ढोग मानते है। वे सव वन्धनोको तोड़कर अपने प्रियतम 'ईश्वर'की खोजमे ही तन्मय रहना चाहते है। सूफीके निकट हिन्दू-मुसलिम, जाति-पाँतिका कोई मूल्य नही। सत्यकी खोज, ईश्वर-प्रेम संसारसे विराग उसका ध्येय है। ईश्वर उसका माशूक, भक्ति उसकी शराव, और जहाँ वैठकर ईश्वरसे वह साक्षात्कार कर सके, वह उसका मयखाना, अथवा सराय है। धीरे-धीरे इस सूफ़ी सिद्धान्तका प्रसार वढ़ने लगा। यहाँ तक कि उर्दू-शायरोंने इसे इस तरह अपना लिया कि, वह

उर्दू-शायरीमे घुल-मिलकर इस्लामी सिद्धान्त-सा मालूम होने लगा। हालाँ कि सूफी और मुस्लिम दर्शन मे बहुत बड़ा अन्तर है। मज़हबी विश्वासो के प्रति विद्रोह, मजहबी लोगो—नासेह, शेख, ज़ाहिद—के प्रति उपहास की भावना, यह सब उर्दू-शायरी को सूफी-सिद्धान्त की देन है।

सूफी-दर्शन की झलक प्रस्तुत पुस्तक मे यत्र-तत्र दिखाई देगी। यहाँ हम केवल फ़ारसी के अमर कवि 'हाफिज' की अन्तिम अभिलाषा का उल्लेख किये देते है। इससे सूफी-सिद्धान्त सरलतासे समझमे आ सकता है :—

"यदि अधिक मदिरा-पान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी समाधि तक एक शराबी के ही भेषमें लाना। जहाँ चारो ओर अगूर की बेल हो, और जो किसी सराय के बगल मे हो, वहाँ मेरी कब्र बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियो के कन्धे पर ही मेरी अर्थी ले जाना। मेरी मट्टी को लाल मदिरा से नम किया जाय और मेरे शोक मे वही तीन तारो वाली सितार बजाई जाय। यही मेरी अन्तिम इच्छा—वसीयत है"[1]

रुबाई—गजलके प्रत्येक शेरमे पृथक-पृथक भाव रहते है। यदि-दो शेरो मे एक ही भाव आये तो उसे रुबाई कहते है। और रुबाई की बहरे गजलो से जुदा होती है। फारसी मे उमरखय्यामने इतनी मन-मोहक रुबाइयात लिखी है कि उन्हे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिल चुकी है। हजारो भिन्न-भिन्न भाषाओमे सुन्दरसे सुन्दर सस्करण निकल रहे है। बतौर बानगी—

> माओ मैओ माशूक दरीं कुंजे खराब।
> जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराब॥

---

[1] ईरानके सूफी कवि, पृ० ३१७

फ़ारिग़ जे उमीदे रहमतो बीमे अज़ाब।
आज़ाद जे ख़ाकओ वादो जे आतिशो आब ॥

(इस सुनसान बीहड़में—मैं हूँ, मदिरा है और मेरी प्यारी है। प्राणोको, दिलको, प्यालेको तथा वस्त्रोंको मदिराके लिये गिरवी रख दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन्! कृपाकर' और न उसके क्रोधका ही भय है। मै इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि चारों भूतो से पृथक हूँ।)

हर दिल कि दरूँने ओ मोहब्बत बसिरिश्त।
गर साकिने मस्जिदस्त वर अहले कुनिश्त ॥
दर दफ़्तरे इश्क़ नामे हर कसके नविश्त।
आज़ाद जे दोज़ख़स्त वो फ़ारिग़ जे बहिश्त ॥

(जिस हृदयमे प्रेमकी लगन लग गई, वह चाहे मस्जिदमे निवास करता हो, चाहे बुतख़ाने (मन्दिर)में, जिस किसीका भी नाम प्रेमियोकी सूचीमे आगया, उसको न तो नरककी ही चिन्ता है और न स्वर्गकी इच्छा[1])

उर्दूमे 'जोश'की रुबाइयाँ काफी लोक-प्रिय है। इसी पुस्तकके **'जागरण'** परिच्छेदमे उनकी झलक मिलेगी।

तारीख़—किसीके जन्म, या मृत्युपर या अन्य स्मरण योग्य अवसरपर जो शेर कहा जाता है उसे तारीख़ कहते है। उसमे ऐसे शब्दोका प्रयोग किया जाता है जो भावसूचक भी हो और घटनाके वर्षका भी परिचायक हो। उर्दूके अक्षरोंके साथ गिनतीके अंक नियत है उन्हीको जोडनेसे सन्-संवत् मालूम हो जाता है। मुसलमानोमे जन्म और मृत्युपर तारीख़ कहनेका बहुत चलन है। जितनी अधिक जिसकी ख्याति होती है, उतनी

---

[1] ईरानके सूफी कवि, पृ० ५३

ही अधिक संख्यामें लोग उसकी तारीख लिखते है। यहाँ तक कि वहुतसे तो अपने वच्चोंका नाम ही तारीखी रखते है। मरनेका तारीखी शेर कब्रपर लिख दिया जाता है। उर्दूके प्रसिद्ध कवि प० वृजनारायण 'चक-वस्त'के स्वर्गवासपर लोगोने काफी तारीखें कहीं। एक साहवने उनके ही एक मृत्यु सम्वन्धी मिसरेपर तारीख कहके कमाल कर दिया :—

उनके ही मिसरेमें तारीख है हमराह 'अजा'।
"मौत क्या है, इन्हीं अजजाका परेशाँ होना"॥

नज्म—नज्मका अर्थ है मोतियों आदिको तागेमे पिरोना। नज्मके वानी 'नजीर', 'हाली' और 'आजाद' माने गये है। गजलमें समूचे भावको एक ही शेरमे लाना पडता है, और इस तरह पूरी गजलके लिये अनेक विचारो और कल्पनाओंकी आवश्यकता रहती थी। जहाँ हजारो शायर हों वहाँ नित नये विचार सूझना असम्भव है। हिर-फिरकर शब्दोंकी कतरव्योंतमे उन्ही पुराने विचारोसे शायरीको जीवित नही रखा जा सकता था। दूसरे, गजलमे काफिया, रदीफ और व्याकरण आदिके ऐसे वन्धन थे कि उसके सहारे इस इन्कलावी युगके साथ चलना कतई नामुम-किन था। किसी घटनाको धाराप्रवाह कहनेकी गजलमे गुंजाइश न थी। इसीलिये नज्मका आविर्भाव हुआ। धीरे-धीरे नज्मोमे भी अनेक तरहके विकास हुए। अव तो १४ लाइनके लघु छन्दोमे, मुक्ति छन्दोमे, गीतोंमे उर्दू-शायर अपने भाव नज्म करने (पिरोने) लगे है। प्रस्तुत पुस्तकमें 'नवप्रभात' परिच्छेदसे इस तरहकी झाँकी मिलती है।

१५ अक्तूबर १९४६

ख़ुदा से जुदा

[भ्रामक शब्द]

नुक्तेके हेर फेरसे उर्दूमे खुदासे जुदा पढ़ लिया जाता है। बकौल अकबर इलाहाबादी तनिक-सी भूलसे—"कौसिलोमे सीट चाहिए" के बजाय "घोसलोमे बीट चाहिए" बन जाता है। भाषाकी अनभिज्ञतासे ऐसी मोटी और भद्दी भूल हो जाती है कि बाज दफा बडी मुँहकी खानी पड़ती है। सन् ३४ या ३५का मेरे सामनेका वाकया है, देहलीके मिशन कॉलेजमे बडे जोशो-खरोशके साथ मुशायरेकी तैयारियाँ हुई थी। हॉल खचाखच भरा हुआ था। नियत समयसे कुछ विलम्ब हुआ तो जनता तालियाँ पीटने लगी। तब आवेशमे मुशायरेके संयोजक बोले—"आप लोग ताम्मुल कीजिए अभी डाक्टर....साहबके अहतलाममे मुशायरा शुरू होनेवाला है। लोगोने सुना तो मारे कहकहोके आस्मान सरपर उठा लिया। चारो तरफ़से आवाजे कसी जाने लगी। संयोजक साहब भुनभुनाते हुए स्टेजसे खिसक लिये। तब मेरे ही सामने मेरे एक मित्रने उनसे कहा कि "भाईजान! आप अहतमाम (प्रबन्ध) के बजाय अहतलाम (स्वप्नदोष) कह गये थे। जनता तालियाँ न पीटे तो क्या करे?"

अतः हम यहाँ पाठकोकी जानकारीके लिए थोड़ेसे ऐसे शब्द दे रहे है जिनके तनिकसे हेर-फेरसे अर्थका अनर्थ हो जाता है। आशा है पाठक इससे लाभ उठाएँगे।

अजल	=	मृत्यु
अज़ल	=	अनादिकाल
अमीन	=	कुर्क़ी और नाप करनेवाला सरकारी कर्मचारी

आमीन	=	ख़ुदा करे ऐसा ही हो
अर्ज़	=	सम्मान, ओहदा
अर्ज	=	निवेदन, पृथ्वी
अर्श	=	आठवाँ स्वर्ग जहाँ ख़ुदा रहता है
असरार	=	रहस्य, गुप्त बात
इसरार	=	आग्रह, हठ
आज़ा	=	शरीरके अंग और जोड़
आजा	=	आओ
अहतमाम	=	प्रयत्न, व्यवस्था, देखरेख
अहतलाम	=	स्वप्नदोष
कमर	=	पीठ
क़मर	=	चाँद
कर्ज़	=	गैंडा
क़र्ज़	=	ऋण
कारी	=	जो अपना काम ठीक तरह से कर दिखावे, घातक, जैसे कारी-तीर
क़ारी	=	कुरान पढ़नेवाला
काश	=	ईश्वर करे, ऐसा हो जाय
क़ाश	=	फल आदिका कटा हुआ लम्बा टुकड़ा, फाँक
गल्ला	=	पशुओंका समूह, झुण्ड
ग़ल्ला	=	अनाज
गार	=	करनेवाला
ग़ार	=	गहरा, गड्ढा
गुल	=	फूल, दीपककी बत्तीके ऊपरका जला हुआ अंग
ग़ुल	=	शोर, धूमधाम

गोर	=	क़ब्र, समाधि
गोर	=	कन्धारके पास एक देशका नाम
गौर	=	सोच विचार, ध्यान
चर्ख़	=	आस्मान
चरखा	=	सूत कातनेवाला यत्र
जंग	=	लड़ाई
जंग	=	लोहेपर लगनेवाला मोर्चा
जद	=	दादा, नाना
जद	=	चोट, लक्ष्य
जफर	=	यंत्र और तावीज़े आदि बनानेकी कला
जफ़र	=	विजय
ज़बर	=	बलवान
जब्र	=	अत्याचार, दबाव
जबान	=	जीभ
जवान	=	युवक
जर	=	खीचना
ज़र	=	धन
जरी	=	वीर
ज़री	=	सोनेके तारों आदिसे बना हुआ काम
जलील	=	बड़ा, प्रतिष्ठित
जलील	=	तुच्छ, अपमानित
जानी	=	जानसे सम्बन्ध रखनेवाला, जैसे जानी-दुश्मन
ज़ानी	=	व्यभिचारी
जारी	=	बहता हुआ, प्रवाहित
ज़ारी	=	रोना,-धोना
जिन	=	भूत-प्रेत

तबस्सुर = ध्यानपूर्वक देखना
तेज = ओज, दीप्ति, (यह शब्द हिन्दी है)
तेज़ = फुर्तीला, तीक्ष्ण
दरबान = पहरेदार
दरमान = इलाज
नाज = अन्न
नाज़ = अभिमान, नखरा
वरक़ = पृष्ट, सफा, (दोनों ओरका)
वर्क़ = बिजली
शफ़ा = तन्दुरुस्ती
सफ़ा = स्वच्छ
शफ़ी = सिफारिश करनेवाला
सफ़ी = पवित्र
शर = शरारत
सर = सिर
शाकी = शिकायत करनेवाला
साक़ी = शराब तक़्सीम करनेवाला
शान = तड़क-भड़क
सान = धार, समान
शमा = चिराग़
समा = आकाश
शायाँ = उपयुक्त
शाया = प्रकाशित
शारअ = आम सडक
शारह = टीकाकार
शाल = दुशाला

साल	=	वर्ष
शाही	=	बादशाहोंका-सा
शाही	=	बाज पक्षी
शबाब	=	सौन्दर्य
सवाब	=	पुण्य
संग	=	पत्थर
सग	=	कुत्ता
सख़ी	=	दानी
सखी	=	सहेली
शहर	=	बड़ा नगर
सहर	=	प्रातःकाल
सहरा	=	जंगल
सेहरा	=	दूल्हाके मुँहपर फूलों या मोतियोंकी जो झालर डाली जाती है
सेहर	=	जादू
साई	=	प्रयत्न करनेवाला
साईं	=	फकीर
साकित	=	मौन
साक़ित	=	त्यक्त, निरर्थक
साकिन	=	निवासी
साक़िन	=	वह दुश्चरित्रा स्त्री जो भंग और हुक्का पिलाकर जीविका-उपार्जन करे
साज	=	सागूनका दरख़्त, तीतरकी तरह एक पक्षी
साज़	=	सजावटका सामान, बाजे वगैरह
हज़्म	=	मोटाई
हज़्म	=	पेटमें पचा हुआ

हव्वा = आदमकी स्त्री

हब्बा = अल्प अंश

इसके अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे है, जिनका अक्सर अशुद्ध उच्चारण होता है, जैसे कि—

शुद्ध	अशुद्ध
ज़ुकाम	जुखाम
फ़सील (किलेकी प्राचीर)	सफील
सबील-(प्याऊ)	सलीब, सफील
ख़ालिस	निख़ालिस
लुत्फ़	लुफ़्त
लफ़्ज	लब्ज़
रौनक	रवन्नक
हैरान	हरियान
दरअसल	दरअसलमें
रईस	रहीस
साईस	सहीस
सानी	शानी
मलवा	अमला
मज़ा	मजा
ज़ुल्म	जुलम
जलवा	ज़लवा
चादर	चद्दर
नुसख़ा	नुस्ख़ा

२० अक्तूबर १९४६

तरंग
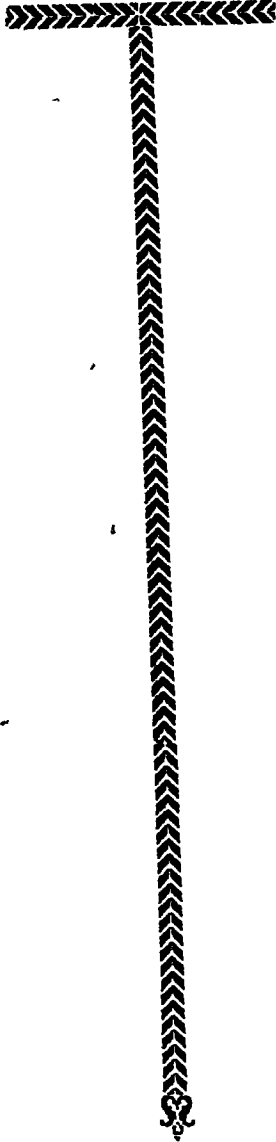
: २ :

[उर्दू-शायरीका मर्म]

[उर्दू-शायरीका मर्म]

कवि या लेखक जो कुछ लिखता है उसे हर जगह उसका निजी विचार या आप-बीती समझ लेना बहुत बड़ी भूल है। लेखक या कवि अपने चारो ओर जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है, या जरूरत महसूस करता है, उसे अपने रंगमे चित्रित कर देता है। यदि उसी चित्र-को कलाकारका चित्र समझ लिया जाय तो इससे अधिक कलाकारका और क्या अपमान होगा ?

इसी तरहकी समझसे तग आकर प्रसिद्ध हास्य-लेखक मिर्जा अजीमवेग चगताईने उर्दू-साहित्यके आलोचक डा० अन्दलीव शादानी एम० ए० पी०-एच०-डी०को ६ अक्तूबर १६४०के पत्रमे लिखा था :—

. . . "मै अफ़साने लिखता हूँ। कोई गुज़रा हुआ वाकिया आँखोसे देखा या सुना उठाकर लिख दिया। ख्वाह वह अपनी मर्जीके सख्त खिलाफ ही क्यो न हो। मसलन मेरे नाविल 'कोलतार'के वाब 'आलूके भुरतेकी हीरोइन'। मै ऐसी गधी औरतको ५ जूते मारने लायक समझता हूँ और हज़रत नक्काद (आलोचक) फर्माते है कि मैं तालीम देता हूँ कि औरत ऐसी ही हो। हालाँकि वस चले तो तालीम दूँ कि मार ५ जूते। ख्वाजा हसन निजामी इस कोलतारके वाब 'अजामे नफरत'को पढकर अखवारमे तनकीद (समालोचना) करते हैं कि अजीमवेगने नसीहत दी है कि औरते अकेली सफर न करे। हालाँकि मेरा दस्तूर और अमल यह है कि मै जवान लड़कीको तनहा अलीगढसे जोधपुर वुलाता और भेजता हूँ। और सख्त हिदायत करता हूँ कि ऐसा ही करो। मुसीवत या आफत आये तो आने दो।

जब कुछ अपने कने रखते थे, तब भी खर्च था लड़कोंका ।
अब जो फ़क़ीर हुए फिरते है, मीर उन्हींकी बदौलत है ।।[१]

मालूम नही आप इस शेरको 'मीर'के हस्बहाल क्यों समझते है ? इसमे आपको वह लानत क्यो नही दिखाई देती जो शायर पब्लिकपर भेज रहा है ? बिल्कुल इसी तरह शौकत थानवीने लखनऊके जोरुओके गुलामोपर चोट की तो एक साहबने इसको शौकतके हस्बहाल कह दिया है । आप लिखते है "शौकत अपनी बेगमकी जूतियाँ खाते रहते है ।"[२]

उर्दू-शायर विशेषकर गजल-गो-शायर गुल-ओ-बुलबुल, साकी-ओ-शराब, हुस्न-ओ-इश्कके ज़रिये दार्शनिक, तात्त्विक, आध्यात्मिक, राजनैतिक बाते बडे-बडे मार्केकी इस खूबीसे कह देते है कि दिलमे घर कर जायँ और कानोंको पता तक न लगे ।

गजल-गो-शायरोंमे बहुतसे अपने निजी जीवनमे अत्यन्त धार्मिक और सदाचारी रहे, मगर वे धार्मिको और पारसाओका उपहास हमेशा करते रहे । 'जौक' ऐसे ही सदाचारियोमेसे एक थे ।

'दाग' और 'रियाज' खैराबादीने कभी शराब छुई भी नही । मगर इनके कलामको देखकर किसीको विश्वास ही नही होता कि ये भी अछूते बचे होगे । उन्होने स्वय अपने जीवनमे यह भेद किसीको न बताया क्योकि वह जानते थे कि किसीको भी यकीन न आयेगा ।

'असगर' गौण्डवी जैसे भद्र व्यक्ति जिनके सायेमे आकर मशहूर रिन्द 'जिगर' मुरादाबादी भी तौबा कर लेते थे, हुस्नो-इश्क, साकी-

---

[१] इसी मजमूनका मीर साहबका एक शेर ये भी है :—

'मीर' क्या सादा है बीमार हुए जिसके सबब ।
उसी अत्तारके लौण्डेसे दवा लेते है ।।

[२] 'शायर' मार्च १९४५, पृ० ३२-३३

ओ-शरावपर उम्र भर लिखते रहे; क्योकि गजलका क्षेत्र ही ये है। कोई कितना ही कल्पनाकी उडान ले अन्तमे उतरना उसे इसी क्षेत्रमे होगा। वकौल गालिब :—

बनती नहीं है बादा-ओ-सागर कहे बगैर।

उर्दू-शायरीमे कुछ पारिभाषिक शब्द ऐसे है जो बार-बार प्रयुक्त होते है और जिनको समझे बिना शायरीका मर्म समझमें नही आता। इन्ही पारिभाषिक शब्दोका प्रयोग करके उर्दू-शायर मनकी तरगमे सब कुछ कह जाते है। अतः पुस्तक प्रारम्भ करनेसे पूर्व उनको जान लेना आवश्यक है। सुविधाके लिये हमने ऐसे शब्दोको चार—**गुलशन, मयखाना, इश्क और सहरा**—शीर्षकोमें विभक्त कर दिया है। और इन शीर्षकोमे अधिकतर हमने उन शायरोंका कलाम दिया है, जिनको हम ३१ शायरोकी निश्चित संख्याकी कैदके कारण प्रस्तुत पुस्तकमे नही दे सके हैं। हालाँ कि सौदा, आतिश, नासिख़, नसीम, रियाज़, साइल, बेख़ुद, आगा शाइर, कैफ़ी, साहिर, माइल, जलील, अजीज, सफी, जरीफनूह, आरजू, दिल, अहसन, माहरहरवी, आदि जैसे बाकमाल उस्ताद और रविश सद्दीकी, बिस्मिल इलाहाबादी, बहज़ाद लखनवी, पं० हरिश्चन्द्र अख़्तर, त्रिलोकचन्द महरूम आदि जैसे लोकप्रिय कलाकारोंका पुस्तकमे उल्लेख न करना बड़ी भारी धृष्टता है। हम इनमेंसे कितने ही जीवित शायरोको मुशायरोमे बार-बार सुनकर भी नही अघाये है। मगर संकलनकी कोई तो निश्चित सख्या रखनी ही थी। अत. इच्छा होते हुए भी चुना हुआ बहुतसा कलाम मजबूरन छोड़ना पडा। इन शीर्षकोमे उक्त शायरोके १-१, २-२ शेर देनेका लोभ हम सवरण नही कर सके है। इसीलिए यह अध्याय आवश्यकतासे अधिक लम्बा हो गया है। पुस्तकमे उल्लिखित ३१ शायरोका कोई शेर—प्रसगवश इस परिच्छेदमे वही दिया गया है जो प्राय. अन्यत्र नही लिखा गया है।

गुलशन=पुष्प वाटिका

गुल	=	फूल, बुलबुलका प्रेम-पात्र।
बुलबुल	=	मधुर बोलनेवाला सुन्दर पक्षी, गुलपर आसक्त।
आशियाँ	=	घोसला।
कफस	=	पिंजरा।
बागबाँ	=	बागका रक्षक, व्यवस्थापक।
गुलची	=	फूल तोडनेवाला।
सैयाद	=	अहेरी, शिकारी।

इस गुलशनकी आडमे उर्दू-शायरोने बडे-बडे मर्मस्पर्शी तीर छोडे है; और इस खूबीसे कि हजारोंका खून हो जाय, मगर दामनपर दाग तक न आने पाये। शोषको और पीडिकोंके भयसे वास्तविक बात कहना, शोषितो और पीड़ितोको उनके कर्त्तव्यका ज्ञान कराना, जब असम्भव हो जाता है; तव कवि ऐसी साकेतिक भाषामे अपने उद्गार प्रकट करता है कि उसका मूल उद्देश्य भी पूरा हो जाय और अत्याचारीको आभास भी न मिलने पाये। क्योकि आभास होनेसे वह सावधान होकर और भी अधिक वेगसे अत्याचार करने लगता है। गुलशनमे इसी तरहके राजनैतिक दाव देखनेको मिलते है। दरअसल :—

चमन	=	वतन, देश।
गुल	=	परतन्त्र मनुष्यका प्रेम-पात्र, देश, धन।
बुलबुल	=	परतन्त्र मनुष्य।
आशियाँ	=	परतन्त्र मनुष्यका घर।
कफस	=	कारागृह।
बाग़बाँ	=	देश-रक्षक, नेता।

गुलची = अर्थ-लोलुप, देश-शत्रु ।
सैयाद = अधीन करनेवाला विदेशी विजेता ।

इन रूपकोको ध्यानमे रखते हुए आइए, गुलशनकी सैर कीजिए ।

चमन

देश जब समृद्धिशाली था, सुख-वैभवका सब सामान था, तब भी हमें हमारा देश प्रिय था। और आज यह उजाड दिया गया है, तब भी हमारे दिलो मे वही प्यार है। हम उसके वाह्य रंग-रूप पर मोहित नही, हमें तो जन्मजात उससे दिली मुहब्बत है।

> बूए[1]ख़िज़ाँसे मस्त हैं, याद हमें बहार क्या ?
> हम तो चमन परस्त हैं, फूल कहाँके खार[2] क्या ??
>
> —फ़ानी बदायूनी

देशकी आन्तरिक स्थिति इतनी विपाक्त हो चुकी है कि कारागृहमे पडे हुए लोग भी यहाँकी हालतको देखकर कराह उठते है :—

> नही मालूम किस हालतमें हूँ मै बाग़े आलममें ।
> क़फ़स[3] वाले भी मुझको देखकर फ़रियाद करते हैं ॥
>
> —साकिब लखनवी

ऐसे भी लोग है जो विदेशी बन्धनको ज़ेवरकी तरह अपना लेते हैं। विदेशोंमें ही रहकर गुलामीको ही अपने वतनपर तरजीह देते है :—

> ख़ुदफ़रामोश[4] क़फ़समें हैं, चमन याद नहीं ।
> ग़ैर[5]के हो गये ऐसे कि वतन याद नहीं ॥
>
> —साकिब लखनवी

---

[1]पतझड़की गन्ध; [2]काँटे; [3]पिंजरा, कारागृह; [4]अपनेको भूले हुए; [5]शत्रु।

गुल

जब देशमे कोई उत्साहवर्द्धक और गुणज्ञ नही होता तो गुणी यूँ ही अविकसित दशामे मुर्झा जाते हैं। उन्हे अपने कमालात ढिखानेका अवसर ही नही मिल पाता है :—

हजारो साल नर्गिस[1] अपनी बेनूरी[2] पै रोती है।
बड़ी मुश्किलसे होता है चमनमें दीदावर[3] पैदा॥

—इक़बाल

जिस देशमे पारखी नही, वहाँ नररत्न उत्पन्न होने बन्द हो जाते हैं। विकसित होने—कुछ कर गुजरनेका अवसर ही विचारोको नही मिल पाता :—

कोई इन फूलोंकी किस्मत देखना।
जिन्दगी काँटोंमें पलकर रह गई॥

—अर्शी भोपाली

गुञ्चोंके मुस्कराने पै कहते हैं हँसके फूल—
"अपना करो ख़याल हमारी तो कट गई"॥

—शाद अजीमाबादी

भिन्न-भिन्न पहलुओपर कतिपय अशआर :—

शाखोंसे वर्गे गुल नहीं झड़ते हैं बाग़में।
जेवर उतर रहा है उरूसेबहार[4]का॥

—अमीर मीनाई

---

[1] एक फूल जिसकी उपमा उर्दू-शायर सुन्दर आँखके लिए देते हैं।
[2] बेक़दरी।
[3] देखनेवाला, मूल्य समझनेवाला।
[4] बहाररूपी दुल्हन।

सुबहको राजे[1] गुलो शबनम - खुला।
हँसनेवाले रात भर रोते रहे॥

—साकिब लखनवी

रफ़ीकोंसे[2] रक़ीब[3] अच्छे जो जलकर नाम लेते हैं।
गुलोंसे खार[4] बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं॥

—अज्ञात

बूये गुल फूलोंमें रहती थी, मगर रह न सकी।
मैं तो काँटोंमें रहा और परेशाँ न हुआ॥

—साकिब लखनवी

बुलबुल

इसे गुलदम और अन्दलीब भी कहते हैं। यह फूलोका प्रेमी होता है। फूलोका तनिक-सा भी अनिष्ट इसे मृत्युसे अधिक वेदना पहुँचाता है। गुलके किंचित मात्र कुम्हलानेसे यह बेचैन हो उठता है। भला ऐसा कौन देश-प्रेमी होगा जिसे अपने देशकी वस्तु-क्षतिसे आघात न पहुँचे? इसी प्रेमको किस खूबीसे अमीर मीनाई साहब बयान करते हैं :—

झाड़नी है कौनसे गुलकी नजर?
बुलबुलें फिरती[5] हैं क्यों तिनके लिये?

उसके प्रेम-पात्रसे कोई अन्य प्रेम करने लगे यह भी उसे बर्दाश्त नही :—

फट पड़ा एक आस्माँ बुलबुलके दिलपर रातको।
रख दिया फूलों पै मुँह शबनम[6]ने जिस दम प्यारसे॥

—साकिब लखनवी

---

[1] भेद, [2] मित्रों; [3] शत्रु, प्रतिस्पर्द्धी, [4] काँटे; [5] कुछ लोग बुलबुलको पुलिंग और कुछ स्त्रीलिंग लिखते हैं; [6] ओस।

फूलोके नष्ट होनेपर बुलबुल सुध-बुध भूले बैठा है। मारे सन्तापके वह जान न दे-दे, अपने कर्तव्यको न भूल बैठे, इसी ख़यालसे रिन्द साहब फ़रमाते हैं :—

आ अन्दलीब[1]! मिलके करें आहो-जारियाँ[2]।
तू हाय गुल पुकार, मैं चिल्लाऊँ हाय दिल॥

शायद रोनेसे दिल हलका हो जाये और सुध-बुध आ जाये।

आशियाँ

देशकी आन्तरिक स्थिति इतनी विषाक्त हो चुकी है कि—

दिल घुट रहा है आपसे आप आशियानेमें।
अच्छी नही चमनकी हवा इस जमानेमें॥

—साकिब लखनवी

चार दिनके सुखमे भी आगेका खतरा दिखाई देता था। क्या खूब फर्माया है :—

चार दिनकी इस बुलन्दीमें भी थी पस्ती निहाँ।
आशियानेसे नज़र आता था घर सैयादका॥

—साक़िब लखनवी

परतन्त्रताके सुनहरे कठघरेसे अपनी घास-फूसकी झोपड़ी भी प्रिय मालूम होती है :—

क़फ़स[3]की तीलियाँ अच्छी है तिनकोंसे नशे[4]मनके।
यह सब कुछ है मगर सैयाद! दिलपर क्या इजारा है?
कफ़स-ओ-आशियाँका फ़र्क ऐ सैयाद! सुन मुझसे।
यह तेरी दस्तकारी है, उसे मैंने बनाया है॥

—साक़िब लखनवी

---

[1] बुलबुल; [2] रोना-चिल्लाना, [3] पिंजरा; [4] घर, घोसला।

पराये कब्जेमे होनेसे तो घरका विध्वस होना अच्छा :—

जब मैं नहीं तो बागमें इसका मुकाम क्यों ?
अच्छा हुआ कि लग गई आग आशियानेमें ॥

—साकिब लखनवी

हमारे घरपर और अधिक सितम न ढाये गये, इसका कारण कुछ और है, शत्रुका दयाभाव नही। अब हममे भी अत्याचारोको रोकनेकी, नष्ट करनेकी शक्ति आगई है; इसीलिए शत्रु छेडते हुए झिझकता है :—

गिरी न बर्क़[1] कुछ, इस खौफसे मेरे होते।
तड़पके आग बुझा दूँ न आशियानेकी ॥

—फानी बदायूनी

और देखिये :—

इक मेरा आशियाँ है कि जलकर है बेनिशाँ।
इक तूर है कि जबसे जला नाम हो गया ॥

—साकिब लखनवी

गुलशनसे उठके मेरा मकाँ दिलमें आ गया।
इक दाग बन गया है नशेमन जला हुआ ॥

—साकिब लखनवी

बहारोंमें यह होश ही कब रहा था।
कि जलती है क्या शै[2], कहाँ आशियाँ हैं ॥

—मदहोश ग्वालियरी

उस साल फ़स्ले गुलमें उजड़ा था बनते-बनते।
रहता तो आशियाँको अब एक साल होता ॥

—आसी लखनवी

---

[1] बिजली; [2] चीज़।

तामीरे[1]आशियाँसे मैंने यह राज़[2] पाया।
अहलेनवा[3]के हक़में बिजली है आशियाना॥

—इक़बाल

क़फ़स=पिंजरा, कारागृह

हम कारागृहमे जानबूझकर आये है, और अपने मनसे चुपचाप सब सहन कर रहे है। तेरा किसी तरह दिल न दुखे, इसी हमारे विचार (आन्दोलन)ने हमे मजबूर कर दिया है। तू अपने बाहु-बलपर अधिक न इतरा :—

दरेक़फ़स[4] न खुला, क़द्रेसब्र[5]कर सैयाद!
तड़पते हम तो पहाड़ोंमें रास्ता करते॥

कारागृहमे बन्द है फिर भी घरका प्यार बना हुआ है :—

होगये बरसों कि आँखोंकी खटक जाती नहीं।
जब कोई तिनका उड़ा, घर अपना याद आया मुझे॥

—साक़िब लखनवी

वतनके लिए जेल जाएँ और अपने ही लोग हँसी उडाएँ, यानी हमारी गुलामी दूसरोके लिए तमाशा है :—

क़ैदेगम भी दिल लगी है हँसनेवालोके लिये।
अन्दलीब आकर क़फ़समें इक तमाशा हो गई॥

चन्द और नमूने :—

गुलशन बहारपर था नशेमन बना लिया।
मैं क्यों हुआ असीर[6] मेरा क्या क़ुसूर था?

---

[1] घोसलेका निर्माण; [2] भेद; [3] मधुर स्वरवाला; [4] पिंजरेका दर्वाजा; [5] सन्तोषका आदर कर; [6] गिरफ़्तार।

मेरी क़ैदका दिलशिकन[1] माजरा[2] था।
बहार आई थी, आशियाँ बन चुका था॥
आफ़तेदह्र[3]को क्या खुफ़्ता-ओ[4]बेदार[5]से काम ?
क़ैद होनेसे न समझो कि मैं हुश्यार न था॥

—साक़िब लखनवी

हमी नावाकिफ़े रस्मेचमन थे ऐ क़फ़सवालो !
फ़लकसे अह्द ले लेते तो फ़िक्रे आशियाँ करते॥

—आसी लखनवी

बाग़बाँ

बागकी रक्षा करनेवाला और गुलोंको सीचनेवाला। यह बुलबुलका एक तरहसे तरफदार समझा जाता है। किन्तु जब कभी यह फूलोके तोड़ने आदिका काम करता है, तो बुलबुल इसे भी अपना शत्रु समझ लेती है। फूल तोडना तो दरकिनार, इसकी बे-पर्वाहीसे भी अगर गुलशनका कुछ नुकसान होने लगता है तो वह भी बुलबुलको बर्दाश्त नही होता :—

दस्तेगुलचीं क़त्ले आमे लालओ गुल मी कुनद।
बाग़बाँ दर सहने गुलशन, मस्ते ख्वाब उफ़तादाअस्त॥

(बुलबुल मन ही मनमे कुढती हुई कह रही है—गुलचीके हाथसे बाग कत्ले आम हो रहा है और बागबाँ फिर भी गुलशनमे मीठी नीद सो रहा है।)

निशाने बर्गेगुल[6] तक भी, न छोड़ इस बाग़में गुलचीं !
तेरी किस्मतसे रज़्मआराइयाँ[7] हैं बाग़बानोंमें।

—इकबाल

[1] दिल तोडनेवाला; [2] दृश्य; [3] सासारिक आपदाओ; [4] सोये हुओ; [5] जागे हुओ; [6] फूलकी पँखुडी; [7] लडाई-झगड़े।

सैयाद तो है ही जालिम, इसलिए बुलबुलको इसकी विशेष शिकायत नही होती, क्योकि सैयाद तो उसका शत्रु है ही, किन्तु जब बागबॉ (रक्षक) जिससे कभी सताये जानेका खयाल भी नही होता—बुलबुलके प्रति दुर्व्यवहार करता है तब बुलबुलके रजोगमकी कोई सीमा नही रहती। रक्षक ही भक्षक बन जाएँ, अपने ही पराये हो जाएँ, तब दिलोंपर क्या गुज़रती है, मुलाहिजा फरमाइए :—

बाग़बॉने आग दी जब, आशियानेको मेरे।
जिनपै तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे॥

—साकिब लखनवी

बुलबुल कहती है—"बागके रक्षकने ही जब मेरे आशियानेको आग लगाई तब औरोके जुल्मोसितमको क्या कहूँ? जिन पत्तोपर मेरा तकिया था वह पत्ते ही उड़-उड़कर आगको भड़कानेमें सहायता देने लगे।"

इस शेरमें उक्त मनोभावको व्यक्त करते हुए कविने इक सीधी-साधी बात रखकर शेरको खूब चमकाया है। आग लगानेपर पत्ते उडने ही लगते है, मानो वह आगको भड़कानेके लिए ही ऐसा करनेको कटिबद्ध होते है। जब मुसीबत आती है तब अपने भी पराये हो जाते है। जिनसे बहुत कुछ आशाएँ होती है, वह भी अनिष्ट करनेपर उतारू हो जाते है। ऐसे ही भावोंको लेकर उर्दूके कवियोंने अपनी भावुकताका परिचय दिया है। प्रसंगवश कुछ अशआर दिये जाते है :—

बहुत उम्मीद थी जिनसे, हुए वह महवॉं क़ातिल।
हमारे क़त्ल करनेको बने खुद पासवॉं[1] क़ातिल॥

---

[1] रक्षक।

होता नही है कोई बुरे वक़्तमें शरीक।
पत्ते भी भागते है खिजाँ[1]में शजर[2]से दूर॥

—अज्ञात्

सियह[3] बख़्तीमें कब कोई किसीका साथ देता है।
कि तारीकी[4]में साया भी, जुदा रहता है इन्साँसे॥

—नासिख़

कौन होता है बुरे वक़्तकी हालतका शरीक।
मरते दम आँखको देखा है कि फिर जाती है॥

—अज्ञात्

दोस्तोसे इसक़दर सदने उठाये जानपर।
दिलसे दुश्मनको अदावतका गिला[5] जाता रहा॥

—आतिश

यह ग़म नहीं है वह जिसे कोई बटा सके।
ग़मख़्वारो[6] अपनी रहने दे ऐ ग़मगुसार[7]! बस!!
वें गैर दुश्मनीका हमारी ख़याल छोड़।
याँ दुश्मनीके वास्ते काफ़ी है यार बस॥

—हाली

गुलचीं=फूल चुननेवाला

यह बुलबुलको कतई पसन्द नही, क्योकि यह उसके माशूकों (गुलों) को नष्ट करता है। इसके इस व्यवहारसे बुलबुलको मर्मान्तिक पीड़ा होती है।

---

[1]पतझड़; [2]पेड़; [3]दुर्दिन; [4]अँधेरे; [5]शिकायत; [6]हमदर्दो; [7]हमदर्द।

वाए[1] क़िस्मत ! कि चमनमें हूँ, मगर शाद[2] नहीं।
औरे गुलची मुझे क्या कम है, जो सैयाद नहीं॥
—रहमत अजकावली

सैयाद

ये हज़रत बुलबुलको उसके आशियाँसे छुडाकर कफस मे बन्द किये रहते है। बुलबुलको सताना ही इनका ध्येय है। यह गुलशन उजाडते है, आशियाँको आग लगाते है, बुलबुलको जैसे भी बने व्यथा पहुँचाते रहते हैं। कफ़समे वन्द बुलबुल परतन्त्रता के बन्धनसे घबराकर सैयादके आगे गिड़गिड़ाते हुए कहता है :—

आजाद मुझको कर दे, ओ क़ैद करनेवाले।
मैं बेजबाँ हूँ क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले॥
—इक़बाल

स्वतत्रताकी चाहमे उसे यह भी ध्यान नही रहा कि स्वतन्त्रता माँगेसे नही मिलती वह तो छीनी जाती है :—

बना लेता है मौजेख़ूने[3] दिलसे इक चमन अपना।
वह पावन्देक़फ़स[4] जो फ़ितरतन[5] आजाद होता है॥
—असग़र गोण्डवी

जो स्वतत्रताको जन्मसिद्ध अधिकार समझते है, वह कारागृहमे वन्द होते हुए भी अपने रक्तसे सींचकर सव कुछ कर गुजरते हैं। रोते और गिडगिडाते तो वही है जिन्हे स्वतंत्रताकी भूख नही लगी :—

---

[1] हाय; [2] खुश; [3] रक्तकी लहरे, [4] कैदी; [5] जन्मतः, स्वभावतः।

यह सब नाआश्नाये[1] लज्जते[2]परवाज है शायद ।
असीरों[3]में अभीतक शिकवये[4]सैयाद होता है ।।

—असग़र गोण्डवी

परवश पछी जब विवश हो जाता है, अत्याचार सहन करते-करते जब तंग आ जाता है और उनके निराकरणका कोई उपाय नही सूझता है, तब उसका भी मन होता है कि अत्याचारीको भी कुछ हाथ लग जाएँ; ताकि वह अब अधिक अत्याचार न कर सके । वर्षोकी मनोकामना और परिश्रमके बाद साधन भी जुटे, मगर बेसूद :—

बर्क़[5] गिरनेको गिरी लेकिन जरा बचकर गिरी ।
आँच तक आने न पाई खान्ये[6]सैयाद पर ।।

—बर्क़

हायरे दुर्भाग्य ! शत्रुपर बिजली तो गिरी, मगर तनिक हट कर गिरी, उसे आँचतक न आने पाई । तनिक-सा भी झुलस जाता तो कुछ तो आत्म-सन्तोष होता । वर्षोके प्रयत्न इस तरह धूलमें मिलते देख शोषित और पीडितको कितनी वेदना होती है, व्यक्त नही की जा सकती ।*

शत्रु परस्पर लड़ाई-झगडेमे लिप्त हो जाएँ, यह संवाद भी पराधीनोके लिए आह्लादकारक है । क्योकि इससे शत्रुओमे निर्बलता आयेगी और इससे स्वतन्त्र होनेका अवसर मिल सकता है :—

---

[1] अनभिज्ञ, [2] उडनेके आनन्दसे; [3] कैदियों; [4] शिकायत, [5] बिजली; [6] सैयादके घर पर ।

*अमर शहीद भगतसिहने जब साइमन कमीशनपर बम फेका था और निशाना खता हो गया था, उन्ही दिनों किसी गजलमे उक्त शेर पढा था ।

सुनते हैं गुलचींसे झगड़ा हो गया सैयादका ।
हमसफ़ीरो[१] आज मौक़ा है मुबारिकबादका ।

—दाग़

किसी भी जातिका बलिदान व्यर्थ नही जाता । वह बलिदान तो वतन रूपी चमनको सीचनेमे खाद और पानीका काम देता है :—

चमन सैयादने सींचा यहाँ तक ख़ूने बुलबुलसे ।
कि आख़िर रंग बनकर फूट निकला आरिज़े[२] गुलसे ।।

—अज्ञात

चन्द और नमूने :—

न तड़पनेकी इजाजत है न फ़रियादकी है ।
घुटके मर जाऊँ, यह मर्ज़ी मेरे सैयादकी है ।।

—शाद

गले पै छुरी क्यों नही फेर देते ।
असीरोंको बेबालो-पर करनेवाले ।।

—यगाना चंगेज़ी

यहाँ कोताहिये[३] ज़ौक़ेअमल[४] है ख़ुद गिरफ़्तारी ।
जहाँ बाज़ू सिमटते हैं वहीं सैयाद होता है ।।

—असग़र गोण्डवी

कल बहुत नाज़ाँ[५] उरूजेबख़्त[६] पर सैयाद था ।
बात इतनी थी कि मैं था क़ैद, वह आज़ाद था ।।

—साकिब लखनवी

---

[१] एक ही प्रकारकी बोली बोलनेवाले, साथी; [२] फूलोंके कपोलोसे; [३] कमी; [४] कर्तव्यका चाव; [५] अभिमानी; [६] भाग्यकी बढ़ौती ।

मैं तो था मजबूर रहनेपर कि था पाबन्दे इश्क़ ।
कोई पूछे बाग़में क्या काम था सैयादका ?

—साक़िब लखनवी

मेरे सैयादकी तालीमकी है धूम गुलशनमें ।
यहाँ जो आज फँसता है वो कल सैयाद होता है ॥

—अकबर इलाहाबादी

[1] मयख़ाना=मधुशाला

झिझकिये नहीं, जब आ ही गये तो खुलकर बैठिये। यहाँ ऊँच-नीचका भेद-भाव नहीं। जाहिद,[1] नासेह,[2] शेख़,[3] और वाइज[4] की परवा न कीजिये। वे तो यहाँ ख़ुद ही चोरी-चुपके आते हैं, और जल्दीसे दुम दबाकर भाग जाते हैं। यह बुजुर्ग तो पीरेमुगाँ[5] हैं। इनकी कृपादृष्टि तो गरीब-अमीर सबपर यकसाँ रहती है। ये जो सुराही लिये आ रहे हैं, यही साकी[6] है। उधर वे रिन्द[7] बैठे हुए हैं। उनके हाथोमे सागिर[8] और पैमाने[9] हैं जिनमे सुर्ख़ मय भरी हुई है। इधर ये शराब से भरे हुए ख़ुम[10] और कूजे[11] रखे हुए हैं। जब उमरख़य्याम और हाफिज ज़िन्दा थे, यहाँ रोज आते थे। यहाँके बारेमे जो उन्होंने लिखा है, वह देखिये दीवारोपर चारो तरफ सोनेके पानीसे अंकित है :—

१—एक प्रभातकालमें मेरे मदिरा-गृहसे एक आवाज़ मेरे कानोमे पड़ी कि "ऐ मेरे मतवाले मदिरा-प्रेमी! उठ-बैठ, आ जीवन-प्याला भर जानेसे पहले ही हम उस ईश्वरके प्रेमरूपी प्यालेका पान करें। मृत्यु होनेसे पहले ही उससे लगन लगा लें!"

२—प्रणयकी मदिरा हमें बहुत लाभ पहुँचाती है। उससे हमारे शरीर तथा प्राणोंको शक्ति प्राप्त होती है। उसके पीनेसे रहस्योका पता लग जाता है। बस मैं उस मदिराका केवल एक घूँट चाहता हूँ।

---

[1] सब दुष्कर्मोसे बचकर ईश्वरका उपासक, [2] उपदेशक; [3] इस्लाम धर्मका आचार्य; [4] धर्मोपदेशक; [5] मधुशाला-संचालक; [6] मदिरा वितरक, प्रेयसी; [7] शराबी; [8-9] शराब पीनेके पात्र; [10-11] शराबके मटके—घड़े।

उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवनकी ही चिन्ता रहेगी, और न मृत्युकी।

४—प्रणयीको समस्त दिन प्रणयमे ही मतवाला रहना चाहिए। उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिए। होशमे प्रत्येक वस्तुकी चिन्ता घेरे रहती है; परन्तु मतवाला हो जानेपर सभी वस्तुओका ध्यान मस्तिष्कसे दूर हो जाता है। यदि किसी वस्तुका ध्यान रहता है तो उसीका, जिसने मतवाला बना दिया है।

२०—उस प्रणयके मदिरागृहकी सूचीमे सवसे पहले मेरा ही नाम है। मस्ती और मदिरा मेरे ही हिस्सेमें आ पड़ी है। शराव विक्रेताओके इस घरमे जो कुछ हूँ मै ही हूँ। मै ही शरीर और मै ही प्राण हूँ! इन समस्त संसारकी सूरतोमें केवल मै ही मै हूँ।

५२—यदि किसी पहाड़को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे। इसलिए जो उसे बुरा वतलाता है वह स्वय वुरा है। मुझे मदिरा पीनेसे क्यो रोकते हो? यह तो ऐसी वस्तु है जिसके द्वारा ईश्वरसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है।[1]

—उमर ख़ैय्याम

"यह नेकी, सच्चाई और पवित्रताका मार्ग तुम्हारे लिए ही मुवारिक रहे, मै मदिरागृह, जनेऊ और मन्दिर तक पहुँचनेवाला मार्ग हूँ।"

"ऐ पवित्र हृदय साधु! मुझे मदिरा-पानसे न रोक। जिस समय मै उत्पन्न हुआ था, उस समय स्रष्टाने मेरी मिट्टीको मदिरासे ही गूँधा था।"

"चाहे जितना भी पवित्र मनुष्य क्यो न हो, लेकिन तवतक वह स्वर्गमे

---

[1] उमरखैयामकी फ़ारसी रुवाइयोका अनुवाद 'ईरानके सूफी कवि', पृ० ५२-६४से।

नही जा सकता जबतक कि मेरे समान वह अपने वस्त्रोको शराबखानेमे शराबके लिए रेहन नही कर देता।"

"काबेमे और शरावखानेमे कोई अन्तर नही है। जिस तरफ भी तुम्हारी दृष्टि जाएगी वह (प्यारा) ईश्वर सामने आ जायगा।"[१]

—हाफ़िज़

जी, अब आप समझे इस जगहका महत्व ! ये रिन्द (भक्त) अपने माशूक (ईश्वर)के वस्ल (दर्शन)के लिए मदिरा-पान (भक्ति-उपासना) करके वेसुध (तन्मय) रहते है। इन्हे दीवानी दुनिया दीवाना समझती है। परन्तु ये लोग इसी दीवानगीमे वोह-वोह पतेकी बात कहते है कि अच्छे-अच्छे तत्त्ववेत्ता बगले झाँकने लगते है। 'रिन्द' तो जाहिद, नासेह और शेखकी परछाँईसे भी दूर रहना चाहते है, क्योकि उनका विश्वास है कि ये धर्मके ठेकेदार अक्सर ढोंगी और धूर्त्त होते है। इनके और मयखानेके वारेमे हजारो लोगोने अपनी-अपनी राय भेजी है। वे सव इस वडे पोथेमे दर्ज है। हाँ, हाँ, शौकसे पढ़ सकते है :—

शराव—

यह क्या मजाक फ़रिश्तोंको आज सूझा है।
खुदाके सामने ले आये है पिलाके मुझे॥

—रियाज़ खैराबादी

जिनको पीनेका तरीक़ा न सलीक़ा मालूम।
जाके कौसर[२] पै यकायक वोह पियेंगे कैसे ?

—अज्ञात्

---

[१] हाफिज़के कलामका अनुवाद, 'ईरानके सूफी कवि', पृ० ३२३-३१से।

[२] वहिश्तकी वह नहर जिसमे शराव वहती है।

यहाँ फ़िसानये दैरो[1] हरम[2] नहीं 'असगर'।
यह मैकदा[3] है यहाँ बेखुदीका आलम है॥

—असग़र गोण्डवी

हंगामा है क्या बरपा, थोड़ी-सी जो पी ली है।
डाका तो नहीं मारा, चोरी तो नहीं की है॥

—अकबर इलाहाबादी

सदसाला[4] दौरेचर्ख[5] था सागिरका एक दौर।
निकले जो मैकदे[6]से तो दुनिया बदल गई॥

× × ×

यह काली-काली बोतलें जो हैं शराबकी।
रातें हैं उनमें बन्द हमारे शबाब[7]की॥

× × ×

मय[8] छीन कर किसी से जो पीते तो थी खता।
जब दाम देके पी तो, गुनह क्या किसी का था?

—रियाज़ खैराबादी

पीता नहीं शराब कभी बेवज़ू किये।
कालिब[9]में मेरे रूह[10] किसी पारसा[11]की है॥

—आबरू

सोनेवालोंको क्या खबर ऐ रिन्द[12]!
क्या हुआ एक शबमें, क्या न हुआ?

—साक़िब लखनवी

---

[1] मन्दिर; [2] मस्जिद; [3] शराबघर; [4] सौ वर्ष, एक मुद्दत; [5] आसमानका दौर; [6] शराबखाने; [7] यौवन, सौन्दर्य; [8] शराब; [9] शरीर; [10] आत्मा; [11] पवित्रात्मा; [12] शराबी।

रोज पीते हैं सुबूही भी अदा करके नमाज़ ।
फ़र्क़ आजाय तो पाबन्दिये औक़ात ही क्या ?

—दाग़

अजाँ हो रही है पिला जल्द साक़ी ।
इबादत करूँ आज मख़मूर होकर ॥

—अज्ञात्

दिनमें चर्चे[1] खुल्दके शबमें मये कौसरके ख्वाब ।
हम हरममें आरहे मयख़ाना वीरॉ देखकर ॥

—रियाज़ खैराबादी

ज़ाहिद्—

ज़ाहिदको डेढ़ ईंटकी मस्जिद पै ये ग़रूर ।
वह भी ख़ुदाके फ़ज़्लसे[2] घरका मकॉ नहीं ॥

—अज्ञात्

हुआ है चार सिजदोंपर यह दावा ज़ाहिदो तुमको ।
ख़ुदाने क्या तुम्हारे हाथ जन्नत बेच डाली है ?

—दाग

लुत्फ़ेमय तुझसे क्या कहूँ ज़ाहिद !
हाय, कमबख़्त ! तूने पी ही नहीं ॥

—दाग़

है नमाज़ उन ज़ाहिदोंकी ज़ौफ़ेइमाँ[3] की दलील ।
सामने अल्लाहके जाते हैं उठते-बैठते ॥

—अमीर मीनाई

---

[1] जन्नत; [2] कृपा से, [3] ईमानकी कमज़ोरी ।

कदम रखना सम्हलकर महफ़िले रिन्दाँमें ऐ ज़ाहिद !
यहाँ पगड़ी उछलती है, इसे मयखाना कहते हैं ॥
—अज्ञात्

बोतल खुली जो हजरते ज़ाहिदके वास्ते।
मारे खुशीके काग भी दो गज उछल गया ॥
—कैसर देहलवी

नासेह—

मस्जिदमें बुलाता है हमें नासहे नाफ़हम[1]।
होता अगर कुछ होश तो मयखाने न जाते ॥
—दाग

हजरते नासह गर आएँ दीदओ दिल फ़र्शे राह।
कोई मुझ को यह तो समझादे वोह समझायेंगे क्या ?
—ग़ालिब

शेख़—

बाक़ी है मनमें शेखके हसरत गुनाहकी।
काला करेगा मुँह भी जो दाढ़ी सियाहकी ॥
—ज़ौक

शेख़ने मस्जिद बना मिसमार बुतखाना किया।
तब तो यक सूरत भी थी अब साफ वीराना किया ॥
—नसीम

सिधारें शेख़ काबेको हम इँगलिस्तान देखेंगे।
वह देखें घर खुदाका हम खुदाकी शान देखेंगे ॥

---

[1] बेअक़्ल।

तुम नाक चढ़ाते हो मेरी बात पै ऐ शेख !
खीचूँगा किसी रोज मैं अब कान तुम्हारे ॥

× × ×

ख़िलाफ़े शरअ़ कभी शेख़ थूकता भी नहीं ।
मगर अन्धेरे उजालेमें चूकता भी नहीं ॥

—अकबर इलाहाबादी

ऐ शेख़ ! गो नहीं है कोई जीशऊर[1] हम ।
इतना तो जानते है कि तुम बेशऊर हो ॥

—जोश मलसियानी

दहर[2]की तहकीर[3]कर इतनी न ऐ शेखेहरम[4] !
आज काबा बन गया कलतक यही बुतखाना था ॥

—अमीर मीनाई

शेख हो या बिरहमन, माबूद[5] है सबका वही ।
एक है दोनोंकी मंजिल, फेर है कुछ राहका ॥

—अज्ञात्

लड़ते है जाके बाहर यह शेख और बिरहमन ।
पीते है मयकदे[6]में सागर बदल-बदलकर ॥

—पं० जिनेश्वरदास जैन, साइल, देहलवी

वाइज़—

फर्क क्या वाइजो आशिक़में बताएँ तुमको ?
उसकी हुज्जत में कटी इसकी मुहब्बत में कटी ॥

—अकबर इलाहाबादी

---

[1] अक़्लमन्द, [2] मन्दिर; [3] अपमान; [4] मस्जिद का आचार्य्य; [5] ईश्वर, [6] शराबखाने ।

दरे[1] मयखाना चौपट है, तहज्जुद[2] को हुई चोरी।
निरे टूटे हुए शोशे, फ़क़त झूठे पियाले हैं ॥
गुमाँ किसपर करें मयकश, इधर वाइज़ उधर सूफ़ी।
खुदा रक्खे मुहल्लेमें सभी अल्लाहवाले हैं ॥

—नवाब साइल देहलवी

हमें तो हज़रते वाइज़की ज़िदने पिलवाई।
यहाँ इरादये नोशे मुदाम किसका था?

—दाग़

मजलिसे वाज़ तो तादेर रहेगी कायम।
यह है मयख़ाना अभी पीके चले आते हैं ॥

—सम्भवतः क़ायम चाँदपुरीका शेर है।

छिपाकर बहुत पी है मस्जिदमें वाइज़।
यह ज़र्फ़े वज़ू सब खँगाले हुए हैं ॥

—रियाज़ ख़ैराबादी

बिरहमन—

बिरहमन नालयेनाक़ूस[3] मस्जिद तक भी पहुँचा दे।
बुरा क्या है मुअ़ज्जन[4] भी अगर बेदार[5] हो जाये ॥

—हफ़ीज़ जालन्धरी

---

[1] दरवाजा; [2] रात्रिका पिछला पहर, वह नमाज जो आधी-रातके वाद पढ़ी जाती है, [3] शखकी आवाज; [4] अज़ान देनेवाला; [5] सचेत, जागरूक।

इश्क़=प्रेम, आसक्ति

देखिये, इस मकतब (स्कूल) में तनिक सोच-समझकर कदम रखिये, ऐसा न हो कि फिर आपको पछताना पड़े। क्योंकि :—

मकतबे इश्कका दुनियामें निराला है सबक़।
उसको छुट्टी न मिली, जिसको सबक़ याद हुआ॥

जी हाँ! इस मकतबका उसूल दूसरे मकतबोसे बिल्कुल अनोखा है। अन्य सब मकतबोंमे सवक याद होनेपर छुट्टी मिल जाती है; और यहाँ जिसने एक बार सवक याद कर लिया, उसे फिर जीते जी कभी छुट्टी नहीं मिली।

हाँ, हाँ, शौकसे इस कूचेकी सैर कीजिये, आपको रोकता कौन है? और चेहरेपर जबतक दो चुल्लू खून है, जेबमे बाप-दादोका कमाया हुआ रुपया है, तब आप किसीका कहना मानेगे भी क्यों? आपकी आँखे साफ़ कह रही है :—

नासहा! मतकर नसीहत, दिल मेरा घबराय है।
वह मुझे लगता है दुश्मन, जो मुझे समझाय है॥

भला मुझे क्या गरज पडी है साहब! जो मैं आपको समझाकर मुफ्तमे दुश्मनी मोल लूँ!

इस कूचेमे मकतबे इश्क दो है। १—हकीकी इश्क (ईश्वरीय प्रेम), २—मजाजी इश्क (सासारिक प्रेम)।

वहुत वेहतर, आप दोनोकी ही सैर कीजिये। मगर मेरी नाकिस रायमे पहले वहाँ फँसे हुए तालिवेइल्मों (विद्यार्थियो) की हालत देख लीजिये, फिर अपने वारेमे कोई फैसला कीजिये।

हक़ीक़ी इश्क़

हाँ, हाँ, यही सामनेवाला मकतबे-इश्क़े हकीक़ी है। और वह देखिये सब बाआवाज़ बुलन्द क्या फर्मा रहे हैं :—

मोमिन—

असरेग़म ! ज़रा बता देना।
वोह बहुत पूछते हैं, "क्या है इश्क" ?

शेफ़्ता—

शायद इसीका नाम मुहब्बत है 'शेफ़्ता'।
इक आग-सी है सीनेके अन्दर लगी हुई॥

बेखुद देहलवी—

इस इश्को आशिकीके मज़े हमसे पूछिये।
दौलत मिटाई, रंज सहे, खो दिया शबाब॥

आतिश—

खुदा याद आगया मुझको, बुतों[1]की बेनियाज़ी[2]से।
मिला बामे हक़ीकत ज़ीनये इश्के मजाज़ीमें॥

शाकिर मेरठी—

शौके नज़्ज़ारा था जब तक, आँख थी सूरत परस्त।
बन्द जब रहने लगी, पाए हक़ीकतके मज़े॥

माइल देहलवी—

अपनी तो आशिकीका क़िस्सा ये मुख़्तसिर है।
हम जा मिले खुदासे, दिलबर बदल-बदलकर॥

---

[1] पत्थर-हृदय, प्रेम-पात्र, मूर्त्ति; [2] उपेक्षा।

अज्ञात्—

हक़ीकी इश्क़की इश्क़े मजाज़ी पहली मंज़िल है।
चलो सूये ख़ुदा ऐ जाहिदो! कूएबुताँ[1] होकर॥

अकबर मेरठी—

क्यों न हो इश्के मजाज़ीसे हक़ीक़ीको फ़रोग़[2]?
बन गया काबा वहाँ पहले जहाँ बुतख़ाना था॥

अज्ञात्—

खो गये जब तेरा मकाँ देखा।
मिट गये जब तेरा निशाँ देखा॥

× × ×

दुनियासे हाथ धोके चलें कूए यारमें।
जाइज़ नही तवाफ़ेहरम[3] बेवज़ू किये॥

ग़ालिब—

ईमाँ मुझे रोके है, तो खींचे है मुझे कुफ़्र।
काबा मेरे पीछे है, कलीसा मेरे आगे॥

अमीर मीनाई—

बड़ी पेच दर पेच थी राहे दहर।
ख़ुदा हमको लाया, ख़ुदा ले गया॥

---

[1] शायरका तात्पर्य्य है—मन्दिरोंकी उपासना करते हुए खुदाकी तरफ चलो, यानी साकार ईश्वर-पूजा करते-करते निराकार ईश्वर तक पहुँच जाओ।

[2]प्रकाश; [3]मक्के या मस्जिदकी प्रदक्षिणा।

मजरूह—

क्या हमारी नमाज, क्या रोजा ?
बख़्श देनेके सौ बहाने हैं ॥

बहज़ाद लखनवी—

तेरी ज़िक्रने तेरी फ़िक्रने, तेरी यादने वोह मजा दिया ।
कि जहाँ मिला कोई नक़शेपा[1] वहीं हमने सरको झुका दिया ॥

जिगर मुरादाबादी—

रूबरूए दोस्त हंगामे सलाम आ ही गया ।
ख़सल ऐ दैरो हरम ! दिलका मुक़ाम आ ही गया ॥

आगाशायर देहलवी—

तुम्हारा ही बुतख़ाना, काबा तुम्हारा ।
है दोनों घरोंमें उजाला तुम्हारा ॥

अजीज लखनवी—

तेरे करम[2] में कमी कुछ नहीं, करीम[3] है तू ।
क़ुसूर मेरा है, झूठा उम्मीदवार हूँ मैं ॥

साकिब—

पर्दा हुआ कि जलवये वहदतनुमाँ[4] हुआ ।
ग़शने ख़बर न दी मुझे कब सामना हुआ ॥

अलम मुजफ़्फ़रनगरी—

आये थे तजस्सुस[5] में उसकी, जाते हैं उसीको ढूँढ़ेंगे ।
इस आरज़ी आने-जानेको फिर मरना-जीना क्या कहिये ॥

---

[1] चरण-चिन्ह; [2] कृपा, [3] दातार; [4] ईश्वरका प्रकाश; [5] तलाश ।

न हुआ सकूँ[1] मयस्सर मुझे बहरेज़िन्दगी[2] में।
किसी मौज[3] ने डुबोया किसी मौजने उभारा॥

जी, क्या फर्माया आपने ?—"पहले मकतबे इश्के मजाजी मे जाना था, यहाँ आकर तो नाहक समय बर्बाद किया।" क्या ख़ूब ! कूचये इश्ककी भी सैर करना चाहते हैं, और घड़ीकी सूईपर भी नजर जमाये हुए हैं। मालूम होता है आप चिड़ियाघर देखनेके ख़यालमे भूलेसे इधर आ निकले है। बकौल अकबर :—

मग़रबी[4] ज़ौक़[5] है और वज़ह[6]की पाबन्दी भी।
ऊँटपर चढ़के थियेटरको चले हैं हज़रत॥

बस साहब, आपने कर ली इस कूचेकी सैर। लीजिये हम आपको 'मकतबे इश्के मजाजी' की वार्षिक रिपोर्ट दिये देते हैं। इसे आप निहायत इत्मीनानके साथ पलगपर लेट-लेटकर पढिये और स्वप्नमे आशिक़ बनकर वस्ल और हिज्रका लुत्फ उठाइये। आपका इस कूचेसे परिचय भी हो जायगा और किसी किस्मकी आँच भी न आयेगी।

---

[1] सुख-शान्ति; [2] जीवन रूपी लहरो; [3] लहर; [4] पश्चिमी, [5] रुचि; [6] आन, टेक।

मजाज़ी इश्क़—सांसारिक प्रेम

काबा भी हम गये न गया पर बुतोंका इश्क़ ।
इस दर्दकी ख़ुदाके भी, घरमें दवा नहीं ।।

—यक़ीन सरहदी

दर्दसे वाक़िफ़ न थे ग़मसे शनासाई न थी ।
हाय ! क्या दिन थे तबीयत जब कहीं आई न थी ।।

—जलील

जवानीकी दुआ लड़कोंको नाहक़ लोग देते हैं ।
यही लड़के मिटाते हैं, जवानीको जवाँ होकर ।।

—अकबर इलाहाबादी

जज्बयेइश्क[1] सलामत है तो इन्शाअल्लाह ।
कच्चे धागेमें चले आएँगे सरकार बँधे ।।

—अज्ञात्

इश्ककी जिसपर इनायत होगई ।
होश जाइल,[2] अक़्ल रुखसत होगई ।।

—अज्ञात्

कभी हर्फ़े मुहब्बत ता-ब-लब आया था चुपके-से ।
इसीने रफ़्ता-रफ़्ता तूल खींचा दास्ताँ होकर ।।

—रियाज़ खैराबादी

---

[1] प्रेम-लगन; [2] नष्ट ।

किया यह मुहब्बतने क्या अन्दर-अन्दर ।
कि दिल कुछ-का-कुछ बन गया अन्दर-अन्दर ।।
हँसी बनके होटोंसे खेला किया गम ।
मगर दिल मसलता रहा अन्दर-अन्दर ।।

—आरज़ू लखनवी

जो राहेइश्क़[1]में क़दम रक्खें ।
वोह नशेबो-फ़राज़[2] क्या जानें ?

—दाग़

ज़रासी इक निगाहे इश्क़में आँखोंसे गिरता है ।
बहुत आसान है इन्सानका बेकार हो जाना ।।

—साकिब लखनवी

दुनियामें जो आकर न करे इश्क़ बुताँका ।
नज़दीक हमारे है, यहाँका न वहाँका ।।

—अमीन अज़ीमाबादी

रखते ही पाँव लुट गये बाज़ारे इश्क़में ।
बैठे न दिलको बेचनेवाले दुकानपर ।।

—साक़िब लखनवी

इश्क़की दो चार राहें हों तो दिलको ढूँढ़ लूँ ।
मुझको क्या मालूम, किस कूचेमें मरकर रह गया ?

—साक़िब लखनवी

सीनेसे चर्ख़ेपीर[3] लगाये है चाँदको ।
कुछ इश्क़ मुनहसिर नहीं बूढ़े-जवानपर ।।

—जलील

---

[1]प्रेम-मार्ग, [2]ऊँच-नीच; [3]प्राचीन आकाश ।

जिन्दोंमें अब शुमार नहीं हजरते 'अजीज' ।
कहते थे आपसे कि मुहब्बत न कीजिये ॥
—अजीज लखनवी

मैं तेरी यादमें हूँ ओ काफ़िर !
मस्जिदोंमें नमाज होती है ॥
—मदहोश ग्वालियरी

अब मुहब्बत ही मुहब्बत है न हम है और न तुम ।
जिसके आगे कुछ नहीं है वह मुकाम आ ही गया ॥

× × ×

अजलके दिनसे है अहलेमुहब्बत नौहा ख्वाँ अब तक ।
मगर अपनी जगहपर है जमीनो आस्माँ अब तक ॥
—आसी लखनवी

आशिक़=प्रेमी, आसक्त

मकतबे इश्के मजाज़ीके पासशुदा स्नातक न कहलाकर आशिक कहलाते हैं। यदि आपको कोई आदमी तालिबे वस्लो दीदार,[1] हिज्र[2]मे बेचैन, रोते-बिसूरते, कमजोर, बदगुमान[3] हासिद,[4] आवारा, नाकारा, दीवाना, फटेहाल, मौतका इच्छुक दिखाई दे तो उसे बेखटके आशिक समझ लीजिये और उससे नौ हाथ दूर रहिये। अन्यथा जो अपने कपडो-की धज्जियाँ किये फिरता है, उसे दूसरोके कपडे फाडते देर न लगेगी।

आदमका जिस्म जब कि अनासिर[5] से मिल बना।
जितनी बची थी आग सो आशिकका दिल बना।।

—सौदा

जो दानिशमन्द हैं वोह यूँ दुआ देते हैं लड़कोंको।
न हो मक्कार पीरी[6]में, न हो आशिक़ जवाँ होकर।।

—अकबर इलाहाबादी

मुसीबत और लम्बी जिन्दगानी।
बुज़ुर्गोंकी दुआ ने मार डाला।।

—मुजतर खैराबादी

---

[1] मिलन और दर्शनोंका अभिलाषी;

[2] विरह;

[3] जिसके मनमे किसीकी ओर सन्देह उत्पन्न हुआ हो;

[4] ईर्ष्यालु; [5] पचतत्त्व; [6] वृद्धावस्था।

मेरी तिफ़्ली[1]में शानेइश्क़बाजी आशकारा थी।
अगर बच्चपनमें खेला खेल तो आँखें लड़ानेका॥
—क़ैसर देहलवी

अज़ल[2]से हुस्नपरस्ती लिखी थी क़िस्मतमें।
मेरा मिजाज लड़कपनसे आशिक़ाना था॥
—रहमत

पैदा हुए तो हाथ जिगरपर धरे हुए।
क्या जानें हम हैं कबसे किसीपर मरे हुए॥
—बेनजीरशाह वारसी

हाँ, आपको देखा था मुहब्बतसे हमींने।
जी, सारे ज़मानेके गुनहगार हमीं हैं॥
—अहसान दानिश

बहुत दिलचस्प है अपनी कहानी।
कहो तो हम सुनाएँ कुछ कहींसे॥
—अज्ञात्

खुलूसे इश्क़ न जोशेअमल न दर्दवतन।
यह जिन्दगी है खुदाजा कि जिन्दगीका कफ़न॥
—जिगर मुरादाबादी

अपनी हालतका ख़ुद अहसास नहीं है मुझको।
मैंने औरोंसे सुना है कि परीशाँ हूँ मैं॥
ग़मोंपर ग़म फटे पड़ते हैं ऐय्यामे जवानीमें।
इज़ाफ़े हो रहे हैं वाक़ियाते जिन्दगानीमें॥
—आसी लखनवी

---

[1] बचपन; [2] अनादिकाल।

शहीदे मुहब्बत न काफ़िर ना ग़ाज़ी।
मुहब्बतकी रस्में न तुर्की न ताज़ी॥

वह कुछ और शै है मुहब्बत नहीं है।
सिखाती है जो ग़ज़नवीको अयाज़ी[1]॥

—इक़बाल

वस्ल-ओ-दीदार की ख़्वाहिश (मिलन और दर्शनकी अभिलाषा)

ठहरजा ऐ क़ज़ा[2]! आता है वोह मेरी अयादत[3] को।
दमे आखिर तो मिल लेने दे, मुझको उस सितमगरसे॥

—हमदम अकबराबादी

किस वक़्त आप मेरी अयादतको आए हैं।
जब सुन चुके गलेसे उतरती दवा नहीं॥

—मुज़्तर लखनवी

तुम न आओगे तो क्या, मौत भी आनेकी नहीं।
रास्ते रोक दिये होंगे, क़ज़ाके तुमने?

—तनहा

वह झरोखेसे जो देखें तो मैं इतना पूछूँ—
"बिस्तर अपना पसेदीवार करूँ या न करूँ?"

तू भी उस शोख़से वाक़िफ़ है बता कुछ तो 'निज़ाम'।
मुझसे दिल माँगे तो इन्कार करूँ या न करूँ?

—निज़ाम

---

[1]अयाज एक कमसिन छोकरा था जिसपर महमूद गजनवी आशिक था। यहाँ अयाज़ी से तात्पर्य्य लौंडेबाजी से है।

[2] मृत्यु, [3] हाल पूछने।

उम्रेदराज माँगकर लाया था चार रोज़।
दो आरज़ूमें कट गये, दो इन्तजारमें ॥

—अज्ञात

बातें ख़याले यारमें करता हूँ इस तरह।
समझे कोई कि आठ पहर हूँ नमाजमें ॥

—जलील

दर्वाजे पै उस बुतके सौवार हमें जाना।
अपना तो यही काबा, अपना तो यही हज है ॥

—आगा शाइर देहलवी

ऐसा भी इत्तफ़ाक मुझे बारहा हुआ।
उनसे मिला हूँ उनका पता पूछता हुआ ॥

—आसी लखनवी

रहा ख्वाबमें उनसे शब भर विसाल।
मेरे वख़्त जागे मै सोया किया ॥

—अमीर मीनाई

फ़ुरक़त (विरह)—

दुआए मर्ग[1] फ़ुरक्तमें जो माँगी।
मुहल्लेवाले चिल्लाये कि "आये" ॥

—अमीर मीनाई

यूँ शवे हिज्र[2] में करते हैं ग़लत ग़म अपना।
नु [illegible] ख़ुद बनते है, ख़ुद करते है मातम अपना ॥

—अमीर मीनाई

---

[1] मृत्यु; [2] विरह।

एवज़ ले लिया हिज्रका मैंने मरके।
वोह तुरबत[१] पै रोते थे मै सो रहा था ॥

—साक़िब लखनवी

उनके देखेसे जो आ जाती है मुँहपर रौनक़।
वह समझते है कि बीमारका हाल अच्छा है ॥

—ग़ालिब

यहाँ तक आतिशे फ़ुर्क़त ने तेरी मुझको फूँका है।
रगेजाँ जलती रहती है, चिराग़ेदिलमें बत्ती-सी ॥

—अज्ञात्

शबे हिजरॉकी सख़्ती हो तो हो लेकिन यह क्या कम है।
कि लबपर रातभर रह-रहके तेरा नाम आयेगा ॥

—शाद अज़ीमाबादी

उस कूचेकी हवा थी कि मेरी ही आह थी।
कोई तो दिलकी आगपर पंखा-सा झल गया ॥

—मोमिन

अब इस फ़िक्रमें रातदिन कट रहे हैं।
तुझे भूल जाएँ कि ख़ुदको भुला दें ॥

थी जो कलतक कश्तिये उम्मीदको थामे हुए।
रुख़ बदलकर आज वोह भी मौजे तूफ़ाँ होगई ॥

—शफ़क़ टौंकी

---

[१] क़ब्र।

यह आधीरातको उनका पयाम आया है—
"हम आज आ नही सकते, अब इन्तज़ार न हो" ॥
—रियाज़ ख़ैराबादी

आलमे सोज़ो साज़में वस्लसे बढ़के है फिराक़ ।
वस्लमें मर्गे आरज़ू ! हिज्रमें लज्ज़ते तलब ॥
—इक़बाल

रोना-विसूरना (जब वस्ल न हुआ तो रोने पै उतर आये)

बनावट समझते है रोनेको मेरे ।
मुझे तो है ऐ जान ! रोना इसीका ॥
—अज्ञात्

हँसनेवाला नही है रोने पर ।
हमको ग़ुरबत[1] वतनसे बेहतर है ॥
—आतिश

समुन्दर कर दिया नाम उसका, नाहक सबने कह-कहकर ।
हुए थे जमा कुछ आँसू, मेरी आँखोंसे बह-बहकर ॥
—सौदा

पूछते क्या हाल हो, मुझ ख़ानुमां बरबादका ?
मशगला है आहका, अब शग़ल है फ़रियादका ॥
—ज़िया

कहींसे ढूँड़कर ला दे हमें भी ऐ गुलेतर !
वोह ज़िन्दगी जो गुज़र जाए मुसकरानेमें ॥
—आली लखनवी

---

[1] विदेशका वास, भ्रमण ।

क़ाहीदगी (निर्बलता) रोते-रोते और विरहका गम सहते-सहते इतने निर्बल हो गये है कि :—

क्या देखता है हाथ मेरा, छोड़ दे तबीब[1]।
याँ जान ही बदनमें नही, नब्ज़ क्या चले ?

—ज़ौक़

मर गया बीमारे ग़म करवट जो बदली जोफ़[2]से।
आलमेहस्ती[3]में आखिर इन्क़लाब आही गया ॥

—महशर लखनवी

दिल टूटनेसे थोड़ी-सी तकलीफ़ तो हुई।
लेकिन तमाम उम्रको आराम हो गया ॥

—सफ़ी लखनवी

कुछ सम्हल जाता अगर करवट बदल जाते मेरी।
यह मुझे दुश्वार था, उनके लिये मुश्किल न था ॥

—साक़िब लखनवी

अल्लाहरे जोरे मजबूरी खुद मुझको हैरत होती है।
जो बार उठाना पड़ता है क्योंकर वह उठाया जाता है ॥

यह भी है तमाशा उल्फ़तका, जो बात है वह नादानी है।
मंजूर नहीं है रब्त जिन्हें, रब्त उनसे बढ़ाया जाता है ॥

—वहशत कलकतवी

हमारे शीशये दिलको सम्हलकर हाथमें लेना।
नजाकत इसमें इतनी है नजरसे जब गिरा टूटा ॥

—अज्ञात्

---

[1] चिकित्सक, [2] कमजोरी; [3] जीवन-ससार।

साँस आहिस्ता लीजियो 'बीमार'।
टूट जाये न आबला दिलका ॥
—बीमार

उसके चक्करमें दुबारा तो मैं आनेका नहीं।
ढूँढ़ती फिरती है क्यों गर्दिशे दौराँ[1] मुझको ॥
नाकामे तमन्ना हूँ मैं उस अश्ककी मानिन्द।
गिरते हुए आशिककी जो आँखोंमें रुका हो ॥
मेरे दिलकी तड़पने जान तक छोड़ी न क़ालिबमें।
बुझा डाला चिराग़े उम्र इस पंखेने हिल-हिलके ॥
—लम्भूराम 'जोश'

मसरूफ़ कर लिया मुझे उसके खयालने।
जा ऐ अजल ! कि मरनेकी फ़ुरसत नहीं मुझे ॥
—जलील

ग़श उन्हें देखके आया तो मेरा बस क्या था ?
मुझसे सम्हला गया जबतक तो सम्हलता ही गया ॥
—साक़िब लखनवी

फोड़ा था दिल न था यह मुएपर खलल गया।
जब ठेस साँसकी लगी दम ही निकल गया ॥
—मोमिन

न पूछो कुछ मेरा अहवाल मेरी जाँ मुझसे।
यह देख लो कि मुझे ताकते बयान नहीं ॥
अब यह सूरत है कि ऐ परदानशीं !
तुझसे अहबाब छुपाते हैं मुझे ॥
—मोमिन

---

[1] संसारकी मुसीबत ।

बदगुमानी=अविश्वास

उर्दू-शायरीमे माशूक हरजाई (असती) माना गया है। वह आशिकसे चोरी-छिपके तो दूसरेसे प्रेम करता ही है, कभी-कभी आशिकके सामने भी नही चूकता। मुसलमानोमे एक दूसरेसे जुदा होते समय 'खुदा हाफिज' (अब खुदा ही तुम्हारा रक्षक है) कहनेका रिवाज है। एक आशिक साहब अपने माशूकके सौन्दर्य और हरजाईपनसे इतने शकित है कि 'खुदा हाफिज़' भी विदाके वक्त इस भयसे न कहा कि कही खुदाका ही दिल न मचल जाय!

बवक़्ते अलविदा उस दिलरुबाको।
न सौंपा बदगुमानीसे ख़ुदाको॥

एक साहब अपने माशूकके पास पत्र तो भिजवाते है, मगर कासिद को इस भय से कि कही वोह ही इस पर हाथ न धर दे उसका पता नही बतलाते :—

क़ासिदोंके पॉव तोड़े बदगुमानीने मेरी।
खत दिया लेकिन न बतलाया निशाने कूएदोस्त॥

—आतिश

उदू (प्रेममे प्रतिद्वन्द्वी)

दुश्मनको मेरी गोर पै लाना नहीं अच्छा।
मुर्देको मुसलमॉके जलाना नही अच्छा॥

—महमूद

उदू भी वाये क़िस्मत बज़्मे मातममें है साथ उनके।
हमारे फूलोंमें कम्बख़्त इक काँटा भी शामिल है॥

—अमीर मीनाई

मर्गे दुश्मनका जियादा तुमसे है मुझको मलाल।
दुश्मनीका लुत्फ़, शिकवेका मजा जाता रहा॥

—दाग़

तुम्हें चाहूँ तुम्हारे चाहनेवालोंको भी चाहूँ।
मेरा दिल फेरदो मुझसे यह झगड़ा हो नहीं सकता॥

—दाग़

आँखें बिछायें हम तो उदूकी भी राहमें।
पर क्या करें कि तुम हो हमारी निगाहमें॥

—अज्ञात्

बुलाया जो दावतमें गैरोंको तुमने।
मुझे पेश्तर अपने घर देख लेना॥

—दाग़

दरबान—ये दिल-फेंक आशिक घरमे न घुस आये इस भयसे माशूक दरवान रखता है :—

दरबाँको यह मजाल कि यूँ रोक ले हमें।
हमने तुम्हारा पास, तुम्हारा अदब किया॥

—बेखुद देहलवी

याँ आनेसे किस वास्ते जलता है हमारे।
आशिक़ तो नहीं है कहीं दरबान तुम्हारा?।

—तसकीन देहलवी

चले आओ जब चाहो दिलमें हमारे।
न दर है, न दरवान, उजड़ा मकाँ है॥

—मुगल जान तस्नीम

तुम्हारे दर पै जो दरबॉने आस्ती पकड़ी।
बरंगे नक्शेक़दम हमने भी ज़मीं पकड़ी॥

—दिल अज़ीमाबादी

ग़ैरको आने न दूँ तुमको कहीं जाने न दूँ।
काश! मिल जाये तुम्हारे दरकी दरबानी मुझे॥

—हैरत बदायूनी

खुशामद इस क़दरकी हो गया बदनाम आलममें।
ज़माना जानता है मुझको ये आशिक़ है दरबॉका॥

—दाग़

मना मुझको ही किया, रातको मुझसे ही कहा।
मैं गदा[1] बनके गया दर पै वोह दरबाँ समझा॥

—दाग़

क़ासिद=पत्रवाहक आशिक़ पत्रो द्वारा इश्कका इज़हार करते हैं :—

हरजाईपनसे उसके ठिकाने नहीं है दिल।
फिरता ख़राब होगा मेरा नामाबर कहीं॥

—मुश्ताक़ देहलवी

क़ासिद! चला तो है ख़बरे यारके लिये।
इतना रहे ख़याल कि आँखोंमें जान है॥

—अज्ञात्

आजतक लाया न नामेका जवाब।
नामाबर हमको मिला क्या लाजवाब॥

—हाफ़िज़ जौनपुरी

---

[1] भिक्षुक।

दोस्तके धोखेमें उसने दे दिया दुश्मनको खत ।
नामाबर ऐसा मेरा आँखोंका अन्धा हो गया ॥

—बेख़ुद देहलवी

लिक्खो सलाम ग़ैरके ख़तमें ग़ुलामको ।
बन्देका बस सलाम है ऐसे सलामको ॥

—मोमिन

बहकी-बहकी आके बातें कर रहा है मुझसे वोह ।
नामाबर आता है उनका क्या कहीं पीकर शराब ॥

—ज़ाकिर देहलवी

क़ासिदके आते-आते ख़त इक और लिख रखूँ ।
मैं जानता हूँ जो वोह लिखेंगे जवाबमें ॥

—ग़ालिब

बदख़त बताके कर दिया उस सब्ज़ ख़तने चाक ।
ख़तको खता नहीं, मेरा लिक्खा ख़राब है ॥

—अकबर मेरठी

बरसोंसे कानमें है क़लम इस उम्मीदपर ।
लिखवायें मुझसे ख़त मेरे ख़तके जवाबमें ॥

—अज्ञात्

पुर्जे उड़ाके खतके यह इक पुर्जा लिख दिया ।
लो, अपने एक खतके यह सौ ख़त जवाबमें ॥

—बिस्मिल देहलवी

नामाबर ! ख़त पै मेरी आँख भी रखकर लेजा ।
क्या गया तू जो, यही देखनेवाली न गई ॥

—अज्ञात्

दिल चाहता है अपना कि क़ासिद ! बजाय मुहर ।
आँख अपनी हो लिफ़ाफ़ये ख़त पै लगी हुई[१] ॥

नामेको पढ़ना मेरे ज़रा देखभालकर ।
काग़ज़ पै रख दिया है कलेजा निकालकर ॥

—अज्ञात्

नामेके पेचको ज़रा आहिस्ता खोलना ।
लिपटा हुआ किसीका कहीं इसमें दिल न हो ॥

—अज्ञात्

कैसा जवाब हज़रते दिल देखिये ज़रा ।
पैग़ाम्बरके हाथमें टुकड़े ज़ुबाँके हैं ॥

—दाग़

दीवानगी=आवारगी जब वस्ल नसीब नहीं हुआ तो मारे सदमोके आशिक दीवाना हो जाता है :—

सौदाइयोंसे इश्क़में करते हैं मशविरे ।
जैसे हैं आप, वैसे हमारे मुशीर[२] हैं ॥

—रिन्द

होश ही मुझको न था जब पहलुओंमें लूट थी ।
मुझको क्या मालूम, क्या जाता रहा, क्या रह गया ॥

—साक़िब लखनवी

---

[१] कागा नैन निकार दूँ, पिया पास ले जाय ।
पहले दरस दिखायके पाछे लीजो खाय ॥
कागा सब तन खाइयो चुन चुन खइयो मास ।
दो नैना मत खाइयो, पिया मिलनकी आस ॥

[२] मशवरा देनेवाला, सलाहकार ।

सहरा[1]-सहरा जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते हैं।
आहू[2] वहशी[3] ज़ानके हमको साथ हमारे फिरते हैं॥
—इमदाद इमाम असर

हम उसी ज़िन्दगी पै मरते हैं, जो यहाँ चैनसे बसर न हुई।
दिलने दुनिया नई बना डाली, और हमें आजतक खबर न हुई॥
—अज़ीज़ लखनवी

निकम्मा हो गया हूँ इस क़दर मसरूफ़े ग़म होकर।
मेरे ऐमालकेकातिब[4] भी अब बेकार बैठे हैं॥
—जोश मलसियानी

मृत्यु की इच्छा—जब वस्ल न हुआ और विरहमे सूखकर काँटा हो गये तो मृत्युकी इच्छा करने लगे :—

देख लीजे चलके अपने चाहनेवालेकी नाश[5]।
आप फ़रमाते थे ऐसेको क़ज़ा आती नहीं॥
—कैसर देहलवी

उनकी गलीमें जिस दम मेरा गया जनाज़ा।
हसरतसे देखते थे पर्दा उठा-उठाकर॥
—अज्ञात्

दफ़नाना देख-भालके हसरत भरेकी लाश।
लिपटी हुई कफ़नमें कोई आरज़ू न हो॥
—अज्ञात्

---

[1] जंगल, वन; [2] हिरन; [3] पागल, [4] भाग्यलेख लिखनेवाले; [5] लाश।

ख़बर उनको हुई होगी, अजब क्या वे चले आएँ।
जनाज़ा ले चलो सूएमज़ार आहिस्ता-आहिस्ता ॥

—अज्ञात्

लहद[1]में क्यों न जाऊँ मुँह छिपाये।
भरी महफ़िलसे उठवाया गया हूँ ॥

—शाद

कोई कन्धा तक नहीं देता हमारी नाशको।
हम ख़ुदाके घर भी अपने पाँवसे जायेंगे क्या ?

—अज्ञात्

रास आया है मुझे वहशतमें मर जाना मेरा।
वह मुझे रोये यह कहकर "हाय ! परवाना मेरा" ॥

—रसा रामपुरी

रो रहे हैं दोस्त मेरी लाशपर बेअख़्तियार।
यह नहीं दरियाफ्त करते "किसने इसकी जान ली" ॥

—अकबर इलाहाबादी

नज़अ़[2]में यारसे पैमानेवफ़ा[3] करते हैं।
उस दग़ाबाज़से हम आज दग़ा करते हैं ॥

—रियाज़ खैराबादी

यह कहकर क़ब्रपर फिर याद अपनी कर गये ताज़ा।
"अरे ओ मरनेवाले ! अब मुझे दिलसे भुला देना" ॥

—अज़ीज़ लखनवी

---

[1] कब्र; [2] मृत्युके समय अन्तिम श्वास तोडना;
[3] वायदा पूरा करनेकी वात।

न जाना कि दुनियासे जाता है कोई।
बहुत देर की महर्बां आते-आते॥
—दाग़

शहीदेग़मकी लाशपर न सर झुकाके रोइये।
वह आँसुओंका क्या करे? जो मुँह लहूसे धो चुका॥
—अज्ञात्

वादा किया था फिर भी न आये मजारपर।
हमने तो जान दी थी, इसी एतबारपर॥
—अजीज़ लखनवी

वो आये हैं पशेमाँ[1] लाशपर अब।
तुझे ऐ. जिन्दगी लाऊँ कहाँसे?
—मोमिन

खुद्दारी=स्वाभिमान—

ऐ 'दाग़' अपनी वजह हमेशा यही रही।
कोई खिचा, खिचे, कोई हमसे मिला, मिले॥
—दाग़

शामिल हो जिसमें रंज वोह राहत न कर क़ुबूल।
दोज़खके मुत्तसिल[2] हो तो जन्नत न कर क़ुबूल॥

गैरत नहीं रही तो है बेकार जिन्दगी।
फैलाके हाथ ज़र्फ़े नदामत न कर क़ुबूल॥
—अदब

[1] शर्मिन्दा। [2] नज़दीक।

खबर उनको हुई होगी, अजब क्या वे चले आएँ।
जनाज़ा ले चलो सूएमज़ार आहिस्ता-आहिस्ता॥
—अज्ञात्

लहद[1] में क्यों न जाऊँ मुँह छिपाये।
भरी महफ़िलसे उठवाया गया हूँ॥
—शाद

कोई कन्धा तक नहीं देता हमारी नाशको।
हम ख़ुदाके घर भी अपने पाँवसे जायेंगे क्या?
—अज्ञात्

रास आया है मुझे वहशतमें मर जाना मेरा।
वह मुझे रोये यह कहकर "हाय! परवाना मेरा"॥
—रसा रामपुरी

रो रहे हैं दोस्त मेरी लाशपर बेअख़्तियार।
यह नहीं दरियाफ्त करते "किसने इसकी जान ली"॥
—अकबर इलाहाबादी

नज़अ़[2] में यारसे पैमानेवफ़ा[3] करते हैं।
उस दग़ाबाज़से हम आज दग़ा करते हैं॥
—रियाज़ खैराबादी

यह कहकर क़ब्रपर फिर याद अपनी कर गये ताज़ा।
"अरे ओ मरनेवाले! अब मुझे दिलसे भुला देना"॥
—अज़ीज़ लखनवी

---

[1] कब्र; [2] मृत्युके समय अन्तिम श्वास तोड़ना;
[3] वायदा पूरा करनेकी बात।

न जाना कि दुनियासे जाता है कोई।
बहुत देर की महर्बां आते-आते॥
—दाग

शहीदेग़मकी लाशपर न सर झुकाके रोइये।
वह आँसुओंका क्या करे? जो मुँह लहूसे धो चुका॥
—अज्ञात

वादा किया था फिर भी न आये मजारपर।
हमने तो जान दी थी, इसी एतबारपर॥
—अजीज़ लखनवी

वो आये हैं पशेमाँ[1] लाशपर अब।
तुझे ऐ. जिन्दगी लाऊँ कहाँसे?
—मोमिन

ख़ुदारी=स्वाभिमान—

ऐ 'दाग़' अपनी वजह हमेशा यही रही।
कोई खिंचा, खिचे, कोई हमसे मिला, मिले॥
—दाग

शामिल हो जिसमें रंज वोह राहत न कर कुबूल।
दोजखके मुत्तसिल[2] हो तो जन्नत न कर क़ुबूल॥

ग़ैरत नहीं रही तो है बेकार जिन्दगी।
फैलाके हाथ ज़र्फ़े नदामत न कर कुबूल॥
—अदब

---

[1] शर्मिन्दा, [2] नजदीक।

अभिलाषानुसार परीक्षास्वरूप फरहादने पहाड़ोंको काटकर महल तक नहर निकाल दी। परन्तु छली बादशाहने शीरी लौटानेके बजाय शीरीकी मृत्युकी झूठी खबर फरहादके पास पहुँचवा दी। खबर सुनते ही बेचारे फ़रहादने अपने हाथका तेशा पत्थरमें मारनेके बजाय अपने सरमें मार लिया और ख़ुदकी निकाली हुई नहरमें गिरकर दम दे दिया।

३ नवम्बर १९४६ ई०

उद्घाटन

: ३ :

उर्दू-शायरीका विकास, उसके पोषक,
ग़ज़लके बादशाह

उद्‌घाटन

अमीर खुसरोकी राष्ट्र-भाषा 'हिन्दी-हिन्दवी'का भारतीय वेश 'वली'[1] को पसन्द न आया। उन्होने अरबी-फारसी मिश्रित जिस भाषाकी बुनियाद डाली, वह प्रारम्भमे 'रेख़्ता' और आगे चलकर सन् १७९७के लगभग 'उर्दू' कहलाई। अठारहवी शताब्दी 'रेख़्ता' या उर्दू-शायरीकी उन्नतिका सबसे बड़ा युग है। इस युगमे उर्दू-शायरी शैशवको पारकर उस अवस्थामे पहुँच गई थी कि उसके रूप और उभारको देखकर बरबस मुँहसे निकल पड़ता था :—

उर्दू-शायरीका विकास

---

[1] वली—इनकी उपाधि वलीअल्लाह, शम्सउद्दीन नाम और उपनाम वली था। औरंगाबादके रहनेवाले थे। ये दो वार दिल्ली गये। प्रथम औरंगजेबके शासनकाल १७०० ईस्वीमे और द्वितीय मुहम्मदशाह के शासनकाल १७२४ ईस्वीमें। प्रथम यात्रामे शाह अल्लाह गुलशनसे इनका परिचय हुआ, जो प्रतिष्ठित वयोवृद्ध शायर थे। वलीसे (हिंदी वाहुल्य) शेर सुनकर इन्होने कहा कि "मजामीने फारसी क्यो नही रेख़्तेमे इस्तेमाल करते ?" दूसरी वार दिल्लीकी यात्रामे वली अपना कलाम रेख़्ता भी साथ ले गये, जिसकी वहाँ वहुत ख्याति हुई। इसके बाद वली पुनः औरंगाबाद आये और वही इन्तकाल किया। वलीके कलामके अध्ययनसे मालूम होता है कि प्रारम्भमे वे हिन्दीके शब्द और दक्षणी मुहावरे अधिक प्रयोगमे लाते थे, किन्तु दिल्ली यात्राके वाद उनके कलाममे उत्तरोत्तर फ़ारसी शब्द और मुहावरे वढते गये और हिन्दी शब्द बहिष्कृत होते गये। प्रारम्भिक उनकी गज़लकी ज़वान यह थी:—

जवानी आयगी जब देखना क़हरे खुदा होगा ॥

यह 'मीर' और 'सौदा' जैसे बाकमाल उस्तादोका युग था। इनसे पूर्व—वली, आबरू, नाजी, यकरंग, हातिम, आरज़ू और फुगाँ वगैरह

तेरे बिन मुझको ऐ साजन, तो घर और बार क्या करना ?
अगर तू ना इछे मुझ कंन तो यह संसार क्या करना ?

इस शेर मे प्राय: सभी शब्द हिन्दी है और जबान-मुहावरे दक्षनी हैं। १७०० ईस्वी के बाद शाहआलम के प्रोत्साहन पर वलीने फ़ारसी तरकीबो का प्रयोग भी शनैः शनैः प्रारम्भ कर दिया। उदाहरण स्वरूप :—

देखना तुझ क़द का ऐ नाज़ुक बदन !
बाइसे खमयाजए आग़ोश है ॥

दूसरी बार दिल्ली हो आनेके बाद उनकी भाषामें काफ़ी परिवर्त्तन हो गया और उसमे सुथरापन भी आ गया। मसलन :—

आग़ोश में आने की कहाँ ताब है उसको।
करती है निगह जिस क़दे नाज़ुक पै गिरानी ॥
ऐ 'वली' रहने को दुनिया में मुकामे आशिक़।
कूचये जुल्फ़ है, आग़ोशिये तनहाई है ॥

वली दिल्ली जानेसे पहले जो सिर्फ इस तरह लिखना जानते थे :—

तेरे आने की बात ऊपर बिछाये हूँ मै अखियाँको

वही दिल्लीसे वापिस आनेके बाद यह बोली बोलने लगे :—

सहर है सरवेगुल जबींको अदा

(इन्तक़ादियात भाग २, पृ० ८६—८८ और १७१ का भावानुवाद)

उर्दू-शायरीको काफी विकसित कर गये थे। इस युगमें—मीर, सौदा, दर्द, जानजाना, सोज़, क़ाइम, यकीन, बयाँ, हिदायत, कुदरत और जिया जैसे सुलझे हुए कलाकारोने उसे चार चाँद लगा दिये। उस समयके शासक और कवि भारतीय भाषासे अनभिज्ञ और अरबी-फारसीके विद्वान थे। अतः स्वाभाविकतया उर्दूमे नित-नये अरबी-फारसी तरकीबो, मुहावरो और शब्दोका समावेश होने लगा, और उत्तरोत्तर हिन्दीके शब्द मतरूक (त्याज्य) होते गये।

उर्दू-शायरीके पोषक

हमने प्रस्तुत पुस्तकका उद्घाटन इसी युगसे किया है। क्योकि उर्दू-शायरीका विकसित रूप यहीसे देखनेको मिलता है। इससे पूर्व 'वली' वगैरहकी शायरी अन्वेषकोके लिये तो महत्वपूर्ण हो सकती है; किन्तु हम जिस अणुवीक्षण-यन्त्रसे उसे देखने चले है, उसमे वह नही आती। बच्चीके शैशवकी क्रीड़ाएँ उसके अभिभावकोको तो आनन्द दे सकती है; किन्तु वरण करनेवालेको नही। वह जिस शवाबको चाहता है, हमने उसीका नकाव उठाया है।

इस युगके सैकड़ों शायरोमेंसे हमने केवल 'मीर' और 'दर्द'को चुना है। हमारी तुच्छ सम्मतिमे यही दो सबसे अधिक उस युगके चमकदार कलाकार थे। यद्यपि 'सौदा' भी 'मीर'के हमपल्ले थे। पर सौदा कसीदे और हिजो के उस्ताद थे; मीर और दर्द गजलके। उर्दू-शायरीकी बिस्मिल्लाह ही गजलसे हुई है। अतः सबसे पहले गजलके बादशाह मीर और दर्दका परिचय देना आवश्यक हो जाता है।

गजलके बादशाह

यद्यपि आजके इस प्रगतिशील युगमे जबकि नित नये कमालात ज़हूरमे आ रहे है, उस अतीत युगकी ओर झाँकनेको जी नही चाहता; फिर भी गजलकी दुनियाका वह स्वर्ण-युग था और आज भी उनकी शायरीका बड़ा प्रभाव है। इन्होने वलीकी शायरीको इस

तरह सँवारा है कि १५० वर्ष व्यतीत होनेपर भी उनकी तूती बोलती है।

उर्दू-शायरीका जन्म विलासितामे डूबे हुए बादशाहों-नवाबोके महलोमे उस समय हुआ जब कि उसकी बड़ी बहनें—अरबी, फ़ारसी—हुस्नोइश्क़से आँखमिचौनी खेल रही थी। उर्दू-शायरीने भी अपनी बड़ी बहनोका रग अख़्तियार किया और विलासी शासकों तथा रंगीन मिजाज शायरोके प्रयत्नसे 'ग़जल'को जन्म दिया।

यद्यपि ग़जलका अर्थ ही इश्किया शायरी है; फिर भी कही-कही धार्मिक, दार्शनिक, राजनैतिक और जीवन सम्बन्धी अनेक अनुभवोके समोनेका शायरोने स्तुत्य प्रयत्न किया है। गज़लोके अशआ़र चुनते समय इस तरहके उपयोगी कलामको यथाशक्य संकलन करनेकी हमारी रुचि रही है।

मीर मुहम्मद तक़ी 'मीर'

[सन् १७०९-१८०९ ई०]

'मीर' साहब अपने युगमे उर्दू गज़लके बादशाह माने गए है। जैसा आपका उपनाम 'मीर' (सरदार) था, वैसे ही आप कविता-ससारमें चमके भी है। अपने जीवनमे ही इतनी ख्याति पाई कि आपके कलामको लोग सौगातके तौरपर दूर-दूर ले जाते थे। आपकी कविता वेदना और आहकी सजीव मूर्त्ति है। आज १५० वर्षके बाद भी जब कि उर्दू-शायरीमे महान परिवर्तन हो गया है, मुहावरे, भाव, भाषा और दृष्टिकोणमे जमीन-आस्मानका अन्तर आ गया है, कितने ही शब्द और तरकीबें मतरूक (अव्यावहारिक) हो गये है, भाव और भाषा भी नित नए परिधान बदलते जा रहे है, फिर भी मीर साहबकी कवितामे वही ताजगी महसूस होती है। 'गालिब' और 'ज़ौक' जैसे महारथियोने भी आपका लोहा माना है। फर्माते है :—

> रेख़्तेके तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब'!
> कहते है अगले ज़मानेमें कोई 'मीर' भी था ॥

× × × ×

> 'ग़ालिब' अपना यह अक़ीदा[1] है बक़ौले[2] 'नासिख़'।
> आप बेबहरा[3] है जो मौतक़िदे[4] 'मीर' नहीं ॥

× × × ×

---

[1] विश्वास, [2] नासिख शाइरके शब्दोमें; [3] अभागे; [4] मीरके अनुयायी, मीरके प्रशसक।

ब हुआ पर न हुआ 'मीर' का अन्दाज नसीब।
'ज़ौक़' यारोंने बहुत ज़ोर ग़ज़लमें मारा ॥

× × × ×

मीर साहब ई० स० १७०९में आगरेमे उत्पन्न हुए और १०० वर्षकी आयुमे ई० स० १८०९मे लखनऊमे समाधि पायी। बचपनमे ही माता-पिताकी मृत्यु हो जानेसे आपको दिल्ली आना पड़ा और करीब ६५ वर्षकी आयु तक आप दिल्लीमे ही रहे। कविता करनेकी रुचि स्वाभाविक थी। धीरे-धीरे सुगन्ध फैलने लगी। यहाँ तक कि दिल्लीमे शाहआलमके दरबारमे बड़ी आवभगत होने लगी। मगर पेट खाली हो, बाल-बच्चे भूखसे छटपटाते हो, तो ऐसी आवभगत और राजकीय प्रतिष्ठा नारकीय यंत्रणासे कम नही होती। एक कल्पित चित्र खीचिये—

दरबारमें खूब कहकहे लग रहे है। कविताके फ़व्वारे छूट रहे है। संगीत-लहरी कयामत ढा रही है। पान और इत्र पेश किये जा रहे हैं। टोकरों भरकर प्रतिष्ठा मिल रही है। खूब रगरेलियाँ हो रही है। मगर पेटकी ज्वालाको शान्त रखकर, आँखोके आँसू पीकर और ओठोपर हँसी लाकर बेहयाओंकी तरह कोई कब तक हँस सकता है? जब दरबार बरखास्त होता है, जी नही चाहता कि इस बेबसीकी हालतमें बीवी-बच्चो-को मनहूस शक्ल दिखाई जाय। मगर पड़ रहनेको ठिकाना भी कहाँ? मजबूरन घर जाना पड़ता है। दरवाजा खुलवानेको आवाज देना ही चाहता है कि अन्दरसे आवाज़ सुनाई पड़ती है :—

"बेटे, ज़रा सब्रसे काम लो। तुम्हारे अब्बा आते ही होंगे। आज तुम्हारे वास्ते बादशाह सलामतने बहुत सारी मिठाइयाँ और रुपये दिये होंगे।"

"अम्मीजान! आप हमेशा यूँही कहा करती है। काश, आपका कहा एक रोज़ भी सच हुआ होता! शहरमे अब्बाजानकी शायरी और

दरवारी इज्ज़तकी धूम है। सुना है, बादशाह सलामतको उनके वगैर चैन नही पड़ती—उनके कहनेको कभी नहीं टालते। फिर भी खुदा जाने हम क्यो इस कदर मुसीवतमें हैं।"

"नही, बेटे! आज वे जरूर मालामाल होकर आएँगे।"

है कोई ऐसा संगदिल और बेहया जो अब भी दरवाजा खुलवाकर घरमे घुस सके? आह—

मेरी मजबूरियोंको कौन जाने?

इस काल्पनिक चित्रका वे भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकते है, जो दरिद्रताका वरदान लेकर जनमे और ससारकी समस्त आपत्तियाँ निमंत्रण दिये बिना ही जिनके यहाँ आती रही हों और दुर्भाग्यसे बडे आदमियोमे उनकी बैठक शुरू हो गई हो। तब देखिए वह उठक-बैठक मनुष्यताके लिए कैसी अभिशाप सिद्ध होती है? घरमे भुनी भाँग नही, मगर मूँछोंपर इत्र लगाना ही पड़ता है। दिल अन्दरसे रोनेको कर रहा है, परन्तु बेहया हँसी ओठोपर लानी ही पडती है। तिल-तिल घुलते हुए भी अनेक स्वाँग बनाने पडते हैं। ऐसे ही अभागोके लिए शायद किसीने कहा है—"घरमे बीवी झोके भाड, बाहर मियाँ सूबेदार।" मीर साहब शायद ऐसे ही मजबूरोमेंसे एक थे, जो दिल ही दिलमे घुले जाते थे, पर जबानपर उफ तक न लाते थे। आप आवश्यकतासे अधिक स्वाभिमानी, सन्तोषी, निस्स्वार्थी और कष्टसहिष्णु थे। माँगनेसे मरना बेहतर समझते थे। फ़र्माया है :—

> आगे किसूके क्या करें दस्तेतमअ़[1] दराज़[2]।
> यह हाथ सो गया है सिरहाने धरे-धरे॥[3]

---

[1] कामनाका हाथ; [2] पसारना; [3] गोस्वामी तुलसीदासने भी क्या खूब कहा है :—

समस्त आयु निर्धनताजनक कष्टोंमें काट दी। मगर किसीके सामने हाथ पसारना तो दरकिनार, अन्तर्ज्वालाका धुआँ भी बाहर तक न आने दिया। अपनी आन-बानमे कभी बाल न आने दिया। उम्र भर बाँक़पन की टेक निभाई। बकौल किसीके :—

आशिक़का बाँकपन न गया बादेमर्ग[1] भी।
तख्ते पै गुस्ल[2]के जो लिटाया, अकड़ गया॥

आखिर कब तक दरबारी सूखी मान-प्रतिष्ठा पेटकी ज्वालाको शान्त रखती, जब कि खुद बादशाहके ख़जानेमें ही चूहे दण्ड पेल रहे थे। ऐसी हालतमे तंग आकर मीर साहबने दिल्लीको प्रणाम किया।

मीर साहब जरा कडवे मिजाजके थे। मिलनसारी, जमानेसाजी शायद पास तक नही फटकी थी। दूसरोंकी प्रशंसा करनेमें भी कंजूस थे। जरा-सी बात उनके दिलको ठेस पहुँचा देती थी। कौन मनुष्य कैसे व्यवहारका अधिकारी है, यह वे जानते ही न थे। जो दिलमे आता वही कह देते थे। इन सब बातोने भी उनके कष्टोमे आहुतियाँ ही दी।

जब दिल्लीसे लखनऊको प्रस्थान किया तो समूची बैलगाड़ीके लिए किराया भी पास न था। अतः एक और यात्रीको साझी बनाया। मार्गमें यात्रीने बातचीत छेड़नी शुरू की तो मीर साहब मुँह फेरकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद फिर उसने बातचीतका सिलसिला ढूँढ़ना चाहा, तो मीर साहब तेवर बदलकर बोले :—

"बेशक, आपने किराया दिया है। आप गाड़ीमें शौकसे बैठे चलें, मगर बातोसे क्या ताल्लुक?"

तुलसी कर-पर कर करो, कर-तर कर न करो।
जा दिन कर-तर कर करो, ता दिन मरन करो॥

[1] मृत्युके पश्चात्; [2] स्नान।

यात्रीने कहा—"हज़रत, क्या मुज़ाइका है? रास्तेमें बातोंसे जी बहलता है।"

मीर साहब बिगडकर बोले—'जी, आपका तो जी बहलता है, मगर मेरी ज़बान ख़राब होती है।"[१]

लखनऊ पहुँचनेपर धूम मच गई। नवाब आसुफ़ुद्दौलाने भी सुना। उन्होंने २०० रु० मासिक नियत कर दिया। मगर दुर्दिनोंने यहाँ भी साथ न छोड़ा। और छोडे भी क्योंकर? बक़ौल 'ग़ालिब' :—

> क़ैदेहयातो[२] बन्देग़म[३] अस्लमें दोनों एक हैं।
> मौतसे पहले आदमी ग़म[४]से निजात[५] पाये क्यों?॥[६]

मीर साहबकी तुनकमिज़ाजी, रुक्षस्वभाव, दुनियादारीकी अनभिज्ञता यहाँ भी साथ-साथ आई। एक दिन नवाबने ग़ज़लकी फ़र्माइश की। कई रोज़ बाद दरबारमे पहुँचनेपर नवाबने तक़ाजा किया तो आपने तेवर चढ़ाकर कहा—"जनाबेआली! मज़मून ग़ुलामकी जेबमे तो भरे ही नही कि कल आपने फ़र्माइश की और आज हाज़िर कर दे।"[७]

एक दिन नवाबने बुला भेजा। जब पहुँचे तो देखा कि नवाब हौजके किनारे खडे है। हाथमे छडी है। पानीमे लाल-हरी मछलियोंके तैरनेका

---

[१] आबेहयातके लतीफ़े, पृ० ३०

[२] जीवनकी क़ैद; [३] कष्टोंका बन्धन, [४] मुसीबतसे; [५] छुटकारा; मुक्ति।

[६] बल्कि मरनेके बाद भी चैन मिल सकेगा, 'ज़ौक़' साहबको तो इसमे भी शक है,—

> अब तो घबराके यह कहते है कि मर जाएँगे।
> मरके भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे?

[७] आबेहयातके लतीफ़े, पृ० ३३

तमाशा देख रहे हैं। इनको देखकर बहुत खुश हुए और कोई ग़ज़ल सुनानेकी फ़र्माइश की। मीर साहबने सुनाना आरम्भ किया। मगर नवाब साहब छडीसे मछलियोके साथ खेलनेमे लीन थे, और पढ़नेको भी कहते जाते थे। आखिर चार शेर पढ़कर मीर साहब ठहर गये और बोले—"पढ़ूँ क्या खाक? आप तो मछलियोंसे खेलते है। इधर ध्यान दें तो पढ़ूँ।" नवाबने कहा—"जो अच्छा शेर होगा खुद ही ध्यान खीचेगा।" मीर साहबको यह बात पसन्द न आई और ग़जलको जेबमे रख घर चले आये और फिर कभी नवाब आसफुद्दौलाके जीते जी उनके यहाँ नही गये।[1]

एक रोज़ मीर साहब बाज़ार गये तो सामनेसे नवाबकी सवारी आ गई। देखते ही नवाब साहबने अत्यन्त स्नेहसे न आनेका कारण पूछा तो मीर साहबने जवाब दिया—"बाज़ारमें खड़े-खड़े बातें करना सभ्यताके विरुद्ध है।"

इसी तरह मीर साहबका जीवन व्यतीत हुआ। मौका महल देखकर बात करनेका ढंग और चापलूसीका तरीका उन्हें न आया। परिणाम-स्वरूप बग़ैर रमज़ानके रोज़े रखने पड़ते थे। उन्होने अपनी दरिद्रताका

---

[1] इसी तरहकी एक घटना मीर साहबके समकालीन सौदा साहबकी है। सौदा से बादशाह शाहआलम अपनी गजलें शुद्ध कराया करते थे। एक दिन बादशाहने ग़जलका तक़ाज़ा किया तो सौदा ने कोई मजबूरी ज़ाहिर की। बादशाहके पूछनेपर कि रोज़ कितनी ग़ज़ल बना लेते हो, कहा,—"जब तबियत लग जाती है तो दो-चार शेर बना लेता हूँ।" बादशाह बोले—"हम तो पाखानेमें बैठे-बैठे चार ग़ज़लें कह लेते हैं।" सौदा ने हाथ बाँधकर अर्ज़ की—"हुज़ूर! वैसी ही बू भी आती है।" कहकर चले आये और फिर कभी न गये। (आबेहयातके लतीफ़े, पृ० १०)

स्वयं हृदयस्पर्शी शब्दोमे, विस्तारसे वर्णन किया है। बानगी मुलाहिज़ा हो :—

चार दिवारी सौ जगहसे ख़म, तर तनक हो तो सूखते हैं हम ॥
लोनी लग-लगके झड़ती है माटी, आह, क्या उम्र बेमज़ा काटी ॥
ता गले सब खड़े हैं पानीमें, ख़ाक है ऐसी ज़िन्दगानीमें ॥
घरकी सूरत तो और रोती है, छत भी बेइख़्तियार रोती है ॥
मीरजी इस तरहसे आते हैं, जैसे कंजर कहींको जाते हैं ॥

नवाब आसफुद्दौलाके बाद सआदतअलीख़ाँ राज्याधिकारी हुए। परन्तु मीर साहब फिर भी दरबार न गये। एक रोज़ नवाबकी सवारी जा रही थी। मीर साहब मस्जिदमे बैठे थे। नवाबका अदब बजा लाने को सब खड़े हो गये। मगर मीर साहब हिले तक नहीं। नवाबने 'इन्शा'से इस अहंकारीका परिचय पूछा तो इन्शाने अर्ज़ की—"हुज़ूर, यही मीर साहब है जिनका ज़िक्र अक्सर दरबारमें रहता है। आज भी शायद भूखे बैठे होगे, मगर दिमाग़ आस्मानपर है।" नवाबने दरबारमें आकर ख़िलअ़त मय १०००, रु०के भिजवाई। मगर मीर साहबने उसे वापिस करते हुए कहा—"इसे मस्जिदमें भिजवा दीजिये। मै इतना मुहताज नहीं।"

नवाबने सुना तो दंग रह गये। मनानेको इंशा भेजे गये। उन्होने अनक उतार-चढावकी बातें की। बालबच्चोकी दयनीय स्थितिकी ओर संकेत किया तो मीर साहबने फ़र्माया—"साहब, वे अपने मुल्कके बादशाह है तो मै भी अपने फनका बादशाह हूँ। कोई नावाकिफ़ इस तरह पेश आता तो मुझे शिकायत न थी। नवाब साहब मुझसे वाकिफ़, मेरे हालसे वाक़िफ। इसपर इतने दिनोंके बाद एक दस रुपयेके ख़िदमतगारके हाथ ख़िलअ़त भेजा। मुझे फ़िक्र-फाक़ा क़ुबूल है मगर यह ज़िल्लत नही उठाई जाती।"

मगर इंशा भी बातोंके बादशाह थे। मनाकर दरबार ले ही गये। नवाब इनकी इतनी इज़्ज़त करते थे कि अपने सामने बिठाते थे और अपना पेचवान पीनेको देते थे।[१]

मीर साहबके कुल मिलाकर ६ दीवान पाये जाते हैं। बकौल लेखक "तारीखे अदब उर्दू"—"मीरकी जिन्दगी एक दर्दोअलमकी ज़िन्दगी है। इसी वजहसे मीरके बेहतरीन और सबसे ज्यादा बाअसर शर वही हैं जिनमें दर्दोअलमके जजबातका इजहार किया गया है। मीरके अशआर ग़मगीन और चुटीले दिलोपर खास असर करते हैं।....मीरकी दुनिया तारीकी और गमसे भरी हुई है, जिसमें कि उम्मीदकी झलक नज़र नहीं आती। उनके तमाम अशआर इस मकूलेके तहतमें हैं "जो कोई इस ग़मकदेमें कदम रखे उम्मीदको पीछे छोड़ आये।"

नाहक[1] हम मजबूरोंपर यह तुहमत[2] हैं मुख़्तारी[3]की।
चाहते हैं सो आप करें हैं, हमको अबस[4] बदनाम किया॥

दिल वोह नगर नही कि फिर आबाद हो सके।
पछताओगे सुनो हो, यह बस्ती उजाड़कर॥

मर्ग[5] इक मान्दगी[6]का वक़्फ़ा[7] है।
यानी आगे चलेंगे दम लेकर॥

✓कहते तो हो यूँ कहते, यूँ कहते जो वोह आता।
सब कहनेकी बातें हैं, कुछ भी न कहा जाता॥

तड़पै है जब कि सीनेमें उछले है दो-दो हाथ।
गर दिल यही है 'मीर' तो आराम हो चुका॥

सरापा[8] आरज़ू[9] होनेनै बन्दा[10] कर दिया हमको।
वगर्ना हम ख़ुदा थे, गर दिलेबेमुद्दआ[11] होते॥

एक महरूम[12] चले 'मीर' हमी आलम[13]से।
वर्ना आलमको ज़मानेने दिया क्या-क्या कुछ?

हम खाकमें मिले तो मिले, लेकिन ऐ सिपहर[14]!
उस शोख़[15]को भी राह पै लाना जरूर था॥

---

[1] व्यर्थ, [2] दोष, अपराध, [3] स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करनेकी; [4] व्यर्थ, [5] मृत्यु, [6] बीमारीका, शिथिलताका, [7] समयकी अवधि, विश्राम-स्थल, [8] सिरसे पैरतक, आदिसे अन्ततक, [9] अभिलाषा; [10] पुजारी, सेवक, [11] वाञ्छा-रहित हृदय, [12] वंचित, बदनसीब; [13] संसारसे; [14] आकाश, [15] चुलबुलेको।

अहदेजवानी[1] रो-रो काटी, पीरीमें[2] लीं आँखें मूँद ।
यानी रात बहुत थे जागे, सुबह हुई आराम किया ॥

रख हाथ दिलपर 'मीर'के दरियाफ़्त कर लिया हाल है ।
रहता है अक्सर यह जवाँ, कुछ इन दिनों बेताब-सा ॥

सुबह तक शमअ[3] सरको धुनती रही ।
क्या पतिंगेने इल्तमास[4] किया ?

दाग़ेफ़िराक़ो[5] हसरतेवस्ल,[6] आरज़ूएशौक़[7] ।
मैं साथ ज़ेरेख़ाक[8] भी हंगामा[9] ले गया ॥

शुक्र[10] उसकी जफ़ा[11]का हो न सका ।
दिलसे अपने हमें गिला[12] है यह ॥

शर्त सलीक़ा[13] है हर इक अम्र[14]में ।
ऐब भी करनेको हुनर चाहिए ॥

अपने जी हीने न चाहा कि पिएँ आबेहयात[15] ।
यूँ तो हम 'मीर' उसी चश्मे[16] पै बेजान हुए ॥

चमनका नाम सुना था वले[17] न देखा हाय !
जहाँमें हमने क़फ़स[18] ही में जिन्दगानी की ॥

---

[1] युवावस्था, [2] वृद्धावस्थामे; [3] चिराग, मोमवत्ती; [4] निवेदन; [5] विरहका दुःख; [6] मिलाप या सम्भोगकी इच्छा; [7] लालसाकी अभिलाषा, मौज-शौककी ख्वाहिश; [8] मिट्टीके नीचे यानी कब्रमे; [9] भीड-भडक्का, [10] धन्यवाद; [11] अत्याचारका; [12] शिकायत, [13] लियाकत, काम करनेका अच्छा ढग, [14] काममे, घटनामे; [15] जीवन-अमृत; [16] पानीका सोता; [17] मगर, [18] कारावास, पिंजरा ।

कैसे हैं वे कि जीते हैं सदसाल[1] हम तो 'मीर'।
इस चार दिनकी जीस्त[2] में बेज़ार[3] हो गये ॥

तुमने जो अपने दिलसे भुलाया हमें तो क्या ?
अपने तईं तो दिलसे हमारे भुलाइये ॥

परस्तिश[4] की याँ तक कि ऐ बुत[5] तुझे।
नज़रमें सभूकी खुदा कर चले ॥

यूँ कानोंकान गुल ने न जाना चमनमें आह।
सरको पटकके हम सरे दीवार मर गए ॥

सदकारवाँ[6] वफ़ा[7] है कोई पूछता नहीं।
गोया मताएदिल[8] के ख़रीदार मर गये ॥

अपने तो होंट भी न हिले उसके रूबरू।
रंजिशकी वजह 'मीर' वोह क्या बात हो गई ?

'मीर' साहब भी उसके याँ थे पर।
जैसे कोई गुलाम होता है ॥

ऐ शोरेक़यामत[9]! हम सोते ही न रह जाएँ।
इस राहसे निकले तो हमको भी जगा देना ॥

मस्तीमें लग़ज़िश[10] हो गई माज़ूर[11] रक्खा चाहिए।
ऐ अहलेमस्जिद! इस तरफ़ आया हूँ मैं भटका हुआ ॥

---

[1] सौ वर्ष; [2] ज़िन्दगी; [3] परेशान, ऊब; [4] उपासना, निबाह; [5] मूर्त्ति, [6] यात्री-दल; [7] सहृदयता, सुशीलता; [8] हृदय-धनके; [9] प्रलयका शोर; [10] कम्पन, पैरका फिसलना; [11] असमर्थ (यहाँ क्षमा)।

आनेमें उसके हाल हुआ जाए है तग़ईर[१]।
क्या हाल होगा पाससे जब यार जाएगा?

बेकसी[२] मुद्दत तलक बरसा की अपनी गोर[३] पर।
जो हमारी ख़ाकपरसे होके गुज़रा रो गया॥

आवारगानेइश्क़[४]का पूछा जो मैं निशाँ।
मुश्तेग़ुबार[५] लेके सबा[६]ने उड़ा दिया॥

हम फ़क़ीरोंसे बेअदाई क्या?
आन बैठे जो तुमने प्यार किया॥

सख़्त काफ़िर था जिसने पहले 'मीर'।
मज़हबेइश्क़ अख़्तियार किया॥

'मीर' बन्दोंसे काम कब निकला?
माँगना है जो कुछ ख़ुदासे माँग॥

कहता है कौन तुझको याँ यह न कर तू वोह कर।
पर, हो सके तो प्यारे, दिलमें भी टुक जगह कर॥

ताअ़त[७] कोई करै है जब अब्र[८] ज़ोर झूमे?
गर हो सके तो ज़ाहिद! उस वक़्तमें गुनह[९] कर॥

क्यों तूने आख़िर-आख़िर उस वक़्त मुँह दिखाया।
दी जान 'मीर'ने जो हसरत[१०]से इक निगह[११] कर॥

---

[१] परिवर्तित; [२] लाचारी; [३] क़ब्र, [४] प्रेममे उन्मत्त इधर-उधर व्यर्थ घूमनेवाले का, [५] मुट्ठी भर रेत, धूल; [६] हवाने; [७] ईश्वराराधना, [८] बादल, [९] पाप; [१०] अभिलाषासे, [११] दृष्टि।

काबा पहुँचा तो क्या हुआ ऐ शेख़!
सअ़ई[1] (सई) कर, टुक पहुँच किसी दिल तक॥

न गया 'मीर' अपनी किश्तीसे।
एक भी तख़्ता पार साहिल[2] तक॥

गुलकी जफ़ा[3] भी देखी, देखी वफ़ाए[4]बुलबुल।
इक मुश्त[5] पर पड़े हैं गुलशनमें जाएबुलबुल[6]॥

आगे थे इब्तदायेइश्क[7]में हम।
हो गये ख़ाक इन्तहा[8] है यह॥

पहुँचा न उसकी दाद[9]को मजलिसमें कोई रात।
मारा बहुत पतंगने सर शमअ़दान पर॥

न मिल 'मीर' अबके अमीरोंसे तू।
हुए हैं फ़क़ीर उनकी दौलतसे हम॥

काबे जानेसे नही कुछ शेख़ मुझको इतना शौक।
चाल वोह बतला कि मैं दिलमें किसीके घर करूँ॥

नहीं दैर[10] अगर 'मीर' काबा तो है।
हमारा क्या कोई ख़ुदा ही नहीं?

लुत्फ क्या हर किसूकी चाहके साथ।
चाह वोह है जो हो निबाहके साथ॥

---

[1]प्रयत्न, परिश्रम; [2]किनारा; [3]अत्याचार; [4]बुलबुलका त्याग, आत्मविसर्जन; [5]मुट्ठी भर [6]बुलबुलके स्थानपर, [7]प्रेम के प्रारम्भमे; [8]अन्त, [9]गुणगान करनेको, प्रशसाको; [10] मन्दिर।

मै रोऊँ तुम हँसो हो, क्या जानो 'मीर' साहब ।
दिल आपका किसूसे शायद लगा नहीं है ॥

काबेमें जाँ-ब-लब[1] थे हम दूरियेबुताँ[2]से ।
आए है फिरके यारो अबके खुदाके याँ से ॥

छाती जला करै है, सोजेदरूँ[3] बला है ।
इक आग-सी रहे है क्या जानिये कि क्या है ॥

याराने दैरो[4] काबा दोनों बुला रहे है ।
अब देखें 'मीर' अपना जाना किधर बने है ॥

क्या चाल यह निकाली होकर जवान तुमने ।
अब जब चलो हो दिलको ठोकर लगा करे है ॥

इक निगह करके उसने मोल लिया ।
बिक गए आह, हम भी क्या सस्ते ॥

मत ढलक मिज़गाँ[5]से मेरे ऐ सरश्केआबदार[6] ।
मुफ्त ही जाती रहेगी तेरी मोतीकी-सी आब ॥

दूर अब बैठते है मजलिसमें ।
हम जो तुमसे थे पेश्तर नज़दीक ॥

२० जून १९४४

---

[1] प्राण होठोंतक आना, मरणोन्मुख; [2] मूर्त्तिकी दूरीसे (प्रेमिकाके विछोहसे); [3] दिलकी जलन; [4] मन्दिर; [5] पलकके बालोंसे; [6] आबदार आँसू ।

२

ख़्वाजा मीर 'दर्द'

जन्म सन् १७१५, मृत्यु सन् १८८३ ई०

ख़्वाजा मीर 'दर्द' भी मीर साहबके समकालीन हुए हैं। आपका जन्म ई० स० १७१५मे दिल्लीमे हुआ और दिल्लीमें ही ६८ वर्षकी आयु (ई० स० १७८३)में समाधि पाई। आप दरबारी आवभगत और रईसोंकी बैठकोसे दूर भागते थे। अपनी दरगाहमे ही रहते हुए खुदाकी यादमें शेरोशायरी और संगीतमें लीन रहते थे। सन्तोषी और शान्त प्रकृतिके आदमी थे। जब कि दिल्ली उजड़ जानेसे लोग इधर-उधर ठिकाना बना रहे थे, ये दिल्लीमें ही बने रहे। बादशाही मौरूसी जागीरसे और मुरीदोंसे जो आमदनी होती थी, उसीपर सब्र किये रहे। कभी किसीसे धनकी अभिलाषा नही की।

ख्वाजा साहबके हज़ारो मुरीद थे। माहमे दो बार मुशायरा और संगीत-सभा आपके यहाँ होती थी। शाह आलम बादशाह भी उनमे शरीक होनेकी अभिलाषा रखते थे। मगर आप टालते ही रहे। टालने-का शायद यही कारण रहा हो कि आपको बादशाहसे कोई स्वार्थ-साधन तो करना नही था। जब इस तरहकी अभिलाषा ही न थी, तो बादशाहके बुलानेमे हज़ारो परेशानियोका वे क्यो सामना करते ? बड़े आदमियोके स्वागत-सत्कारमे जो कष्ट और ज़िल्लतें उठानी पड़ती है, शायद इसीका खयाल करके उन्होने अपनी आध्यात्मिक शान्तिमे विघ्न न डालना चाहा होगा। फिर भी एक रोज़ मुशायरेमे सूचित किये बिना ही बादशाह तशरीफ ले आये। तशरीफ़ जब ले ही आये तो जहाँ उचित स्थान मिला

बैठ गये। फ़कीरोंके-दरपर बादशाह और गदा सब एक हैं। सयोगकी बात पाँवमें दर्द होनेके कारण बादशाहने तनिक पाँव फैला दिये। ख्वाजा साहबको यह अच्छा न लगा। बोले—"महफिलमें पाँव पसारकर बैठना तहज़ीबके खिलाफ़ है।" बादशाहने अपने दर्दकी कैफियत बताकर मअज़रत चाही तो ख्वाजा साहबने जवाब दिया कि अगर पाँवमें दर्द था तो यहाँ आनेकी आपने तकलीफ़ ही क्यो की[1] ? इस एक घटनासे ही ख्वाजा साहबके चरित्र और स्वभावका दिग्दर्शन हो जाता है।

"जबान और उर्दूके लिहाजसे ख्वाजा साहब एक निहायत नुमायाँ और मुमताज दर्जा रखते है। बकौल लेखक 'आबेहयात' दर्दने तलवारोकी आवदारी नश्तरोमे भर दी है।" या बकौले अमीर मीनाई "दर्दका कलाम पिसी हुई बिजलियाँ मालूम होती है।"

तुहमतें[2] चन्द अपने जिम्मे धर चले।
किसलिए आए थे और क्या कर चले ?

शमअ[3]के मानिन्द हम इस बज़्म[4]में।
चश्मेनम[5] आए थे, दामनतर[6] चले॥

अपने बन्दे[7]पै जो कुछ चाहो सो बेदाद[8] करो।
यह न आजाय कहीं जीमें कि आज़ाद करो॥

वाकिफ़ न थाँ किसीसे हम है न कोई हमसे।
यानी कि आ गए हैं, बहके हुए अदम[9]से॥

---

[1] आबेहयातके लतीफे, पृ० २२; [2] झूठे कलक; [3] मोमबत्ती, [4] गीत या आमोद-प्रमोदका स्थान, रंगस्थल, [5] आँसूभरे नेत्र; [6] भीगे हुए वस्त्र; [7] सेवक, भक्त, पुजारी; [8] अत्याचार, [9] परलोक।

जितनी बढ़ती है, उतनी घटती है।
ज़िन्दगी आप ही आप कटती है॥

तरदामनी[1]पै शेख़[2]! हमारी न जाइयो।
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते[3] वज़ू[4] करें॥

दुश्वार होती ज़ालिम, तुझको भी नींद आनी।
लेकिन सुनी न तूने टुक भी मेरी कहानी॥

मुहताज अब नहीं हम नासेह[5] नसीहतोंके।
साथ अपने सब वोह बातें लेती गई जवानी॥

तेरी गलीमें मैं न चलूँ और सबा[6] चले।
यूँ ही ख़ुदा जो चाहे तो बन्देकी क्या चले॥

सूरतें क्या-क्या मिली हैं ख़ाकमें।
है दफ़ीना[7] हुस्न[8]का ज़ेरे[9]ज़मीं॥

शादीकी और ग़मकी है दुनियामें एक शक्ल।
गुलको शगुफ़्ता[10] दिल कहो या शकिस्ता[11] दिल॥

ऐ आँसुओ! न आवे कुछ दिलकी बात लब[12]पर।
लड़के हो तुम कहीं मत अफ़शाएराज़[13] करना॥

दर्देदिलके वास्ते पैदा किया इन्सानको।
वर्ना ताअत[14]के लिए कुछ कम न थे करों[15]बयाँ॥

---

[1] भीगे वस्त्र; [2] धर्माचार्य; [3] देवता; [4] नमाज़ पढ़नेके पूर्व शुद्धिके लिए हाथ-पाँव आदि धोना; [5] उपदेशक; [6] हवा; [7] ख़ज़ाना; [8] सौन्दर्य; [9] पृथ्वीके नीचे; [10] खिला हुआ; [11] कुम्हलाया हुआ; [12] ओठ [13] भेद प्रकट करना; [14] ईश्वराराधन, सेवा; [15] देवता।

हम तुझसे किस हविस[1] की फ़लक[2] जुस्तजू[3] करें ?
दिल ही नहीं रहा है जो कुछ आरज़ू[4] करें ॥

क़ासिद[5] ! नहीं यह काम तेरा अपनी राह ले।
उसका पयाम[6] दिलके सिवा कौन ला सके ?

रौंदे हैं नक़्शेपा[7] की तरह ख़ल्क़[8] याँ मुझे।
ऐ उम्रेरफ़्ता[9] ! छोड़ गई तू कहाँ मुझे ?

बाहर न आ सकी तू क़ैदे[10] ख़ुदीसे अपनी।
ऐ अक़्ले बेहक़ीक़त,[11] देखा शऊर तेरा ?

किनारेसे किनारा कब मिला है बहर[12] का यारो !
'पलक लगनेकी लज़्ज़त दीदयेपुरआब[13] क्या जाने ?

अर्ज़ो[14] समा[15] कहाँ तेरी वुस्अ़त[16] को पा सके।
मेरा ही दिल है वोह कि जहाँ तू समा सके ॥

किधर बहकी फिरती है ऐ बेकसी[17] तू।
तेरी जिन्स[18] का याँ ख़रीदार मैं हूँ ॥

ख़ुदा जाने क्या होगा अंजाम[19] इसका।
मैं बेसब्र इतना हूँ, वोह तुन्दख़ू[20] है ॥

---

[1] तृष्णा, इच्छा; [2] आकाश; [3] इच्छा, [4] निवेदन, माँग; [5] पत्रवाहक, [6] सन्देश; [7] चरण-चिन्ह, [8] जगत, [9] बीता हुआ जीवन; [10] अहंकारका बन्धन; [11] तथ्यरहित, असलियतसे दूर; [12] दरिया; [13] आँसू भरे नेत्र; [14] पृथ्वी, [15] आकाश; [16] विशालता, [17] मजबूरी, [18] वस्तु; [19] परिणाम; [20] उग्रस्वभावी।

तूफानेनूह ने तो डुबोई जमी फ़क़त ।
मैं नंगेख़ल्क़[1] सारी खुदाई[2] डुबो गया ॥

हिजाबे[3]रुख़ेयार थे आप ही हम ।
खुली आँख जब कोई परदा न देखा ॥

करे क्या फ़ायदा नाचीजको तक़लीद[4] अच्छोंकी ।
कि जम जानेसे कुछ ओला तो गौहर[5] हो नहीं सकता ॥

हरदम बुतोंकी सूरत रखता है दिल नजरमें ।
होती है बुतपरस्ती अब तो खुदाके घरमें ॥

मुहब्बतने तुम्हारे दिलमें भी इतना तो सर खींचा ।
कसम खाने लगे तब हाथ मेरे सरपे धर बैठे ॥

कासिदसे कहो फिर खबर उधर ही को ले जाय ।
याँ बेख़बरी आ गई जबतक कि ख़बर आय ॥

तू अपने हाथो आप ही पड़ता है तिफक़्क़ेमें ।
ऐ इम्तियाजे नादाँ टुक इम्तियाज करना ॥

अश्क ने मेरे मिलाये कितने ही दरियाके पाट ।
दामने सहरामें वर्ना इस क़दर कब फेर था ॥

चटका अबस नही कोई ग़ुंचा चमनमें आह !
ऐ तौसने बहार ! तुझे ताजयाना था ॥

२२ जून १९४४

---

[1] अधम, [2] सृष्टि; [3] प्रेमिकाके कपोलकी हया; [4] अनुकरण; [5] मोती ।

संगम
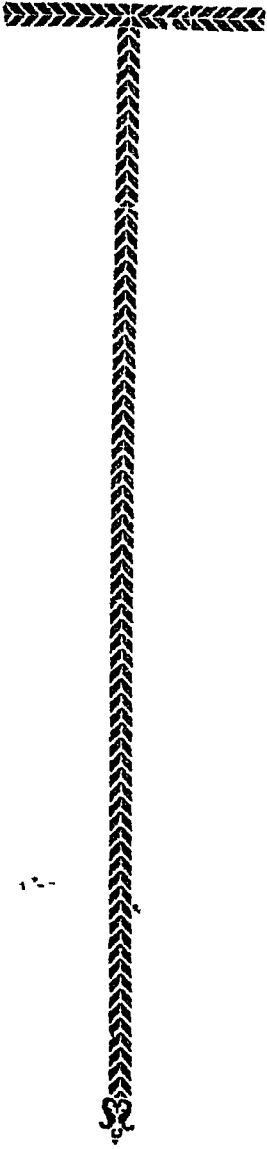
: ४ :

[उर्दू का प्रथम भारतीय विशुद्ध कवि]

३

वलीमुहम्मद 'नज़ीर' अकबराबादी

[१७४० से १८३० ई०]

जहाँ हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति और भाषा, भेद-भाव भूलकर समीपसे समीप होती हुई एकाकार हो सके, ऐसे संगमका शिलारोपण अमीर खुसरो ने १३वी शताब्दीमे किया था; और उनके पीछे कबीर, जायसी, रहीम, आदि अनेक कवियोने ४०० वर्षके लगातार कठोर परिश्रमसे उस सगमपर भाषा और भावका वोह प्रवाह ला दिया था कि जिसने उसमें एक वार डुवकी लगाई, आनन्दविभोर हो उठा। परन्तु वलीकी रगीन तवियतको यह न भाया। उसने अपने कला-प्रदर्शनके लिए उस सगमको काटकर एक पृथक् नहर निकाली, और प्रयत्न यह किया गया कि उस नहरमे भारतीय सस्कृति, भाव, भाषा रूपी पानी कम-से-कम आये। यही नही, उस नहरपर जो उद्यान लगाया गया उसमे आम, जामुन, निबुआके पेड़ोको काटकर खजूर और ताड़के पेड लगाये गये। कोयलकी वोलती वन्द करके बुलबुलको चहकनेके लिए अरवसे लाया गया। भीम और अर्जुनके वुत तोडकर रुस्तम और सामकी खयाली तस्वीर गढी गई। हिमाचल-विन्ध्याचल तो नजरोसे ओझल रहे, पर कोहेतूरको जरूर उठा लाये। पद्मिनी जैसी सुन्दरी और शीलवती नारीको तो भूल गये मगर तुर्की हूर जैसी असतीको न भूले। पृथ्वीराज-संयोगिता, जहाँगीर और नूरजहाँका प्रेम इन्हे लैला-मजनूँ और शीरी-फरहादके आगे याद ही न आया। काश्मीरसे वढकर इन्हे मिस्रका वाजार रुचिकर लगा।

इसी कृत्रिम प्रदर्शनीमें मीर, सौदा, दर्द, जुरअत, हसन, इशा, मसहफी,

नासिख और आतिश जैसे कलाकार अपनी कलाका जौहर दिखला रहे थे। नजीरने भी यही आँखे खोली। यही शिक्षित-दीक्षित हुए। परन्तु इन्हे यह संकुचित क्षेत्र भाया नही। सामने ही अमीर खुसरो-द्वारा स्थापित विशाल सगम दिखलाई दे रहा था। अतः नजीर वहाँसे भाग निकले और उस शुष्क और उजाड संगमपर आकर नजीरने अजान भी दी, और शख भी फूँका। तसबीह भी ली और जनेऊ भी पहना। मुहर्रममे रोये तो होलीमे भड़ुवे भी बने। रमजानमें रोजे रखे और सलूनोपर राखी बाँधनेको मचल पडे। शब्बरातपर महताबियाँ छोडी तो दीवालीपर दीप सँजोये। नबी, रसूल, वली, पीर, पैगम्बरके लिए जी भरकर लिखा, तो कृष्ण महादेव, नरसी, भैरो और नानकपर भी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाई। गुलोबुलबुलपर कहा तो आम और कोयलको पहले याद रखा। पर्देके साथ वसन्ती साडी भी याद रही। और तो और, गर्मी, बरसात और सर्दीपर भी लिखा। बच्चोके लिए रीछका बच्चा, कौआ और हिरन, गिलहरीका बच्चा, तरबूज़, पतगबाजी, बुलबुलोकी लड़ाई, ककड़ी, तैराकी, तिलके लड्डू पर लिखने बैठे तो बच्चे बन गये। हरएक बालक गली-कूचोमे गाता फिर रहा है। जवानो और बुड्ढोको नसीहत देने बैठे तो लोग वज्दमे आ गये। मानो क़ुरान, हदीस, वेद, गीता, उपनिषद्, पुराण सब घोलकर पी जानेवाला कोई सिद्ध पुरुष बोल रहा है।

नज़ीर इन सब गुणोके कारण ही खालिस हिन्दुस्तानी शायरके पदपर आसीन है। उन्होने सरल-सुबोध भाषामे जिन विषयोपर लिखा है, उनसे पहले किसीको यह ध्यान भी न आया कि गजल, कसीदे, मसनवी और मर्सियोके सिवा भी अपने चारो तरफ बिखरे हुए हालात, रीति-रिवाज और आवश्यकताओपर भी प्रकाश डाला जा सकता है। इसीलिए हमने नजीरको अन्य समकालीन शायरोसे पृथक् आसन दिया है।

मियाँ नजीरका जन्म करीब सन् १७४०मे दिल्लीमे हुआ, और १६ अगस्त सन् १८३०में ९० वर्षकी आयु पाकर आगरेमे समाधि पाई। पिताकी मृत्युके बाद अपनी माँ और नानीको साथ लेकर आगरे आ गये थे, और यही बच्चोको पढ़ाकर गुजारा करते थे। नजीर सन्तोषी जीव थे। लखनऊ और भरतपुर स्टेटके निमत्रणोपर भी नही गये। अत्यन्त मृदुभाषी, हँसमुख, और मिलनसार थे। हिन्दू और मुसलमान सभी इनके प्रेमी थे। सभीसे दिलसे मिलते थे। हर मजहबके उत्सवोमे विना भेद-भाव शामिल होते थे। पक्षपात और मजहबी दीवानगीको पासतक नही फटकने देते थे। जब मरे तो हजारो हिन्दू भी जनाजेके साथ थे। जवानीमे कुछ आशिकाना रगमे भी रहे, और लिखा भी, मगर जल्द सम्हल गये।

नजीरके कलाममेसे मामूली अशआर निकाल दिये जाएँ तो विद्वानो-का मत है कि वे बडे-बडे दार्शनिक और उपदेशकोकी श्रेणीमे सरलतासे बैठाये जा सकते हैं।

नजीरके दीवानके कुछ शीर्षकोमेसे १-१ या २-२ बन्द बतौर नमूना दिये जाते है। ऊपर जितने विषयोका उल्लेख हुआ है, उन सबको देनेके लिए तो एक जुदी पुस्तककी जरूरत है। दूसरे, वर्त्तमानमे उर्दू-शायरी जिस बुलन्दीपर पहुँच गई है, उसको देखते हुए भी हमने लोभ सवरण किया है, क्योकि विजलीके प्रकाशके आगे शमाकी अब उतनी कद्र कहाँ?

(१) कामुकवृद्ध :—

चाहें तो घूर डालें सौ खूबरूको दममें।
और मेले छान मारें वोह जोर है क़दममें॥

सीना फड़क रहा है ख़ूबाँके दर्दोग़ममें।
पट्ठोंमें वोह कहाँ है जो गर्मियाँ है हममें॥
अब भी हमारे आगे यारो! जवान क्या है?

(२) तन्दुरुस्ती और आबरू :—

दुनियामें अब उन्हींके तईं कहिए बादशाह।
जिनके बदन दुरुस्त है दिनरात सालोमाह॥
जिस पास तन्दुरुस्ती और हुरमतकी हो सिपाह।
ऐसी फिर और कौनसी दौलत है वाह-वाह॥
जितने सखुन है सबमें यही है सखुन दुरुस्त—
"अल्लाह आबरूसे रखे और तन्दुरुस्त"॥

(३) कलियुग :—

अपने नफ़ेके वास्ते मत औरका नुक़सान कर।
तेरा भी नुक़साँ होयगा इस बात ऊपर ध्यान कर॥
खाना जो खा तो देखकर, पानी जो पी तो छानकर।
याँ पाँवको रख फूँककर और ख़ौफ़से गुज़रान कर॥
कलयुग नहीं कर-जुग है यह, याँ दिनको दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥

(४) आटे-दालकी फ़िक्र :—

इस आटे-दाल ही का जो आलममें है जहूर।
इससे ही मुँह पे नूर है और पेटमें सरूर॥
इससे ही आके चढ़ता है चेहरेपै सबके नूर।
शाहोगदा अमीर इसीके हैं सब मजूर॥
यारो! कुछ अपनी फ़िक्र करो आटेदालकी।

(५-६) रोटियाँ :—

(वर्त्तमान भूखे भारतका क्या सजीव चित्रण है!)

पूछा किसीने यह किसी कामिल फ़क़ीरसे—
"यह महरोमाह हक़ने बनाये हैं काहेके"?

वह सुनके बोला, "बाबा ! खुदा तुझको ख़ैर दे।
हम तो न चाँद समझें न सूरज है जानते ॥
बाबा ! हमें तो यह नज़र आती है रोटियाँ"॥

रोटी न पेटमें हो तो फिर कुछ जानते नहीं।
मेलेकी सैर ख़्वाहिशे बागोचमन नहीं ॥
भूके गरीब दिलकी ख़ुदासे लगन न हो।
सच है कहा किसीने कि भूखे भजन न हो ॥
अल्लाहकी भी याद दिलाती है रोटियाँ" ॥

(७-८) कौड़ी का महत्व :—

कौड़ी बग़ैर सोते थे ख़ाली ज़मीनपर।
कौड़ी हुई तो रहने लगे शहनशीनपर ॥
पटके सुनहरे बँध गये जामोंकी चैनपर।
मोतीके लच्छे लग गये घोड़ोंकी ज़ीनपर ॥
कौड़ीके सब जहानमें नक़्शोनगीन है।
कौड़ी नही तो कौड़ीके फिर तीन-तीन है ॥

गाली व मार खाते है कौड़ीके वास्ते।
शर्मोहया उठाते है कौड़ीके वास्ते ॥
सौ मुल्क छान आते है कौड़ीके वास्ते।
मस्जिदको दममें ढाते है कौड़ीके वास्ते ॥
कौड़ीके सब जहानमें नक़्शोनगीन है।
कौड़ी नहीं तो कौड़ीके फिर तीन-तीन है ॥

(९) पैसे की इज्ज़त :—

जब हुआ पैसेका ऐ दोस्तो ! आकर सयोग।
इशरतें पास हुई दूर हुए मनके रोग ॥

खाये जब माल, पिये दूध, दही, मोहनभोग।
दिलको आनन्द हुआ भाग गये सारे रोग॥
ऐसी ख़ूबी है जहाँ आना हुआ पैसेका॥

(१०) होली :—

मियाँ ! तू हमसे न रख कुछ ग़ुबार होलीमें।
कि रूठे मिलते हैं आपसमें यार होलीमें॥

मची है रंगकी कैसी बहार होलीमें।
हुआ है ज़ोरे चमन आश्कार होलीमें॥
अजब यह हिन्दकी देखी बहार होलीमें॥

(११-१२) दूसरी वहर मे होली :—

क़ातिल जो मेरा ओढ़े इक सुर्ख़ शाल आया।
खा-खाके पान ज़ालिम कर होंट लाल आया॥

गोया निकल शफ़क़से बदरे कमाल आया।
जब मुँहपै वह परीरू मलकर गुलाल आया।
इक दमसे देख उसको होलीको हाल आया॥

ऐशोतरबका सामा है आज सब घर उसके।
अब तो नहीं है कोई दुनियामें हमसर उसके॥

अज़माह ला-ब-माही बन्दे हैं बेज़र उसके।
कल वक़्तेशाम सूरज मलनेको मुँहपर उसके॥
रखकर शफ़क़के सरपर तश्तेगुलाल आया॥

(१३-१४) फ़क़ीर की सदा :—

दौलत जो तेरे पास है रख याद तू यह बात।
खा तू भी और अल्लाहकी कर राहमें ख़ैरात॥

देनेसे इसीके तेरा ऊँचा रहे फिर हात।
और याँ भी तेरी गुज़रेगी सौ ऐशसे औकात॥
और वाँ भी तुझे सैर यह दिखलायेगी बाबा!

दाताकी तो मुश्किल कभी अटकी नहीं रहती।
चढ़ती है पहाड़ोंके ऊपर नाव सखीकी॥
और तूने बुख़ीलीसे अगर जमा उसे की।
तो याद यह रख बात कि जब आवेगी सख्ती॥
खुश्कीमें तेरी नाव यह डुबवायेगी बाबा!!

(१५-१६) मृत्युकी आमद :—

यह अश्व बहुत कूदा-उछला, अब कोड़ा मार वज़ीर करो।
जब माल इकट्ठा करते थे अब तनका अपने ढेर करो॥
गढ़ टूटा, लश्कर भाग चुका, अब म्यानमें तुम शमशेर करो।
तुम साफ़ लड़ाई हार चुके अब भगनेमें मत देर करो॥
तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़ेपर ज़ीन धरो बाबा।
अब मौत नकारा बाज चुका, चलनेकी फ़िक्र करो बाबा॥

गर अच्छी करनी नेक अमल तुम दुनियासे ले जाओगे।
तो घर अच्छा-सा पाओगे, और सुखसे बैठके खाओगे॥
ऐसी दौलतको छोड़के तुम जो ख़ाली हाथों जाओगे।
फिर कुछ भी बन नहीं आवेगी, घबराओगे, पछताओगे॥
तन सूखा, कुबड़ी पीठ हुई, घोड़ेपर ज़ीन धरो बाबा।
अब मौत नकारा बाज चुका, चलनेकी फ़िक्र करो बाबा॥

(१७) ख़ाक का पुतला :—

वोह शख़्स थे जो सात विलायतके बादशाह।
हशमतमें जिनकी अर्शसे ऊँची थी बारगाह॥

मरते ही उनके तन हुए गलियोंकी खाके राह ।
अब उनके हालकी भी यही बात है गवाह ॥
जो खाकसे बना है वोह आखिरको खाक है ॥

(१८-२१) आदमी नामा :—

दुनियामें बादशाह है सो है वह भी आदमी ।
और मुफलिसोगदा है सो है वह भी आदमी ॥
ज़रदार बेनवा है सो है वह भी आदमी ।
नेमत जो खा रहा है सो है वह भी आदमी ॥
टुकड़े जो माँगता है सो है वह भी आदमी ॥

मस्जिद भी आदमीने बनाई है याँ मियाँ !
बनते हैं आदमी ही इमाम और खुतबाख्वाँ ॥
पढ़ते हैं आदमी ही क़ुरान और नमाज़ याँ ।
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ ॥
जो उनको ताड़ता है सो है वह भी आदमी ॥

याँ आदमीपै जानको वारे है आदमी ।
और आदमीपै तेग़को मारे है आदमी ॥
पगड़ी भी आदमीकी उतारे है आदमी ।
चिल्लाके आदमीको पुकारे है आदमी ॥
और सुनके दौड़ता है सो है वह भी आदमी ॥

याँ आदमी नक़ीब हो बोले है बार-बार ।
और आदमी ही प्यादे हैं और आदमी सवार ॥
हुक्का, सुराही, जूतियाँ दौड़ें बग़लमें मार ।
काँधेपै रखके पालकी है दौड़ते कहार ॥
और उसमें जो बैठा है सो है वह भी आदमी ॥

(२२) राखी :—

मची है हर तरफ़ क्या-क्या सलूनोंकी बहार अब तो।
हर एक गुलरू फिरे है राखी बाँधे हाथमें खुश हो॥
हविस जो दिलमें गुज़री है, कहूँ क्या आह! मैं तुझको।
यही आता है जी में बनके बाम्हन आज तो यारो!
मैं अपने हाथसे प्यारेके बाँधूं प्यारकी राखी॥

(२३-२६) मुफ़लिसी :—

जब आदमीके हालपै आती है मुफलिसी।
किस-किस तरहसे उसको सताती है मुफ़लिसी॥
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती है मुफलिसी।
भूखा तमाम रात सुलाती है मुफलिसी॥
ये दुख वो जाने जिसपै कि आती है मुफ़लिसी॥

मुफ़लिसकी कुछ नज़र नहीं रहती है आनपर।
देता है अपनी जान वोह एक-एक जानपर॥
हर आन टूट पड़ता है रोटीके ख्वानपर।
जिस तरह कुत्ते लड़ते हैं इक उस्तख्वानपर॥
वैसा ही मुफ़लिसोको लड़ाती है मुफलिसी॥

हर आन दोस्तोकी मुहब्बत घटाती है।
जो आश्ना है उनकी तो उल्फत घटाती है॥
अपनेकी महर, ग़ैरकी चाहत घटाती है।
शर्मोहया व गैरतोहुरमत घटाती है॥
हाँ, नाखून और बाल बढ़ाती है मुफलिसी॥

× × ×

जिस दिलजलेके ऊपर दिन मुफ़लिसीके आये।
फिर दूर भागे उससे सब अपने और पराये ॥

आख़िरको मुफ़लिसीने यह दिन उसे दिखाये।
खाना जहाँ था बँटता वहाँ जाके धक्के खाये ॥
कम्बख़्तको जो खाना अक्सर मिला तो ऐसा।

(२७-३३) बनंजारानामा :—

टुकहिर्स हवाको छोड़ मियाँ मत देस-विदेस फिरे मारा।
क़ज्जाक़ अजलका लूटे है दिन-रात बजाकर नक़्क़ारा ॥

क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतुर क्या गोनी, पल्ला, सर भारा।
क्या गेहूँ, चावल, मोठ, मटर, क्या आग, धुआँ और अंगारा ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

गर तू है लक्खी बनजारा और खेप भी तेरी भारी है।
ऐ ग़ाफ़िल ! तुझसे भी चढ़ता यह और बड़ा व्यापारी है ॥

क्या शक्कर, मिसरी, क़न्द, गरी क्या साँभर, मीठा खारी है।
क्या दाख, मुनक़्क़ा, सोंठ, मिरिच क्या केसर, लौंग, सुपारी है
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

कुछ काम न आवेगा तेरे यह लाल जमुर्रद सीमोज़र।
सब पूँजी बाँटमें बिखरेगी जब आन बनेगी जान ऊपर ॥

नौबत-नक़्क़ारे-बान-निशाँ-दौलत - हशमत - फ़ौजें - लश्कर।
क्या मसनद-तकिया, मुल्क-मकाँ क्या चौकी-कुर्सी-तख़्त-छतर ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

मग़रूर न हो तलवारोंपर मत भूल भरोसे ढालोंके।
सब पटा तोड़के भागेंगे मुँह देख अजलके भालोंके ॥

क्या डब्बे मोती-हीरोंके क्या ढेर ख़जाने मालोंके।
क्या बुग़चे तार-मुशज्जरके, क्या तख़्ते शाल-दुशालोंके ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

क्या सख़्त मकाँ बनवाता है, ख़म तेरे तनका है पोला।
तू ऊँचे कोट उठाता है वाँ तेरी गोरने मुँह खोला ॥
क्या रेती-ख़ंदक रुन्द बड़ें, क्या बुर्ज-कँगूरा अनमोला।
गढ़ कोट-रहनला-तोप-किला, क्या सीसा-दारू और गोला ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

जब चलते-चलते रस्तेमें यह गौन तेरी ढल जावेगी ॥
एक बधिया तेरी मिट्टी पर फिर घास न चरने आवेगी।
यह खेप जो तूने लादी है सब हिस्सोंमें बँट जावेगी।
धी-पूत-जँवाई-बेटा क्या, बनजारन पास न आवेगी ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा ॥

जब मुर्ग फिराकर चाबुकको यह बैल बदनका हाँकेगा।
कोई नाज समेटेगा तेरा, कोई गौन सिये और टाँकेगा ॥
हो ढेर अकेला जंगलमें तू ख़ाक लहदकी फाँकेगा।
उस जंगल में फिर आह ! 'नज़ीर' एक तिनका आन न झाँकेगा ॥
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बनजारा।

(३४-३८) कुछ दोहे :—

कूक करूँ तो जग हँसे, और चुपके लागे घाव।
ऐसे कठिन सनेहका, किस बिध करूँ उपाव ॥

जो मैं ऐसा जानतो, प्रीत किये दुख होय।
नगर ढिंढोरा पीटतो, प्रीत न कीजो कोय ॥

आह दई कैसी भई, अनचाहतके संग।
दीपकके भावे नहीं, जल-जल मरे पतंग।।

विरह आग तनमें लगी, जरन लगे सब गात।
नारी छूवत वैद्यके, पड़े फफोला हात।।

दिल चाहे दिलदारको, तन चाहे आराम।
दुबिधामें दोनों गये, माया मिली न राम।।

(३९-४२)

हुशयार यार जानी, ये दश्त है ठगोंका।
याँ टुक निगाह चूकी, और माल दोस्तोंका।।

सब जीते जीके झगड़े हैं सच पूछो तो क्या ख़ाक हुए।
जब मौतसे आकर काम पड़ा सब क़िस्से क़जिये पाक हुए।।

डरती है रूह यारो! और जी भी काँपता है।
मरनेका नाम मत लो, मरना बुरी बला है।।

दो चपातीके वरक़में सब वरक रोशन हुए।
इक रकाबीमें हमें चौदह तबक़ रोशन हुए।।[१]

ज्योत्स्ना

: ५ :

उर्दू शायरी जवानी की चौखटपर

सन् १८०० से १६०० तकके अमर कलाकार

यह युग उर्दू शायरीके लिए नेमत है। इस युगमे 'गालिब', 'जौक़', 'मोमिन' जैसे उस्तादगर पैदा हुए, जिनके शिष्य 'हाली', 'दाग', 'आजाद' भी उस्तादोके उस्ताद हुए है। इन सबने वह जीवन-ज्योति जलाई कि उर्दू-शायरीके निर्जीव शरीरमे जाज्वल्यमान प्राणोका सचार हो उठा। वर्त्तमान उर्दू-वज्ममे इन्हीकी ज्योतिका उजाला है।

४

शेख़ मुहम्मद इब्राहीम 'ज़ौक़'

[सन् १७८९-१८५४ ई०]

शेख़ जौक कीचडमे कमलकी तरह उत्पन्न हुए। कमल ही की तरह विकसित हुए, वैसा ही सौरभ फैला। कमलकी तरह बादशाहके सरपर चढाए गए और सर चढे हुए कमलकी ही तरह उनका सौरभ दिन-दूना रात-चौगुना फैलनेसे रह गया।

शेख़ जौक एक गरीब साधारण सिपाहीके पुत्र थे। अपनी प्रतिभाके बलपर अनेक विघ्न-बाधाओंको रौदते हुए शाही दरबारमे प्रवेश पाया और वहाँ बहादुरशाह बादशाहके काव्य-गुरुके आसनपर प्रतिष्ठित हुए। एक कविको जितनी अधिक-से-अधिक ख्याति और राजकीय प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए, उतनी उन्हें मिली, पर यही प्रतिष्ठा उनकी कलाके लिए राहु बन गई।

एक बुलबुल जो चुपचाप चमनमे रहकर अपने जीवनको सानन्द व्यतीत कर सकती थी, वही नग्मये पुरदर्द छेडनेपर बैठे-बिठाये शिकार हो गई —

नग़मयेपुरदर्द[1] छेड़ा मैंने इस अन्दाज़से।
ख़ुद-ब-ख़ुद पड़ने लगी मुझपर नज़र सैयाद की॥

वोह बुलबुल जो आज़ाद रहकर इस शाख़से उस शाख़पर फुदकती हुई चहकती, सोनेके पिंजरेमे बन्द होकर उसे वोह बोल गाने पडे जो पिंजरेवाला चाहता था।

---

[1] व्यथासे ओतप्रोत संगीत।

भरते हैं मेरी आहको वोह ग्रामोफ़ोनमें।
कहते हैं फ़ीस लीजिए और आह कीजिए ॥

—'अकबर'

यही दयनीय स्थिति जौककी थी। बादशाह उन्हे चैन ही नही लेने देता था,। दिन में कई-कई गजलोके एक-एक या दो-दो मिसरे लिखकर दे देता था और उस्तादकी हेसियतसे वे सब गज़लें पूरी जौक साहबको करनी पड़ती थी। इतनेपर भी बस होती तो गनीमत थी। बादशाहको तो वहशत सवार रहती थी। किसी कुजडेकी आवाज़ सुनी—

मज़ा अंगूरका है रंगतरे[1]में।

—और बादशाहकी तबियत लोट-पोट हुई। "भई उस्ताद, क्या मिसरा हुआ है। इसपर अभी एक गजल तो कहो।" रंगतरेपर अभी ग़जल कह ही रहे थे कि चूरनवालेका लटका जो सुनाई दिया—

तेरे मन चलेका सौदा है खट्टा और मीठा।

—तो फड़क उठे—"सुना उस्ताद! कैसा खटमिट्ठा मिसरा है। इसपर भी गजल कहनी होगी।" यह गजल हुई तो फकीरकी सदा आई—

कुछ राहेख़ुदा दे जा, जा तेरा भला होगा।

सदा बादशाहको पसन्द आगई। इस पर भी गजल बनी। तो फिर बिसाती, मनिहार की आवाज पर रीझ गए। कोई लड़का गाता हुआ निकल गया तो पूरी गजल उसी वक़्त सुननेको बेकरार हो गए। और उस पर भी तुर्रा यह कि आज शाहजादीकी बोयी हुई मिर्च फली है, उसका जशन है। कल उसके गुड्डेके विवाहका सेहरा लिखना है। परसो मलकये आलमकी कुतिया के पिल्ले आँखें खोलेंगे। बादशाहने जुकामसे सेहतेगुस्ल किया है। इन सबके लिए मुबारिकबादियाँ लिखनी

---

[1] सन्तरा।

हैं, तो हरमसराकी छम्मो वोवनके पाँवमे मोच आ गई है, गुलवदन लौंड़ीकी कोयलको बुख़ार हो गया है, घसीटा मालीको फाँस लग गई है, उगालदानसाफ करनेवालीकी आँख आ गई हैं। इन सबके लिए भी मिजाजपुर्सीमें कुछ-न-कुछ लिखना ही है।

इन सब बेहूदगियोसे जौक आजिज रहते थे। पर करते क्या? लाचार थे। प्रतिष्ठाका मोह उन्हे यह कास्ट्राइल पीनेको मजबूर करता था। आह! इकवालने क्या फर्मा दिया है :—

ऐ ताइरेलाहूती[1]! उस रिज़्क़[2]से मौत अच्छी।
जिस रिज़्क़से आती हो परवाज़[3]में कोताही[4]॥

इस रिज़्क और सोनेके पिंजरेका मोह विरलोसे ही छुटता है। जौक अपना निजी कलाम वादशाहको सुनाते न थे। उनके सुप्रसिद्ध शिष्य मौलाना आजाद लिखते हैं—"अगर जौककी गजल किसी तरह वादशाह तक पहुँच जाती तो वह उसी गजलपर खुद गजल कहता था। अब अगर नई गजल कहकर दे और वह अपनी (जौककी) गजलसे पस्त हो तो वादशाह भी बच्चा न था। ७० वर्षका सखुनफहम (काव्य-मर्मज्ञ) था और अगर अपनी गजलसे चुस्त बनाकर दे तो अपने कहेको आप मिटाना भी कोई आसान काम नही। नाचार अपनी गज़लमे वादशाहका उपनाम "जफर" डालकर दे देते थे। वादशाहको बडा ख़याल रहता था कि जौक खुदकी चीजपर ज़ोरेतब्अ (बुद्धिवल) न ख़र्च करे। जब उनके शौकको किसी तरफ मुतवज्जह (तल्लीन) देखता तो बराबर अपनी गज़लोका तार बाँध देता कि जो कुछ जोशेतबा (हृदयके भाव उमडते) हो इधर ही आ जाएँ।"

---

[1] सीमा-रहित आकाशमे उड़ने वाला पक्षी, [2] रोजी, जीविका; [3] उडान; [4] कमी।

ऐसी स्थितिमें जो भी जौकके नामसे मिलता है और आज भी जो उनको प्रतिष्ठा प्राप्त है, गनीमत है। काश ! वे इस बन्धनसे स्वतत्र हुए होते तो न जाने उर्दू-साहित्यका ख़जाना कैसे-कैसे अनमोल मोतियोसे भर जाता ! स्वयं ज़ौक दुखी होकर एक जगह कराह उठने है :—

> 'ज़ौक़' मुरत्तिब क्योंके हो दीवाँ, शिकवयेफ़ुर्सत किससे करें ?
> बाँधे गलेमें हमने अपने आप 'ज़फ़र'के झगड़े हैं ॥

कहनेको बादशाहके उस्ताद थे, मगर वेतन नाममात्रको मिलता था। गोया शाही प्रतिष्ठाको ही ओढते, बिछाते और चाटते थे। जब बहादुरशाह युवराज थे और अपने पिता अकबरशाहसे तिरस्कृत-से थे, तब उनको ५०० रु० मासिक मिलता था। उसीमेंसे ४ रु० मासिक जौक पाते थे। जब बहादुरशाह बादशाह हुए तो ३० रु० मासिक वेतन कर दिया गया। ऐरे-गैरे निहाल होने लगे। जिन्हे बात करनेकी तमीज नही, मालामाल कर दिये गये। चापलूस और धोखेबाज दोनो हाथोसे दौलत लूटने लगे। मगर जौकको उस्तादीकी जरीन मसनदपर बिठा देना ही अहसानकी हद समझी गई। खानेको गम और पीनेको आँसू गोया उनके लिए काफी थे। जौकने इस उपेक्षासे तग आकर क्या खूब कहा है :—

> यूँ फिरें अहलेकमाल आशुफ़्ताहाल[1] अफ़सोस है।
> ऐ कमाल अफ़सोस है, तुझपर कमाल अफ़सोस है ॥

दुनियाकी नजरमें उनकी यह इज्जत उनके लिए ववालेजान रही होगी। वादशाही शानके मुताविक रहन-सहनका मेयार और पग-पगपर व्यक्तित्वका ख़याल रखना होता होगा। नाई, धोवी, कुम्हार,

---

[1] फटेहाल, दुखी।

भिश्ती, हलालखोर वग़ैरह बात-बातमें इनामकी इच्छा रखते होंगे। और बादशाहके उस्ताद हैं तब दुकानदार भी सस्ती और घटिया चीज कैसे दिखा दे? ज़ौकके हाथमें आते-आते सवाई-ड्योढ़ी क़ीमत न हुई तो क्या ये कँगलोके भरोसेपर इतना खर्च लिये बैठे हैं? फिर बहन-बेटियाँ क्यो यूँ ही मान जाएँ। पड़ोसमे नवाब साहबने ही जब अपनी बहन-भतीजियोंको इतना दिया है तो भला बादशाहके उस्ताद होकर क्या उनसे भी घटियल रहेंगे? अब ज़ौक किसको बताएँ कि भाई ४ रु०से री-री करके १०० रु० तनख्वाह हुई हैं। कहते भी लाज आए और जो सुने उसे यकीन न आए; और आए तो बजाय प्यारके नफरत आए। हाथीकी झूल खरगोशपर डाल दी जानेपर वह जितना खुश होगा उतने ही शेख ज़ौक भी रहे होंगे।

ज़ौक अत्यन्त दयालु, सहृदय थे। इस सम्बन्धमे मौ० आज़ाद लिखते हैं—"उन्होंने उम्रभर अपने हाथसे जानवर ज़िबह (क़त्ल) नही किया। आलमेजवानीका उस्ताद ज़िक्र करते थे कि यारोमे एक मुर्जरिब नुसखा कुव्वतेबाह (ताकतकी दवा)का बड़ी कोशिशोसे हाथ आया। शरीक होकर उसके बनानेकी बात ठहरी। एक-एक जुज़ (वस्तु-हिस्सा) बहम पहुँचाना (प्रस्तुत करना) एक-एक शख्सके ज़िम्मे हुआ। चुनाचे ४० चिड़ियोका मग्ज़ हमारे सर हुआ। हमने घर आकर उनके पकड़नेका सामान फैला दिया और दो-तीन चिड़े पकड़कर एक पिंजरेमे डाले। उनका फड़कना देखकर खयाल आया कि इब्राहीम, एक पलके मज़ेके लिए ४० बेगुनाहोको मारना क्या इन्सानियत है? यह भी तो आखिर जान रखते हैं। उसी वक्त उठा, उन्हे छोड़ा और सब सामान तोड़-फोड़ कर यारो मे जाकर कह दिया कि भई हम उस नुस्खे मे शरीक नही होते।

"एक रोज़ रातके वक़्त टहलते हुए आये और कहने लगे कि मियाँ! अभी एक साँप गलीमें चला जाता था। एकने कहा—आपने उसे मारा

नही, न किसीको आवाज़ ही दी। फर्माया कि खयाल तो मुझे भी आया था, मगर मैंने फिर कहा कि यह भी तो जान रखता है।

"एक दफा बरसातका मौसम था। बादशाह कुतुब[1] में थे। ज़ौक़ हमेशा साथ होते थे। उस वक़्त आप कसीदा लिख रहे थे। चिड़ियाँ सायेबानमें तिनके रखकर घोंसला बना रही थी। जो तिनके गिरते थे उन्हे वे उठानेको इधर-उधर आती थी। एक चिड़िया सरपर आन बैठी। उन्होंने हाथसे उड़ा दिया। थोड़ी देरमें फिर आ बैठी। उन्होंने फिर उडा दिया। जब कई दफा ऐसा हुआ तो हँसकर कहा कि इसने मेरे सरको कबूतरकी छतरी बनाया है। एक अन्धे शागिर्द ने पूछा और मालूम होनेपर कहा कि हमारे सरपर तो नही बैठती। उस्ताद ज़ौक़ने कहा—बैठे क्योंकर? जानती है कि यह मुल्ला है। आ़लिम (विद्वान) है, हाफ़िज़ (कुरानकंठस्थ) है। अभी कलमा पढ़ेगा और हलाल कर देगा। दीवानी है जो तुम्हारे सरपर आये?

"नमाज़के लिए नहाकर वज़ू करते थे और एक लोटे पानीसे बराबर कुल्लियाँ किये जाते थे। एक दिन सबब पूछनेपर फर्माया—खुदा जाने क्या-क्या हज़लियात (गन्दी बाते) ज़बानसे निकलती है और एक ठढी साँस भरकर यह मतला उसी वक़्त पढ़ा :—

पाक रख अपना दहाँ जिक्रेखुदायेपाकसे।
कम नहीं हरगिज ज़बाँ मुँहमें तेरे मिसवाक[2]से॥"

नमाज़के बाद वज़ीफा पढ़ते और फिर दुआएँ शुरू होती। दुआयें अपने लिए ही नही गैरोंकी भलाईके लिए भी माँगते थे। आबेहयातमें लिखा है कि उनके दरवाज़ेके सामने मुहल्लेका हलालखोर (मेहतर-भंगी) रहता था। उन दिनों उसका बैल बीमार था। दुआएँ माँगते-माँगते

---

[1]कुतुब मीनार के रमणीक स्थान में; [2]दँतौन।

वोह् भी याद आगया। कहा कि "इलाही! जुम्मा हलालखोरका बैल बीमार है, उसे भी शफा दे। बिचारा बड़ा गरीब है। बैल मर गया तो वह भी मर जायेगा।"

उक्त चन्द उद्धरणोसे उनके हृदयका परिचय मिल जाता है। शेख ज़ौक बचपनसे ही व्युत्पन्न थे। १९ वर्षकी आयुमे नो अकबरशाह बादशाहने इन्हें "खाक़ानिएहिन्द" जैसी महान् पद्वीसे विभूषित किया था। इससे बड़े-बड़े ध्वजाधारियोंको बहुत मलाल हुआ था। इसके बाद "मलिक उल्शोरा" की उपाधि भी प्राप्त हुई। खिलअतें, हाथी मय हौदेके और गाँव भी जागीरमे मिले।

इन्होने ७५० दीवानोका अध्ययन किया और उनपर टीकाएँ लिखी। इसके अतिरिक्त इतिहास, ज्योतिषका बहुत अच्छा ज्ञान था। प्रभावशाली व्याख्यानदाता भी थे।

बक़ौल मुसन्निफ़ 'तारीख अदब उर्दू'—"ज़ौकका बहुत बड़ा कारनामा यह है कि उन्होने ज़बानको खूब साफ़ किया और उसपर जिला दी। वे महावरात और मिसालके इस्तैमालमे अपना जवाब नही रखते। . . .उनकी गज़ले ताज़गीयेमज़मून, खूबीयेमहावरात, सादगी और सफाईके लिए मशहूर है।. . . .आस्मानेशाइरीपर ज़ौक एक दरख्शाँ तारा बनकर चमके और ज़बाने उर्दूके बेहतरीन शोराओमें उनका शुमार किया जा सकता है।"

जौक ई० सन् १७८९में दिल्लीमे उत्पन्न हुए और ६५ वर्षकी आयु पाकर १८५४मे स्वर्गमीन हुए। मरनेसे ३ घंटे पूर्व आपने यह शेर कहा था:—

कहते है आज ज़ौक जहाँसे गुज़र गया।
क्या खूब आदमी था, खुदा मगफरत करे॥

आपके अनेक शिष्य थे, जिनमें मौलवी मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' और 'दाग' अत्यन्त प्रसिद्ध हुए है।

ऐ 'ज़ौक़' होश गर है तो दुनियासे दूर भाग ।
इस मैकदे में काम नहीं होशयारका ॥

दुनियाका ज़रोमाल किया जमा तो क्या 'ज़ौक़' ।
कुछ फ़ायदा बेदस्तेकरम[1] उठ नहीं सकता ॥

सुर्मयेचश्मेअज़ीज़ाँ[2] न बना मैं ऐ चर्ख़ !
क्या बना ख़ाक ? ग़ुबारेदिले अहबाब बना ॥

आनेसे मेरे ठहर गए आप वगर्ना ।
जानेका इरादा तो कही हो ही चुका था ॥

मौतने कर दिया नाचार वगर्ना इन्साँ ।
है वह ख़ुदबी[3] कि ख़ुदाका भी न कायल होता ॥

उसने जब माल बहुत रद्दोबदलमें मारा ।
हमने दिल अपना उठा अपनी बग़लमें मारा ॥

मज़कूर[4] तेरी बज़्म[5]में किसका नहीं आता ?
पर ज़िक्र हमारा नही आता, नही आता ॥

क्या जाने उसे वहम है क्या मेरी तरफ़से ।
जो ख्वाबमें[6] भी रातको तनहा[7] नही आता ॥

साथ उनके हूँ मैं, साये[8]की मानिन्द वा लेकिन ।
उसपर भी जुदा हूँ कि लिपटना नहीं आता ॥

---

[1] दान विना; [2] प्यारे, स्नेहीके नेत्रोका सुर्मा; [3] घमडी; [4] ज़िक्र; [5] वह स्थान जहाँ आमोद-प्रमोद हो, रगस्थल, [6] स्वप्न, [7] अकेला, [8] परछाई ।

क़िस्मतसे हो लाचार हूँ ऐ 'ज़ौक़' वगर्ना।
सब फ़नमें हूँ मैं ताक[1] मुझे क्या नहीं आता ?

ज़ाहिद[2] शराब पीनेसे काफ़िर[3] हुआ मैं क्यों ?
क्या डेढ़ चुल्लू पानीमें ईमान बह गया ?

देख, छोटोंको है अल्लाह बड़ाई देता।
आसमाँ आँखके तिलमें है दिखाई देता॥

मुँहसे बस करते न हरगिज़ ये खुदाके बन्दे।
गर हरीसोंको खुदा सारी खुदाई[4] देता॥

तू हमारी जिन्दगी, पर जिन्दगीकी क्या उमीद ?
तू हमारी जान लेकिन क्या भरोसा जानका ?

जो फ़रिश्ते[5] करते हैं, कर सकता है इन्सान भी।
पर, फ़रिश्तोंसे न हो, वह काम है इन्सानका॥

किसी बेकस[6]को ऐ बेदादगर[7]! मारा तो क्या मारा ?
जो आपी मर रहा हो उसको गर मारा तो क्या मारा ?

बड़े मूज़ी[8]को मारा नफ़्सेअम्मारा[9]को गर मारा।
निहंगो[10] अज़दहा[11]ओ शेर नर मारा तो क्या मारा ?

न मारा आपको जो ख़ाक हो अक्सीर बन जाता।
अगर पारेको ऐ अक्सीरगर[12]! मारा तो क्या मारा ?

---

[1] होशियार, [2] भगतजी, परहेज़गार; [3] अधर्मी; [4] सृष्टि; [5] देवता; [6] मजबूर; [7] अत्याचारी, [8] पापी; [9] इन्द्रिय विषय-वासना; [10] मगर मच्छ, [11] अजगर, [12] ताँबे और लोहेका सोना बनानेवाला।

तुफ़ंगो[1]तीर तो जाहिर न था कुछ पास क़ातिलके।
इलाही फिर जो दिलपर ताककर मारा तो क्या मारा !*

पानी तबीब[2] दे है हमें क्या बुझा हुआ।
है दिल ही जिन्दगीसे हमारा बुझा हुआ॥

बेनिशाँ[3] पहले फ़ना[4]से हो, जो हो तुझको बक़ा[5]।
वर्ना है किसका निशाँ 'ज़ौक़' फ़नाने रक्खा॥

नशा दौलतका बदअतवार[6]को जिस आन चढ़ा।
सरपै शैतानके इक और भी शैतान चढ़ा॥

मौत उसको याद करती है खुदा जाने कि गोर[7]।
यूँ तेरा बीमारेग़म जो हिचकियाँ लेने लगा॥†

रहता है अपना इश्क़में यूँ दिलसे मशवरा।
जिस तरह आश्नासे करे आश्ना सलाह॥

आदमीयत और शै है, इल्म है कुछ और चीज़।
कितना तोतेको पढ़ाया, पर वोह हैवाँ ही रहा॥

---

[1] तोप बन्दूक।

* इसी भावका द्योतक 'गालिब'का शेर है —

इस सादगीपै कौन ना मर जाये ऐ खुदा!
लड़ते हैं और हाथमें तलवार भी नहीं॥

[2] वैद्य, हकीम; [3] अस्तित्वरहित; [4] मृत्यु, वरवादी; [5] अमरत्व; ज़िन्दगी; [6] ओछे स्वभावी को; [7] कब्र।

† मुझे याद करनेसे यह मुद्दआ था।
निकल जाय दम हिचकियाँ आते आते॥ 'दाग़'

हम ऐसे साहिबेइस्मत[1] परीपैकर[2] पै आशिक़ हैं।
नमाज़ें पढ़ती हैं हूरें[3] हमेशा जिसके दामनपर॥

दिलको रफ़ीक़ इश्क़में अपना समझ न 'ज़ौक़'।
टल जायगा यह अपनी बला तुझपै टालके॥

क्या आये तुम जो आये घड़ी दो घड़ीके बाद।
सीनेमें होगी साँस अड़ी दो घड़ीके बाद॥

राहतोरंज ज़मानेमें है दोनों लेकिन।
हाँ, अगर एकको राहत है तो है चारको रंज॥

दिखा न जोशोख़रोश इतना ज़ोरपर चढ़कर।
गये जहानमें दरिया बहुत उतर चढ़कर॥

मैं हूँ वोह गुमनाम जब दफ़्तरमें नाम आया मेरा।
रह गया बस मुंशियेकुदरत[4] जगह वाँ छोड़कर॥

कहा पतंगने यह दारे शमअपर चढ़कर।
"अजब मज़ा है जो मर ले किसीके सर चढ़कर"॥

हम उनको चालसे पहचान लेंगे उनको बुर्क़ेमें।
हज़ार अपनेको वह हमसे छिपायें सरसे पाँवोंतक॥

सरापा[5] पाक[6] है धोये जिन्होंने हाथ दुनियासे।
नहीं हाजत[7] कि वह पानी बहाएँ सरसे पाँवोंतक॥

---

[1] सुशीला; [2] अत्यन्त सुन्दरी; [3] अप्सराएँ, [4] प्रकृतिकी ओरसे हिसाब रखनेवाला बाबू; [5] अत्यन्त, बिल्कुल; [6] पवित्र; [7] आवश्यकता।

किया हमने सलाम ऐ इश्क़ तुझको।
कि अपना हौसला इतना न पाया॥

खुरशीदवार[1] देखते हैं सबको एक आँख।
रोशनज़मीर[2] मिलते हर इक नेकोबदसे हैं॥

असीरी[3] इश्क़को मंजूर थी मेरी लड़कपनमें।
बहाना करके मिन्नत[4] का पिन्हाया तौक़ गरदनमें॥

बजा[5] कहे जिसे आलम[6] उसे बजा समझो।
ज़ुबानेखल्क़[7] को नक़्क़ारएख़ुदा[8] समझो॥

नहीं है कम ज़रेख़ालिस[9] से ज़रदिए[10] रुख़सार।
तुम ऐसे इश्कको ऐ 'ज़ौक़' कीमिया[11] समझो॥

कहे एक जब, सुन ले इन्सान दो।
कि हक़ने ज़ुबाँ एक दी कान दो॥

कब हक़परस्त[12] ज़ाहिदे जन्नतपरस्त[13] है।
हूरों[14] पै मर रहा है ये शहवतपरस्त[15] है॥

निगहका वार था दिलपर, फड़कने जान लगी।
चली थी बर्छी किसीपर किसीके आन लगी॥

---

[1] सूर्यकी तरह, [2] बुद्धिमान, प्रकाशवान हृदय; [3] कैद; [4] प्रार्थना, बोल कबूल, [5] उचित, ठीक, [6] दुनिया, लोग; [7] दुनियाकी आवाज़; [8] ईश्वरीय सन्देश; [9] खालिस सोना, [10] कपोलोंका पीलापन; [11] बना हुआ सोना, [12] सचाई में विश्वास करनेवाला; [13] स्वर्गका अभिलाषी; [14] देवाङ्गनाओं; [15] भोगोंकी कामना रखनेवाला।

दस्तेहिम्मत[1]से है बाला[2] आदमीका मर्तबा[3]।
पस्तहिम्मत[4] यह न होवे, पस्तक़ामत[5] हो तो हो ॥

याँ लबपै लाख-लाख सख़ुन इज़्तराब[6]में।
वाँ एक ख़ामुशी तेरी सबके जवाबमें ॥

रिन्दे[7] ख़राब हालको ज़ाहिद! न छेड़ तू।
तुझको पराई क्या पड़ी, अपनी नबेड़ तू ॥

ज़ुबाँ खोलेंगे मुझपर बदज़ुबाँ क्या बदशआ़री[8]से।
कि मैंने खाक भर दी उनके मुँहमें ख़ाकसारी[9]से ॥

लाई हयात आये, क़ज़ा ले चली चले।
अपनी ख़ुशी न आये न अपनी ख़ुशी चले ॥

गुल भला कुछ तो बहारें ऐ सबा[10]! दिखला गये।
हसरत[11] उन गुंचोंपै है जो बिन खिले मुर्झा गये ॥

तू भला है तो बुरा हो नहीं सकता ऐ 'ज़ौक'।
है बुरा वह ही कि जो तुझको बुरा जानता है ॥

और अगर तू ही बुरा है तो वह सच कहता है।
क्यों बुरा कहनेसे तू उसको बुरा मानता है?

ऐ शमअ़! तेरी उम्रेतबीई[12] है एक रात।
रोकर गुज़ार या इसे हँसकर गुज़ार दे ॥

---

[1] साहस; [2] श्रेष्ठ, [3] गौरव; [4] असाहसी, कायर; [5] ठिगना; [6] बेचैनी, बेकरारी; [7] शराबी, [8] बदतमीजी; [9] नम्रता, सेवा-धर्मसे; [10] हवा, [11] अफसोस; [12] जीवन-काल।

५

मिर्ज़ा असदल्ला ख़ाँ 'ग़ालिब'

[ई० सन् १७९६ से १८६९ ई० तक]

मिर्ज़ा गालिब उर्दू-शायरीमें अपना सानी नही रखते। उनकी शायरी बेजोड है। उनका ज़िक्र छिडनेपर उर्दू-साहित्यिकोंका विनयसे सर झुक जाता है। गालिबने जो कहा है, बहुत नपे-तुले शब्दोमे कहा है। एक-एक अक्षर मोतियोसे तोलने योग्य है। उस जमानेमें जब कि 'गुलोबुलबुल' 'साकी और शराब'का दौर था, इसी सीमित क्षेत्रमें उड़ान भरी जा सकती थी। गालिब स्वयं इस पिंजरेमे छटपटाते थे, मगर लाचार थे। फर्माया भी है :—

बक़द्रे शौक़ नहीं ज़र्फ़ तंगनाएग़ज़ल।
कुछ और चाहिए बुस्अत मेरे बयाँके लिए[1]॥

ठीक ही फर्माया है। शेर बुलबुलके पिंजरेमें कैसे बन्द किया जा सकता है? मगर फिर भी इस जुड़ोडमे जितनी बार उन्होंने डुबकी लगाई, मोती ही चुने। हुस्नोइश्ककी कैदमें भी वे दार्शनिक और तत्ववेत्ता बने रहे। गुलोबुलबुलके अफसानोमें मनुष्य-जीवनके विभिन्न पहलुओपर किस ढंगसे कहा है और साकी और शराबकी रंगीन दास्ताँ कहते-कहते दुखती नसोको किस ख़ूबीसे छेड़ा है कि वज्द होने लगता है। 'गालिब'

---

[1] यानी जिन भावोको मै लाना चाहता हूँ वे इस सकुचित क्षत्रमें नही आ पाते। उसके लिए विशाल क्षेत्रकी आवश्यकता है।

ग़ालिब है। वैसा लिखना किसीको नसीब न हुआ। गालिबके समकालीन तथा आधुनिक शायरोंने भी उन भावोको लाना चाहा, मगर वह सफलता नहीं मिली।

मिर्जा गालिबकी शायरीपर जितनी टीका, भाष्य और तुलनात्मक समालोचनाएँ प्रकाशित हुई है, उतनी उर्दू-ससारमे और किसीकी नही। गालिव सर्वसम्मतिसे सर्वश्रेष्ठ शायर माने गये है। महाभारत और रामायणके पढ़े बगैर जैसे हिन्दू धर्मपर नही बोला जा सकता, वैसे ही ग़ालिवको अध्ययन किये विना वज्मेअदवमे मुँह नही खोला जा सकता। यह सन्मान केवल गालिबको ही प्राप्त है कि उनके मिसरेपर गिरह लगाना शायर धृष्ठता समझते है। गालिवने फारसीमे अधिक लिखा है। उर्दूमे एक छोटा-सा दीवान है। मगर वह छोटा-सा दीवान किसी कवाडियेकी दूकान न होकर एक जौहरीकी वह छोटी-सी दूकान है कि वहाँ जिस चीज़पर भी नजर पडती है, कलेजेसे लगा लेनेको जी चाहता है। आपके बारेमे डा० सर इकबालने लिखा है —

> नुत्क़को[1] सौ नाज़[2] है, तेरे लबेऐजाज़[3] पर।
> महवेहैरत[4] है सुरैया[5] रफअ़ते[6] परवाज़[7] पर॥
> शाहिदे[8] मज़मूँ[9] तसद्दुक[10] है तेरे अन्दाज़पर।
> खन्दाज़न[11] है गुचयेदिल्लो[12] गुलेशीराज़[13] पर॥

---

[1]वाक्-शक्तिको, [2]अभिमान, [3]करामाती ओठ, [4]आश्चर्यान्वित; [5]एक उच्चतम नक्षत्र, [6]बुलन्दी, [7]उड़ान; [8]साक्षी, सुन्दरता; [9]कविता की देवी; [10]वलि, न्योछावर, [11]परिहास करती है; [12]दिल्ली की कलियाँ उर्दू के अर्द्ध विकसित रूप से अभिप्राय, [13]शीराज़ का फूल (यहाँ फारसी के प्रसिद्ध कवि सादी और हाफिज़ की परिपक्व कविता से तात्पर्य है)।

लुत्फ़ेगोयाई[1] में तेरी हमसरी[2] मुमकिन नहीं।
हो तखैय्युल[3] का न जबतक फ़िक्रेकामिल[4] हमनशीं[5] ॥

मिर्जा गालिब शायद जान-बूझकर अल्लाह मियाँसे अपने लिए मुसीबतें माँग लाये थे। वरना जो ऐसा महान कवि हो, जिसके इतने अधिक शिष्य हों, दिल्लीका बादशाह, रामपुर, लखनऊ और हैदराबादके नवाब जिसके प्रशंसक और हितैषी हो, वह भी जीवन भर चिन्ताओंसे लड़ता रहे, कुछ समझमे नही आता। शायद यह बात हो कि :—

किसीकी कुछ नही चलती कि जब तकदीर फिरती है।

मिर्जाकी ५ वर्षकी आयुमे पिता और ९ वर्षकी आयुमें चचा मर गये। १३ वर्षकी आयुमे शादी हुई किन्तु पत्नीसे अनबन रही। ७ बच्चे हुए। सब उन्हींके सामने मर गये। मुँहमे चाँदीका चम्मच लेकर उत्पन्न हुए, मगर जीवन भर आर्थिक चिन्ताओमे गोते खाते रहे। शहर कोतवाल-से अनबन थी। इसलिए तीन माहकी जेल काटनी पडी। मोमबत्तीकी तरह उम्र भर जलते और गलते रहे। स्वानुभव किस खूबीसे फर्माया है आपने :—

ग़मेहस्ती[6] का 'असद' किससे हो जुज़[7] मर्ग[8] इलाज।
शम्अ हर रंगमें जलती है सहर[9] होने तक ॥

जब नागहानी मुसीबतोंका पहाड टूट पडता है, तब शेरोंके जिगर भी पानी हो जाते है। बडे-बडे आस्तिक नास्तिक हो जाते है। हफीज़ जालन्धरीके समान हर एक यह कहनेकी हिम्मत नही कर सकता :—

---

[1] कथनोपकथनका आनन्द; [2] बराबरी, [3] कल्पनाशक्ति; [4] पूर्णरूपेण, चिन्तन, [5] साथमे उठने-बैठनेवाला; [6] जीवनके कष्ट; [7] सिवाय; [8] मृत्यु (मृत्युके अलावा); [9] प्रातःकाल।

फिर आ गई गर्दिशे आस्मानी।
बड़ी महर्बानी, बड़ी महर्बानी॥

और गर्दिशे आस्मानी कभी-कभी आये तो स्वागत भी किया जाय, उसे कलेजेसे लगानेको भी दिल चाहे; मगर जो बेहया दामाद या विधवा लड़कीकी तरह घरपर छावनी ही डाल दे, तब आदमीका जी कबतक न ऊबेगा? ऐसी ही कशमकशकी ज़िन्दगीसे बेज़ार होकर मिर्ज़ा ग़ालिबके मुँहसे शायद यह शेर निकला होगा :—

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्लसे गुज़री यारब!
हम भी क्या याद रखेंगे कि ख़ुदा रखते थे[1]!!

---

[1] उसके निजी और प्रिय होते हुए भी जब इस दुरावस्थामें रहे, तब यह बात तो हमें जीवन भर स्मरण रहेगी ही कि हम ऐसा हितैषी रखते थे, जिससे कभी हमारा हित न हुआ। वोह ज़माने भरको निहाल करता रहा, मगर हमारी तरफसे मुँह फेरे बैठा रहा।

आये भी लोग, बैठे भी, उठ भी खड़े हुए।
मैं जा ही देखता तेरी महफिलमें रह गया॥
—'आतिश'

जो तेरे दरबारमें आया अभिलाषा पूरी करके चला भी गया, मगर एक हम उपेक्षित हैं कि हमारे लिए तेरे यहाँ कोई जगह ही नहीं। हम यूँही भटकते रहे।

फानी ने इसी भावको दूसरे ढगसे व्यक्त किया है :—

यारब! तेरी रहमतसे मायूस नहीं 'फानी'।
लेकिन तेरी रहमतकी ताख़ीरको क्या कहिए?

कौन कमबख़्त तेरी दयालुता और दीनबन्धुत्वमें सन्देह करता है? हमें तो आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि तू अपनी कृपा-दृष्टि हमारी ओर

मिर्जा गालिब आर्थिक चिन्ताओसे ग्रसित होते हुए भी स्वाभिमानमें बाल नही आने देते थे। अपने व्यक्तित्व और प्रतिष्ठाका सदैव ध्यान रखते थे। 'आबेहयात'में इस तरहकी एक घटनाका उल्लेख मिलता है, जिसका सार निम्नलिखित है :—

सन् १८४२में दिल्ली कॉलेजके लिए एक फारसी प्रोफेसरकी आवश्यकता थी। लोगोंने गालिबका नाम सुझाया। बुलाये जानेपर आप पालकीपर सवार होकर सेक्रेटरी साहबके डेरेपर पहुँचे। उनको इत्तला हुई तो मिर्जाको फौरन बुलवाया। मगर यह पालकीसे उतरकर इस इन्तजारमें ठहरे रहे कि दस्तूरके मुआफ़िक सेक्रेटरी उन्हे लेनेको आएँगे। जब बहुत देर हो गई और साहबको मालूम हुआ कि इस सबबसे नही आये तो वे खुद बाहर चले आये और मिर्जासे कहा कि "जब आप दरबारे गवर्नरीमें तशरीफ लायेगे तो आपका इसी तरह इस्तक़बाल किया जायेगा। लेकिन इस वक़्त आप नौकरीके लिए आये है, इस मौकेपर यह वर्त्ताव

भी फेरेगा। परन्तु इतना जो विलम्ब (ताख़ीर) हो रहा है इसको क्या कहा जाय ? क्या हम मर मिटेंगे, खाकमे मिल जाएँगे तब ?

का बरसो जब कृषी सुखानी।

मिर्जा गालिब इसी विलम्बजनक आशासे तंग आकर फर्माते है :—

हमने माना कि तग़ाफ़ुल न करोगे लेकिन।
ख़ाक हो जायेंगे हम तुमको ख़बर होनेतक ॥

हम यह तो मानते है कि आप हमारे कष्टोकी भनक पडनेपर उपेक्षा नही करेंगे, परन्तु हमारे मिट जानेके बाद कानमे भनक पडी भी तो क्या पड़ी ? बकौल इकबाल :—

आख़िरेशब दीदके काबिल थी बिस्मिलकी तड़प।
सुबह दम कोई अगर वालाएबाम आया तो क्या ?

नही हो सकता।" मिर्जा गालिबने कहा—"गवर्नमेण्टकी मुलाज़मतका इरादा इसलिए किया है कि एजाज कुछ ज्यादा हो, न कि इसलिए कि मौजूदा एजाज़मे भी फर्क आये।" साहबने कहा—"हम कायदेसे मजबूर है।" मिर्ज़ाने कहा—"मुझको इस खिदमतसे माफ रक्खा जाय", और यह कहकर बाहर चले आये।

इसे कहते है "जान जाये मगर आन न जाने पाये।" भूखा रहकर एडियाँ रगड़-रगड़कर मरना मजूर, मगर कुत्तोकी तरह दुम नही हिलाई जा सकती*। यह तो १०० रुपल्लीकी कॉलिजकी नौकरी थी, गालिब तो इतने स्वाभिमानी थे कि काबेके दरवाज़ेसे भी फिर आयें, अगर दरवाज़ा खुला हुआ न मिले तो :—

> बन्दगीमें भी वोह आज़ावह[1] वख़ुदबीं[2] है कि हम।
> उल्टे फिर आये दरेकाबा[3] अगर वा[4] न हुआ॥

मिर्ज़ा गालिब हर तरहकी मुसीबतोसे घिरे रहनेपर भी अत्यन्त विनोदी और हाज़िरजवाब थे। उनका कहना था कि :—

> "दिलमें हज़ार ग़म हों जबींपर शिकन न हो"।

आपके बहुत-से लतीफे और हाज़िरजवाबीके उल्लेख उनके सुप्रसिद्ध शिष्य मौलाना हालीने 'यादगारेगालिब'मे दिये है। कुछ सक्षेप करके बतौर नमूने पेश किये जाते है।

१—'लखनऊकी एक सुहबतमें जब कि मिर्ज़ा वहाँ मौजूद थे, एक रोज लखनऊ और दिल्लीकी ज़ुबानपर गुतफ़्गू हो रही थी। एक साहबने

> *हरचन्द शेर आजिज़ गर तालिबेगिज़ा हो।
> लेकिन न खायगा वोह कुत्तोके संग रातिब॥
>
> —अकबर

[1] स्वतंत्र, [2] स्वाभिमानी; [3] काबेका द्वार, [4] खुला हुआ।

मिर्जासे कहा कि "दिल्लीवाले जिस मौक़ेपर अपने तईं बोलते है, वहाँ लखनऊवाले आपको बोलते है। आपकी रायमे फसीह (ललित, शुद्ध) 'आपको' है, या 'अपने तईं' ?" मिर्जाने कहा—"फसीह तो यही मालूम होता है जो आप बोलते है। मगर इसमे दिक़्क़त ये है कि मसलन आप मेरी निस्बत यह फ़र्मायें कि मैं आपको फरिश्ता खसायल (देवता स्वरूप) समझता हूँ और मैं आपको इसके जवाबमे अपनी निस्बत यह अर्ज करूँ कि मैं तो आपको कुत्तेसे भी बदतर समझता हूँ, तो शायद बुरा मालूम देगा। मैं तो अपनी निस्बत कहूँगा और आप मुमकिन है कि अपनी निस्बत समझ जाये।" सब हाज़रीन यह लतीफा सुनकर फड़क गये।

२—देहलीमे रथको बाज मोन्निस (स्त्रीलिंग) और बाज मुज़क्कर (पुलिंग) बोलते है। किसीने मिर्जा साहबसे पूछा कि हज़रत ! रथ मोन्निस है या मुज़क्कर ? आपने कहा—भैया ! जब रथमे औरते बैठी हों तो मोन्निस और जब मर्द बैठे हो तो मुजक्कर समझो।

३—सुना है कि जब मिर्जा कर्नल ब्राउनके सामने गये तो उसने, इनकी पोशाक देखकर पूछा—"वेल, तुम मुसलमान ?" मिर्जाने कहा—"आधा।" कर्नलने कहा—"इसका क्या मतलब ?" मिर्जाने कहा—"शराब पीता हूँ, सूअर नही खाता।" कर्नल यह सुनकर हँसने लगा।

४—मौलवी अमीमुद्दीनने मिर्ज़ाके ख़िलाफ़ एक पुस्तक लिखी। मगर मिर्ज़ाने कोई जवाब नही दिया। किसीने कहा—"हज़रत ! आपने उसका कुछ जवाब नही लिखा ?" मिर्ज़ाने कहा—"अगर कोई गधा तुम्हे लात मारे तो क्या तुम भी उसके लात मारोगे ?"

५—मिर्ज़ाके पास किसीने एक बेहूदा गाली-गलौजसे भरा खत भेजा। उसमे एक जगह मिर्ज़ाको गाली भी लिखी थी। मुस्कराकर कहने लगे कि—"इस उल्लूको गाली देनी भी नही आती। बुड्ढे या अधेड़ आदमीको बेटीकी गाली देते है, ताकि उसको गैरत आये। जवानको जोरूकी गाली देते है क्योकि उसको जोरूसे ज्यादा ताल्लुक होता है।

बच्चेको माँकी गाली देते है, कि वह माँके बराबर किसीको प्यार नही करता। और यह जो ७२ बरसके बुड्ढेको माँकी गाली देता है, इससे ज्यादा कौन मूर्ख होगा ?"

६—एक सुहबतमें मिर्ज़ा 'मीर' तकी की तारीफ कर रहे थे। ज़ौक भी मौजूद थे। उन्होने सौदाको मीरपर तरजीह दी। मिर्जाने कहा—"मै तो आपको मीरी (मीरका प्रशसक, सरदार), समझता था, मगर अब मालूम हुआ कि आप सौदाई (सौदाके प्रशंसक, पागल) है।"

७—एक रोज दीवान फजलुल्ला खाँ मिर्ज़ाके मकानके पाससे वगैर मिले निकल गये। मालूम होनेपर मिर्ज़ाने दीवानको लिखा—"आज मुझको इस कदर नदामत हुई कि शर्मके मारे जमीनमे गडा जाता हूँ। इससे ज्यादा क्या नालायकी हो सकती है कि आप कभी-कभी तो इस तरफसे गुज़रे और मै सलामको हाज़िर न रहूँ।" जब यह रुक्का दीवान-जीके पास पहुँचा, वे निहायत शर्मिन्दा हुए और उसी वक्त गाडीमे सवार होकर मिर्ज़ा साहबसे मिलनेको आये।

८—एक दिन एक साहब रातको मिलने चले आये। थोडी देर ठहरकर वे जाने लगे तो मिर्जा खुद अपने हाथमे शमादान लेकर लबेफर्श तक आये, ताकि रोशनीमे जूता देखकर पहन ले। मेहमान बोले—"किबलाओकाबा, आपने क्यो तकलीफ फर्माई ? मै अपना जूता आप पहन लेता।" मिर्जाने कहा—"मै आपका जूता दिखानेको शमादान नही लाया, बल्कि इसलिए लाया हूँ कि कही आप मेरा जूता न पहन जाये।"

९—गदरके बाद जब पेंशन बन्द थी और दरबारमे शरीक होनेकी इजाजत न हुई थी, तब लेफ्टिनेण्ट पजाब मिर्जा साहबसे मिलनेको आये। कुछ पेंशनका जिक्र चला तो मिर्ज़ा साहबने कहा—"तमाम उम्रमें एक दिन शराब न पी हो तो काफिर और एक दफा भी नमाज़ पढ़ी हो तो गुनह-गार। फिर मैं नही जानता कि सरकारने मुझे किस तरह बागी मुसल-मानोमें शरीक किया ?"

१०—जब मिर्ज़ा कैदमे छूटकर आये तो मियाँ काले साहबके मकानमे आकर रहे थे। एक रोज़ मियाँ काले साहबके पास बैठे थे। किसीने आकर कैदसे छूटनेकी मुबारिकबाद दी। मिर्जाने कहा—"कौन भड़वा कैदसे छूटा है? पहले गोरेकी क़ैदमें था, अब कालेकी कैदमे हूँ।"

११—कहते है एक बार क़िलेके मुशायरेमे जब मिर्जाने यह मक़्ता पढा :—

यह मसाइलेतसव्वुफ़[1] यह तेरा बयान 'ग़ालिब'।
तुझे हम वली[2] समझते, जो न बादा[3]ख़्वार होता॥

—तो मुशायरेमे वाह वा की धूम मच गई। बादशाहने मज़ाकमे कहा—"भई हम तो तब भी न समझते।" मिर्जाने फौरन जवाब दिया—"हुज़ूर तो मुझे अब भी वली समझते है।"

बहादुरशाह बादशाहने मिर्ज़ाको 'नजमुद्दौला दबीरुलमुल्क निज़ामे जग' उपाधिसे विभूषित किया था और खिलअ़त भी प्रदान की थी, और तैमूर-वंशका इतिहास लिखनेके लिए ५० रु० मासिकपर नियुक्त किया था। उस्ताद ज़ौककी मृत्युके बाद बादशाह ग़ालिबसे ही अपनी कविताएँ शुद्ध कराने लगे थे। परन्तु मिर्ज़ाको यह कार्य रुचिकर नही था। लाचारी से करते थे। 'यादेगारे गालिब'मे लिखा है कि—"एक रोज मिर्ज़ा दीवानेआममे बैठे थे कि चोबदारने आकर कहा कि बादशाहने गजल माँगी है। मिर्जाने उसे ठहरनेको कहा और फौरन ८-९ परचे निकाले जिनपर एक-एक दो-दो मिसरे लिखे हुए थे। दावात-कलम मँगाकर थोड़ी देरमें ८ या ९ गज़ले बनाकर दे दी। इन गज़लोंको लिखनेमें बमुश्किल इतनी देर लगी होगी कि जितनी देरमें एक़ मश्शाक़ उस्ताद चन्द गजलें सिर्फ कहीं-कही इस्लाह देकर (शुद्ध करके) ठीक कर दे।

[1] दार्शनिक विचार; [2] सिद्धयोगी; [3] मद्यप।

दरिद्रताके कारण मिर्जाके पास कोई पुस्तकालय नही था। वे पुस्तकें खरीद ही नही सकते थे। इतना विशाल अध्ययन और लेखन-कार्य सब किरायेकी पुस्तकोंसे किया गया। एक बार कलकत्तेमें एक साहबके अनुरोध पर चिकनी सुपारीपर फ़िलबदी (तुरन्त) ग़ज़ल कही थी।

उक्त उदाहरणोंसे प्रकट होता है कि उनकी स्मरण-शक्ति तीव्र और कविताका अभ्यास बहुत बढा हुआ था।

मिर्ज़ा जैसा दार्शनिक और पवित्र हृदयवाला मनुष्य मद्यप भी था, बात सच होते हुए भी विश्वास करनेको जी नही चाहता। जो स्वय कोयला है वह कालिमाके अतिरिक्त संसारको और देगा ही क्या? पर जिससे प्रकाश मिले, उसे कोयला कौन कहेगा? हृदय स्वच्छ और प्रकाशवान हुए बिना वह कैसे ज्योति फेंक सकेगा?

कभी-कभी सासारिक वेदनाओंसे तग आकर मनुष्य आत्महत्या कर लेता है, निर्जन स्थानोंमे भागता फिरता है; जैसा कि गालिब स्वयं लिखते है:—

रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो।
हमसखुन[1] कोई न हो, और हमज़ुबाँ[2] कोई न हो॥

बेदरोदीवार-सा इक घर बनाना चाहिये।
कोई हमसाया[3] न हो और पासबाँ[4] कोई न हो॥

पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार[5]।
और अगर मर जाइए तो नौहाख़्वाँ[6] कोई न हो॥

अथवा कष्टों, अपमानों और वेदनाओंको भूलनेके लिए मनुष्य दुर्भाग्यसे

---

[1] अपने जैसा बोल कहनेवाला; [2] अपनी जैसी भाषा बोलनेवाला; [3] पडोसी; [4] रक्षक; [5] परिचर्या करनेवाला; [6] रोनेवाला।

मद्यकी शरणमे जाता है। गमगलत करनेको आठो पहर नशेमे डूबा रहता है। जैसा कि ग़ालिबने फर्माया है :—

मय[1]से ग़रज़ निशात[2] है किस रूसियाह[3]को ?
एक गूना[4]बेख़ुदी[5] मुझे दिन-रात चाहिये ॥*

शायद इसीलिए गालिबने यह जालिम मुँह लगाई। मगर कमीनको मुँह लगाकर जैसे बडे आदमी पछताते है, वही हालत मिर्जाकी हुई। उन्हे शराबने किसी कानका नही रखा। जैसे एक पापको छुपानेके लिए अनेक पाप करने पड़ते है और फिर भी भण्डाफोड़ हो ही जाता है; उसी तरह ग़ालिबने दुखो और कष्टोसे मुक्ति पानेके लिए शराबकी शरण क्या ली मानो उन्होने अनेक आपदाओको आनेके लिए द्वार खोल दिया। इस विपत्तिकी ओर उन्होने स्वय संकेत किया है :—

इश्कने 'गालिब' निकम्मा कर दिया।
वर्ना हम भी आदमी थे कामके ॥

× × × ×

सर्फ़ेबहायेमय[6] हुए आलाते[7] मयकशी[8]।
थे यह ही दो हिसाब सो यूँ पाक[9] हो गये ॥*

---

[1] शराबसे; [2] आनन्द, [3] काले मुँहवाला, अपराधी; [4-5] जैसेभी वने आत्म-विस्मरण,

*कौन पाजी मौज-शौकके लिए पीना चाहता है ? अरे, मैं तो किसी भी तरह अपनेको भूले रहनेका प्रयत्न करता हूँ।

[6] शराबके लिए खर्च; [7-8] शराब पीने के उपकरण [9] पवित्र (यहाँ बट्टेखाते लगानेसे अभिप्राय है)।

*फर्माते है—"हमारे सामने दो समस्याएँ थी। एक यह कि शराब कैसे पिये, पास कौडी नही। दूसरी यह कि इन आलातेमयकशी (शराब

मिर्ज़ा इतने तगदस्त होते हुए भी फैयाज थे। भिखारी उनके घरसे खाली हाथ वहुत कम जाता था। एक बार जनाव लेफ्टिनेण्टके दरबारमें खिलअत मिली। लेफ्टिनेण्टके चपरासी और जमादार कायदेके अनुसार घरपर इनाम लेने आये। मिर्ज़ा साहबको पहले ही इनाम देनेकी वात याद थी। अत: आपने दरवारसे आते ही खिलअत वाजारमें वेचने भेज दी और इतने चपरासियोको अलग मकानमे विठवा दिया और जव वाजार से खिलअतकी कीमत आई तो उन्हे इनाम देकर रुखसत किया।

मिर्ज़ा गालिव स्वयं एक महान् कवि थे, परन्तु दूसरे कवियोकी हृदय-ग्राही कविताओंकी भी मुक्तकंठसे प्रशसा करते थे। चाहे वह उनके प्रतिद्वन्द्वीकी ही क्यो न लिखी हो। हॉ, किसीको खुश करनेके लिए वह वाह वा नही करते थे। जो हृदयपर असर करे उसीपर झूमते थे। उस्ताद जौकसे उनकी चश्मक रहती थी, फिर भी उनके इस शेरको सुनकर झूमने लगे, सर धुनने लगे और वार-वार पढवाते रहे। मिर्ज़ाने अपने उर्दू खतोमे इस शेरका यथास्थान वर्णन किया है। यहॉतक कि जहॉ उत्तम शेरका उदाहरण दिया है, वहॉ-वहॉ इस शेरका जरूर उल्लेख किया है। वह शेर ये है —

अब तो घबराके यह कहते है कि मर जायेंगे।
मरके भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे?

इसी तरह मोमिन खाँका :—

पीनेके पात्रो)को कहाँ-कहाँ लिये फिरे? अत: हमने यह दोनो हिसाव इस तरह पूरे किये कि पात्रोको बेचकर शराव पी ली। ऐसा करनेसे शराव पीनेको मिल गई और पात्रके ढोते रहनेकी परेशानीमे भी वच गये।

तुम मेरे पास होते हो गोया।
जब कोई दूसरा नहीं होता॥

जब उक्त शेर सुना तो बहुत तारीफ़ की और कहा कि—"काश! मोमिन ख़ाँ मेरा सारा दीवान ले लेता और सिर्फ यह शेर मुझको दे देता!" गुण-ग्राहकताकी हद हो गई।

मिर्जा साहबके शिष्य बेशुमार थे। उनमें मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'हाली' अत्यन्त प्रसिद्ध हुए हैं, जिनका उल्लेख इसी पुस्तकमें अन्यत्र किया गया है।

मिर्ज़ा गालिब २७ दिसम्वर १७९७ ई०मे उत्पन्न हुए और ७२ वर्षकी आयुमे दिल्लीमे सन् १८६९मे समाधि पाई।

पयामके सम्पादकका कथन है कि "गालिबने अपनी आँखोसे तैमूरके आखिरी चिरागको गुल होते हुए देखा था। उसने १८५७के गदरके बादका हिन्दोस्तान भी देखा था। इतने बडे परिवर्त्तनको अपनी आँखोसे देखनेवाला गालिब लाल किलेके आखिरी शमअके खामोश हो जानेका दाग अपने सीनेमें रखता है तो हम शायरके हालातसे उसके शेरके हकीक़ी मायने हासिल-करनेमे हकबजानिब है। खूनेदिलके यह कतरे गालिबके दीवानके सुफ़ेहातपर (पृष्ठोमें) सुर्ख़ मोतियोकी तरह बिखरे हुए हैं। कितना ही जमाना बिगड़ जाय, जबतक हम अपने देशके इतिहासको बिल्कुल भुला न दे, हमारी नज़रमे उन कतरोकी सुर्ख़ी मान्द नही हो सकती। वोह इस उजड़ी हुई दिल्लीमें बैठकर कहता है" :—

दिलमें जौकेवस्लो यादेयार तक बाकी नहीं।
आग इस घरमें लगी ऐसी कि जो था जल गया॥

यानी अब हमारे हृदयमें जौकेवस्ल (यारके मिलनकी अभिलाषा)-और यार की याद तक बाकी नही है। क्योकि हमारे हृदय-रूपी घरमे ऐसी आग लगी है कि सर्वस्व भस्मीभूत हो गया। इतने बडे विध्वंसकी बात गालिबने किस खूबी और सादगीसे कही है कि कानून-की जदमे भी न आएँ और सर्वसाधारण जौकेवस्लके चक्करमे ही पड़े रहें।

था ज़िन्दगीमें मौतका खटका लगा हुआ।
उड़नेसे पेश्तर भी मेरा रंग ज़र्द था॥

× × ×

किससे महरूमिये क़िस्मतकी शिकायत कीजे।
हमने चाहा था कि मर जाएँ सो वह भी न हुआ॥

(हम किससे अपनी बदकिस्मतीकी शिकायत करे ? जीवनमें हमने जो भी अभिलाषा की वोह कभी पूरी न हुई। और तो और, हमने मृत्यु चाही वह भी न आई।)

ख़मोशीमें निहाँ ख़ूँगुश्ता लाखों आरज़ूए हैं।
चिराग़ेमुर्दा हूँ मैं बेज़बाँ गोरेग़रीबाँका ॥

(मेरी खामोशीमें लाखों मिटी हुई अभिलाषाएँ (ख़ूँगुश्ता आरज़ूएँ) छुपी हुई है। मैं कबके बुझे हुए चिराग़के मानिन्द हूँ। खामोश आदमी को बेजबान कहते है और चिरागकी लौको जबानकी उपमा देते है। तो बुझे हुए चिरागको बेजबान आदमीके मानिन्द समझा गया है, और उसी तरह मरी हुई अभिलाषाओको मरे हुए आदमीकी कब्रसे उपमा दी गई है।)

दरपै पड़नेको कहा और कहके कैसा फिर गया।
जितने अर्सेमें मेरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला ॥

की मेरे क़त्लके बाद उसने जफ़ासे[1] तौबा[2]।
हाय ! उस ज़ूदपशेमाँका[3] पशेमाँ[4] होना ॥

कहूँ किससे मै कि क्या है ? शबेग़म[5] बुरी बला है।
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता ॥

हुए हम जो मरके रुसवा[6] हुए क्यों न ग़र्क़ेदरिया।
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार[7] होता ॥

× × ×

---

[1] अत्याचारसे; [2] प्रतिज्ञा; [3] शीघ्र लज्जित होनेवाला; [4] शर्मिन्दा, [5] दु:खोकी रात्रि; [6] बदनाम; [7] क़ब्र।

मैं और बज्मेमयसे यूँ तिश्नाकाम आऊँ !
गर मैंने की थी तोबा; साक़ीको क्या हुआ था *?

(बड़े आश्चर्य और दुखकी बात है कि मैं भी मधुशालासे यूँही प्यासा अभिलषित (तिश्नाकाम) चला आऊँ ! यदि मैंने शराब न पीनेकी कसम भी खाली थी तो मधुबालाको क्या हुआ था ? उसने जबरन क्यो न पिला दी ? कई बार जीवनमे आदमी रूठ जाता है, मगर दिलमें वह यही चाहता है कि जिससे वह रूठा है, वह उसे मना ले और जोर ज़बर्दस्ती उसके मानको भंग कर दे। इससे रूठनेवालेको आनन्द भी आता है और उसके मानकी आन भी रह जाती है। और यदि कोई रूठने-वालेको उपेक्षित कर दे, उसे मनाए नहीं तो उसके हृदयको बडी ठेस लगती है और इसका उसे बहुत ज्यादा मलाल रहता है।)

घर हमारा जो न रोते भी तो वीराँ होता।
बहर गर बहर न होता तो बयाबाँ होता॥

(हम इतने रोये कि घर आँसुओसे दरिया बन गया है। न रोते तो उजाड (वीराँ) बना रहता। मतलब ये है कि हम ऐसे अभागे है कि हर हालतमे बेचैन रहेंगे)

पकड़े जाते हैं फरिश्तोंके लिखेपर नाहक़।
आदमी कोई हमारा, दमेतहरीर भी था ?

(मिर्जा हँसीमें ईश्वरको उलाहना देते है कि हमारे जुर्मके सुबूतके लिए किसीकी गवाही होनी आवश्यक थी। केवल फरिश्तोके कहनेसे पकड लेना ठीक नही हुआ)

---

*इन्कारेमयकशीने मुझे क्या मजा दिया।
सीनेपै चढ़के उसने खुमेमय पिला दिया॥

—दाग़

शमअ बुझती है तो उसमेंसे धुआँ उठता है।
शोलयेइश्क़ सियहपोश हुआ मेरे बाद ॥

(चिरागके बुझनेपर जो उठता है उसे धुआँ मत समझो। अपितु चिरागके जल मरनेके शोकमें उसके हृदयकी आगने काला वस्त्र पहना है। इसी तरह मेरे गममें मेरा शोलयेइश्क (प्रेम-अग्नि) स्याहपोश हुआ है। मतलब यह है कि मैं चिरागकी तरह उम्रभर जलता रहा हूँ।)

घर जब बना लिया तेरे दरपर कहे बग़ैर।
जानेगा अब भी तू ना मेरा घर कहे बग़ैर ॥

कहते हैं जब रही ना मुझे ताक़तेसखुन।
"जानूँ किसीके दिलकी मैं क्योंकर कहे बग़ैर ?"

राजेमाशूक़ न रुसवा हो जाये।
वर्ना मर जानेमें कुछ भेद नहीं ॥

(मर जानेमें कोई खास भेद नही। मगर माशूकका भेद न खुल जाय, कही वह बदनाम न हो जाय, इसी खयालसे नही मरते है। आत्म-हत्या करनेसे कुटुम्बी और मित्रोंकी काफी बदनामी होती है। फिर माशूकको तो लोग स्पष्ट ही कहेंगे कि इसकी उपेक्षाओ और अत्याचारोसे तंग आकर प्रेमी मर गया। ना बाबा! हम उसकी यह जिल्लत कराना पसन्द नही करेंगे)

कहते है जीते हैं उम्मीदपै लोग।
हमको जीनेकी भी उम्मीद नहीं ॥

(समस्त संसार आशापर अवलम्बित है। आशा नष्ट हुई कि सब नष्ट हुआ। 'जबतक आस, तबतक साँस।' मिर्ज़ा फर्माते है कि सुनते हैं लोग उम्मीदके भरोसे जीते है, मगर हम क्या करे ? हम तो इतने

निराश रहे है कि हमे तो जीनेकी भी आशा नही। (इस ज़मीनमें इससे बेहतर शेर निकालना मुश्किल है)

रौ में है रख़्शेउम्र कहाँ देखिए थमे।
ना हाथ बागपर है न पा है रकाबमें॥

(सवारकी बेअख्तियारी और घोडेका उसके काबूसे बाहर हो जाना चाबुकसवारकी दयाजनक स्थितिका कैसा करुण चित्र है ! यह जीव रूपी सवार शरीर रूपी ऐसे ही बेकाबू उदण्ड घोडेपर सवार है, और उसपर भी तुर्रा यह कि न हाथमे लगाम है, और न रकाबमें पाँव ही है। फिर भगवान् ही बेली है। न जाने कहाँ यह घोड़ा थमेगा और कहाँ गिरेगा ?)

छोड़ा न रश्कने कि तेरे घरका नाम लूँ।
हर इकसे पूछता हूँ कि जाऊँ किधरको मैं ?

(आशिकको इस कदर वहम है कि वह मार रश्क (ईर्ष्या)के लोगोसे माशूकके घरका पूरा अता-पता देकर उसके घरका मार्ग नही पूछता। उसे यही खटका लगा हुआ है कि कही ऐसा न हो कि नाम-निशाँ बता देनेसे कोई और भी वहाँ पहुँच जाय। इसलिए वह सिर्फ लोगोसे यही पूछता है—"क्यो साहब ! मुझे अब किधर जाना चाहिए ?" और इसका जवाब भला कोई क्या दे ? अतः आशिक़ यूँही भटकते फिरते है और बदगुमानीकी वजहसे माशूकके घरका ठीक-ठीक उल्लेख करके पता नही पूछते। भटकते फिरना और विरह-व्यथा सहना तो मंजूर मगर गैरोको पता बताना मंजूर नही)*

---

* इस बदगुमानीपर किसी साहबका एक शेर याद आया :—

बवक़्ते अलविदा उस दिलरुबाको।
न सौंपा बदगुमानीसे ख़ुदाको॥

(माशूकसे विदा होते समय उसको खुदा हाफिज़ (ईश्वर रक्षक हो)

लो वोह भी कहते हैं कि यह बेनंगोनाम है।
यह जानता अगर तो लुटाता न घरको मैं॥

(और तो और, जिसकी वजहसे हम तबाह हुए वही अब यह कहने लगा है कि यह निहंग है, आवारा है। अगर मुझे पहलेसे यह ध्यान रहा होता कि बिन कौड़ी आदमी बेकौड़ीका है तो मैं क्यों घरको लुटने देता ?)*

चलता हूँ थोड़ी दूर हर इक तेजरौके साथ।
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबरको मैं॥

(जिस आदमीमे मैं कोई सिफात देखता हूँ, उसीपर विश्वास कर लेता हूँ। जिस किसीको अग्रगामी देख लेता हूँ उसीके पीछे चल पड़ता हूँ। फिर जब कोई उससे बढकर गुणी या अग्रगामी देखता हूँ तो उसे छोड़कर उसके पीछे हो लेता हूँ। इसका कारण यह है कि मैं अभी सच्चे हितैषी और मार्गप्रदर्शकको पहचाननेकी क्षमता नही रखता। यह शेर उन कौमोपर कितना चुस्त होता है, जिनका कोई नेता नही और यूँही कभी किसीके बहकावेमे और कभी किसीके इशारेपर नाचती रहती हैं)

दोनों जहान देके वोह समझे 'यह खुश हुआ'।
याँ आपड़ी ये शर्म कि तकरार क्या करें?

(ईश्वर यह लोक और परलोक देकर यह समझा कि मैं प्रसन्न हो

इसी बदगुमानीने न कहा कि कहीं खुदा ही शफक्कतका हाथ न फेर दे।)

* फानीने भी इस भावको क्या खूब कलमबन्द किया है :—

बहला न दिल न तीरगिये शामेग़म गई।
यह जानता तो आग लगाता न घरको मैं॥

(अफसोस तो यह कि घरमें आग लगानेसे न तो मेरा गमरूपी अँधेरा ही मिटा, और न कुछ दिल ही बहला। बेकार घरको हमने जलाया।)

गया हूँ। मगर मै तो इस कारणसे चुप रहा कि अब क्या तकरार की जाय, क्यो दिल की बात कही जाय ? यह कुछ न देता तो अच्छा था, या देना था तो मेरे मनके मुताबिक देना था। हम शर्मकी वजहसे चुप रहे, और उसने हमारी चुप्पीका मतलब ही और समझा।)

दिलेनाजुकपै उसके रहम आता है मुझे 'गालिब'।
न कर सर गर्म उस काफिरको उल्फ़त आज़मानेमें॥

(उसे मेरे प्रेमकी परीक्षा लेनेके लिए उत्तेजित न करो। कही ऐसा न हो कि वह आवेशमे आकर मुझे मार डाले, और फिर उसका दिल सदैव इस करनीपर पछताता रहे। इसलिए मुझे उसके कोमल हृदयका खयाल करके यह कहना पड रहा है कि उसे उत्तेजित न करे। उसके नाजुक दिलका खयाल आता है, वर्ना मुझे अपनी जानकी कोई चिन्ता नही।)

नज़र लगे न कहीं उसके दस्तोबाज़ूको।
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मेजिगरको देखते हैं?

× × ×

मैंने कहा कि "बज़्मेनाज़ चाहिये ग़ैरसे तिही"[1]।
सुनकर सितम ज़रीफ़ने मुझको उठा दिया कि यूँ॥

मैंने तो उस सितमजरीफसे (जो अत्याचारको अत्याचार न समझकर मनबहलाव या हँसी समझे, मुँहपर रगके साथ तेजाब छिडक दे, मगर वह उसे होली ही समझा करे) रकीबको (प्रतिद्वन्द्वीको) गैर समझकर कहा था कि आप की महफिल गैरसे खाली होनी चाहिए। उसने यह सुनकर मुझे ही महफिलसे यह कहकर उठवा दिया कि "यहाँ सिर्फ तू ही गैर नजर आता है।" सितमजरीफीकी हद हो गई।

---

[1] एकान्त।

न लुटता दिनको तो कब रातको यूँ-बे खबर सोता।
रहा खटका न चोरोंका दुआ देता हूँ रहज़नको॥

× × ×

ख़ुशी क्या खेतपर मेरे अगर सौ बार अब्र आवे।
समझता हूँ कि ढूँढ़े है अभीसे बर्क़ ख़िरमनको॥

मेरे खेतपर बादल सौवार भी छायें या बरसें तो मुझे ख़ुशी नहीं, क्योंकि मै जानता हूँ बादलोंमें छुपी बिजली मेरे झोंपड़ेको ढूँढती फिर रही है। मतलव है कि जिसे जाहिरामे सुख समझा जाता है, वह दुखका सन्देश है।

आशिक़ हुए हैं आप भी इक और शख़्सपर।
आख़िर सितमकी कुछ तो मकाफ़ात चाहिये॥

देखिये न, कुछ वात तो वनी। आप (माशूक) भी किसीपर आशिक हुए तो। अव आपको मालूम तो होगा कि आशिकोंके दिलपर क्या बीतती है? उनकी उपेक्षा करने, विरह-अग्निमें जलाने और सतानेसे आशिकोंको कितना कष्ट होता है? इसका अनुभव अव आपको होगा, जव आपका माशूक वोह व्यवहार करेगा जो आप हमसे वरतते थे। आख़िरकार कुछ तो सितमकी मकाफ़ात (अत्याचारका वदल) चाहिए।[1]

सीखे हैं मह्‌रुख़ोंके लिए हम मुसव्वरी।
तक़रीब कुछ तो बहरेमुलाक़ात चाहिये॥

चित्रकारी, (शायरी, गायन, वादन, शतरंज, चौसर आदि) कला हमने चन्द्रमुखियोंके लिए ही सीखी है, ताकि किसी न किसी कलाके सहारे

---

[1] "वोह का जाने पीर पराई।
जाके फटी न पैर बिवाई॥"

हमारा वहाँतक आना-जाना हो सके। क्योकि वहाँतक रसाई होनेके लिए कुछ न कुछ तो गुण होने ही चाहिए।

अपनी गलीमें मुझको न कर दफ़्न बादेक़त्ल।
मेरे पतेसे ख़ल्क़को क्यों तेरा घर मिले ?

तू मुझे क़त्ल करे यह तो बड़ी खुशीकी बात है मगर कत्ल करनेके बाद अपनी गलीमे मुझे दफन न करना। यही मेरी आखिरी ख्वाहिश है, क्योकि मै नही चाहता कि मेरे जैसे प्रसिद्ध आदमीकी कब्र तेरे कूचेमें बने। मेरी प्रसिद्धिके कारण लोगोंको जहाँ मेरी कब्रका पता लगे, वहाँ तेरा निवास-स्थान भी मालूम हो। मेरे बाद तेरे कूचेमे और लोग आएँ-जाएँ यह मै नही सहन कर सकता। यह मिर्जाका अछूता और नया खयाल है। वर्ना आशिककी एक इच्छा यह भी रहती है कि मरनेपर वह यारके कूचेमे दफनाया जाय।

'ग़ालिब' तेरा अहवाल सुना देंगे हम उनको।
वे सुनके बुला लें यह इजारा नहीं करते॥

हमको उनसे वफ़ाकी है उम्मीद।
जो नहीं जानते वफा क्या है ?

पिन्हाँ था दामेसख़्त क़रीब आशियानेके।
उड़ने न पाये थे कि गिरफ़्तार हम हुए॥

मतलब यह है कि होश सम्हालने भी न पाये थे कि मुसीबतोंने घर लिया। उडने पाये भी नही और गिरफ्तार कर लिये गये।

छोड़ी 'असद' न हमने गदाईमें दिल लगी।
साइल हुए तो आशिके अहलेकरम हुए॥

हमने गदाई (फकीरी)में भी हँसमुख स्वभाव न छोड़ा। फकीर हुए पर दिल्लगीसे बाज़ न आये। हम साइल (फकीर) भी रहे और

आशिक भी रहे। यानी जिसके दरके फकीर हुए उसी दातारके आशिक भी हुए। इस शेरमे कई खूबी है। एक तो यह कि जो परमात्मा (अहले-करम) हमे देता है हम उसके उपासक है, प्रेमी है, आशिक है। दूसरे यह कि हम जिसपर आशिक है उसके दरवाज़ेपर फकीर बनकर दीदार कर आते है। तीसरे यह कि वह हमारा दाता है तो क्या हुआ, हम भी तो उसके आशिक है।

दाग़ेफ़िराक़े[1] सुहबतेशबको[2] जली हुई।
इक शमअ़ रह गई है सो वह भी ख़मोश है॥

एक हंगामेपै मौकूफ़ है घरकी रौनक़।
नोहयेग़म[3] ही सही नग़मयेशादी[4] न सही॥

उनके देखेसे जो आ जाती है मुँहपर रौनक़।
वोह समझते हैं कि बीमारका हाल अच्छा है॥

हमको मालूम है जन्नतकी हक़ीक़त लेकिन।
दिलके ख़ुश रखनेको 'ग़ालिब' ये खयाल अच्छा है।

मुन्हसिर मरनेपै हो जिसकी उम्मीद।
ना उम्मीदी उसकी देखा चाहिये॥

सफ़ीना जब कि किनारेपै आ लगा 'ग़ालिब'।
ख़ुदासे क्या सितमोजोरे नाख़ुदा कहिये॥

'छोड़ भी, अब किसीकी क्या शिकायत और क्या गिला? जब कि

[1] विरहका चिन्ह।

[2] रात्रिकालीन उत्सव।

[3] शोकमें रुदन।

[4] विवाह-उत्सवपर नृत्य-गान।

सफ़ीना (जीवन रूपी नौका) जैसे-तैसे पार लग ही गया, तब रास्तेमे नाख़ुदा (मल्लाह) द्वारा किये गये अत्याचारोका अब क्या उल्लेख करे ? हमारी नाव तो जैसे-तैसे पार लग ही गई। सतानेवालोको क्या लाभ हुआ, यह वही जाने। अब हम क्यों व्यर्थमे शिकायत करके हल्के बने ?

न सुनो, गर बुरा कहे कोई।
न कहो, गर बुरा करे कोई ॥

रोक लो, गर ग़लत चले कोई।
बख़्श दो गर ख़ता करे कोई ॥

× × ×

बक रहा हूँ जुनूँमें क्या-क्या कुछ।
कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई ॥

कभी-कभी मनुष्य दुखके आवेगको न रोक सकनेके कारण व्यथाके प्रवाहमे बह जाता है। वह नही चाहता कि हृदयके कोनेमे छुपे हुए दुख-दर्द किसीको दिखाये। मगर जब आवेग तेज़ होता है, तब वह नही सम्हल पाता और बहक जाता है। मगर बहता हुआ आदमी जिस तरह चाहता है किनारेसे आन लगे, उसी तरह जोशेजुनूँ (उन्मादके जोश)मे बहकने-वाला यह चाहता है कि ईश्वर करे मेरी बात किसीकी समझमे न आये।

जब तवक़्क़ोह ही उठ गई 'ग़ालिब'।
क्यों किसीका गिला करे कोई ॥

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ।
वर्ना क्या बात कर नहीं आती ॥

हो चुकीं 'ग़ालिब' बलाएँ सब तमाम।
एक मर्गेनागहानी[1] और है ॥[2]

उग रहा है दरोदीवारपै सब्ज़ा 'ग़ालिब'।
हम बयाबाँमें हैं और घरमें बहार आई है ॥[3]

× × ×

देखो, मुझे जो दीदये इब्रत निगाह हो।
मेरी सुनो, जो गोश! नसीहतनयोश है ॥

मुझे देखो, इससे तुम्हें दीदयेइब्रतनिगाह (बुरे कामोंके देखनेसे शिक्षा-रूपी पाठ मिलना) होगी, शिक्षाकी दिव्यदृष्टि मिलेगी। मेरी आप-बीती सुनो। अगर तुम्हारे गोश (कान) नसीहत नयोश (उपदेशके इच्छुक) है—मतलब यह है कि मैं इतना पतित हूँ कि मुझे देखनेसे ही ज्ञात हो जायेगा कि बुरे कामोंके यह फल मिलते हैं। मेरी बातें इतनी अनुभवपूर्ण है कि उन्हे सुनोगे तो सारी बुराइयोसे चौकन्ने हो जाओगे।

गो हाथमें जुम्बिश नहीं, आँखोंमें तो दम है।
रहने दो अभी साग़िरो मीना मेरे आगे ॥

यह शेर बजाहिर तो कतई रिन्दाना है। मतलब यही कि हाथमें

---

[1] बेकार मरना, अकस्मात् मृत्यु।

[2] अपनी तो सारी उम्र ही 'फ़ानी' गुजार दी।
इक मर्गे नागहाँके ग़मे इन्तज़ारने ॥
'फ़ानी'

[3] याँ मेरे क़दमसे है वीरानेकी आबादी।
वाँ घरमें खुदा रक्खे आबाद है वीरानी ॥
— 'फ़ानी'

मीना उठानेकी शक्ति न रही तो न सही, अभी आँखोमे देखनेकी शक्ति तो है। पी नही सकता, मगर देखनेका तो आनन्द उठा सकता हूँ। इसलिए सागिर और मीना सामने ही रखे रहने दिये जाएँ। मगर भाव बहुत ऊँचे है। जीवन-सग्राममे लड़ते-लडते इतने थक चुके है कि न खड़े रह सकते है न शस्त्र ही थाम सकते है। मगर शरीरमे रक्तकी एक बूँद रहते हुए, आँखोमे रोशनी होते हुए क्या शत्रुको सामनेसे ओझल हो जाने दे? क्या अपने कर्त्तव्यसे विमुख हो जाएँ? नही।

हस्तीके मत फ़रेब कभी खाइयो 'असद'।
आलम तमाम हल्कयेदामेख़याल है॥

इस जीवन अथवा ससारके चक्कर (फरेब)मे कभी नही आना चाहिए। यह तो आत्मा-रूपी पक्षीको फँसानेके लिए जाल (हल्कये-दामेखयाल) है।

क़तअ कीजे न तअल्लुक हमसे।
कुछ नहीं है तो अदावत ही सही॥

× × ×

लाज़िम नहीं कि ख़िज्रकी हम पैरवी करें।
माना कि एक बुज़ुर्ग हमें हमसफर मिले॥*

यह माना कि एक वयोवृद्ध 'खिज्र' हमे मार्गमे मिल गये है, जो हमारी तरह वह भी भ्रमण कर रहे है। मगर उनका अनुकरण करना हमारा कर्त्तव्य नही। हमे किसीकी नकल न करके अपना नवीन, स्वतन्त्र,

---

*वोह पाये शौक दे कि जुहत आश्ना न हो।
पूछूँ न खिज्रसे भी कि जाऊँ किधरको मै?
—'फ़ानी'

मौलिक मार्ग चुनना चाहिए। स्वावलम्बनपर कितना ऊँचा भाव है ? क्योंकि इस्लाम-धर्मके अनुसार खिज़्र हमेशा संसारमें घूमते हुए भूले-भटकोंको रास्ता बताते हैं। गोया उनकी ड्यूटी ही मार्ग बतलाना है। फिर भी गालिब कहते हैं कि उनसे क्यों हम मार्ग पूछें ? क्यों हम उनके पीछे चलें ? और क्यो उनके बताये मार्गका अनुसरण करें ? क्या इससे हमारे स्वावलम्बनमें बाल न आयेगा ? ५-६ वर्ष पूर्व श्रद्धेय पं० अर्जुनलाल सेठीने (सर्वज्ञदेव उनकी स्वर्गीय आत्माको सुख-शान्ति, उनके जीवित 'प्रकाश'को प्रकाश दे) ऐसा ही प्रसंग छिड़नेपर निम्न-लिखित हिन्दीका दोहा किस भवावेशमें सुनाया था कि आज भी वह दृश्य नेत्रोंके सामने झूलकर रुला गया है :—

"लीक-लीक गाड़ी चले, लीकहि चले कपूत।
लीक छोड़ तीनों चलें, शायर, सिंह, सपूत॥"

६

हकीम मुहम्मद मोमिन खाँ 'मोमिन'

[सन् १८०० से १८५१ ई० तक]

मोमिन साहब 'गालिब' और 'ज़ौक़'के समकालीन थे। ये अपने ढगके निराले थे। न किसीके दरबारमे जाते थे, न किसीकी चापलूसीमे कुछ लिखते थे। आरम्भमे हिकमत की, फिर ज्योतिषका अच्छा अभ्यास किया। यहाँतक कि अपनी मृत्युके बारेमे कह दिया था कि ५ रोज़ या पाँच माह या ५ वर्षमे चोला छूट जायेगा। और यही हुआ भी। कोठेपरसे गिरनेके कारण कहे हुए दिनसे ठीक ५ माहके बाद असार ससारसे उठ गये। शतरंजके चतुर खिलाडियोमेसे एक थे।

कपूरथला महाराजने ३५० रु० मासिकपर अपने यहाँ बुलाना चाहा। मगर मोमिन इसलिए नही गये कि इतना ही वेतन वहाँ एक गवैयेको भी मिलता था।

मोमिन रगीन स्वभावी, हँसमुख, सौन्दर्य-उपासक और वज़हदार थे। उनके कलाममे दार्शनिकता नही मिलेगी। उनके अपने लिखनेका ढंग भी जुदा है। कहते हैं कि पढ़ते भी करुणोत्पादक ढंगसे थे। मोमिनके कलाममें नाज़ुकखयाली, भावोकी तराश खूब है। आशिकाना रंगके माहिर उस्ताद समझे जाते है। उर्दू-साहित्यके सुप्रसिद्ध आलोचक अल्लामा नियाज फतहपुरी लिखते है—"अगर मेरे सामने उर्दूके तमाम शुअ़रा (शायरों) मुतकद्दमीन (प्राचीन) और मुताखरीन (आधुनिक)का कलाम रखकर (बाइसतसनायेमीर—मीरको छोडकर) मुझको सिर्फ़ एक दीवान हासिल करनेकी इजाज़त दी जाये तो मैं बिला ताम्मुल

कह दूँगा कि मुझे कुलियाते मोमिन दे दो और बाकी सब उठा ले जाओ ?"[१]

इनका जन्म १८०० ई०मे दिल्लीमें हुआ। और सन् १८५१में दिल्लीमें ही मृत्यु हुई।

कलामे मोमिन :—

न मानूँगा नसीहत, पर न सुनता मैं तो क्या करता ?
कि हर-हर बातपर नासेह[२] तुम्हारा नाम लेता था ॥

छुटकर कहाँ असीरेमुहब्बत[३] की ज़िन्दगी।
नासेह यह बन्देग़म[४] नहीं, क़ैदेहयात[५] है ॥

मंज़ूर हो तो वस्लसे बढ़कर सितम नहीं।
इतना रहा हूँ दूर कि हिजरॉका ग़म नहीं ॥*

इस नक़्शेपा[६]के सजदे[७]ने क्या-क्या किया ज़लील[८]।
मैं कूचयेरक़ीब[९]में भी सरके बल गया ॥

जाने दे चारागर,[१०] शबेहिजरॉ[११]में मत बुला।
वह क्यों शरीक हो, मेरे हाले तबाहमें ?

---

[१] इन्तिकादियात हिस्सा अव्वल, पृ० २१; [२] उपदेशक, [३] प्रेमका कैदी; [४] कष्टोंका वन्धन, [५] जीवन-कैद।

*नियम है कि आदतके खिलाफ हर वात नागवार गुजरती है। इसलिए अगर मुझपर तुम प्रत्याचारका अभ्यास करना चाहते हो तो मिलनसे वढकर और क्या सितम होगा, क्योंकि मैं विरह-व्यथाका इतना प्रेमी हो गया हूँ कि मिलन अब मुझे आदतके खिलाफ वुरा मालूम होगा।

[६] चरण-चिन्ह; [७] नमस्कार, झुकना; [८] वदनाम, वेइज्जत; [९] प्रतिद्वन्द्वीकी गलीमे, [१०] वैद्य, [११] विरह-रात्रि।

ग़ैरों पै खुल न जाय कहीं राज़ देखना।
मेरी तरफ़ भी ग़मज़एग़म्माज़[1] देखना॥

कैसे गिले[2] रक़ीब[3]के, क्या ताने उक़रबा[4]।
तेरा ही दिल न चाहे तो बातें हज़ार हों॥

बहरे अयादत[5] आये वोह, लेकिन कज़ाके साथ।
दम ही निकल गया मेरा आवाज़ेपा[6]के साथ॥

माँगा करेंगे अबसे दुआ हिज्रेयारकी[7]।
आख़िर तो दुश्मनी है असरको दुआके साथ॥*

न बिजली जल्वाफ़र्मा[8] है, न सैयाद[9]।
करें हम क्या निकलकर आशियाँसे[10]?

बर्क़का[11] आस्मानपर है दिमाग़।
फूँककर मेरे आशियानेको॥

क्या सुनाते हो कि है हिज्रमें जीना मुश्किल?
तुमसे बेरहमपै मरनेसे तो आसाँ होगा॥

---

[1] माशूक़ाना अदाओंको आँखोंसे प्रकट करनेवाला।
[2] शिकायत; [3] प्रतिद्वन्द्वी; [4] इष्ट-मित्र।
[5] बीमारीका हाल पूछना; [6] पगध्वनि।
[7] प्रेमिकाका विरह।

* ख़ूब था पहलेसे होते जो हम अपने बदख़्वाह।
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है॥

[8] उपस्थित, [9] चिड़ीमार; [10] घोंसलेसे।
[11] बिजलीका।

संगेसौदा जुनूँमें लेते हैं।
अपना हम मक़बरा बनानेको ॥*

यास[1] देखो कि ग़ैरसे कह दी।
बात अपनी उम्मीदवारीकी ॥

दोनोंका एक हाल है यह मुद्दआ[2] हो काश।
वोही ख़त उसने भेज दिया क्यों जवाबमें ?

ख़ुदाकी याद दिलाते थे नज़अ़ में[3] अहबाब[4]।
हज़ार शुक्र कि उस दम वोह बदगुमाँ न हुआ ॥

शब तुम जो बज़्मेग़ैरमें आँखें चुरा गये।
खोये गये हम ऐसे कि अग़ियार[5] पा गये ॥

हँसते जो देखते हैं किसीको किसीसे हम।
मुँह देख-देख रोते हैं, किस बेकसीसे हम ?

कुछ क़फ़समें इन दिनों लगता है जी।
आशियाँ अपना हुआ बरबाद क्या ?

बख़्तेबद ने[6] वोह डराया है कि काँप उठता हूँ।
तू कभी लुत्फ़की बातें भी अगर करता है ॥

---

*संगसौदा एक किस्मका काला पत्थर जो हल्का और अन्दरसे खोखला होता है। संगसौदा इसलिए ले रहे हैं कि हमारे जुनूँ (दीवानगी)की याद रहे क्योंकि सौदा मायने दीवानेके है। क़ब्रपर सौदा पत्थर लगा हुआ देखकर हर एक समझ लेगा कि इसमें कोई सौदाई दफनाया गया है।

[1] निराशा; [2] तात्पर्य; [3] मृत्यु-काल; [4] इष्ट-मित्र; [5] ग़ैर; [6] दुर्दिनने।

दमबदम रोना हमें, चारों तरफ़ तकना हमें।
या कहीं आशिक़ हुए, या होगया सौदा[1] हमें॥

अगर ग़फ़लतसे बाज़ आया जफ़ा[2] की।
तलाफ़ी[3] की भी ज़ालिमने तो क्या की?

जफ़ासे थक गये तो भी न पूछा—
"कि तूने किस तवक़्क़ोह[4] पर वफ़ा[5] की?"

किसीने गर कहा मरता है 'मोमिन'।
कहा "मैं क्या करूँ? मर्ज़ी ख़ुदाकी"*॥

ग़ैरसे सरगोशियाँ[6] कर लीजिए फिर हम भी कुछ।
आर्ज़ूहायेदिले[7] रश्कआश्ना[8] कहनेको हैं॥

मजलिसमें मेरे ज़िक्रके आते ही उठे वोह।
बदनामिये उश्शाकका एजाज़ तो देखो†॥

---

[1] उन्माद, [2] अत्याचार; [3] बदल; [4] आशा। [5] भलाई।

*जो कहता हूँ कि मरता हूँ, तो फ़रमाते हैं "मर जाओ"।
जो गश आता है मुझपर तो हज़ारों दम भी होते हैं॥
—'दाग़'

[6] कानाफूसी; [7] हृदयकी अभिलाषा; [8] प्रतिद्वन्द्वीकी ईर्ष्या।

†मजलिसमें बदनाम प्रेमीका किसीने ज़िक्र किया तो माशूक़ घृणाके कारण उठ खड़ा हुआ। प्रेमी अपने दिलको तसल्ली देता है कि उसका खड़ा होना नफ़रतकी वजहसे नहीं, बल्कि आशिकोंकी बदनामीको उसने ताज़ीम दी है।

खुशी न हो मुझे क्योंकर क़ज़ाके आनेकी।
ख़बर है लाशपै उस बेवफ़ाके आनेकी॥

उलझा है पाँव यारका ज़ुल्फ़ेदराज़[1] में।
लो आप अपने दाममें[2] सैयाद आ गया॥

तुम मेरे पास होते हो गोया।
जब कोई दूसरा नहीं होता॥

गये वोह ख़्वाबसे उठ, ग़ैरके घर आखिरेशब।
अपने नालोंने दिखाया यह असर आख़िरेशब॥

सुबह दम वस्लका वादा था यह हसरत देखो।
मर गये हम दमेआग़ाज़ेसहर[3] आखिरेशब॥

शोलये आह, फ़लक! रुतबेका ऐजाज़[4] तो देख।
अव्वलेमाह में चाँद आये नज़र आखिरेशब॥

समझके और ही कुछ मर चला मैं ऐ नासेह[5]!
कहा जो तूने 'नहीं जान जाके आनेकी'॥

मेरे घर भी चलते-फिरते एक दिन आ जायगा।
दो मुबारिकबाद अबकी यार हरजाई[6] मिला॥

छोड़ बुतख़ानेको 'मोमिन' सजदा[7] काबेमें न कर।
ख़ाकमें ज़ालिम! न यूँ क़दरेजबीं साई[8] मिला॥

---

[1] लम्बे बाल, [2] जालमें; [3] प्रातःकालसे पूर्व; [4] इज्ज़त, सम्मान। [5] नसीहत देनेवाला, [6] चरित्र भ्रष्ट; [7] नमस्कार; [8] मस्तक झुकानेके गौरवको।

ग़ैरसे वोह फिर रक़ीब[1]के घरमें चला गया।
ऐ रश्क[2]! मेरी जान गई तेरा क्या गया?

आपकी कौन-सी बढ़ी इज़्ज़त?
मैं अगर बज़्ममें ज़लील हुआ॥

ख़ाक होता न मैं तो क्या करता?
उसके दरका ग़ुबार होना था॥

मत कह शबेविसाल कि ठंडा न कर चिराग़।
ज़ालिम! जला है मेरी तरह उम्रभर चिराग़॥[*]

उस शोलारूने[3] ताकि पसेमर्ग[4] भी जलूँ।
जलवाए दुश्मनोंसे मेरी गोर[5]पर चिराग़॥

नाकामियोंसे काम रहा उम्रभर हमें।
पीरी[6]में यास[7] थी जो हविस[8] थी शबाब[9]में॥

उम्र सारी तो कटी इश्क़ेबुताँमें[10] 'मोमिन'।
आख़िरी वक़्तमें क्या ख़ाक मुसलमाँ होंगे?

शबेफ़िराक़में भी ज़िन्दगीपै मरता हूँ।
कि गो ख़ुशी नहीं मिलनेकी पर मलाल तो है॥

---

[1] प्रतिद्वन्द्वी; [2] ईर्ष्या।

[*] शबेविसाल है गुल कर दो इन चिराग़ोंको।
ख़ुशीकी बज़्ममें क्या काम जलनेवालोंका?

[3] अग्निज्वाल; [4] मृत्युके पश्चात्; [5] क़ब्र; [6] वृद्धावस्था।
[7] निराशा; [8] तृष्णा; [9] यौवन; [10] मूर्ति-पूजामें।

ख़ाकमें मिल जाय यारब ! बेकसीकी आबरू ।
ग़ैर मेरी नाशके[1] हमराह[2] रोता जाय है ॥

अब तो मर जाना भी मुश्किल है तेरे बीमारको ।
ज़ोफ़के[3] बाइस[4] कहाँ दुनियासे उट्ठा जाय है ?

नासहा[5] ! दिलमें तू इतना तो समझ अपने कि हम ।
लाख नादाँ[6] हुए, क्या तुझसे भी नादाँ होंगे ?

मिन्नतेहज़रते ईसा न उठाएँगे कभी ।
ज़िन्दगीके लिए शर्मिन्दये अहसाँ होंगे? *

बात नासेहसे करते डरता हूँ ।
कि फ़ुग़ाँ बे असर न हो जाये ! †

गला हम काट लेंगे आप, तेरे रश्कसे अपना ।
उदूको[7] क़त्ल कीजै फिर हमारा इम्तहाँ कीजै ॥‡

---

[1] अर्थीके, [2] साथ-साथ; [3] निर्बलताके; [4] कारण; [5] हे नसीहतकार; [6] अनसमझ; [7] प्रतिद्वन्दीको ।

*यानी ज़िन्दगी जैसी बेहक़ीकत चीजके लिए क्या ईसाके अहसानसे, शर्मसार होंगे ? कतई नही । (ईसा मुर्दोंमे जीवन डाल देता था, ऐसी धारणा प्रचलित है ।)

†नासेह (उपदेशक)की बात बेअसर होती है । कही ऐसा न हो कि इसकी मनहूस संगतसे मेरी वाणीमे भी असर न रहे ।

‡रश्कसे यह मुराद है कि हमें यह भी गवारा नही कि तुम हमें छोड़कर उदूको हलाल करो । इसलिए उदूको कत्ल किया तो हम अपना ख़ुद गला काटकर मर जाएँगे । (मगर इसमे चाल ये है कि तैशमे आकर माशूक दुश्मनका सफाया कर दे तो फिर आशिकका काम बने ।)

है दिलमें गुबार उसके, घर अपना न करेंगे।
हम खाकमें मिलनेकी तमन्ना न करेंगे॥*

बेवफाई का उदूकी है गिला।
लुत्फमें भी वे सताते हैं मुझे॥†

३० जून १९४४

---

*प्यारेके दिलमें हमारी तरफसे गुबार है। ऐसी सूरतमें हम उसके दिलमें घर करना पसन्द न करेंगे, क्योंकि ऐसा करना खाकमें मिलने-जैसा होगा। (गुबारका अर्थ यूँ तो मैल है मगर गुबार और खाककी तशबीह देकर मोमिनने शेरको चमका दिया है)

†यानी आशिक उदूका ज़िक्र बुराईके वर्णनमें भी नहीं सुनना चाहता, उसकी इच्छा तो ये है कि उसके सिवा माशूकको किसी ग़ैरका ख़याल ही न आवे। उसे तो ग़ैरसे इतनी ईर्ष्या है कि उसकी ख्वाहिश रहती है कि माशूकको क़त्ल करना है तो मुझे करे, बुराई करना है तो मेरी करे। मगर उदूको तो ख्वाबमें भी मनमें न लावे।

७

मुंशी अमीर अहमद 'अमीर' मीनाई

[सन् १८२८ से १९०० ई० तक]

मुंशीजी सन् १८२८ ई०में लखनऊमें उत्पन्न हुए थे। आपको बचपन-से ही शेरोशायरीका शौक था। धीरे-धीरे कीर्त्ति फैलती गई। नवाब वाजिदअलीशाहने भी तारीफ़ सुनी तो इन्हे तलब किया और कलाम सुनकर इन्हे खिलअत तथा इनाम देकर सम्मानित किया। उस समय मुशीजीकी आयु केवल २४ वर्षकी थी।

सन् १८५७के गदरके बाद लखनऊ उजड़नेपर आप नवाबके निमन्त्रित करनेपर रामपुर चले गये और वहाँ बड़े आदरसे सत्कारपूर्वक ३४ वर्ष रहे। नवाबके काव्य-गुरु बननेका भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। १९०० ई०में नवाब हैदराबादने अपने यहाँ खीच लिया। मगर अफसोस! वहाँ कुछ दिन बाद ही ७२ वर्षकी आयुमें मृत्यु हो गई।

मुशीजीकी शायरी सरल और आकर्षक है। उनकी भाषा मुहावरे-दार और प्रवाहयुक्त है। कल्पनाकी उड़ान भी खूब है। आपका जीवन धार्मिक, सरल, स्वच्छ, निष्कपट और शुद्ध था। अत्यन्त निरभिमानी, भद्र और सभ्य थे। नम्रता और प्रेमकी मूर्त्ति थे। कभी किसीकी बुराई नही की। यहाँतक कि अपने प्रतिद्वन्द्वी मिर्जा दाग़की शायरीपर जब नुक्ताची लोगोने आलोचनाएँ करनी शुरू की, तब आप चाहते तो मिर्जा दागके खिलाफ काफी ज़हर उगल सकते थे। आलोचकोको प्रोत्साहन देकर दाग़को नीचा दिखाकर स्पर्द्धाकी आगको बुझा सकते थे। मगर नही, आपने यह ओछा हथियार इस्तैमाल न करके वही

व्यवहार किया जो एक शायर को शायरके साथ और वहादुरको वहादुरके साथ करना चाहिए। आपने मिर्जा दागको जो पत्र लिखा था, हम उसे 'मजामीनेचकवस्त' से यहाँ उद्धृत करते है :—

मेरे पुराने यार गमगुसार हजरते 'दाग' सलामत,

खुदा रोज-ब-रोज आपके एजाज़ (इज्जत)को बढाये और इस फनमे चमकाये। मुल्कको आपकी कदर हो या न हो, मेरी नजरमे तो जिस कदर है आपका दिल वखूबी जानता होगा। आप हासदीने (ईर्ष्यालुओ) कोतहअन्देश (संकीर्णविचारको)का कुछ खयाल न करे। अरवाबे कमाल (गुणी) खसूसन वोह जिनसे ज़माना मुआफकत करता है (आदर देता है)का महसूद (ईर्षित) होना सरमायेनाज व फख्र है। खुदा हासिद होनेसे महफूज़ रक्खे।

यादआवरीका मिन्नतपजीर
अमीर फकीर

इसे कहते है शराफत और इन्सानियत। वाह ! क्या ऊँचे भाव है। "गुणियोंको ईर्ष्यालुओकी ईर्ष्यापर अभिमान होना चाहिए और स्वयं उन्हे ईर्ष्यासे बचना चाहिए।"

मुशी अमीर मीनाई और मिर्ज़ा दाग समकालीन और एक दूसरेके प्रतिद्वन्द्वी रहे है। दोनो ही अपने जमानेमे वहुत वडे गज्जाल (गजल लिखनेवाले) थे, और अक्सर हमतरह मिसरोपर गजल लिखते थे। दोनोने यकसाँ रगमें तवा आज़माई की है। दोनोंने रामपुर, हैदरावाद में इज्जत पाई। एक लखनवी जवानके माहिर थे तो दूसरे देहलवी ज़वानमें कामिल। दोनोने वकसरत शागिर्द पाये और दोनोने खूब ख्याति प्राप्त की। शायरीके मैदानमें दोनोंने खूब हुनर दिखलाये मगर एक दूसरेपर चोट नही की।

अमीर मीनाई बीमार हुए तो मिर्जा दाग उनके यहाँ रोज़ाना सेवा-

सुश्रूषाको जाते थे। मुंशीजी की मृत्युपर मिर्ज़ा दागको बड़ा सदमा पहुँचा और उन्होंने ये तारीख कही :—

वाये वैला चल बसा दुनियासे वोह।
जो मिरा हमफ़न था मेरा हमसफ़ीर॥

मुस्तफ़ाग्राबादसे आया दकन।
यह सफ़र था उस मुसाफ़िरका अख़ीर॥

क्या कहूँ, क्या-क्या हुईं बीमारियाँ।
क्या लिखूँ तफ़सीले अमराजे कसीर॥

गो बज़ाहिर था अमीर अहमद लक़ब।
दर हक़ीक़त बातनन पाया फ़कीर॥

है दुआ भी 'दाग़'की तारीख़ भी।
क़िस्ते आली पाए[१८] जन्नत[१९]में 'अमीर'[१]॥

कलामे अमीर:—

ख़बरदार ऐ मुसाफ़िर! ख़ौफ़की जा[२] राहेहस्ती है।
ठगोंका बैठका है जाबजा चोरोंकी बस्ती है॥

'अमीर' उस रास्तेसे जो गुज़रते हैं वो लुटते हैं।
मुहल्ला है हसीनोंका कि क़ज़्ज़ाकोंकी[३] बस्ती है॥

मेरे तुम्हारे बीचमें आता है बार-बार।
कम्बख़्त पाँव भी नहीं थकते मलालके॥

---

[१] यानी हिजरी सन् १३१८ इन अक्षरोंसे अमीरकी मृत्युकी तारीख बनती है; [२] जगह; [३] लुटेरोंकी।

आई सहर[1] इधर कि उधर शाम हो गई।
दो-दो घड़ीके होने लगे दिन विसाल[2]के॥

मिट्टी जो देने आये हो तो दो हँसी-खुशी।
फेंको भी अब गुबारको दिलसे निकालके॥

उनको आता है प्यारपर गुस्सा।
हमको गुस्सेपै प्यार आता है॥

वो कहते हैं कि हम आँखोंमें सबको ताड़ लेते हैं।
मुहब्बत सारी दुनियाकी इसी काँटेपै तुलती है॥*

मैं जाग रहा हूँ हिज्र[3]की शब[4]।
पर मेरे नसीब सो रहे हैं॥

किस तरह फ़रियाद[5] करते हैं बता दो कायदा।
ऐ असीरानेकफ़स[6] मैं नौ[7] गिरफ्तारोंमें हूँ॥†

इस सरामें मुसाफ़िर नहीं रहने आया।
रह गया थकके अगर आज तो कल जाऊँगा॥

---

[1] प्रात काल, सुबह; [2] मिलन, सम्भोगके।

*इसी भावका द्योतक अकबर इलाहाबादीका शेर है—

खुदा जाने मेरा क्या वज़्न है उनकी निगाहोंमें ?
सुना है आदमीको वोह नजरमें तोल लेते हैं॥

[3] विरह, [4] रात्रि, [5] अर्ज़, प्रार्थना; [6] बन्दियो; [7] नया।

†इसी रंगमे चकवस्तका शेर है :—

नया बिस्मिल हूँ मैं वाकिफ नहीं रस्मेशहादतमे।
बता दे तूही ऐ ज़ालिम ! तड़पनेकी अदा क्या है ?

१४

हैं जवानी ख़ुद जवानीका सिंगार।
सादगी गहना है इस सिन के लिए॥

करीब है यार रोज़े महशर[1] छुपेगा कुश्तों[2]का ख़ून कबतक?
जो चुप रहेगी ज़बाने ख़ंजर लहू पुकारेगा आस्तींका॥*

उठाऊँ सख़्तियाँ लाखों, कड़ी बात उठ नहीं सकती।
मैं दिल रखता हूँ शीशेका जिगर रखता हूँ पत्थरका॥

गर्द उड़ी आशिककी तुरबतसे,[3] तो झुँझलाकर कहा—
"वाह! सर चढ़ने लगी पाँवोंकी ठुकराई हुई"॥

फ़ना[4] कैसी, बक़ा[5] कैसी, जब उसके आशना[6] ठहरे।
कभी इस घरमें आ निकले कभी उस घरमें जा ठहरे॥

मुस्कराकर वोह शोख़ कहता है—
"आज बिजली गिरी कहीं न कहीं"॥

शोरेमहशर[7]! 'अमीर'को न जगा।
सो गया है ग़रीब सोने दे॥

वोह दुश्मनीसे देखते हैं, देखते तो हैं।
मैं शाद[8] हूँ कि हूँ तो किसीकी निगाहमें॥

---

[1] प्रलय; [2] बलि किये हुओंका।

*इस शेरको मिस्टर जस्टिस महमूदने अपने एक फ़ैसलेमें बतौर सनदके लिखा था।

[3] क़ब्रसे, [4] मृत्यु; [5] ज़िन्दगी।

[6] महमान, प्रेमी, [7] प्रलयका शोर।

[8] प्रसन्न।

ऐ रूह ! क्या बदनमें पड़ी है बदनको छोड़ ।
मैला बहुत हुआ है अब इस पैरहनको[1] छोड़ ॥

किया यह शौक़ने अन्धा मुझे न सूझा कुछ ।
वगर्ना रब्तकी[2] उससे हज़ार राहें थीं ॥

वोह मज़ा दिया तड़पने कि यह आरज़ू है यारब !
मेरे दोनों पहलुओंमें दिले बेक़रार होता ॥

जो निगाह की थी ज़ालिम ! तो फिर आँख क्यों चुराई ?
वही तीर क्यों न मारा जो जिगरके पार होता ?*

सूरत तेरी दिखाके कहूँगा यह रोजेहश्र[3]—
"आँखोंका कुछ गुनाह न दिलका क़ुसूर था ॥"

जुदा है दुख्तेरिज़का[4] नाम हर सुहबतमें ऐ साक़ी !
परी है मयकशोंमें[5] हूर है परहेज़गारोंमें ॥

मिलाकर ख़ाकमें भी हाय ! शर्म उनकी नहीं जाती ।
निगह नीची किये वोह सामने मदफ़नके[6] बैठे हैं ॥

उल्फ़तमें बराबर है वफ़ा हो कि जफ़ा हो ।
हर बातमें लज्ज़त है अगर दिलमें मज़ा हो ॥

---

[1] लिबास; [2] मेल बढ़ानेकी ।

*कोई मेरे दिलसे पूछे, तेरे तीरेनीमकशको ।
ये ख़लिश कहाँसे होती, जो जिगरके पार होता ॥
—ग़ालिब

[3] प्रलयवाले दिन जब इन्साफ होगा; [4] अंगूरकी लड़की, शराब ।
[5] शराबियोंमें; [6] कब्रके ।

आये जो मेरी लाशपै वोह तन्ज़से[1] बोले—
"अब हम हैं ख़फ़ा तुमसे कि तुम हमसे ख़फ़ा हो?"

आँखें खोलीं भी बन्द भी कीं।
वोह शक्ल न सामनेसे सरकी॥

वाये क़िस्मत जो सबकी सुनता है।
वोह भी आशिककी इल्तजा न सुने?

ख़ुदीसे बेख़ुदीमें आ जो शौक़े हक़परस्ती है।
जिसे तू नेस्ती समझा है ऐ गाफ़िल! वो हस्ती है॥

बढ़, ऐ आहेरसा! अब किंगरेपर अर्शके पहुँची।
बुलन्दीको बुलन्दी जानना हिम्मतकी पस्ती है॥

न शाख़ेगुल ही ऊँची है न दीवारे चमन बुलबुल!
तेरी हिम्मतकी कोताही, तेरी क़िस्मतकी पस्ती है॥

वस्ल हो जाय यहीं हश्रमें क्या रक्खा है?
आजकी बातको क्यों कलपै उठा रक्खा है?

तुझसे माँगूँ मैं तुझीको कि सभी कुछ मिल जाय।
सौ सवालोंसे यही एक सवाल अच्छा है॥

न चूक वक़्तको पाकर कि है यह वोह माशूक़।
कभी उम्मीद नहीं जिससे जाके आनेकी॥

शबेवस्लत क़रीब आने न पाये कोई ख़िलवतमें।
अदब हमसे जुदा ठहरे, हया तुमसे जुदा ठहरे॥

---

[1] ताने।

ऐ बर्क़ ! तू बता कभी तड़पी, ठहर गई।
याँ उम्र कट गई है इसी इज़्तराबमें ॥

आखिरमें दोनो उस्तादोकी हमतरह गज़लोका इन्तखाब 'मज़ामीने चकबस्त'से उद्धृत करके यहाँ दिया जाता है, जिससे दोनोकी ज़बान और मज़ाक़ेसख़ुनका रंग मालूम हो सके।

दाग़ :—

जबतक किसीकी चाह न थी क्या ग़रूर था ?
मेरा ही दिल बग़लमें मेरे रश्के हूर था।

वाइज़[1] ! तेरे लिहाज़से हम सुनके पी गये।
क्या नागवारज़िक्रे शराबेतहूर[2] था ॥

क्यों तूने चश्मेलुत्फ़से देखा ग़ज़ब किया ?
क़ुरबान उस निगाहके जिसमें ग़रूर था ॥

अमीर :—

मोक़ूफ जुर्म ही पै करम[3]का ज़हूर[4] था।
बन्दा[5] अगर क़ुसूर न करता, क़ुसूर था ॥

आया बड़ा मजा मुझे मजलिसमें वाज़को।
वाइज़ था मस्तेज़िक्रे शराबेतहूर था ॥

नीचो रकीब[6] से न हुई आँख उम्र भर।
झुकता मैं क्या ? नजरमें तुम्हारा गरूर था ॥

---

[1] उपदेशक; [2] पवित्र शराबका वर्णन।
[3] दयालुता, महर्बानी, [4] चमत्कार।
[5] सेवक; [6] प्रतिद्वन्दी।

दाग़ :—

हम बोसा लेके उनसे अजब चाल कर गये।
यूँ बख़्शवा लिया कि यह पहला क़ुसूर था॥

अमीर :—

लिपटामें बोसा लेके तो बोले कि "देखिये—
यह दूसरी ख़ता है वह पहला क़ुसूर था" ॥*

दाग़ :—

यूँ तो बरसों न पिलाऊँ न पिऊँ ऐ ज़ाहिद[1]!
तौबा करते ही बदल जाती है नीयत मेरी॥

अमीर :—

तौबाकी जानको बिजली है चमक बिजलीकी।
बदली आते ही बदल जाती है नीयत मेरी॥

दाग़ :—

क्या फ़लक[2] टूट पड़ा बादेफ़ना[3] भी मुझपर।
बैठी जाती है, दबी जाती है, तुरबत मेरी॥

---

*एक दाग और अमीर है कि अपराधपर अपराध करते है और फिर किस शानसे क्षमा-याचना करते है और एक मिर्जा गालिब है कि जागते हुए तो क्या सोते हुए भी और वोह भी पाँवके बोसा लेनेका साहस नही कर पाते। फर्माते है :—

ले तो लूँ सोतेमें उसके पाँवका बोसा मगर।
ऐसी बातोंसे वोह काफ़िर बदगुमाँ हो जायगा॥

[1] परहेज़गार, भगतजी; [2] आस्मान।
[3] मृत्युके पश्चात्।

अमीर :—

शमअ् रोती है बहुत इसको उठा ले कोई।
बैठ जाये न कहीं कच्ची है तुरबत[1] मेरी ॥

दाग :—

शरीर आँख, निगह बेक़रार, चितवन शोख़।
तुम अपनी शक्ल तो पैदा करो हयाके लिए ॥

अमीर :—

ख़ुदाकी शान ! जो शोख़ीसे आश्ना ही न थी।
तरस रही है वही आँख अब हयाके लिए ॥

दाग :—

ज़बाँसे गर किया भी वादा तूने तो यक़ीं किसको !
निगाहें साफ कहती हैं कि देखो यूँ मुकरते हैं ॥

अमीर :—

तसल्ली खाक हो वादोंसे उनके, चितवनें उनकी।
इशारोंसे यूँ कहतीं है कि देखो यूँ मुकरते हैं ॥

दाग :—

वोह और है जो पीते हैं मौसमको देखकर।
आती रही बहारमें तौबाशिकन[2] हवा ॥

अमीर :—

वाइज़का[3] था लिहाज़ तो फ़स्ले[4] ख़िज़ाँ तलक।
लो आ गई बहारमें तौबाशिकन हवा ॥

---

[1] क़ब्र; [2] प्रतिज्ञा तोडनेवाली, [3] उपदेशक।
[4] पतझड़।

दाग़ :—

हिर्सो[1] हविसो[2] ताबो[3] तवाँ[4] 'दाग़' जा चुके।
अब हम भी जानेवाले हैं सामान तो गया॥

अमीर :—

बाक़ी है 'अमीर' अब तो फ़क़त जानका जाना।
होशो ख़िरदो ताबो तवाँ जा चुके कबके॥*

३ जुलाई १९४४

---

[1] लालसा; [2] तृष्णा; [3] तेज; [4] बल।

* तुलनात्मक अशआर देनेके कारण ५१की बन्दिश नहीं रक्खी गई।

८

नवाब मिर्ज़ा खाँ 'दाग़'

[सन् १८३१ से १९०५ ई० तक]

'अहसन'के शब्दोमे—"दाग न सूफी[1] थे न मुफ़्ती[2]। वे सिर्फ एक शाइर थे और शाइर भी गजलके। और गज़ल भी ऐसी कि जिसमे शोखी,[3] शरारत, जली-कटी, ताने, रश्क,[4] बदगुमानी, छेड-छाड़, लाग-डाँट, छीन-झपट और उरियानी[5]के सिवा कुछ नही।"

मौलाना हामिदहुसैन कादरी फर्माते है—"दागने दिल्लीके लाल-किलेमें होश सम्हाला। शाही बेगमातसे जबान सीखी। शहज़ादोके साथ इल्म और अदब हासिल किया। उस्ताद 'जौक'से फन्नेशाइरीमें फैज पाया। किलेके मुशायरोमे शरीक हुए। खुद बादशाहसे दादे सखुन ली। दाग २५ सालकी उम्रतक किलेमे रहे।... दागका शीरी बयान और लुत्फेज़बान ऐसा है कि इब्तदा[6]से अबतक किसी शाइरको नसीब नही हुआ। जिद्दतेअदा इस कदर है कि बजुज़ गालिब व मोमिनके कोई उनका हमपल्ले नही। शोखियेमजमून इतनी कि उनसे बढकर कहीं नजर नहीं आती। गजलकी खूबीके लिए ज़रूरी है कि अलफाज़ फसीह[7] हो, बन्दिश चुस्त व सही हो। मुहावरातका इस्तेमाल मौज़ूँ व बरमहल हो। तर्जेअदामे जिद्दत हो। दागके यहाँ ये सब चीजे बेहतर से बेहतर हैं,

---

[1] सूफी धर्मके अनुयायी, त्यागी, [2] फतवा देनेवाला, धर्माचार्य; [3] चुलबुलापन; [4] ईर्ष्या, [5] नग्नता, [6] प्रारम्भ; [7] सरल।

और उनपर शोखबयानी और जराफ़त तराजीका इज़ाफ़ा है। यही दागका तर्जेखास है। दागका सबसे चमकता हुआ रंग शोख़बयानी है।"

ग़जलमें दाग़की यह शान है कि मौलाना हाली मिर्ज़ा गालिबके ज़िक्रमें लिखते है कि एक रात सुहबतमे वे दाग़के इस शेरको बार-बार पढ़ते थे :—

रुख़ेरोशनके आगे शमअ़ रखकर वोह यह कहते हैं—
"उधर जाता है देखें या इधर परवाना आता है ?"

मिर्जा दाग २५ मई सन् १८३१को दिल्लीके चाँदनी चौकमे नवाब शमसुद्दीन (नवाब लोहाराके भाई)की पत्नीसे उत्पन्न हुए थे; किन्तु ६ वर्षकी आयुमे पिताकी मृत्युके कारण उनकी माँने बहादुरशाह बादशाहके युवराजसे पुनर्विवाह कर लिया। अतः दाग भी माँके साथ शाही किलेमे रहने लगे। शाही ढगकी उन्हे शिक्षा मिली। १०-११ वर्षकी आयुमें ही कविता करने लगे। सन् १८५७के विद्रोहसे १०-११ माह पूर्व दागके सौतेले पिता भी मर गये। उस समय दाग २५ वर्षके थे कुछ दिन परेशानीका जीवन व्यतीत करनेके वाद रामपुर, लाहौर, अमृतसर किशनकोट स्टेट, अजमेर, आगरा, अलीगढ, मथुरामे दिन गुज़ारे। रामपुरके अतिरिक्त सर्वत्र काफी कष्ट और परेशानियोंमे रहे। सन् १८८८मे हैदराबाद गए और वहाँ तीन वर्षके बाद निजामने अपना मुसाहिब और फिर कविता-गुरुके पदपर प्रतिष्ठित किया। इसके अतिरिक्त १—जहाँउस्ताद २—बुलबुलेहिन्दोस्तान ३—नाजिमयारजग ४—दबीरुद्दौला ५—फसीहउलमुल्क जैसी ५ प्रतिष्ठित पदवियाँ प्रदान कीं।

उर्दूके किसी शाइरको अपने जीवनमे इतनी प्रतिष्ठा, ख्याति, आदर, सम्मान प्राप्त नहीं हुआ। सन् १९०५में हैदराबादमे दागकी मृत्यु हो गई। सारे भारतके उर्दू-साहित्यिकोमे कोहराम-सा मच गया। हजारों

तारीख़े लोगोंने लिखीं। डा० सर इकबालने भी अपने उस्तादकी मृत्युपर नौहा लिखा। नमूनेके तौरपर दो शेर मुलाहिज़ा हो :—

"थी हक़ीक़तसे[1] न ग़फलत फ़िक्रकी परवाज़में[2]।
आँख ताइरकी[3] नशेमनपर[4] रहीं परवाज़में॥

हू-ब-हू खींचेगा लेकिन इश्क़की तस्वीर कौन?
उठ गया नाविकफ़िग़न,[5] मारेगा दिलपर तीर कौन?"

दागके चार दीवान प्रकाशित हो चुके है। यूँ तो भारत भरमे आपके शिष्यो और शिष्योके शिष्योका जाल-सा पुरा हुआ है। एक तरहसे यह युग ही दागके अनुयायियोका है। उनमे नवाव साइल देहलवी नूह नारवी, अहसन मारहरवी, इकबाल, सीमाव अकबराबादी, उल्लेखनीय है।

"खुदा बख्शें बहुत-सी खूबियाँ थी मरनें वाले में।"

कलामेदाग़—

इस गिरफ़्तारीपर अपनी मैं निसार[6]।
लों, वे करते हैं निगहबानी[7] मेरी॥

कितना बावज़ह[8] है खयाल उसका।
बेकसीमें[9] भी आये जाता है॥

इतनी ही तो बस कसर है तुममें—
कहना नहीं मानते किसीका॥

---

[1] वास्तविकतासे [2] उडानमे; [3] पक्षीकी; [4] घोंसलेपर, [5] तीरन्दाज़।
*'मुतख़िब दाग'के आधारपर।
वेखुद देहलवी, स्वर्गीय आगाशाइर देहलवी।
[6] वलिदान, न्योछावर, [7] निगरानी; [8] ठीक, ड्यूटीका पावन्द;
[9] लाचारीमे।

ग़श खाके 'दाग़', यारके क़दमोंपै गिर पड़ा ।
बेहोश ने भी काम किया होशियारका ॥

मंजिलेमक़सूद[१] तक पहुँचे बड़ी मुश्किलसे हम ।
जोफ़ने[२] अक्सर बिठाया, शौक़ अक्सर ले चला ॥

आँखें बिछाएँ हम तो उदूकी[३] भी राहमें ।
पर क्या करें कि तुम हो हमारी निगाहमें ॥

शिरकतेग़म[४] भी नहीं चाहती ग़ैरत[५] मेरी ।
ग़ैरकी होके रहे, या शबेफुरक़त मेरी ॥

मुंसिफ़ी[६] हो तो ग़ज़ब, नामुंसिफ़ी हो तो सितम ।
उसने मेरा फ़ैसला मौक़ूफ़ मुझपर रख दिया ॥

खुदा करीम[७] है यूँ तो मगर है इतना रश्क[८] ।
कि मेरे इश्क़से पहले तुझे जमाल[९] दिया ॥

वही हम थे कि जो रोतोंको हँसा देते थे ।
अब वही हम हैं कि थमता नहीं आँसू अपना ॥

कल छुड़ा लेंगे पै जाहिद ! आज तो साक़ीके हाथ ।
रहन इक चुल्लूपै हमने हौजे कौसर[१०] रख दिया ॥

तुमको आशुफ़्ता मिजाजोंकी खबरसे क्या काम ?
तुम सँवारा करो बैठे हुए गेसू[११] अपना ॥

---

[१] निर्दिष्ट स्थान; [२] निर्बलताने; [३] प्रतिद्वन्द्वीकी; [४] दुखोमे साझीदार; [५] स्वाभिमान; [६] न्याय; [७] दयालु, न्यायी; [८] अरमान; [९] सौन्दर्य; [१०] जन्नतकी शराबका हौज; [११] बाल ।

खूब पर्दा है कि चिलमनसे लगे बैठे हैं।
साफ़ छिपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं॥

रहरवेराहेमुहब्बतका[1] खुदा हाफ़िज़[2] है।
इसमें दो-चार बहुत सख्त मुकाम आते हैं॥

मुझसे बेहतर मेरा मलाल रहा।
कि तेरे दिलमें, महेजमाल[3]! रहा॥

बशरने[4] खाक पाया, लाल पाया या गुहर पाया।
मिजाज अच्छा अगर पाया तो सब कुछ उसने भर पाया॥

खातिरसे या लिहाजसे मैं मान तो गया।
झूठी क़समसे आपका ईमान तो गया॥

ग़ैरके रूपमें भेजा है जलानेको मेरे।
नामाबर[5] उनका नया भेस बदलकर आया॥

दोस्तीके पर्देमें कौन दुश्मनी करता?
उसकी मेहर्बानी है, जो है मेहर्बाँ अपना॥

यह मजा था दिललगीका कि बराबर आग लगती।
न तुझे करार होता न मुझे क़रार होता॥

शिरकते ग़म भी नहीं चाहती गैरत मेरी।
ग़ैर की हो के रहे या शबे फ़ुरकत मेरी॥

---

[1] प्रेममार्गके पथिकका; [2] रक्षक।
[3] चन्द्रमुखी; [4] मनुष्यने।
[5] पत्रवाहक।

आईना तसवीरका तेरी न लेकर, रख दिया।
बोसा लेनेके लिए काबेमें पत्थर रख दिया॥

जिन्दगीमें पाससे दम भर न होते थे जुदा।
क़ब्रमें तनहा मुझे यारोंने क्योंकर रख दिया?

बात क्या चाहिए, जब मुफ़्तकी हुज्जत ठहरी।
इस गुनहपर मुझे मारा कि गुनहगार न था॥

पूछे कोई मिजाज तो अल्लाहरे ग़रूर!
कहते नहीं कि शुक्र है परिवर्दगारका॥

अपनी तो जिन्दगी है तग़ाफ़ुलकी[1] वजहसे।
वोह जानते हैं खाकमें हमने मिला दिया॥

समझो पत्थरकी तुम लकीर उसे।
जो हमारी जबानसे निकला॥

खुशीसे कहते हैं 'यह भी मेरा ही आशिक़ था'।
वोह देखते हैं नई जिस मजारकी[2] सूरत॥

मेरे ही वास्ते बैठा है पासबाँ[3] दरपर।
मिले जो राहमें कहते हैं "आइये घरपर"॥

बेजुस्तजू[4] मिलेगा न ऐ दिल! सुराग़ेदोस्त[5]।
तू कुछ तो क़स्दकर[6], तेरी हिम्मतको क्या हुआ?

---

[1] उपेक्षाकी; [2] कब्रकी; [3] दरवान।
[4] प्रयत्न किये विना; [5] मित्रका पता।
[6] प्रयत्नकर।

ज्योत्स्ना—नवाब मिर्ज़ा ख़ाँ 'दाग़'

दस्तेहविस[1] बढ़ाकर क्यों मर्तबा घटाया
समझो न यह ज़ुलेख़ा दामन है पारसाका[2] ॥

कहाँ सैयाद, कैसा बाग़बाँ, किसपर गिरी बिजली ?
चमनमें आतिशेगुलने हमारा आशियाँ फूँका ॥

हो गई बारेगिराँ[3] बन्दा-नवाज़ी[4] तेरी।
तू न करता अगर अहसान तो अहसाँ होता ॥

पर न बाँधे पाँव बाँधा बुलबुले नाशादका।
खेलके दिन है लड़कपन है अभी सैयादका ॥

हो असर इतना तो सोज़े नालओ फ़रियादका।
हम तमाशा देख लें घर फूँककर सैयादका ॥

रिन्दाने बेरियाकी[5] है सुहबत किसे नसीब ?
ज़ाहिद भी हममें बैठके इन्सान हो गया ॥

जिसमें लाखों बरसकी हूरें हों।
ऐसी जन्नतको क्या करे कोई ॥

ऐ फ़लक ! दे हमको पूरा ग़म तो खानेके लिए।
वह भी हिस्सा कर दिया सारे ज़मानेके लिए ॥

यहाँ सुबहे पीरीसे पहले ही 'दाग़' !
जवानी चिराग़ेसहर[6] हो गई ॥

कहीं दुनियामें नहीं इसका ठिकाना ऐ 'दाग़' !
छोड़कर मुझको कहाँ जाय मुसीबत मेरी ?

---

[1] अभिलाषाका हाथ, [2] शीलवानका, [3] बोझ; [4] कृपा; [5] निष्कपटकी; [6] प्रातःकालीन दीपक।

रहती है कब बहारेजवानी तमाम उम्र ?
मानिन्द बूयेगुल इधर आई उधर गई ॥

जो तुम्हारी तरह तुमसे कोई झूठे वादे करता ।
तुम्हीं मुंसिफ़ीसे कह दो, तुम्हें एतबार होता ?

जो आशिक़ीमें ख़ाक हुआ, कीमिया हुआ ।
कहता था आज ख़ाकमें कोई मिला हुआ ॥

वाए ग़फ़लत कि अब किया हमने ।
जो हमें पहले काम करना था ॥

जो हो सकता है उससे वह किसीसे हो नहीं सकता ।
मगर देखो तो फिर कुछ आदमीसे हो नहीं सकता ।

मयख़ानेके क़रीब थी मस्जिद भलेको 'दाग़'
हर शख़्स पूछता था कि "हज़रत इधर कहाँ"

दिलका क्या हाल कहूँ सुबहको जब उस बुतने—
लेके अँगड़ाई कहा नाज़से—"हम जाते हैं" ॥

आता है मुझको याद सवाले विसाल पर ।
कहना किसीका हाय ! वोह मुँह फेरकर 'नहीं' ॥

ख़बर सुनकर मेरे मरनेकी वोह बोले रक़ीबोंसे—
"ख़ुदा बख़्शे बहुत-सी ख़ूबियाँ थीं मरनेवालेमें" ॥

ग़ज़ब है, देखना, उस सादगीपर मर गये लाखों ।
कहा था किसने बन बैठें वोह मेरे सोगवारोंमें ?

६ जुलाई १९४४

नव-प्रभात
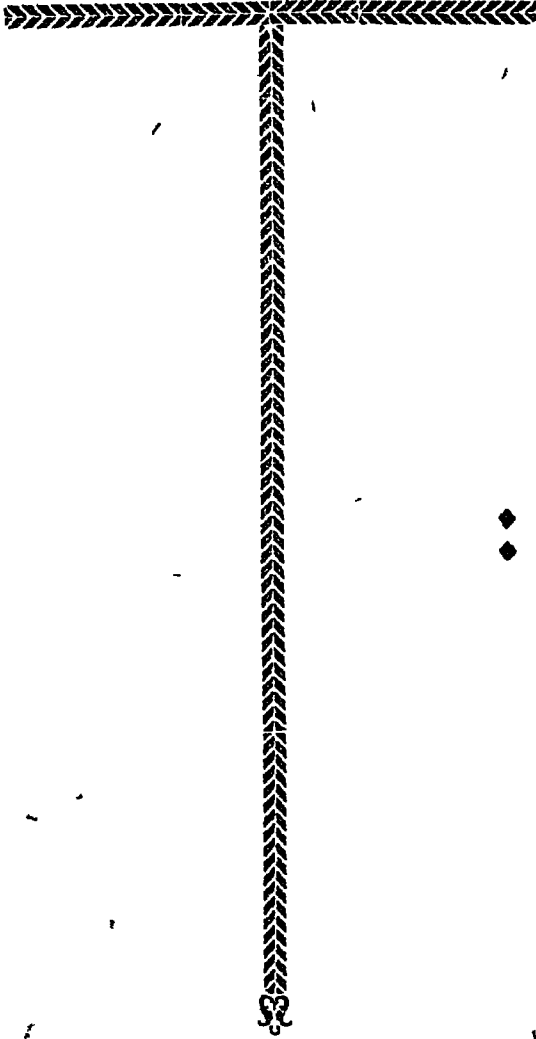
: ६ :

उर्दू-शायरीमें अभूतपूर्व परिवर्त्तन

१८५७के विप्लवके पश्चात् युगान्तरकारी शायर

आकाशपर चढकर बदलीकी आड़में छिपा हुआ चाँद रंगीन-मिजाजों-की रंगरेलियाँ देख रहा था कि उसकी यह हरकत सूर्यने देखी तो लाल हो गया; और चाँदने मारे शर्मके मुँह छिपा लिया, तभी ऊषाकालीन मृदु पवनने थपकियाँ देकर उन्हें जगाया :—

ले चुके अँगड़ाइयाँ, ऐ गेसुओवालो[1]! उठो!!
नूरका तड़का हुआ, ऐ शबके मतवालो! उठो!!!

—'बर्क़' देहलवी

मगर रातभर जो मयखाने और बज्मे-यारमें जगे हों, उनपर नसीमे बहारी[2]का यह ठहोका क्या खाक असर करता? उसी तरह मस्तेख्वाब पड़े रहे। परन्तु जो दिव्यदृष्टा हैं, वे आनेवाली आपत्तियोको सात पर्दोंमेंसे भी देख लेते हैं :—

जो है पर्देमें पिन्हाँ[3] चश्मेबीना[4] देख लेती है!
जमानेकी तबीयतका तक़ाजा देख लेती है!!

—'इक़बाल'

वे कैसे चुप रह सकते थे? इसलिए उनमेंसे एक ने बाआवाज़ बुलन्द कहा :—

कुछ कर लो नौजवानो! उठती जवानियाँ हैं!!!

—'हाली'

मगर मदमाते सोनेवालोंके लिए यह बिल्कुल नई सदा थी। उनके

---

[1] जुल्फोंवालो; [2] प्रातःकालीन पवनका; [3] छुपा हुआ; [4] दिव्य-दृष्टि।

कान इसके मानूस (अभ्यस्त) न थे। उन्होने अभीतक 'मीर' और 'दर्द'का नग्मयेपुरदर्द[1] सुना था। 'जौक' और 'गालिब'से दार्शनिक और हुस्नोइश्कका दर्स[2] लिया था। 'मोमिन'की आशिकाना गुलकारियाँ देखी थी। 'अमीर' और 'दाग'के चुटीले अशआर सुने थे। उन्होने आनन्दको किरकिरी करनेवाली आवाज काहेको सुनी थी? लिहाज़ा सुनी-अनसुनी करके जम्हाइयाँ और अँगडाइयाँ लेते हुए पडे रहे। मगर इन लोगोको चैन कहाँ? सोनेवाले भले ही खुर्राटे लेते रहे, इन जागने-वालोको तो प्रलयकी शीघ्रगामी चालका पता था। इसलिए उनमेसे एक नौजवानने रोषभरे स्वरमे पुकारा :—

अगर अब भी न समझोगे तो मिट जाओगे दुनियासे !
तुम्हारी दास्ताँ[3] तक भी, न होगी दास्तानोंमें !!

—'इक़बाल'

तो दूसरे साथीने पानीके छींटे देते हुए झल्लाकर शोर मचाया, कि अगर अब भी न चेते तो :—

मिटेगा दीन[4] भी और आबरू[5] भी जाएगी !
तुम्हारे नामसे दुनियाको शर्म आएगी !!

—'चकबस्त'

लोग हडबडाकर उठे तो देखा अँधेरा मिट चुका है। सूर्यकी प्रखर रश्मियाँ चारो ओर छा रही है। चाँद पुरानी दुनियाको लेकर मलिन हो गया है। सूर्य अपने साथ नव-प्रभात लाया है। वह युग समाप्त हो गया, जब लोग अकर्मण्य बने भाग्यके भरोसे हाथ-पर-हाथ धरे सोचा करते थे :—

---

[1] व्यथा-गीत; [2] पाठ; [3] कहानी; [4] धर्म; [5] इज्जत।

क़िस्मतमें जो लिखा है, वह आयेगा आपसे !
फैलाइए न हाथ, न दामन पसारिए !!

—'आतिश'

या भरी बहारमे बैठे हुए बहारको रोते थे। मानो रोना ही उनके जीवनका ध्येय था :—

कबाए लालओगुलमें[1] झलक रही थी ख़िज़ाँ[2] !
भरी बहारमें रोया किये बहारको हम !!

—'अज्ञात'

अब नवीन कर्मयुग आया है। इसमे लोगोंको कहते हुए सुना —

अहले[3]हिम्मत मञ्ज़िलेमकसूद[4] तक आ ही गये !
बन्दयेतकदीर[5] क़िस्मतका गिला[6] करते रहे !!

—'चकबस्त'

यह बज़्मेमय[7] है याँ कोताह[8]दस्तीमें है महरूमी[9] !
जो बढ़कर ख़ुद उठाले हाथमें, मीना[10] उसीका है !!

—'शाद' अज़ीमाबादी

अब ईश्वरके सहारे बैठे रहनेका भी युग गया, जिस जमानेमे बैठकर जौकने कहा था —

अहसान नाख़ुदाका[11] उठाए मेरी बला !
किश्ती ख़ुदापे छोड़ दूँ, लङ्गरको तोड़ दूँ !!

---

[1] फूलोंके पर्देमें, [2] पतझड, [3] साहसी लोग, [4] लक्ष्य, निश्चित ध्येय; [5] भाग्यवादी लोग, [6] शिकायत, [7] मधुशाला; [8] छोटे हाथ (यहाँ पीछे रहनेमें), [9] वञ्चित होना, [10] मद्य-पात्र; [11] खेवटका।

वह जमाना भी लद गया। अब इस युगमें बाहुबलके होते हुए ईश्वरका सहारा क्यो ?

सम्हल सके तो सम्हालो उमीदकी किश्ती !
खुदाको देख चुके, ज़ोरे-नाख़ुदा मालूम! !

—'एजाज़'

लोगोने इस सुनहरे प्रभात और नव,जागरणको देखा और सुना। मगर वकौल 'जौक' —

छूटती नहीं है मुँहसे, ये काफ़िर लगी हुई !

वोह शीतल चाँदनी और वोह हुस्नोइश्ककी छेड-छाड़, वह बरसाती हवाएँ और वह साकीका मयखानेमे फैजे-आम एकबारगी लोग कैसे भूल जाते ? परन्तु लोग भूले या न भूले, प्रकृतिका कठोर नियत्रण सब कुछ भुला देता है। शरावकी नहरे, माशूकोकी अदाएँ और आशिकोकी आहे सब धरी ही रह गई कि प्रकृतिने वह ताण्डव-नृत्य किया कि जो शाइर कूचए-यारमे आवारा फिरा करते थे, वही रोटियोंकी तलाशमे इधर-उधर दौड़ने लगे ! 'वज्मे-यार' और 'मयखाने'की सारी सरगर्मियाँ चौपट हो गईं ! !

अवतककी उर्दू-शायरीका विश्लेषण करनेसे ज्ञात होता है, जैसा कि 'नये अदबी रुजहानात'के सुयोग्य लेखकका कहना है कि "अवसे पहले उर्दूकी तवज्जह अवाम (जनता)की तरफ कभी नही रही। गरीबोंके मुताल्लिक कुछ नही कहा गया। कौमकी शीराजाबन्दी (संगठन)मे हमारी शायरीने कोई मदद नही दी; न कोई पयाम (सन्देश) दिया। न राहे-अमलमें लाने (कर्त्तव्यशील बनने)की फिक्र की। हालाँकि अदव (साहित्य)के लिए इस मैदानमे आना जरूरी था। मंज़रनिगारी (प्रकृति-वर्णन) और अपने मुकामी असरात (स्थानीय घटनाओ)से ज्यादा-तर गुरेज़ रहा है। अगर 'नजीर' अकबराबादी और 'अनीस व दवीर'

तवज्जह न करते, तो शायद यह अनासर (विषय) हमेशाके लिए कदीम (भूतकालीन) शायरीसे मफ़कूदा (गुम) ही रहते।" (पृष्ठ ३२)

उर्दू-ससारकी इन त्रुटियो और वर्त्तमान युगकी आवश्यकताओको जिन दिव्य-दृष्टाओने अनुभव किया उनमें 'आज़ाद' 'हाली' 'अकबर' 'इकबाल' और 'चकबस्त' मुख्य है। अगले पृष्ठोमें इनका जीवन-परिचय और शायरीका चमत्कार देखनेको मिलेगा।

१० जुलाई १९४४

६

शम्सउल-उलेमा मौलवी मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद'

[१८२९ से १९१० ई० तक]

मौलाना आजादका उर्दू-साहित्यमे वही स्थान है जो बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दुका हिन्दी-ससारमे है। मुसन्निफ़ 'तारीखे अदब उर्दू'के शब्दोंमे—"आजादकी खिदमत और एहसानात जबाने उर्दूपर बेहद है। उर्दू-शायरीमे इस रगका बानी (प्रतिष्ठापक) और उसमें एक नई रूह फूँकनेवाला अगर कोई फ़िल्हकीकत कहा जा सकता है तो वह मौलाना आजाद है।"

मौलाना आजाद दिल्लीमें पैदा हुए थे। आप शेख जौकके शिष्य थे। ऐसे शिष्य भाग्यवान उस्तादोको ही नसीब होते है। सन् १८५७के गदरकी लूट-मारमे 'आजाद' भी घरबार छोड़कर भागे, मगर उस्तादका दीवान सीनेसे लगाकर। सब सामान छोड़ा मगर उस्तादका कलाम न छोडा। उसे दुनियावी सब नेमतोसे श्रेष्ठ समझा। मनमे सोचा कि दुनियावी और चीज़े तो फिर भी मयस्सर हो सकती है, मगर स्वर्गीय उस्तादका कलाम नष्ट हुआ तो फिर हाथ मलनेके सिवा और कोई चारा न रह जायेगा। आजादने 'दीवाने-ज़ौक' और 'आबेहयात' जैसी अपनी अमर रचनाओमे इस श्रद्धा और भक्तिसे अपने उस्तादका उल्लेख किया है कि लोग उनपर अतिशयोक्तिका दोष लगानेसे बाज नही आए।

'आजाद'ने अपने उस्तादके साथ सैकड़ो बड़े-बडे मुशायरे देखे थे। १८५७के विद्रोहके बाद दिल्ली छोड़नेपर इधर-उधर भटकनेके बाद एक हिन्दू मित्रकी सहायतासे लाहौर कॉलेजमे प्रोफ़ेसर हो गए। वहाँ

आपने पठन-क्रमके लिए फारसी रीडर, उर्दू रीडर, उर्दू-कायदा वगैरह किताबे लिखी और उस वक़्तकी उर्दू-शायरीकी कमियो और वर्त्तमान युगकी आवश्यकताओको अनुभव करते हुए १५ अगस्त सन् १८६७ ई०मे आजादनेमे लाहौर 'अजुमने उर्दू'की स्थापना की जिसका उद्देश्य था—उर्दू-शायरीमे व्यर्थकी अतिशयोक्ति और उपमाओको निकाल बाहर करना। मुशायरोमे से मिसरा तरह (समस्या-पूर्त्ति)की प्रथाको उठाना, और उसके एवज़मे स्वतत्र नैतिक धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि विषयोपर लिखवानेकी परिपाटी डालना।

'आजाद'ने अंजुमनकी स्थापना करके ही अपने कर्त्तव्यकी इति-श्री नही समझी, अपितु स्वय इस तरहकी शायरी करनी प्रारम्भ कर दी। परिमाण-स्वरूप थोड़े ही दिनोमे उर्दू-शायरीका काया-कल्प हो गया। आज जिस उन्नत-शिखरपर हम उर्दू गद्य-पद्यको देख रहे है, उसके विकासका अधिकाश श्रेय आजादको है।

आजाद पद्यसे गद्यको अधिक तरजीह देते थे। यही कारण है कि उन्होने अपनी अधिक शक्ति गद्यके विकासपर खर्च की और उसमे 'आबेहयात', 'नैरगे-ख़याल', 'सखुनदाने फारस', 'दरबारे अकबरी' और 'निगारस्तान' जैसी अमर रचनाएँ भेट कीं। १८९९ ई०मे उनकी शायरीका सकलन 'नज्मे आज़ाद' भी प्रकाशित हुआ।

दुर्भाग्यसे कुछ मानसिक चिन्ताओके कारण सन् १८८९मे उनका मस्तिष्क विकृत हो गया और इस कष्टसाध्य रोगसे १९१० ई०मे मृत्यु होनेपर मुक्ति पाई। वर्त्तमानमे उर्दू शायरीका जितना विकास हुआ है उस मियारपर 'आज़ाद'की शायरी नही है, न वे एक शायरकी हैसियतमे प्रसिद्ध ही है। वे तो उर्दू शायरी के पुरातन दृष्टिकोणको बदलनेवाले और गद्यके सिद्धहस्त लेखक थे। प्रसङ्गवश उनका उल्लेख करना आवश्यक था। नमूनेके तौरपर 'हुब्बे-वतन' शीर्षक नज्मका एक संक्षिप्त उद्धरण यहाँ दिया जाता है।

हुब्बे वतन

दिल्ली कि जो हमेशासे कानेकमाल[1] है।
जो बाकमाल इसमें है वह बेमिसाल है।।

इक शख़्स वाँ सितारनवाज़ी की जान था।
पर, जानसे अज़ीज़ था दिल्लीको जानता।।

आया दकनसे ख़िलअतो-ज़र उसके वास्ते।
और नक़्द बहरे ज़ादे सफ़र उसके वास्ते।।

हर चन्द मुँह तो दिल्लीसे मोड़ा न जाता था।
पर हाथसे यह माल भी छोड़ा न जाता था।।

मतलब यह है कि बाद बहुत क़ीलोक़ालके।
असबाब सारा राहेसफ़रका सम्भालके।।

दिल्लीको यह भी छोड़के सूये दकन चले।
पर, जैसे कोई छोड़के बुलबुल चमन चले।।

पहुँचे मगर अभी थे दरेराजघाट[2]पर।
जो दफ़अतन् नज़र पड़ी दरियाके पाटपर।।

दरियाकी लहरें देखके लहराया उनका दिल।
और दिल्ली छोड़ते हुए भर आया उनका दिल।।

मुँह फेरकर निगाह ज्योंही शहरपर पड़ी।
जलवा दिखाती जामएमसजिद नज़र पड़ी।।

---

[1] गुणियो की खान, [2] दिल्लीमे जमनाके एक घाटक

तब वह पयाम्बर[१] कि जो आया दकनसे था।
और उनको ले चला वह छुड़ाकर वतनसे था॥

देखा निगाहे याससे और उससे यह कहा—
'पीछे चलेंगे पहले मगर यह तो दो बता॥

ऐसी तुम्हारे शहरमें जमुना है या नहीं'?
मुँह देखकर वह उनका हँसा और कहा 'नहीं'॥

फिर सूये शहर इशारा किया और यह कहा—
'मसजिद भी इस तरहकी दिखा दोगे वाँ भला'?

'है अपनी तर्ज़में यह निराली जहानसे।
उतरी ज़मींमें जिसकी शबीह आसमानसे'॥

यह बात उसकी सुनते ही चींबरजबीं हुए।
और बोले 'ख़ैर है कि रवाना नहीं हुए॥

जमुना नहीं है 'जामयेमसजिद जहाँ नहीं।
सुनते भी हो मियाँ! हमें जाना वहाँ नहीं॥

अपने दकनको आप रवाना शिताब हों।
पर इस चमनको छोड़के हम क्यों ख़राब हों॥

और गाड़ी अपनी तू भी मियाँ गाड़ीवान फेर।
गर अब फिरे न याँसे तो क़िस्मतका जान फेर॥

हम अपनी दिल्ली छोड़ दकनको न जाएँगे।
गर याँ बहुत न खायेंगे थोड़ा ही खाएँगे'॥

× × ×

---

[१] सन्देशवाहक।

ऐसे ही तंग हुब्बे वतन बदनसीब हैं।
घरमें मुसाफ़िरों-से, जो बदतर ग़रीब हैं॥

कहते हैं, 'दुःख उठाना हो या दर्द सहना हो।
थोड़ा-सा खाना हो पै बनारसमें रहना हो'॥

अब मैं तुम्हें बताऊँ कि हुब्बे वतन है क्या।
वह क्या चमन है और वह हवाये चमन है क्या॥

× × ×

यानी यूरुपके मुल्कमें दो ताजदार थे।
दोनोंके अहले मुल्क मगर जाँनिसार थे॥

सरहदपै कुछ फ़िसाद था, पर ऐसा पड़ गया।
दोनोंके इत्तफ़ाक़का नक़्शा बिगड़ गया॥

आखिरको थे जो वाक़िफ़े असरारे सल्तनत।
समझे बहम यह मसलहते कारे सल्तनत॥

दो जाँनिसारे मुल्क रवाना इधर करें।
और अपने दो इधरको वह गरमें सफ़र करें॥

ता चारों जिस जगह कि बहम एकबार हों।
सरहदेमुल्कके वहीं क़ायम मिनार हों॥

जाँबाज़ इस तरफ़के मगर जान तोड़कर।
ऐसे उड़े कि पीछे हवाको भी छोड़कर॥

इक हिस्सा तय न रस्ता हरीफ़ोंने था किया।
यह तीन हिस्से बढ़ गये औ उनको जा लिया॥

लेकिन हरीफ़ शर्तके मैदाँको छोड़के।
बोले यह अहदे कौलोक़रार अपना तोड़के॥

'दो अपने-अपने मुल्कके जो जाँनिसार हों।
फिर अबकी दो तरफसे रवाँ एकबार हो॥

पर, इतनी बात पहले हरइक शख्स जान ले।
और यह इरादा खूब तरह दिलमें ठान ले॥

यानी जो शर्त जीतके खुरसन्द होयगा।
सरहदपै वह जमीनका पैवन्द होयगा'॥

जाँबाज आये थे जो अभी राह मारके।
हुब्बुलवतनके जोशमें बोले पुकारके—

'जो शर्त अब लगाई है तुमने यही सही।
और बात जो कि होनी है फिर वह अभी सही॥

पर बीचमें न हील हवालेकी आड़ दो।
सरहद हमारी हो चुकी बस हमको गाड़ दो'॥

हासिल यह है कि दोनों इसी जापै अड़ गये।
जीतेके जीते मुल्ककी सरहदपै गड़ गये॥

१२ जुलाई १९४४

१०

मौलाना अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

[ई० सन् १८४० से १९१६ तक]

मौलाना हाली मिर्जा गालिबके शिष्य थे। परन्तु गुरु और शिष्यके जीवनमे, दृष्टिकोणमे, महान विषमता मिलती है। गालिब मुस्लिम वंशमे उत्पन्न अवश्य हुए, किन्तु न उन्होंने कभी नमाज़ पढ़ी, और न रोजा रक्खा। सामाजिक रीति-रिवाजसे हमेशा भागते रहे और धार्मिक उसूलके खिलाफ उम्र भर शराब पी। जो भी लिखा, सार्वजनिक दृष्टि-कोणको लेकर लिखा और मनुष्यके नाते लिखा। गालिब के कलाममें साम्प्रदायिक बू नही आई। उनके हिन्दू और मुसलमान सभी वर्गके शिष्य थे, हितैषी मित्र थे। यही कारण है कि मिर्जाके आड़े वक़्तोमे उनके हिन्दू मित्र ही काम आए।

गालिब दार्शनिक कवि थे और रिन्द (मद्यप) थे। हाली मौलवी, नासेह और ज़ाहिद थे। हाली पहले मुसलमान थे, बादमे कुछ और। उन्होने धर्मानुकूल आचरण रक्खा। शराब छुई तक नही। इस्लामका गुणानुवाद करने और मुसलमानोको उठानेमे सारी उम्र व्यतीत कर दी और एक कौमके सपूतको जो करना चाहिए, वह करके दिखा दिया। हालीके हृदयमें मुसलमानोकी दुर्दशाके कारण एक दर्द था जिससे वे बेचैन रहते थे। क़ौमकी दयनीय स्थिति देखकर हालीसे इश्कके तराने नही गाये गए। बागको लुटेरोसे घिरा हुआ देख, बुलबुल नगमा भूलकर छाती फाड़कर चीख उठा। और उसने फिर वोह विप्लव-गान गाया, कि बागबाँ तो जागे ही, गुलची और सैयाद भी सकतेमे आ गए।

गालिबने उर्दू शायरीके पुराने ढर्रेको दार्शनिकता और मौलिक विचारोका पुट देकर उसे एक सजीव भावपूर्ण काव्य बनाया, तो हालीने उर्दू-शायरीका 'ओवरहॉलिङ्ग' करके उसकी काया ही पलट दी। हालीसे पूर्व या तो अक्सर आशिकाना गजले, लिखी जाती थी या बड़े आदमियोकी चापलूसीमे कसीदे। अपनी दुर्दशाका वर्णन किस ढङ्गसे हो सकता है, घरमें आग लगी होनेपर सितार बजानेके अतिरिक्त, आत्म-रक्षाके लिए शोरोगुल भी किस तरह मचाया जा सकता है, इसका न किसीको होश था, न हालीसे पहले किसीको खयाल ही आया। इश्कमे आहे भरना, किसी माशूककी जुदाईमे जूते चटखाते हुए घूमनेके अलावा भी शायरीमें और कुछ कहा जा सकता है, यह कोई जानता ही न था। यह हालीके मस्तिष्ककी उपज है कि उसने तबाहीसे बचानेका राग गाया। स्वय हालीने उस वक्तकी शायरीके सम्बन्धमें अपने बारेमे लिखा है :—

"शायरीकी बदौलत चन्द रोज झूठा आशिक बनना पड़ा। एक खयाली माशूककी चाहमें दश्तेजुनूँ (उन्माद-मार्ग)की वह खाक उड़ाई कि कैस व फरहादको गर्द कर दिया। कभी नालये नीमशबी (रात्रिमे बिलखते हुए)से रब्वेमस्कूँ (ईश्वरासन)को हिला डाला, कभी चश्मे-दरियाबार (आँसुओं)से तमाम आलमको डुबो दिया। आहोफुगाँके ज़ोरसे करोंबियोंके कान बहरे हो गए। शिकायतोकी बौछाड़से जमाना चीख उठा। तानोकी भरमारसे आसमान चलनी हो गया। जब रश्कका तलातुम (ईर्ष्याका वेग) हुआ तो सारी खुदाईको रकीब (प्रतिद्वन्द्वी) समझा। यहाँ तक कि आप अपनेसे बदगुमान हो गए।. . .बारहा तेगे-अब्रू (भवें-रूपी तलवार)से शहीद हुए और बारहा एक ठोकरसे जी उठे। गोया जिन्दगी एक पैरहन (वस्त्र) था कि जब चाहा उतार दिया और जब चाहा पहन लिया। मैदाने-कयामतमे अक्सर गुज़र हुआ। बहिश्त व दोजखकी अक्सर सैर की। बादानोशी (शराब पीने)-पर तो खुमके खुम लुंढा दिए और फिर भी सैर (सन्तुष्ट) न हुए। . . .

कुफ्रसे मानूस और ईमानसे बेज़ार रहे।. . .खुदासे शोख़ियाँ कीं। . . .२० वर्षकी उम्रसे ४० वर्षतक तेलीके बैलकी तरह इसी एक चक्करमें फिरते रहे और अपने नजदीक सारा जहान तय कर चुके। जब आँख खुली तो मालूम हुआ, कि जहाँसे चले थे, अबतक वही है।

"निगाह उठाकर देखा तो दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे एक मैदानेवसीअ (विस्तृतक्षेत्र) नजर आया, जिसमे बेशुमार राहे चारों तरफ़ खुली हुई थी, और ख़यालके लिए कही रास्ता तङ्ग न था। जीमें आया कि कदम आगे बढायें और उस मैदानकी सैर करे। मगर जो क़दम २० वर्षसे एक चालसे दूसरी चाल न चले हो और जिनकी दौड़ गज़ दो गज जमीनमे महदूद रही हो, उनसे इस वसीअ मैदानमे काम लेना आसान नही था। इसके सिवा २० बरस बेकार और निकम्मी गर्दिशमे हाथ-पाँव चूर हो गए थे और ताकते-रफ्तार ज़वाब दे चुकी थी। लेकिन पाँवमे चक्कर था, इसलिए निचला बैठना भी दुश्वार था।. . .ज़मानेका नया ठाठ देखकर पुरानी शायरीसे दिल सैर हो गया था और झूठे ढकोसले बाँधनेसे शर्म आने लगी थी। न यारोके उभारोसे दिल बढता था, न साथियोकी रीससे कुछ जोश आता था।

"कौमकी हालत तबाह है, अजीज़ जलील हो गए है। शरीफ खाकमे मिल गए है। इल्मका खात्मा हो चुका है। दीनका सिर्फ़ नाम बाकी है। इख़लाक बिलकुल बिगड़ गए है, और बिगडते जाते है। तअास्सुबकी घन-घोर घटा तमाम क़ौमपर छाई हुई है। रस्मोरिवाजकी बेडी एक-एकके पाँवोंमे पड़ी है। जहालत और तकलीद सबकी गरदनपर सवार है।"

इसी तरहके विचारोंमे डूबकर हालीने पुराने ढर्रेकी शायरीको प्रणाम किया और उसे एक नवीन रूप देकर एक महान् आदर्श उपस्थित किया।[1] हालीने जो मुसद्दस लिखा (जिसका नमूना आगे दिया गया

---

[1] हालीसे पूर्ववर्त्ती शायर नजीरने नज़्म (मुसद्दस) लिखकर और अनीस, दबीरने मर्सिये लिखकर यह साबित कर दिया था कि शायरीका

है) उसका परिणाम आज दृष्टिगोचर हैं। सैकडो शायर अपना रङ्ग बदलकर इसी रङ्गमे रङ्ग गए। और आज जो मुसलमानोमे जागृति दीख पड़ती है उसके श्रेयके प्रथम अधिकारी हाली ही हैं।

अर्जुनको रण-क्षेत्रमे मोह-तन्द्रासे जगानेमें जो कार्य गीताने किया, वही कार्य मुसलमानोके लिए 'मुसद्दसे हाली'ने किया। गालिबकी जीवित अवस्थामें उनके शिष्योमे हालीका प्रमुख स्थान नही था, न इनसे गालिब-को कुछ विशेष आशाएँ ही थी। पर, आगे चलकर हालीने खूब ख्याति पाई और उस्तादका नाम भी खूब चमकाया। हालीने गुरु-दक्षिणा-स्वरूप बहुत परिश्रम करके 'यादगारे गालिब' लिखी है।

यद्यपि काव्यकी दृष्टिसे हाली उच्च श्रेणीके कवियोमे नही आते है, परन्तु उन्होने क्रान्तिका चिराग लेकर एक नवीन मार्ग खोज निकाला है और अपने पीछे लोगोको चलनेके लिए उत्साह दिलाकर वे स्वयं अना-यास आगे निकल गए है।

हाली सन् १८४०मे पानीपतमे पैदा हुए और ७६ वर्षकी आयु पाकर सन् १९१६में पानीपतमे समाधि पाई। हालीके कई ग्रन्थ भिन्न-भिन्न भाषाओ-मे अनूदित हो चुके है। 'मनाजाते बेवा'का तो १० भाषाओमें (सस्कृतमे भी) अनुवाद हुआ है। इनकी रुबाइयोका अनुवाद अङ्गरेजीमे भी छप चुका है। इनके ग्रन्थ विश्वविद्यालयोमे पढाए जाते है। सन् १९०४में गवर्नमेंटने इन्हें 'शम्स उल उलेमा' जैसी प्रतिष्ठित पदवीसे विभूषित किया था।

मुसद्दसके २९४ बन्दोंमेसे ३३ बन्द यहाँ इस तरहसे दिए जा रहे है, जिससे हर कौम लाभ उठा सके और क्रमानुसार भी मालूम दे।

क्षेत्र विस्तृत है। इसमें अपने देशकी घटनाओका उल्लेख किया जा सकता है, युद्धका सजीव वर्णन किया जा सकता है। अतः आज़ाद, हाली, इकबाल, चकवस्तने भी अपने विचार प्रकट करनेके लिए नज़्मको ही चुना और उसमे कमाल पैदा करके छोड़ा।

मुसद्दस

किसीने यह बुक़रातसे जाके पूछा—
'मरज़ तेरे नज़दीक मुहलक[1] है क्या-क्या?'
कहा—'सुन, जहाँमें नहीं कोई ऐसा,
कि जिसकी दवा हक़[2]ने की हो न पैदा॥
मगर वह मरज़ जिसको आसान समझें।
कहे जो तबीब उसको हुज़यान[3] समझें॥

सबब या अलामत गर उनको सुझाएँ,
तो तशख़ीसमें सौ निकालें ख़ताएँ।
दवा और परहेज़से जी चुराएँ,
यूँही रफ़्ता-रफ़्ता मरज़को बढ़ाएँ॥
तबीबोंसे[4] हरगिज़ न मानूस[5] हो वे।
यहाँ तक, कि जीनेसे मायूस[6] हों वे॥'

यही हाल दुनियामें उस क़ौमका है,
भँवरमें जहाज़ आके जिसका घिरा है।
किनारा है दूर और तूफ़ाँ बपा है,
गुमाँ है यह हरदम, कि अब डूबता है॥
नहीं लेते करवट मगर अहले-किश्ती।
पड़े सोते हैं बेख़बर अहले-किश्ती॥

आगे कौमकी तन्द्राका वर्णन करते हुए उन्हे सचेत होनेके लिए कहते है :—

---

[1] घातक; [2] ईश्वरने; [3] व्यर्थ बकवास; [4] हकीमोसे, चिकित्सकोसे। [5] हिले-मिले, (भावार्थ—हकीमोका कहा न माने); [6] निराश।

ग़नीमत है सेहत अलालतसे[1] पहले,
फ़राग़त[2] मशागलकी[3] कसरतसे पहले।
जवानी, बुढ़ापेकी ज़हमतसे[4] पहले,
अक़ामत[5] मुसाफ़िरकी रहलतसे[6] पहले ॥
फ़क़ीरीसे पहले ग़नीमत है दौलत।
जो करना है करलो कि थोड़ी है मुहलत ॥

भूतकालीन बुज़ुर्गोंकी प्रशसा करते हुए कहते हैं :—

किफायत जहाँ चाहिए, वाँ किफायत,
सख़ावत[7] जहाँ चाहिए, वाँ सख़ावत।
जँची और तुली दुश्मनी और मुहब्बत,
न बे-वजह उल्फ़त, न बे-वजह नफरत ॥
झुका हक़से जो, झुक गए उससे वोह भी।
रुका हक़से जो, रुक गए उससे वोह भी ॥

वर्त्तमान दशाका वर्णन करते हुए आपने फर्माया है :—

वोह संगीं महल और वोह उनकी सफ़ाई,
जमी जिनके खण्डरपे है आज काई।
वोह मरक़द[8] कि गुम्बद थे जिनके तिलाई[9],
वोह मावद[10] जहाँ जल्वागर थी खुदाई ॥
ज़मानेने गो उनकी बरकत उठाली।
नहीं कोई वीराना पर उनसे खाली ॥

× × ×

---

[1]बीमारीसे; [2]फुर्सत, [3]कार्यधिकतासे।
[4]परेशानीसे, मुसीबतसे, [5]स्थिरता; [6]मृत्युसे; [7]दान।
[8]मकबरा, [9]स्वर्णमय, [10]उपासना-गृह।

बुरे उनपै वक़्त आके पड़ने लगे अब,
वोह दुनियामें बसके उजड़ने लगे अब।
भरे उनके मेले बिछुड़ने लगे अब;
बने थे वोह जैसे, बिगड़ने लगे अब॥
हरी खेतियाँ जल गईं लहलहाकर।
घटा खुल गई, सारे आलमपै छाकर॥

× × ×

वगर्ना हमारी रगोंमें, लहूमें,
हमारे इरादोंमें औ जुस्तजूमें।
दिलोंमें, ज़बानोंमें और गुफ़्तगूमें,
तबीयतमें, फ़ितरतमें, आदतमें, खू में॥
नहीं कोई ज़र्रा नजाबतका[1] बाक़ी।
अगर हो किसीमें तो है इत्तफ़ाक़ी[2]॥

हमारी हर इक बातमें सिफ़लापन[3] है
कमीनोंसे बदतर हमारा चलन है।
लगा नामेआबाको[4] हमसे गहन है,
हमारा क़दम नङ्गे अहले वतन है॥
बुज़ुर्गों की तौक़ीर[5] खोई है हमने।
अरबकी शराफ़त डुबोई है हमने॥

---

[1] भलमनसाहतका, भद्रताका।

[2] संयोगवश।

[3] कमीनापन।

[4] बुज़ुर्गोंके नामको।

[5] इज़्ज़त।

न कौमोंमें इज्जत न जलसोंमें वक़अत,
न अपनोंसे उल्फ़त न गैरोंसे मिल्लत।
मिज़ाजोंमें सुस्ती, दिमागोंमें नख़वत[1],
ख़यालोंमें पस्ती, कमालोंमें नफ़रत ॥
अदावत निहाँ[2] दोस्ती आश्कारा[3]।
ग़रज़की तवाज़ा[4] ग़रज़का मुदारा[5] ॥

न अह्लेहुकूमत[6]के हमराज़[7] हैं हम,
न दरबारियोंमें सरअफराज़[8] हैं हम।
न इल्मोंमें शायाने-एजाज़[9] हैं हम,
न सनअ़तमें[10] हुरमतमें मुमताज़[11] है हम ॥
न रखते हैं कुछ मंज़िलत नौकरीमें।
न हिस्सा हमारा है सौदागरीमें ॥

तनज्ज़ुलने[12] की है बुरी गत हमारी,
बहुत दूर पहुँची है नकबत[13] हमारी।
गई गुज़री दुनियासे इज्ज़त हमारी,
नहीं कुछ उभरनेकी सूरत हमारी ॥
पडे हैं एक उम्मीदके हम सहारे।
तवक़्क़ो पै जन्नतकी जीते है सारे ॥

---

[1] घमड, [2] गुप्त, [3] प्रगट, [4] सत्कार।
[5] आवभगत, [6] शासनसत्ताकी [7] विश्वस्त।
[8] उच्चपनासीन; [9] आदरके योग्य, [10] कारीगरीमे।
[11] श्रेष्ठ, [12] गिरावटने।
[13] गरीबी, दुर्दशा।

वोह बेमोल पूँजी कि है अस्ल - दौलत,
वोह शाइस्ता लोगोंका गंजेसआदत[१]।
वोह आसूदा क़ौमोंका रासुलबज़ाअत[२],
वोह दौलत कि है 'वक़्त' जिससे इबारत ॥
नहीं उसकी वक़अत नज़रमें हमारी।
यूँही मुफ़्त जाती है बरबाद सारी ॥

अगर साँस दिन-रातके सब गिनें हम,
तो निकलेंगे अन्फ़ास[३] ऐसे बहुत कम।
कि हों जिनमें कलके लिए कुछ फ़राहम[४],
यूँही गुज़रे जाते हैं दिन रात पैहम ॥
नहीं कोई गोया ख़बरदार हममें।
कि यह साँस आख़िर है अब कोई दममें ॥

वोह क़ौमें जो सब राहें तय कर चुकी हैं,
ज़ख़ीरे हर इक जिन्सके भर चुकी हैं।
हर इक बोझ बार अपने सर धर चुकी हैं,
हुईं तब हैं ज़िन्दा, कि जब मर चुकी हैं ॥
इसी तरह राहेतलबमें है पोया[५]।
बहुत दूर अभी उनको जाना है गोया ॥

---

[१] नेकीका कोष।

[२] स्थायी सम्पत्ति।

[३] स्वाँस।

[४] जमा।

[५] वोह चाल जो न दौड़में शामिल हो न धीरे चलनेमें।

किसी वक़्त जी भरके सोते नहीं वोह,
कभी सैर मेहनतसे होते नहीं वोह।
बज़ाअ़त[1]को अपनी डुबोते नहीं वोह,
कोई लमहा बेकार खोते नहीं वोह॥
न चलनेसे थकते, न उकताते हैं वोह।
बहुत बढ़ गए और बढ़े जाते हैं वोह॥

मगर हम, कि अब तक जहाँ थे, वहीं हैं,
जमादातकी[2] तरह बारेज़मी[3] हैं।
जहाँमें हैं ऐसे, कि गोया नहीं हैं,
ज़मानेसे कुछ ऐसे फ़ारिग़नशीं हैं॥
कि गोया ज़रूरी था जो काम करना।
वोह सब कर चुके, एक बाक़ी है मरना॥

* * *

जो गिरते हैं. गिरकर सम्हल जाते हैं वोह,
पड़े जद तो बचकर निकल जाते हैं वोह।
हर इक साँचेमें जाके ढल जाते हैं वोह,
जहाँ रङ्ग बदला, बदल जाते हैं वोह॥
हर इक वक़्तका मक़्तज़ी[4] जानते हैं।
ज़मानेका तेवर वोह पहचानते हैं॥

× × ×

---

[1] पूँजी, धन।
[2] बेजान चीज़ोंकी।
[3] पृथ्वीके बोझ।
[4] मांग, मूल्य, उपयोग।

ज़मानेका दिन-रात है ये इशारा,
कि है आश्तीमें[1] मेरी याँ गुज़ारा।
नहीं पैरवी जिनको मेरी गवारा,
मुझे उनसे करना पड़ेगा किनारा॥
सदा एक ही रुख़ नहीं नाव चलती।
चलो तुम उधरको, हवा है जिधरकी॥

* * *

मशक़्क़तको, मेहनतको जो आर समझें,
हुनर और पेशेको जो ख़्वार समझें।
तिजारतको, खेतीको दुश्वार समझें,
फ़िरङ्गीके पैसेको, मुरदार समझें॥
तन आसानियाँ चाहें, और आबरू भी।
वोह क़ौम आज डूबेगी गर कल न डूबी॥

* * *

अन्य क़ौमों की उन्नति बताते हुए:—
उरूज[2] उनका जो तुम अयाँ देखते हो,
जहाँमें उन्हें कामराँ[3] देखते हो॥
मुती[4] उनका सारा जहाँ देखते हो,
उन्हें बरतरअज़[5]आस्माँ देखते हो॥
समर[6] है यह उनकी जवाँमर्दियोंके।
नतीजे है आपसमें हमदर्दियोंके॥

---

[1] प्रेम-सङ्गठन; [2] उन्नति।
[3] सफल; [4] आधीन।
[5] आकाशसे ऊँचा; [6] फल।

तत्कालीन शायरोंका उल्लेख करते हुए आपने फ़र्माया है :—

वोह शेर और कसायदका[1] नापाक दफ़्तर,
अफ़ूनतमें[2] सण्डाससे जो है बदतर।
ज़मीं जिससे है ज़लज़लेमें बराबर,
मलिक[3] जिससे शर्माते हैं आस्माँपर॥
हुआ इल्मों दीं जिससे ताराज[4] सारा।
वोह इल्मोंमें इल्मे-अदब है हमारा॥

बुरा शेर कहनेकी गर कुछ सज़ा है,
अबस[5] झूठ बकना अगर नारवा[6] है।
तो वोह महकमा, जिनका क़ाज़ी ख़ुदा है,
मुक़र्रर जहाँ नेकोबदकी सज़ा है॥
गुनहगार वाँ छूट जाएँगे सारे।
जहन्नुमको भर देंगे शायर हमारे॥

ज़मानेमें जितने कुली और नफ़र[7] हैं,
कमाईसे अपनी वो सब बहरावर हैं।
गवैये अमीरोंके नूरे-नज़र हैं,
डफाली भी ले आते कुछ माँगकर हैं॥
मगर इस तपेदिकमें जो मुब्तिला है।
ख़ुदा जाने वोह किस मरज़की दवा है॥

---

[1] कसीदोका; [2] दुर्गन्धके।
[3] देवता, [4] नष्ट।
[5] व्यर्थ; [6] अनुचित।
[7] नौकर।

जो सक़्क़े न हों, जीसे जाएँ गुज़र सब,
हों मैला जहाँ, गुम हों धोबी अगर सब।
बने दमपै, गर शहर छोड़ें नफ़र सब,
जो थुड़ जाएँ मेहतर, तो गन्दे हों घर सब ॥
पै कर जाएँ हिजरत[1] जो शायर हमारे।
कहें मिलके 'ख़सकम जहाँ पाक'[2] सारे ॥

तवायफ़को अज़बर[3] है दीवान उनके,
गवैयोंपै बेहद हैं अहसान उनके।
निकलते हैं तकियोंमें[4] अरमान उनके,
सनाख़्वाँ[5] है इबलीसो[6] शैतान उनके ॥
कि अक़्लोंपै पर्दे दिए डाल उन्होंने।
हमें कर दिया फ़ारिग़-उल्बाल[7] उन्होंने ॥

तत्कालीन स्थिति :—

शरीफ़ोंकी औलाद बे-तरबियत है,
तबाह उनकी हालत, बुरी उनकी गत है।
किसीको कबूतर उड़ानेकी लत है,
किसीको बटेरें लड़ानेकी धत है।
चरस और गाँजेपै शैदा है कोई।
मदक और चण्डूका रसिया है कोई ॥

---

[1] प्रवास।
[2] गंदगी दूर हुई, वातावरण शुद्ध हुआ; [3] कंठस्थ।
[4] ऐसी क़ब्र जहाँ गाना बजाना होता रहे।
[5] प्रशंसक; [6] शैतान।
[7] बेकार, निठल्ला।

हुई उनकी बचपनमें यूं पासबानी[1],
कि क़ैदीकी जैसे कटे ज़िन्दगानी।
लगी होने जब कुछ समझ-बूझ स्यानी,
चढ़ी भूतकी तरह सरपर जवानी॥
बस अब घरमें दुश्वार थमना है उनका।
अखाड़ोंमें, तकियोंमें रहना है उनका॥

नशेमें मये-इश्कके चूर हैं वे,
सफ़े[2]फ़ौजेमिज़गांमें महसूर[3] हैं वे।
ग़मे चश्मो अबरूमें रंजूर हैं वे,
बहुत हालसे दिलके मजबूर हैं वे॥
करें क्या, कि है इश्क़ तबीयतमें उनकी।
हरारत भरी है तबीयतमें उनकी॥

अगर मां है दुखिया, तो उनकी बलासे,
अपाहज है बाबा तो उनकी बलासे।
जो है घरमें फ़ाक़ा, तो उनकी बलासे,
जो मरता है कुनबा, तो उनकी बलासे॥
जिन्होंने लगाई हो लौ दिलरुबासे।
ग़रज़ फिर उन्हें क्या रही मासिवासे?

न गालीसे, दुश्मनसे जो जी चुराएँ,
न जूतीसे पैज़ारसे हिचकिचाएँ।

---

[1] देख-रेख।

[2] कटाक्ष-सैनिकोंकी पंक्ति में।

[3] घिरे हुए।

जो मेलोंमें जाएँ, तो लुचपन दिखाएँ,
जो महफ़िलमें बैठें, तो फ़ितने उठाएँ॥
लरज़ते हैं ओबाश[१] उनकी हँसीसे।
गुरेज़ाँ[२] है रिन्द[३] उनकी हमसायगीसे[४]॥

जहाज़ एक गरदाबमें फँस रहा है,
पड़ा जिससे जोखोंमें छोटा-बड़ा है।
निकलनेका रस्ता न बचनेकी जा है,
कोई उनमें सोता, कोई जागता है॥
जो सोते हैं वोह मस्तेख्वाबे[५] गिराँ हैं।
जो बेदार[६] हैं उनपै ख़न्दाज़नाँ[७] हैं॥

कोई उनसे पूछे कि ऐ होशवालो!
किस उम्मीदपर तुम खड़े हँस रहे हो?
बुरा वक़्त बेड़ेपै आनेको है जो,
न छोड़ेगा सोतोंको और जागतोंको॥
बचोगे न तुम और साथी तुम्हारे।
अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे॥

---

[१] कमीने, लुच्चे।
[२] भागते।
[३] शराबी।
[४] पड़ोससे, सङ्गतसे।
[५] घोर स्वप्नमे लीन।
[६] जागते।
[७] हँस रहे।

ज़मीमा

१६२ बन्दोमेंसे केवल ८ बन्द महज़ नमूनेके तौरपर पेश हैं :—

बस ऐ ना उम्मीदी ! न यूँ दिल बुझा तू,
झलक ऐ उमीद ! अपनी आखिर दिखा तू।
ज़रा ना-उमीदोंको ढारस बँधा तू,
फ़सुर्दा[1] दिलोके दिल आकर बढ़ा तू॥
तेरे दमसे मुर्दों में जानें पड़ी हैं।
जली खेतियाँ तूने सर-सब्ज़ की हैं॥

× × ×

बहुत डूबतोंको तिराया है तूने,
बिगड़तोंको अक्सर बनाया है तूने।
उखड़ते दिलोंको जमाया है तूने,
उजड़ते घरोंको बसाया है तूने॥
बहुत तूने पस्तोको[2] बाला[3] किया है।
अँधेरेमें अक्सर उजाला किया है॥

× × ×

बहुत हैं अभी, जिनमें गैरत है बाकी,
दिलेरी नही पर हमैय्यत[4] है बाकी!
फ़क़ीरीमें भी बूएसरवत[5] है बाकी,
तिहीदस्त[6] है पर मुरव्वत[7] है बाक़ी॥

---

[1] बुझे हुए; [2] गिरे हुओको; [3] उठाया; [4] शर्म।
[5] वैभव, सम्पन्नता; [6] खाली हाथ, निर्धन; [7] लिहाज़।

मिटे पर भी पिन्दारे[१] हस्ती वही है।
मकाँ गर्म है, आग गो बुझ गई है॥

समझते हैं इज्जतको दौलतसे बेहतर,
फ़क़ीरीको जिल्लतकी शुहरतसे बेहतर।
गलीमें क़नाअ़तको[२] सरवतसे* बेहतर।
उन्हें मौत है बारे-मिन्नतसे[३] बेहतर॥
सर उनका नहीं दर-बदर झुकनेवाला।
वोह ख़ुद पस्त[४] हैं, पर निगाहें हैं बाला[५]॥

× × ×

अयाँ[६] सब यह अहवाल[७] बीमारका है,
कि तेल उसमें जो कुछ था, सब जल चुका है।
मुआफिक़ दवा है न कोई गिज़ा है,
इजाले-बदन[८] है जवाले[९] कबा[१०] है॥
मगर है अभी यह दिया टिमटिमाता।
बुझा जो कि है याँ, नजर सबको आता॥

× × ×

जो चाहें पलट दें यही सबकी काया,
कि एक-एकने मुल्कोको है जगाया।

---

[१] आत्माभिमान; [२] सन्तोष रूपी कमली को।
*धन-वैभव की अधिकतासे श्रेष्ठ समझते है।
[३] खुशामद या निवेदनके बोझसे; [४] छोटे।
[५] ऊँची; [६] प्रगट; [७] अवस्था, [८] उपहासास्पद; [९] चीथड़ा।
[१०] लिबास।

अकेलोंने हैं क़ाफ़िलोंको बचाया,
जहाज़ोंको है ज़ोरे कूने[1] तिराया ॥
यूँही काम दुनियाका चलता रहा है !
दियेसे दिया यूँ ही जलता रहा है ॥

× × ×

मगर बैठ रहनेसे चलना है बेहतर,
कि है अहले-हिम्मतका अल्लाह यावर।
जो ठण्डकमें चलना न आया मयस्सर,
तो पहुँचेंगे हम धूप खा-खाके सरपर ॥
यह तकलीफ़ औ राहत है सब इत्तफ़ाक़ी।
चलो अब भी है वक़्त चलनेका बाक़ी ॥

बशरको है लाजिम कि हिम्मत न हारे,
जहाँतक हो काम आप अपने सँवारे।
खुदाके सिवा छोड़ दे सब सहारे,
कि है आरजी जोर, कमजोर सारे ॥
अड़े वक़्त तुम दाएँ-बाएँ न झाँको।
सदा अपनी गाड़ीको तुम आप हाँको ॥

कुछ फुटकर रचनाएँ

बैठे बेफिक्र क्या हो, हमवतनो !
उठो, अहले वतनके दोस्त बनो ॥

---

[1] संगठित शक्तिने।

मर्द हो तो किसीके काम आओ।
वर्ना खाओ, पियो, चले जाओ॥

* * *

जागनेवालो ! ग़ाफिलोंको जगाओ।
तैरनेवालो ! डूबतोंको तिराओ॥

तुम अगर हाथ-पाँव रखते हो।
लँगड़े-लूलोंको कुछ सहारा दो॥

* * *

होगी न क़द्र जानकी क़ुर्बां किए बग़ैर।
दाम उठेंगे न जिन्सके अर्जां किए बग़ैर॥

* * *

अपनी नज़रमें भी यॉ अब तो हक़ीर हैं हम।
बेग़ैरतीकी यारो ! अब ज़िन्दगानियाँ हैं॥

खेतोंको दे लो पानी अब बह रही है गङ्गा।
कुछ कर लो नौजवानो ! उठती जवानियाँ हैं॥

× × ×

मुसीबतका इक-इकसे अहवाल कहना।
मुसीबतसे है यह मुसीबत जियादा॥

कहीं दोस्त तुमसे न हो जाएँ बदज़न।
जताओ न अपनी मुहब्बत जियादा॥

जो चाहो फ़क़ीरीमें इज़्ज़तसे रहना।
न रक्खो अमीरोंसे मिल्लत जियादा॥

फ़रिश्तेसे बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत जियादा॥

* * *

नफ़ासत भरी है तबीयतमें उनकी।
नज़ाकत, सो दाखिल है आदतमें उनकी॥
दवाओंमें मुश्क उनके उठता है ढेरों।
वोह कपड़ोंमें इत्र अपने मलते हैं सेरों॥

* * *

ऐ माओ! बहनो! बेटियो! दुनियाकी ज़ीनत तुमसे है।
मुल्कोंकी बस्ती हो तुम्ही, क़ौमोंकी इज़्ज़त तुमसे है॥
तुम घरकी हो शहज़ादियाँ, शहरोंकी हो आबादियाँ।
ग़मगीं दिलोंकी शादियाँ, दुख-सुखमें राहत तुमसे है॥

नेकीकी तुम तस्वीर हो, इफ़्फ़तकी[1] तुम तदबीर हो।
हो दीनकी तुम पासबाँ,[2] ईमाँ सलामत तुमसे है॥
मर्दोंमें सतवाले थे जो, सत् अपना बैठे कबके खो।
दुनियामें ऐ सतवन्तियो, ले-देके अब सत् तुमसे है॥

मूनिस[3] हो ख़ाविन्दोंकी तुम, ग़मख़्वार फ़र्ज़न्दोंकी तुम।
तुम बिन है घर वीरान सब, घर भरमें बरकत तुमसे है॥
तुम आस हो बीमारकी, ढारस हो तुम बेकारकी।
दौलत हो तुम नादारकी,[4] उसरतमें[5] इशरत[6] तुमसे है॥

२० जुलाई १६४४

[1] कुमार्गसे बचानेकी; [2] रक्षक; [3] सहायक; [4] निर्धनकी, [5] निर्धनता; [6] आराम।

११

सैयद अकबरहुसेन 'अकबर' इलाहाबादी

[सन् १८४६ से १९२१ ई० तक]

जिस तरह अकबर बादशाह मुस्लिम बादशाहोमे एक आदर्श, तेज़स्वी, प्रतापी, यशस्वी और ख्याति-प्राप्त शासक हुआ है, जिस प्रकार वह अपने शासन-सञ्चालन और व्यक्तित्वका एक पृथक 'स्टैण्डर्ड' स्थापित कर गया है, उसी तरह 'अकबर' इलाहाबादी भी उर्दू-शायरीमे हास्य-रसके प्रथम आविष्कारक है। गुलो-बुलबुलके झमेलेमे ही उन्होने शायरी सीखी। कलेजा थामकर हुस्न और इश्ककी पुरअलम कहानियाँ सुनी। आशियाँ और कफसमे बन्द रहनेको उनके लिए सामान प्रस्तुत हुए। साकी और मयख़ानेने उन्हे अपनी ओर बर्बस खीचना चाहा। पर वह दामन बचाकर साफ़ निकल गए। बकौल 'असगर':—

> **दैरो[1] हरम[2] भी कूचये-जानामें[3] आये थे।**
> **पर शुक्र है, कि बढ़ गये दामन बचाके हम॥**

जिस तरह अपने पूर्ववर्त्ती शायरोके सुन्दरसे सुन्दर कलाम होनेपर भी उनमे शृङ्गार-रसकी अधिकता और समयकी आवश्यकताओसे कोरी होनेके कारण हालीने शायरीकी दिशा ही बदल दी, उसी तरह अकबरने भी अपना एक पृथक ही दृष्टिकोण स्थापित किया। अकबरके पूर्ववर्त्ती शायर विरहमे जहाँ आँसूके दरिया बहाते थे:—

---

[1] मन्दिर; [2] मस्जिद, [3] प्रेयसीके मार्गमे (अभिप्राय है प्रेम-मार्गमे)।

ऐसा नहीं जो यारकी लावे ख़बर मुझे।
ऐ सैले[1] अश्क तू ही बहा ले उधर मुझे॥

वहाँ अकबरने इस तरह हास्यकी निर्मल धारा बहाई :—

दिल लिया है हमसे जिसने दिल्लगीके वास्ते।
क्या तअ़ाज्जुब है, जो तफरीहन हमारी जान ले॥

जहाँ मेहदीके पत्तेपर लोग सन्देश भेजते थे :—

बर्गे-हिनापै[2] लिक्खेंगे हम दर्दे दिलकी बात।
शायद कि लगे रफ़्ता-रफ़्ता गुल-बदनके हात॥

वहाँ अकबरने लिखा :—

कासिद मिला जब उनसे, वे खेलते थे पोलो।
ख़त रख लिया यह कहकर, अच्छा सलाम बोलो॥

जब दूसरे शायर गमको कलेजा खिलाते थे, जङ्गलोमे भटकते फिरते थे, जीनेसे मरना बेहतर समझते थे, सभीपर अकर्मण्यता छाई हुई थी, तब अकबरने अपने जुदागाना रङ्ग (हास्य-रस)का आविष्कार करके बता दिया, कि हर समय मनहूस सूरत बनाये रखना ठीक नही। अगर मुहर्रममे रोना ज़रूरी है, तो होलीमे हँसना भी आवश्यक है। मगर वह हँसी बेहयाओ या शोहदोकी तरह नही, जिससे सभ्यता और बुद्धि भी दूर भागे। हास्य ऐसा हो, कि माँ-बहन भी आनन्द ले सके, शत्रु भी बिना हँसे न रह सके। जो कहना है वह कह भी दिया जाय, मगर ओठो-पर हँसीकी गुलकारियाँ बनी रहे।

हाली मौलवी थे, अकबर जज। हाली मौलवी होते हुए भी अङ्ग-रेजी शिक्षाके हिमायती थे। वे कौंसिलो और सरकारी नौकरियोमे

[1] आँसुओकी बाढ;   [2] मेहदीके पत्तेपर।

अधिकसे अधिक मुसलमान देखना चाहते थे। अकबर जज होते हुए भी इङ्गलिश सभ्यता और शिक्षा-दीक्षाके घोर विरोधी थे। कौंसिलों और पदवियोको क़ौमके लिए घातक समझते थे। हाली और अकबर दोनो ही मुस्लिम संस्कृतिके घोर पक्षपाती थे। पर हाली सर सैयद अहमदके एक ख़ास समर्थकोमेसे थे। वे अङ्गरेजी राज्यसे जो भी मिले, छीन लेनेके पक्षमे थे। अकबर मुस्लिम संस्कृतिके लिए अङ्गरेजी सभ्यताको श्राप समझते थे। वे इसी कारण सैयद अहमदके घोर विरोधियोमेसे थे। हाली जिन्ना थे, तो अकबर अब्बुल कलाम आजाद। भलाई दोनो चाहते थे, पर दृष्टिकोणमे ठीक इतना ही अन्तर था। जहाजको तूफानमे घिरा देखकर दोनोने ही आवाज बुलन्द की। मगर हालीने सिर्फ मुसलमानोको सचेत करनेके लिए अजान दी और अकबरने जहाजके सभी यात्रियोको सावधान करनेके लिए ढोल पीटा। हालीको दूसरी कौमोसे नफ़रत नही थी, मगर दृष्टि इस्लामकी उन्नतिपर थी। अकबरका दृष्टिकोण व्यापक था।

अकबरने राष्ट्रीयता और हिन्दू-मुस्लिम सस्कृतिके पक्षमें और अभारतीय सभ्यता और शिक्षाके विपक्षमे जिस ढङ्गसे कहा है, उस तरहका कहना अकबरके सिवाय अबतक किसीको नसीब नही हुआ। उर्दू-शायरीमे अकबर हास्य-रसके सृष्टा हैं। एक सरकारी नौकर होते हुए भी किस निर्भयतासे उन्होने हँसी-हँसीमे चोट की है, कि आदमी ओठोंपर तो हँसता है, मगर कलेजा थाम लेता हैं। काश ! वे जजीके बन्धनमे न होकर स्वतत्र होते तो न जाने कैसे अनमोल मोती छोड जाते ! उनके रङ्गमे सैकड़ोने लिखनेकी कोशिश की मगर वह अन्दाज और शोखियें-बयान कहाँ ?

अकबरने हास्य-रसके अतिरिक्त नीति-विषयक भी काफ़ी कहा है। हमने उनका वह कलाम जो काफी विरदे ज़बान है, सङ्कलन न करके कुछ प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध दोनो तरहका किया है। जिससे थोड़ी-बहुत नवीनता

भी रहे और कुछ मशहूर कलाम भी रहे, ताकि जिन्हे याद है वे कतई यह भी न समझ ले कि हमारी दृष्टि ही उधर न पडी या हम उस मजाकसे अनभिज्ञ है। ५१की कैदका ध्यान रखकर ही सब तरहके नमूने देनेका प्रयत्न किया गया है।

अकबर १६ नवम्बर, सन् १८४६मे इलाहाबाद जिलेके एक गाँवमे उत्पन्न हुए और ९ सितम्बर, १९२१को इलाहाबादमे जन्नत-नशीन हुए। आप ११ वर्षकी आयुमे ही कविता करने लगे थे। सन् १८६९मे वे नायब तहसीलदार हुए। सन् १८७३मे प्रयाग हाईकोर्टकी परीक्षा पास करके कुछ दिनो वकालत की। १८८०मे मुन्सिफ हुए। फिर सब-जज हुए। वर्षो स्थानापन्न सेशन-जज भी रहे। १८९८मे खानबहादुरकी उपाधि भी मिली। मगर सरकारी डिगरियोको वे मनुष्यताका कलङ्क समझते थे। फर्माते है :—

नेशनल[1] वक़अतके[2] गुम होनेका है 'अकबर'को गम।
ऑफ़िशल इज्ज़तका उसको कुछ मजा मिलता नहीं॥

१९०३मे वे पेन्शन लेकर इशरत मञ्जिल बनवाकर रहने लगे। मगर सासारिक आपदाओने इस हँसोडेका भी पीछा न छोड़ा। ७ वर्ष तक मोतियाबिन्दसे पीडित रक्खा। १९१०मे पत्नी छीन ली, फिर जवान बेटेका सदमा पहुँचाया।

अकबर अत्यन्त खुश-मिजाज और हँसोड थे। सरकारी अफसर होते हुए भी निहायत सादगी-पसन्द और निराभिमानी थे। हर आदमीसे जीसे मिलते। जैसा कि आप हास्य अपनी कविताओमे बखेरते थे, उसी तरह पारस्परिक बात-चीतमें भी हाजिर-जवाबी और हँसीका फव्वारा छोडते थे। एक बार लॉर्ड कर्जनने अपने भाषणमे हिन्दुस्तानियोको

---

[1] राष्ट्रीय; [2] प्रतिष्ठाके।

झूठा कहा। अकबरने अखबारमें पढा तो तत्काल उनके मुँहसे निकला :—

झूठे है हम तो आप है झूठोंके बादशाह !

एक बार एक सज्जन मिलने आए तो उन्होने अपना विजिटिङ्ग कार्ड अकबरके पास भेजते समय नामके आगे पेन्सिलसे बी० ए० और वना दिया। क्योकि वे कार्ड छप जानेके बाद बी० ए० हुए थे। अकबरने भी उसी कार्डकी पीठपर यह शेर लिखकर भिजवा दिया और मुलाकात नही की :—

शेख़जी घरसे न निकले और लिखकर दे दिया——
"आप बी० ए० पास है तो बन्दा बीबी पास है ॥"

नीतिविषयकः—

रोना है तो इसीका, कोई नही किसीका।
दुनिया है और मतलब, मतलब है और अपना॥

* * *

अय बरहमन ! हमारा-तेरा है एक आलम।
हम ख्वाब देखते हैं, तू देखता है सपना॥

* * *

अजलसे[1] वे डरें, जीनेको जो अच्छा समझते हैं।
यहाँ हम चार दिनकी जिन्दगीको क्या समझते हैं?

ऊँचा नीयतका अपनी जीना रखना।
अहबाबसे साफ़ अपना सीना रखना॥

गुस्सा आना तो 'नेचुरल' है 'अकबर'।
लेकिन है शदीद ऐब कीना[2] रखना॥

* * *

जो देखी हिस्ट्री इस बातपर कामिल यकीं आया।
उसे जीना नहीं आया, जिसे मरना नहीं आया॥

* * *

सवाब[3] कहता है मिल जाऊँगा, कर उनकी मदद।
छिपा हुआ मैं गरीबोंकी भूख-प्यासमें हूँ॥

* * *

---

[1] मृत्युसे; [2] द्वेष, बदलेकी भावना; [3] पुण्य, धर्म।

हर चन्द बगोला मुजतिर[१] है, इक जोश तो उसके अन्दर है।
इक वज्द[२] तो है इक रक़्स[३] तो है, बेचैन सही, बरबाद सही॥

* * *

सकूनें[४]क़ल्ब की दौलत कहाँ दुनियाए-फ़ानीमें[५]?
बस इक ग़फ़लत-सी आ जाती है, और वोह भी जवानीमें॥

* * *

गिरे जाते हैं हम खुद अपनी नजरोंसे, सितम ये है।
बदल जाते तो कुछ रहते, मिटे जाते हैं, ग़म ये है॥

* * *

खुशी बहुत है जहाँमें, हमारे घर न सही।
मलूल क्यों रहें दुनियाके इन्तजामसे हम?

* * *

बहरे-हस्तीमें[६] हूँ मिसाले-हुबाब[७]।
मिट ही जाता हूँ, जब उभरता हूँ॥

* * *

अपनी मिनक़ारोंसे हल्का कस रहे हैं जालका।
तायरोंपर[८] सहर[९] है, सैयादके इक़बालका॥

* * *

---

[१] परेशान; [२] तन्मयता, [३] नाच; [४] हृदयकी शान्ति, सुख-चैन; [५] असार ससारमें; [६] जीवन रूपी दरियामे; [७] बुलबुकी नाईं; [८] पक्षियों; [९] जादू।

हकीम और वैद यकसाँ हैं, अगर तशख़ीस अच्छी हो।
हमें सेहतसे मतलब है बनफ़्शा हो, या तुलसी हो॥

* * *

हास्य-रसके भी कुछ नमूने हाज़िर हैं :—

तमाशा देखिये बिजलीका, मग़रिब[1] और मशरिकमें[2]।
कलोंमें है वहाँ दाखिल, यहाँ मजहबपै गिरती है॥

* * *

तिफ़्लमें[3] बू आए क्या, माँ-बापके अतवारकी।
दूध तो डिब्बेका है, तालीम है सरकारकी॥

* * *

कर दिया 'कर्जन'ने जन, मर्दों की सूरत देखिये।
आबरू चेहरेकी सब, फ़ैशन बनाकर पोंछ ली॥

* *

मग़रबी ज़ौक़[4] है, और वज़हकी पाबन्दी भी।
ऊँटपर चढ़के थियेटरको चले है हज़रत॥

* * *

जो जिसको मुनासिब था गरदूँने[5] किया पैदा।
यारोंके लिए ओहदे, चिड़ियोंके लिए फन्दे॥

* * *

---

[1] पश्चिम (यूरोप); [2] पूरबमें (भारतमें), [3] बालकमें; [4] शौक, [5] आकाशने।

पाकर ख़िताब नाचका भी ज़ौक़[1] हो गया।
'सर' हो गये, तो 'बॉल'का भी शौक़ हो गया॥

* * *

बोला चपरासी जो मैं पहुँचा ब-उम्मीदे सलाम—
"फाँकिये ख़ाक आप भी, साहब हवा खाने गये"।

* * *

ख़ुदाकी राहमें अब रेल चल गई 'अकबर'!
जो जान देना हो अंजनसे कट मरो इक दिन॥

* * *

क्या ग़नीमत नहीं ये आज़ादी?
साँस लेते हैं, बात करते हैं!!

* * *

तङ्ग इस दुनियासे दिल दौरेफ़लकमें आगया।
जिस जगह मैंने बनाया घर, सड़कमें आगया॥

पुरानी रौशनीमें औ नईमें, फ़र्क़ इतना है।
उसे किश्ती नहीं मिलती, इसे साहिल[2] नहीं मिलता॥

* * *

दिलमें अब नूरे-ख़ुदाके दिन गये।
हड्डियोंमें फ़ॉस्फ़ोरस देखिये॥

* * *

---

[1] शौक़; [2] किनारा।

मेरी नसीहतोंको सुनकर वो शोख बोला —
"नेटिवकी क्या सनद है, साहब कहे तो मानूं ॥"

* * *

नूरे-इस्लामने समझा था मुनासिब पर्दा ।
शमए-ख़ामोशको[1] फ़ानूसकी हाजत क्या है ?

* * *

मेरे सय्यादकी तालीमकी है धूम गुलशनमें ।
यहाँ जो आज फँसता है, वो कल सैयाद होता है ॥

* * *

बे-परदा नजर आईं, जो कल चन्द बीबियाँ,
'अकबर' जमींमें गैरते कौमीसे गड़ गया ।
पूछा जो उनसे—"आपका परदा कहाँ गया ?"
कहने लगीं, कि "अक्लपे मरदों की पड़ गया" ॥

* *

तालीम लड़कियोंकी जरूरी तो है मगर,
खातूने-खाना[2] हों, वे सभाकी परी न हों ।

* *

जो इल्मो[3] मुत्तक़ी[4] हों, जो हों उनके मुन्तज़िम ।
उस्ताद अच्छे हों, मगर 'उस्ताद जी' न हों ॥

* * *

---

[1] बुझे हुए दीपकको, [2] सद्गृहस्थ, सुशीला ।
[3] विद्वान, [4] सदाचारी ।

तालीमेदुख्तरांसे[1] ये उम्मीद है ज़रूर।
नाचे दुल्हन खुशीसे खुद अपनी बरातमें ॥

* * *

फ़िरङ्गीसे कहा पेन्शन भी लेकर बस यहीं रहिये।
कहा "जीनेको आये हैं, यहाँ मरने नहीं आये ॥"

* * *

हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले-ज़ब्ती समझते हैं—
कि जिनको पढ़के, लड़के बापको खब्ती समझते हैं ॥

* * *

क़द्रदानोंकी तबीयतका अजब रङ्ग है आज।
बुलबुलोंको है ये हसरत, कि वे उल्लू न हुए ॥

* * *

बर्क़के लैम्पसे आँखोंको बचाये अल्लाह।
रौशनी आती है, और नूर चला जाता है ॥

* * *

कौन्सिलमें सवाल होने लगे।
क़ौमी-ताक़तने जब जवाब दिया ॥

* * *

हरमसराकी[2] हिफ़ाज़तको तेग़ ही न रही।
तो काम देंगी यह चिलमनकी तीलियाँ कबतक ?

* * *

---

[1] लडकियोकी शिक्षासे; [2] अन्त.पुरकी।

ख़ुदाके फ़ज़्लसे बीबी-मियाँ, दोनों मुहज़्ज़ब हैं।
हिजाब उनको नही आता, इन्हें गुस्सा नही आता ॥

* * *

मालगाड़ीपै भरोसा है जिन्हें ऐ 'अकबर'!
उनको क्या ग़म है गुनाहोंकी गिराँबारीका ?

* * *

ख़ुदाकी राहमें बेशर्त करते थे सफ़र पहले।
मगर अब पूछते हैं, रेलवे इसमें कहाँ तक है ?

* * *

मय भी होटलमें पियो, चन्दा भी दो मस्जिदमें।
शेख़ भी ख़ुश रहें, शैतान भी बेज़ार न हो ॥

* * *

ऐशका भी ज़ौक, दींदारीकी शुहरतका भी शौक।
आप म्यूज़िक-हॉलमें कुरआन गाया कीजिये ॥

* * *

गुले-तस्वीर किस ख़ूबीसे गुलशनमें लगाया है।
मेरे सैयादने बुलबुलको भी उल्लू बनाया है ॥

* * *

मछलीने ढील पाई है, लुकमेपै शाद है।
सैयाद मुतमइन है, कि काँटा निगल गई ॥

* *

क्योंकर ख़ुदाके अर्शके क़ायल हों यह अज़ीज़ ?
जुग़राफ़ियेमें अर्शका नक़्शा नहीं मिला ॥

* * *

ज़वाले-क़ौमकी इब्तदा वही थी कि जब—
तिजारत आपने की तर्क, नौकरी कर ली।

* * *

क़ौमके ग़ममें डिनर खाते हैं हुक्कामके साथ।
रंज लीडरको बहुत है, मगर आरामके साथ ॥

* * *

जान ही लेनेकी हिकमतमें तरक़्क़ी देखी।
मौतका रोकनेवाला कोई पैदा न हुआ ॥

* * *

तालीमका शोर ऐसा, तहज़ीबका गुल इतना।
बरकत जो नहीं होती, नीयतकी ख़राबी है ॥

* * *

तुम बीबियोंको मेम बनाते हो आजकल।
क्या गम जो हमने मेमको बीबी बना लिया ?

* * *

नौकरोंपर जो गुज़रती है, मुझे मालूम है।
बस करम कीजे, मुझे बेकार रहने दीजिये ॥

३० जुलाई १९४४

१२

डॉक्टर सर शेख़ मुहम्मद 'इक़बाल'

[सन् १८७५ से १९३७ ई० तक]

वर्त्तमान युगके प्रवर्त्तक आज़ाद और हाली उर्दू-शायरीमे एक क्रान्ति लानेमें सफल हुए। शायरीमें आशिकाना गजलोके अतिरिक्त कौमोके उत्थान-पतनका भी दिग्दर्शन हो सकता है, छोटी-छोटी शिक्षाप्रद बातें भी नज्म हो सकती है, यह नक्श तो जहननशीन करनेमे वे कामयाब हुए, पर यही नक़्श रङ्ग भर देनेपर मुँहबोलती तसवीर भी बन सकती है, यह उनके बसका काम नही था। इसके लिए बडे मुलझे हुए चित्रकारोकी आवश्यकता थी। और सौभाग्यसे उर्दू-शायरीको दो ऐसे चित्रकार मिले कि उनकी कूचीने उर्दू-शायरीको ऊपाका अनुपम सौन्दर्य दे दिया। उनकी इस कलापर उर्दूको ही नही, समूचे भारत-वर्षको अभिमान है। वे अमर चित्रकार इकबाल और चकबस्त थे।

आज़ाद और हालीकी शायरीमें सचाई, सादगी और नवीनता थी। इक़बाल और चकबस्तने उसमे कल्पना, भाव, भाषा और उपमाके ऐसे रंग भरे कि लोग सकतेमे आगए। प्रकृति-वर्णन और दार्शनिक नवीन सम्मिश्रण करके चार चाँद लगा दिए। देशकी दुर्दशाका चित्र खींचकर पत्थर-हृदय पिघला दिए। दीन-दुखियोंकी ओरसे सबसे पहले वोह दर्दभरी सदा दी कि कलेजा मुँहको आने लगा। क़ौमोंकी दयनीय स्थिति-का वर्णन किया, तो लोग [illegible] रो पड़े। संगठन और स्वतन्त्रताके वोह मन्त्र फूँके कि शत्रुओंके हृदय दहल गए।

'इकबाल'का इकबाल[1] आस्माने-शायरीपर सबसे अधिक चमका है। वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त शायर थे। उन्हे शायरीकी बदौलत जर्मन सरकारने 'डॉक्टरेट' और भारत सरकारने 'सर' जैसी सर्व्वोच्च उपाधिसे विभूषित किया था। भारतीय सपूतोमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरके बाद इकबाल ही है, जिन्हे शायरीकी बदौलत इतनी प्रतिष्ठा मिली।

इकबाल सन् १८७५मे स्यालकोट (पजाव)मे पैदा हुए। वे बचपनसे ही मेधावी थे। स्कूल-जीवनसे ही शेर कहने लगे। एम० ए०की परीक्षामे यूनिवर्सिटी भरमे प्रथम आए। १९०५मे बैरिस्टरीकी सनद लेने इङ्गलैण्ड गए और वहाँसे १९०८मे सफलता प्राप्त करके लाहौरमे आकर वकालत करने लगे।

इकबाल शायरकी हैसियतसे जनताके सामने सबसे पहले १८९९में आए, जब कि उन्होंने एक वार्षिकोत्सवपर 'नालये-यतीम' कविता पढकर लोगोंको चकित कर दिया था। इसके एक वर्ष बाद सहपाठियोके आग्रहपर 'हिमालय' नामक कविता पढी तो लोग आत्मविभोर हो उठे और इस उदीयमान युवककी ओर ललचाई नजरोसे देखने लगे। इकबालकी ख्याति तभीसे दिन-दूनी रात-चौगुनी फैलती चली गई।

इकबालकी शायरीके तीन दौर है। पहला विलायत जानेसे पूर्व १८९९से १९०५ तक। दूसरा विलायत-प्रवास १९०५से १९०८ तक। तीसरा भारत आनेपर १९०८से जीवन पर्यन्त १९३७ तक।

पहला दौर

इस दौरमें इकबाल केवल भारतीय नजर आते है। भारतीय-हित उनका ईमान, हिन्दू-मस्लिम-प्रेम उनका मजहब, स्वतत्रता और सङ्गठन

---

[1] भाग्य।

उनका ध्येय और वतनका राग उनकी हृदयतन्त्रीकी झनकार है। बच्चेसे कहलवाते है :—

यूनानियोंको जिसने हैरान कर दिया था।
सारे जहाँको जिसने इल्मोहुनर दिया था॥

मिट्टीको जिसकी हक़ने ज़रका असर दिया था।
तुर्कोंका जिसने दामन हीरोंसे भर दिया था॥
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है॥

स्कूली लडकोकी जिह्वापर बैठकर गाते है :—

सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा॥

मज़हब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥

कुछ बात है जो हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमाँ हमारा॥

और तो और, परिन्दोंकी फ़रियाद बन कर कहते है :

जबसे चमन छुटा है यह हाल हो गया है,
दिल ग़मको खा रहा है ग़म दिलको खा रहा है।

गाना इसे समझकर ख़ुश हों न सुननेवाले,
दुक्खे हुए दिलोंकी फ़रियाद यह सदा है॥

आज़ाद मुझको कर दे ओ क़ैद करनेवाले !
मैं बेज़बाँ हूँ कैदी तू छोड़कर दुआ ले॥

मजहवी दीवाने, मुल्ले-पण्डित, जो गाय और वाजा, हलाल और झटका, मन्दिर और मस्जिदके झगड़ोको खड़ा करके देशोन्नतिमे वाधक वनते है, उनको आडे हाथ लेते हुए फर्माते है :—

सच कह दूँ ऐ बिरहमन ! गर तू बुरा न माने ।
तेरे सनमकदोंके[1] बुत हो गये पुराने ॥
अपनोंसे बैर रखना तूने बुतोंसे सीखा ।
जङ्गोजदल[2] सिखाया वाइजको भी खुदाने ॥
तङ्ग आके मैंने आखिर दैरोहरमको[3] छोड़ा ।
वाइजका वाज[4] छोड़ा, छोड़े तेरे फ़िसाने ॥

पत्थरकी मूरतोंमें समझा है तू खुदा है ।
खाके-वतनका मुझको हर जर्रा देवता है ॥

आ, ग़ैरियतके[5] पर्दे इकबार फिर उठा दें ।
बिछुड़ोंको फिर मिला दें, नक़्शे-दुई मिटा दें ॥
सूनी पड़ी हुई है मुद्दतसे दिलकी बस्ती ।
आ इक नया शिवाला इस देशमें बना दें ॥
दुनियाके तीरथोंसे ऊँचा हो अपना तीरथ ।
दामाने-आस्माँसे उसका कलस मिला दें ॥
हर सुबह उठके गायें मनतर वोह मीठे-मीठे ।
सारे पुजारियोंको मय प्रीतकी पिला दें ॥

शक्ति भी, शान्ति भी भक्तोंके गीतमें है ।
धरतीके वासियोंकी मुक्ती पिरीतमें है ॥

'आफताबे सुबुह' कवितामे कितने विशाल-हृदयका परिचय मिलता है :—

---

[1] मन्दिरोंके, [2] लडाई-झगड़ा ।
[3] मन्दिर-मस्जिदको, [4] उपदेश ।
[5] ग़ैरपनेके ।

शौके-आज़ादीके दुनियामें न निकले हौसले,
ज़िन्दगी भर कैदे जंजीरे तअल्लुकमें रहे।
ज़ेरोबाला[1] एक है तेरी निगाहोंके लिए,
आरज़ू है कुछ इसी चश्मे तमाशाकी मुझे॥
आँख मेरी औरके ग़ममें सरश्क[2]आबाद हो।
इम्तियाज़े[3] मिल्लतो[4] आईंसे[5] दिल आज़ाद हो॥

सदमा आ जाये हवासे गुलकी पत्तीको अगर,
अश्क बनकर मेरी आँखोसे टपक जाये असर।
दिलमें हो सोज़े-मुहब्बतका[6] वोह छोटासा शरर[7],
नूरसे[8] जिसके मिले राज़े हक़ीक़तकी[9] ख़बर॥
शाहिदे-कुदरतका[10] आईना हो दिल, मेरा न हो।
सरमें जुज़[11] हमदर्दिए इन्साँ, कोई सौदा न हो॥

'सर सैयदकी लोहे तुरबत' कवितामे किस ख़ूबीसे अमनकी भीख माँगते है :—

वा[12] न करना फ़िर्क़ाबन्दीके लिए अपनी ज़बाँ,
छिपके है बैठा हुआ हंगामिए महशर[13] यहाँ।
वस्लके[14] सामान पैदा हों तेरी तहरीरसे,
देख कोई दिल न दुख जाये तेरी तक़रीरसे॥
महफ़िले-नौमें पुरानी दास्तानोको न छेड़।
रंगपर जो अब न आएँ उन फ़िसानोको न छेड़॥

---

[1] नीच-ऊँच, [2] आँसुओसे, [3] भेद-भाव, [4] मज़हब, [5] कानूनसे; [6] प्रेमाग्निका, [7] चिनगारी, [8] प्रकाशसे, [9] वास्तविकताकी; [10] प्राकृतिक-सौन्दर्यकी देवी का, [11] सिवा, केवल, [12] खोलना; [13] प्रलयका तूफ़ान, [14] मेल-मिलाप के।

'तस्वीरेदर्द'मे तो इकबाल सचमुच कराह उठे है :—

निशाने बर्गेगुल तक भी न छोड़ इस बागमें गुलचीं,
तेरी क़िस्मतसे रज्म आराइयाँ[1] है बाग़बानोंमें ॥

छुपाकर आस्तीमें बिजलियाँ रक्खी है गर्दूने।
अनादिल बाग़के ग़ाफ़िल न बैठें आशियानोंमें ॥

सुन ऐ गाफ़िल ! सदा मेरी यह ऐसी चीज़ है जिसको,
वजीफ़ा जानकर पढ़ते हैं ताइर[2] बोस्तानोंमें[3] ॥

वतनकी फ़िक्र कर नादाँ ! मुसीबत आनेवाली है,
तेरी बरबादियोंके मशविरे है आस्मानोंमें ॥

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँवालो !
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानोंमें !!

जो है परदोंमें पिन्हाँ चश्मेबीना देख लेती है।
ज़मानेकी तबीयतका तक़ाज़ा देख लेती है ॥

× × ×

किया रफ़अतकी[4] लज़्ज़तसे न दिलको आश्ना तूने।
गुज़ारी उम्र पस्तीमें मिसाले नक़्शेपा तूने ॥

फ़िदा करता रहा दिलको हसीनोंकी अदाओंपर।
मगर देखी न इस आईनेमें अपनी अदा तूने ॥

दिखा वोह हुस्ने आलम सोज़, अपनी चश्मेपुरनमको।
जो तड़पाता है परवानेको, रुलवाता है शबनमको ॥

---

[1] लडाई-झगडे; [2] पक्षी, [3] बागोमे ।
[4] उच्चताकी ।

शजर[1] है फिर्क़ा-आराई[2] तअस्सुब[3] है समर[4] इसका।
ये वोह फल है कि जन्नतसे निकलवाता है आदमको॥

फिरा करते नहीं मजरूहे-उल्फ़त[5] फ़िक्रे-दरमाँमें[6]।
ये ज़ख़्मी आप कर लेते हैं पैदा अपनी मरहमको॥

मुहब्बतके शररसे दिल सरापा नूर होता है।
ज़रा-से बीजसे पैदा रियाज़ेतूर[7] होता है॥

दवा हर दुखकी है मजरूहे तेग़ेआरज़ू रहना।
इलाजे ज़ख़्म है आज़ादे, अहसाने रफ़ू रहना॥

थमें क्या दीदएगिरियाँ[8] वतनकी नौहाख़्वानीमें[9]।
इबादत चश्मेशाइरकी है हरदम बावज़ू रहना॥

बनाएँ क्या समझकर शाख़े-गुलपर आशियाँ अपना।
चमनमें आह! क्या रहना, जो हो बे-आबरू रहना॥

न रह अपनोंसे बे परवाह इसीमें ख़ैर है अपनी।
अगर मंज़ूर है दुनियामें ओ बेगानाख़ू[10]! रहना॥

मुहब्बत ही से पाई है शफ़ा बीमार क़ौमोंने।
किया है अपने बख़्तेख़ुफ़्तहको बेदार क़ौमोंने॥

शमअपर कहते हुए उसकी किस ख़ूबीपर नज़र जाती है :—

---

[1] पेड, [2] जात-पाँतका भेद; [3] पक्षपात।
[4] फल; [5] प्रेमके घायल।
[6] चिकित्साकी चिन्तामें; [7] प्रकाशका पर्वत।
[8] आँसू, [9] व्यथा वर्णन करनेमें।
[10] अपरिचित-जैसा, निर्मोही।

यक है तेरी नजर सिफ़ते[1] आशिकाने राज[2],
मेरी निगाह मायऐ आशूबे इम्तियाज[3]।
काबेमें बुतकदेमें है यकसाँ तेरी जिया[4],
मैं इम्तियाजे दैरों-हरममें फँसा हुआ ॥

है शान आहकी तेरे दूदेसियाहमें[5]।
पोशीदा कोई दिल है तेरी जलवागाहमें ॥

एक आरज़ूमे अपने हृदयकी बात किस ख़ूबीसे प्रकट की है :—

दुनियाकी महफ़िलोंसे उकता गया हूँ यारब !
क्या लुत्फ़ अञ्जुमन का जब दिल ही बुझ गया हो ॥
शोरिशसे[6] भागता हूँ दिल ढूँढ़ता है मेरा।
ऐसा सकूत जिसपर तक़रीर भी फ़िदा हो ॥
मरता हूँ खामुशीपर, यह आरज़ू है मेरी—
दामनमें कोहके[7] इक छोटा-सा झोंपड़ा हो ॥
हो हाथका सिरहाना सब्जेका हो बिछौना।
शरमाए जिससे जलवत[8] खिलवतमें[9] वोह अदा हो ॥
मानूस[10] इस क़दर हो सूरतसे मेरी बुलबुल।
नन्हें-से दिलमें उसके खटका न कुछ मेरा हो ॥
रातोंके चलनेवाले रह जाएँ थकके जिस दम।
उम्मीद उनकी मेरा टूटा हुआ दिया हो ॥

---

[1] की तरह ; [2] प्रेमियोंका भेद।
[3] भेद-भाववाली, [4] रोशनी; [5] काले धुएँमे।
[6] होहल्लासे; [7] पर्वतके; [8] भीड, महफिल।
[9] एकातमे, [10] परिचित।

बिजली चमकके उनको कुटिया मेरी दिखा दे।
जब आस्माँपर हरसू बादल घिरा हुआ हो॥
फूलोंको आए जिस दम शबनम वज़ू कराने।
रोना मेरा वज़ू हो, नाला मेरी दुआ हो॥
हर दर्दमन्द दिलको रोना मेरा रुला दे।
बेहोश जो पड़े हैं, शायद उन्हें जगा दे!

इसी दौरके कुछ और नमूने :—

हुस्न हो क्या ख़ुदनुमाँ[1] जब कोई माइल[2] ही न हो।
शमअ़को जलनेसे क्या मतलब, जो महफ़िल ही न हो॥

× × ×

कब जबाँ खोली हमारी लज़्ज़ते गुफ़्तारने।
फूँक डाला जब चमनको आतिशे पैकारने॥

× × ×

यह दौर नुक्ताचीं[3] है कहीं छुपके बैठ रह।
जिस दिलमें तू मुकीं है वहीं छुपके बैठ रह॥

× × ×

तू अगर अपनी हकीकतसे ख़बरदार रहे।
न सियहरोज़ रहे फिर न सियहकार रहे॥

× × ×

अजब वाइज़की दींदारी है यारब!
अदावत है उसे सारे जहाँसे॥

---

[1] प्रदर्शनीय, [2] प्रशंसक, गुण-ग्राही; [3] आलोचक।

कोई अब तक न यह समझा कि इन्साँ—
कहाँ जाता है, आता है कहाँसे ?
बड़ी बारीक हैं वाइजकी चालें।
लरज जाता है आवाजे अजाँसे ॥

× × ×

लाऊँ वोह तिनके कहींसे आशियानेके लिए।
बिजलियाँ बेताब हों जिनको जलानेके लिए ॥
दिलमें कोई इस तरहकी आरज़ू पैदा करूँ।
लौट जाए आस्माँ मेरे मिटानेके लिए ॥
पास था नाकामिए सैयादका ऐं हमसफ़ीर !
वर्ना मैं, और उड़के आता एक दानेके लिए !

× × ×

है तलब बेमुद्दआ होनेकी भी इक मुद्दआ।
मुर्ग़-दिल दामे-तमन्नासे रिहा क्योंकर हुआ ?

× × ×

न पूछो मुझसे लज्जत खानुमा बरबाद रहनेकी।
नशेमन सैकड़ों मैंने बनाकर फूँक डाले हैं ॥
नहीं बेगानगी अच्छी रफ़ीक़ेराहे मंजिलसे।
ठहर जा ऐ शरर ! हम भी तो आखिर मिटने वाले हैं ॥

× × ×

अगर कुछ आश्ना होता मजाके-जिबहसाईसे[१]।
तो संगे आस्ताने[२]काबा जा मिलता जबीनोंमें ॥

---

[१] मस्तक टेकने के आनन्द से।
[२] वोह काबेका पत्थर जिसे हर यात्री बोसा देता है, मस्तक टेकता है।

कभी अपना भी नज्जारा किया है तूने ऐ बुलबुल !
कि लैलाकी तरह तू ख़ुद भी है महमिल-नशीनोंमें ॥

मुझे रोकेगा तू ऐ नाख़ुदा ! क्या ग़र्क होनेसे ।
कि जिनको डूबना हो डूब जाते हैं सफ़ीनोंमें ॥

किसी ऐसे शररसे फूँक अपने ख़िरमने दिलको ।
कि ख़ुरशीदे कयामत भी हो तेरे खोशहचीनोंमें ॥

× × ×

बिठाके अर्शपै रक्खा है तूने ऐ वाइज़ !
ख़ुदा वोह क्या है जो बन्दोंसे अहतराज़ करे ॥

मेरी निगाहमें वोह रिन्द ही नहीं साकी !
जो होशियारी-ओ-मस्तीमें इम्तयाज़ करे ॥

कोई यह पूछे कि वाइज़का क्या बिगड़ता है ।
जो बे-अमल पै भी रहमत वोह बेनियाज़ करे ॥

× × ×

है मेरी ज़िल्लत ही कुछ मेरी शराफतकी दलील ।
जिसकी गफलतको मलक रोते हैं वोह ग़ाफ़िल हूँ मैं ॥

बज़्मेहस्ती ! अपनी आराइश पै तू नाज़ाँ न हो ।
तू तो इक तसवीर है महफिलकी और महफिल हूँ मैं ॥

× × ×

मजनूँने शहर छोड़ा तू सहरा भी छोड़ दे ।
नज्जारेको हविस हो तो लैला भी छोड़ दे ॥

वाइज़ ! कमाले तर्कसे मिलती है याँ मुराद ।
दुनिया भी छोड़ दी है तो उक़बा भी छोड़ दे ॥

तकलीदकी रविशसे तो बेहतर है ख़ुदकशी।
रस्ता भी ढूँढ़, खिज्रका सौदा भी छोड़ दे॥

है आशिक़ीमें रस्म अलग सबसे बैठना।
बुतख़ाना भी, हरम भी, कलीसा भी छोड़ दे॥

सौदागरी नहीं, यह इबादत ख़ुदाकी है।
ऐ बेखबर जज़ाकी तमन्ना भी छोड़ दे॥

अच्छा है दिलके साथ रहे पासबाने-अक़्ल।
लेकिन कभी-कभी उसे तनहा भी छोड़ दे॥

जीना वोह क्या जो हो नफ़सेग़ैरपर मदार।
शुहरतकी जिन्दगीका भरोसा भी छोड़ दे॥

दूसरा दौर

(१९०५से १९०८ विलायत-प्रवास तक)

इस दौरमे उन्होने बहुत कम लिखा है। इसका एक तो कारण यह था, कि बैरिस्टरीकी पढाईसे अवकाश कम मिलता था। दूसरे उन दिनो फ़ारसीकी ओर अधिक ध्यान था। अवकाश मिलनेपर फारसीमे ही तबा आज़माई करते थे। उर्दू कलामके चन्द नमूने मुलाहिज़ा हो :—

भला निभेगी तेरी हमसे क्योंकर ऐ वाइज़!
कि हम तो रस्मे मुहब्बतको आम करते है॥

मै उनकी महफ़िले-इशरतसे कॉप जाता हूँ।
जो घर को फूँक के दुनिया में नाम करते हैं॥

× × ×

गुज़र गया अब वोह दौर साक़ी, कि छुपके पीते थे पीनेवाले।
बनेगा सारा जहान मयख़ाना, हर कोई बादहख़्वार होगा।

तुम्हारी तहज़ीब अपने ख़ंजरसे आप ही ख़ुदकशी करेगी।
जो शाख़े नाज़ुकपै आशियाना बनेगा, ना पाएदार होगा।
ख़ुदाके बन्दे तो हैं हज़ारों, बनोंमें फिरते हैं मारे-मारे।
मैं उसका बन्दा बनूँगा जिसको, ख़ुदाके बन्दोंसे प्यार होगा।

तीसरा दौर

(१९०८मे विलायतसे आनेके बाद जीवन पर्यन्त १९३७ तक) इस दौरमे इकबाल साम्प्रदायिक रङ्गमें रँग गये है, और अधिकाश केवल मुस्लिम दृष्टिकोणको लेकर लिखा है। आपके 'शिकवा' और 'जबावे शिकवा' दो अत्यन्त प्रसिद्ध मुसद्दस है, जिन्होने मुसलमानोमे तो जीवन-ज्योति जलाई ही, पर उर्दू-शायरीमे भी एक नवीन अध्याय उपस्थित कर दिया। मुसलमानोने ख़ुदाके लिए क्या-क्या कार्य किए और ख़ुदाने उसके उपलक्षमे क्या व्यवहार किया, यही चित्रण इकवालने ३१ बन्दोमे किया है। नमूनेके ८ बन्द मुलाहिज़ा हो —

शिकवा

हमसे पहले था अजब तेरे जहाँका मंज़र[1],
कही मस्जूद[2] थे पत्थर कहीं माबूद[3] शजर[4]।
ख़ूगरे पैकरे महसूस थी इन्साँकी नज़र,
मानता फिर कोई अनदेखे ख़ुदाको क्योंकर ?
तुझको मालूम है लेता था कोई नाम तेरा ?
कुव्वते बाज़ूए मुस्लिमने किया काम तेरा॥

---

[1] दृश्य, [2] पूज्य, [3] पूज्य।
[4] पेड़।

बस रहे थे यही सलजूक़ भी तूरानी भी,
अहलेचीं चीनमें, ईरानमें सासानी भी।
इसी मामूरेमें आबाद थे यूनानी भी,
इसी दुनियामें यहूदी भी थे नुसरानी भी॥

पर तेरे नाममें तलवार उठाई किसने?
बात जो बिगड़ी हुई थी वोह बनाई किसने?

थे हमीं एक तेरे मार्का-आराओंमें,
ख़ुश्कियोंमें कभी लड़ते कभी दरियाओंमें।
दीं अज़ानें कभी यूरुपके कलीसाओंमें,
कभी अफ़रीकाके तपते हुए सेहराओंमें॥

शान आँखोंमें न चुभती थी जहाँदारोंकी।
कलमा पढ़ते थे हम छाओंमें तलवारोंकी।

हम जो जीते थे, तो जंगोंकी मुसीबतके लिए,
और मरते थे तेरे नामकी अज़मतके लिए।
थी न कुछ तेग़ज़नी अपनी हुकूमतके लिए,
सरबकफ़ फिरते थे क्या दहरमें दौलतके लिए?

क़ौम अपनी जो ज़रोमाले-जहाँपर मरती।
बुतफ़रोशीके एवज़ बुतशिकनी क्यों करती?

टल न सकते थे अगर जंगमें अड़ जाते थे,
पाँव शेरोंके भी मैदाँसे उखड़ जाते थे।
तुझ से सरकश हुआ कोई तो बिगड़ जाते थे,
तेग़ क्या चीज़ है हम तोप से लड़ जाते थे॥

नक़्श तौहीदका हर दिलपै बिठाया हमने ।
ज़ेरे ख़ंजर भी यह पैगाम सुनाया हमने ॥

* * *

सुफ़्ये दहरसे बातिलको मिटाया हमने,
नोए इन्साँको गुलामीसे छुड़ाया हमने ।
तेरे काबेको जबीनोंसे बसाया हमने,
तेरे कुरआनको सीनेसे लगाया हमने ॥

फिर भी हमसे यह गिला है कि वफादार नही ।
हम वफ़ादार नही, तू भी तो दिलदार नहीं ॥

उम्मतें और भी है उनमें गुनहगार भी है,
इज्जवाले[1] भी है मस्तेमयपिन्दार[2] भी है ।
उनमें काहिल भी हैं, गाफिल भी हैं हुशियार भी हैं,
सैकडों हैं कि तेरे नामसे बेजार भी है ॥

रहमतें है तेरी अगियारके काशानोंपर[3] ।
बर्क़[4] गिरती है तो बेचारे मुसलमानोंपर ॥

बुत सनमखानोंमें कहते है, "मुसलमान गए"
है ख़ुशी उनको कि काबेके निगहबान गए ।
मंजिले-दहरसे ऊँटोंके, हदीख्वान गए,
अपनी बगलोंमें दबाए हुए कुरआन गए ॥

ख़न्दाजन कुफ़्र है, अहसास तुझे है कि नही ?
अपनी तौहीदका कुछ पास तुझे है कि नही ?

---

[1] माननीय, [2] घमण्डके नशेमे चूर; [3] महलोपर;
[4] बिजली ।

. . . .

कभी हमसे कभी गैरोंसे शनासाई है।
बात कहनेकी नहीं,—तू भी तो हरजाई है॥

इस शिकवेके सम्बन्धमे प्रोफेसर 'एजाज' साहब लिखते है :—

"इकबालने निहायत बेबाकीके साथ अपनी मुसीबतो और दुशवारियोका गिला खुदासे किया है। बरबादियोंकी तफ़सील बताई और सबका जिम्मेदार भी उसको ठहराया। इस्लामका अहसान भी उसपर जताया और फिर उसकी बेमेहरीका गिला भी किया....इस नये रुजहानने बताया कि जो कुछ कहना हो और जिससे कहना हो, ख्वाह वोह कोई हो, अगर जोशे सदाकत और खुलूसनीयत है तो उसकी हशमत व सतवतसे दबकर खामोश नही हो जाना चाहिए। इकबालका शिकवा इस मारकेमे गालिबन पहली नज्म है। शेरियत और अन्दाजे-बयानके लिहाजसे भी बेमिसाल है। और आज़ादिये-गुफ्तारका सगेबुनियाद भी। . . शिकवेसे ही उर्दू-शायरीने फरियादका पहलू बदलना सीखा और आइन्दा चलकर बड़े-से-बडे हाकिम व साहिबे जब्रोअख्तियारसे कल्लेबकल्ले गुफ्तगू करनेकी सलाहियत पाई[*]।"

जवाबे-शिकवा

यह उक्त शिकवेका जवाब इकबालने खुदाकी ओरसे ३६ बन्दोमे लिखा है। इसमे गैबसे कहलवाया है कि मुसलमान पहलेसे मुसलमान ही न रहे कि उन्हे कुछ दिया जाय। हाँ, अगर वे चाहे तो सच्चे मुसलमान बनकर ले सकते है। इस नज्ममे खूबी यह है कि इकबाल जो मुसलमानोंमे त्रुटियाँ देखते है और उनको दूर करनेके लिए जो सुधार चाहते है, वह

---

[*]नए अदबी रुजहानात, पृष्ठ ५०-५१।

स्वयम् अपने मुँहसे न कहकर, ईश्वरीय-सन्देशके रूपमे पेश करते है और वह भी अनोखे ढङ्गसे। यानी पहले मुसलमानोकी ओरसे 'शिकवे'मे उनकी मुसीबतोंकी शिकायत करते है और उन शिकायतोका जो जवाब ईश्वरकी ओरसे इकबालको मिलता है वही 'जवाबे-शिकवा'मे नज्म है। यानी प्रत्यक्ष रूपमे हालीकी तरह मुसलमानोको न तो गैरत दिलाते है, न किसी व्याख्यानदाताकी तरह फटकारते है, न अकबरकी तरह चुटकी लेते है; बल्कि मुसलमानोकी तरफसे शिकायत करनेपर जो उन्हे फटकार सुननी पडी है, उसे वह सकुचाते हुए जाहिर करते है। इकबालके इस सुधारके नवीन उपायने सचमुच जादूका काम किया है। वे जो कुछ कहना चाहते थे, कह भी दिया, मगर किस ख़ूबीसे ?

'हो जाएँ ख़ून लाखों लेकिन लहू न निकले।'

जवाबे-शिकवाके तीन बन्द मुलाहिज़ा हो :—

जिनको आता नहीं दुनियामें कोई फ़न तुम हो,
नहीं जिस क़ौमको परवाए-नशेमन[1] तुम हो।
बिजलियाँ जिसमें हो आसूदा[2] वोह ख़िरमन तुम हो,
बेच खाते है जो इसलाफके[3] मदफन[4] तुम हो॥
हो निको[5]नाम जो क़ब्रोंको तिजारत करके।
क्या न बेचोगे जो मिल जाएँ सनम पत्थरके ?

मुनफअत[6] एक है इस कौमकी, नुकसान भी एक,
एक ही सबका नबी, दीन भी, ईमान भी एक।

---

[1] अपने घरकी चिन्ता; [2] सन्तुष्ट।
[3] बाप-दादाके; [4] कब्रिस्तान।
[5] प्रसिद्ध, [6] लाभ।

हरमेपाक[1] भी, अल्लाह भी, क़ुरआन भी एक,
कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसलमान भी एक ?

फ़िर्क़ाबन्दी है कहीं और कहीं जाते हैं।
क्या ज़मानेमें पनपनेकी यही बातें हैं ?

× × ×

अक़्ल है तेरी सिपर[2] इश्क़ है शमशीर तेरी,
मेरे दरवेश ! ख़िलाफ़त है जहाँगीर[3] तेरी।

मासिवा अल्लाहके[4] लिए आग है तकबीर[5] तेरी,
तू मुसल्माँ हो तो तक़दीर है तदबीर तेरी॥

की मुहम्मदसे वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं।
यह जहाँ चीज़ है क्या, लोहो क़लम तेरे हैं॥

दुआ

या रब ! दिले-मुस्लिमको वोह जिन्दा तमन्ना दे।
जो क़ल्बको गरमा दे, जो रूहको तड़पा दे॥

भटके हुए आहूको[6] फिर सूएहरम[7] ले चल।
इस शहरके खूगरको[8] फिर वुसअ़तेसहरा[9] दे॥

इस दौरकी ज़ुल्मतमें[10] हर क़ल्बे परेशाँको[11]।
वोह दाग़ेमुहब्बत दे जो चाँदको शरमा दे॥

---

[1] पवित्र मस्जिद; [2] ढाल; [3] विश्वव्यापी; [4] नास्तिकके, [5] अल्लाहो अकबरका इस्लामी नारा; [6] हिरनको; [7] मस्जिदकी ओर, [8] आदीको; [9] जङ्गलोका विशाल क्षेत्र, [10] अँधेरेमें; [11] परेशान दिलको।

रफ़अतमें[1] मक़ासिदको हमदोशेसुरैया[2] कर।
ख़ुद्दारिए[3]साहिल[4] दे, आज़ादिए-दरिया[5] दे॥

शमअ़

इस शीर्षकमे इकबालने ८१ अशआर बहुत ही महत्वपूर्ण और गम्भीर कहे हैं। कुछ नमूने दिए जाते है :—

वाएनाकामी[6] मताएकारवाँ[7] जाता रहा।
कारवाँके दिलसे अहसासे ज़ियाँ[8] जाता रहा॥

जिनके हंगामोंसे[9] थे आबाद वीराने कभी।
शहर उनके मिट गए आबादियाँ बन हो गईं॥

फ़र्द[10] कायम रब्तोमिल्लतसे[11] है तनहा कुछ नही।
मौज है दरियामें और बेरूनेदरिया[12] कुछ नहीं॥

* * *

तू अगर ख़ुद्दार[14] है मिन्नतकशे[15] साकी न हो।
ऐन दरियामें हुबाब[16]आस नगूँ पैमाना[17] कर॥

कैफियत बाकी पुराने कोहो[18] सहरामें[19] नहीं।
है जुनूँ तेरा नया, पैदा नया वीराना कर॥

---

[1] बलन्दीसे; [2] सुरैय्या नामी नक्षत्र जितना ऊँचा; [3, 4] नदीके तीरकी तरह दृढ तथा स्थिर स्वाभिमान, [5] नदीकी स्वतंत्रता, [6] हाय, दुर्भाग्य; [7] यात्री-दलका माल असबाब, [8] लुटनेका अहसास; [9] शोरोगुलसे; [10] मानव, [11] मेल-मिलापसे; [12] दरियाके बाहर; [13] स्वाभिमानी, [14] प्रार्थी, [15] बुलबुलेकी तरह; [16] मद्यपानका पात्र; [17] पर्वत, [18] जङ्गलमे।

ख़ाकमें तुझको मुक़द्दरने मिलाया है अगर।
तू असा[1]उफ़्तादसे पैदा मिसाले दाना कर॥

इस चमनमें पैरवे बुलबुल हो या तलमीज़े गुल[2]।
या सरापा नाला बन जा या नवा[3] पैदा न कर॥

इक़बालने निम्न अशआर लिखकर साबित किया है कि आत्म ही परमात्मा बननेकी क्षमता रखती है और उन लोगोको संचेत किया जो परमात्माको ही कर्त्ता-धर्त्ता और भाग्यविधाता समझकर दुखोंके शिकार बने हुए भी कहते रहते हैं:—

शिकवा न बेशोकमका, तक़दीरका गिला है।
राज़ी है हम उसीमें, जिसमें तेरी रज़ा है॥

इकबाल इस अन्धविश्वास और अकर्मण्यताको दूर करनेके लिए फर्माते है .—

आश्ना[4] अपनी हक़ीक़तसे हो ऐ दहक़ाँ[5]! ज़रा।
दाना तू, खेती भी तू, बाराँ भी तू, हासिल भी तू॥

आह! किसकी जुस्तजू आवारा रखती है तुझे।
राह तू, रहरव[6] भी तू, रहबर[7] भी तू, मंज़िल भी तू॥

काँपता है दिल तेरा अन्देशएतूफाँसे क्या?
नाख़ुदा[8] तू, बहर[9] तू, कश्ती भी तू, साहिल[10] भी तू॥

वाए नादानी! कि तू मोहताजे साक़ी हो गया।
मय भी तू, मीना भी तू, साक़ी भी तू, महफ़िल भी तू॥

---

[1] बिन जोते-बोए खेतसे; [2] फूलका शिष्य; [3] स्वर, आवाज; [4] परिचित; [5] किसान; [6] यात्री; [7] मार्गप्रदर्शक; [8] मल्लाह; [9] समन्दर दरिया; [10] किनारा।

बेखबर! तू जौहरेआईनए[1] अय्याम[2] है।
तू ज़मानेमें ख़ुदाका आख़िरी पैग़ाम है॥

× × ×

तू ही नादाँ चन्द कलियोंपर क़नाअत[3] कर गया।
वर्ना गुलशनमें इलाजे तंगिएदामाँ[4] भी है॥

× × ×

आँख जो कुछ देखती है लबपै आ सकता नही।
महवे-हैरत हूँ यह दुनिया क्यासे क्या हो जाएगी॥

फूल

तुझे क्यों फ़िक्र है ऐ गुल! दिले सदचाक[5] बुलबुलकी।
तू अपने पैरहनके चाक तो, पहले रफ़ू कर ले॥

तमन्ना आबरूकी हो, अगर गुलज़ारे हस्तीमें।
तो काँटोंमें उलझकर ज़िन्दगी करनेकी ख़ू कर ले॥

सनोबर बाग़में आज़ाद भी है, पाबगिल[6] भी है।
इन्हीं पाबन्दियोंमें हासिल आज़ादीको तू कर ले॥

नहीं यह शाने ख़ुद्दारी चमनसे तोड़कर तुझको।
कोई दस्तारमें रख ले, कोई ज़ेबेगुलू कर ले॥

इस दौरके कुछ और नमूने —

ज़िन्दगी इन्साँकी है मानिन्दे मुर्ग़े ख़ुशनवा।
शाख़पर बैठा कोई दम चहचहाया, उड़ गया॥

× × ×

[1-2] संसार रूपी शीशेकी चमक; [3] सन्तोष; [4] दामनकी संकीर्णता; [5] विदीर्ण, [6] मट्टीमे फँसी हुई।

तेरा ऐ क़ैस ! क्योंकर हो गया सोज़ेदरूँ[1] ठण्डा ?
कि लैलामें तो है अब तक वही अन्दाज़े लैलाई ॥

× × ×

एक भी पत्ती अगर कम हो तो वोह गुल ही नहीं ।
जो ख़िज़ाँ नादीदह[2] बुलबल हो, वोह बुलबुल ही नहीं ॥

× × ×

दीदए बीनामें[3] दाग़ेग़म चिराग़े सीना है ।
रूहको सामाने ज़ीनत आहका आईना है ॥

× × ×

हादसाते गमसे है इन्साको फ़ितरतको कमाल ।
ग़ाज़ह[4] है आईनएदिलके लिए गर्देमलाल[5] ॥
ग़म जवानीको जगा देता है लुत्फ़ेख्वाबसे ।
साज यह बेदार होता है इसी मिजरावसे ॥

× × ×

है जज्बे बाहमीसे क़ायम निजाम सारे ।
पोशीदा है यह नुक्ता तारोंकी जिन्दगीमें ॥

× × ×

हो सदाक़तके लिए जिस दिलमें मरनेकी तड़प ।
पहले अपने पैकरे ख़ाकीमें जाँ पैदा करे ॥

× × ×

---

[1] इश्क़की आग; [2] पतझड़से अनभिज्ञ; [3] देखनेवाली आँख; [4] पाउडर; [5] रंजोगमकी गर्द ।

यह घड़ी महशरकी है तू अरसए महशरमें है ।
पेश कर ग़ाफ़िल ! अमल कोई अगर दफ़्तरमें है ॥

× × ×

इस शराबेरंगोबूको गुलसिताँ समझा है तू ।
आह, ऐ नादाँ ! कफसको आशियाँ समझा है तू ॥

× × ×

अपने सहरामें[1] बहुत आहू[2] अभी पोशीदा हैं ।
बिजलियाँ बरसे हुए बादलमें भी ख़्वाबीदा हैं ॥

× × ×

सबक फिर पढ़ सदाक़तका, अदालतका, शुजाअतका ।
लिया जाएगा तुझसे काम दुनियाकी उमामतका ॥

× × ×

उकाबी[3] शानसे झपटे थे जो बे बालोपर निकले ।
सितारे शामको ख़ूने शफ़कमें[4] डूबकर निकले ॥
हुए मदफूने[5]दरिया जेरे दरिया तैरनेवाले ।
तमाँचे मौजके खाते थे जो, बनकर गुहर[6] निकले ॥
ग़ुबारे[7] रहगुज़र[8] है कीमियापर नाज था जिनको ।
जबीनें[9] ख़ाकपर रखते थे जो अक्सीरगर निकले ॥
हमारा नर्म[10]रौ कासिद पयामे जिन्दगी लाया ।
ख़बर देती थीं जिनको बिजलियाँ वोह बेख़बर निकले ॥

---

[1] जङ्गलमे, [2] हिरन, [3] गिद्धपक्षी; [4] सूर्यास्त समयकी लालिमामे; [5] दरियामे दफ्न, [6] मोती, [7] धूल, [8] राहगीरोकी; [9] मस्तक; [10] सुस्त ।

जहाँमें अहले ईमाँ सूरते ख़ुरशीद जीते हैं।
इधर डूबे उधर निकले, उधर डूबे इधर निकले ॥

× × ×

कभी ऐ हक़ीक़ते[१] मुन्तज़िर ! नज़र आ लिबासे[२] मिजाज़में।
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं, मेरी जबीने[३]नियाज़में ॥
जो मैं सरबसजदा हुआ कभी, तो ज़मींसे आने लगी सदा।
'तेरा दिल तो है सनमआश्ना, तुझे क्या मिलेगा नमाज़में ?'
की तर्क तगोदौ क़तरेने, तो आबरूए गोहर[४] भी मिली।
आवारगिए फ़ितरत भी गई, और कश्मकशे दरिया भी गई ॥

हास्य-रस

इकबालने मजाहिया रङ्गमे भी तबाआजमाई की है परन्तु इस रंगमे वे अकबरको न पा सके। यह उनकी तबियतके अनुकूल भी न था। भला जिस हृदयमे शोले दहकते हो, वहाँ हास्यका क्या गुजर ? फिर भी समय-समयपर मुँहका ज़ायक़ा बदलनेके लिए तफरीहन जो फर्माया है, उसके चन्द अशआर मुलाहिज़ा फर्माइए :—

शेख साहब भी तो परदेके कोई हामी नहीं।
मुफ़्तमें कॉलिजके लड़के उनसे बदज़न हो गए ॥
वाज़में फ़र्मा दिया कल आपने यह साफ़-साफ़—
"पर्दा आख़िर किससे हो जब मर्द ही ज़न हो गए ॥"

× × ×

---

[१] ईश्वरीय प्रेमका प्रतीक्षक; [२] कृत्रिम भेषमें [३] प्रेमी-मस्तिष्कमें; [४] मोतीकी प्रतिष्ठा।

यह कोई दिनकी बात है ऐ मर्दे होशमन्द !
ग़ैरत न तुझमें होगी न ज़न ओट चाहेगी ॥
आता है अब वह दौर कि औलादके एवज़ ।
कौन्सिलकी मेम्बरीके लिए वोट चाहेगी ॥

× × ×

बसते हैं हिन्दमें जो ख़रीदार ही फ़क़त ।
आग़ा भी लेके आते हैं अपने वतनसे हींग ॥

× × ×

इन्तिहा भी इसकी है, आख़िर ख़रीदें कब तलक ?
छतरियाँ, रूमाल, मफलर, पैरहन जापानसे ॥
अपनी ग़फ़लतकी यही हालत अगर क़ायम रही ।
आएँगे गस्साल काबुलसे, कफ़न जापानसे ॥

× × ×

इस दौरमें सब मिट जाएँगे, हाँ बाक़ी वह रह जाएगा ।
जो क़ायम अपनी राहपे है, और पक्का अपनी हठका है ॥
ऐ शेख़ो बिरहमन ! सुनते हो, क्या अहले बसीरत कहते हैं ?
गर्दूंने कितनी बलन्दीसे, इन क़ौमोंको दे पटका है ॥
या बाहम प्यारके जल्से थे, दस्तूरे मुहब्बत क़ायम थे ।
या बहसमें उर्दू हिन्दी है, या कुर्बानी या झटका है ॥

क़ानूने वक़्फ़के लिए लड़ते थे शेख़जी ।
पूछो तो वक़्फ़के लिए है जायदाद भी !

जान जाए हाथसे जाए न सत ।
है यही इक बात हर मज़हबका तत ॥

चट्टे-बट्टे एक ही थैलीके हैं।
साहूकारी, बिसवादारी, सल्तनत ॥

उठाकर फेंक दो बाहर गलीमें।
नई तहज़ीबके अण्डे हैं गन्दे ॥

इलेक्शन, मेम्बरी, कौन्सिल, सदारत।
बनाए ख़ूब आज़ादीने फन्दे ॥

मस्जिद तो बना दी शब भरमें, ईमाँकी हरारतवालोंने।
मन अपना पुराना पापी है, बरसोंमें नमाज़ी बन न सका।

तर आँखें तो हो जाती है, पर क्या लज़्ज़त इस रोनेमें।
जब ख़ूनेजिगरकी आमेज़िशसे, अश्क पियाज़ी बन न सका ॥

'इकबाल' बड़ा उपदेशक है, मन बातोंमें मोह लेता है।
गुफ़्तारका यह ग़ाज़ी तो बना, किरदारका गाज़ी बन न सका ॥

१५ अगस्त १९४४

'इकबाल'की कविताओके उर्दू-फारसीमे एक दर्जनसे अधिक सकलन प्रकाशित हो चुके है। हमने उनकी सर्वप्रथम कृति केवल 'बाँगेदरा'-से ही उक्त कलामका सकलन किया था। इसको देखकर हिन्दी-उर्दू साहित्यकी गति-विधिसे अच्छी तरह परिचित हमारे अनन्य मित्र श्री सुमतप्रसाद जैनने सम्मति दी कि इकबालकी 'बालेजिबरील'का उद्धरण दिये बिना इकबालका परिचय अधूरा रह जायगा। अतः उनकी सम्मतिसे बालेजिबरीलका भी कुछ नमूना दिया जा रहा है। जो इकबाल विलायत जानेसे पूर्व देशभक्त, प्रेम-सन्देश-वाहकके रूपमें जनताके समक्ष आते है और मादक स्वरमे गाकर लोगोकी हृदय-तन्त्रीको झकृत कर देते है —

हर दर्दमन्द दिलको रोना मेरा रुला दे।
बेहोश जो पड़े है शायद उन्हें जगा दे॥

सदमा आ जाये हवासे गुलकी पत्तीको अगर।
अश्क बनकर मेरी आँखोसे टपक जाए असर॥

वस्लके असबाब पैदा हों तेरी तहरीरमे।
देख कोई दिल न दुख जाए तेरी तकरीरसे॥

वतनकी फ़िक्र कर नादाँ! मुसीबत आनेवाली है।
तेरी बरबादियोके मशवरे है आस्मानोमें॥

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्ताँवालो!
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानोंमें॥

मुहब्बतसे ही पाई है शिफा बीमार क़ौमोने।
किया है अपने बख़्तेख़ुफ़्ताको बेदार कौमोंने॥

सारे जहाँसे अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलिस्ताँ हमारा॥
मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥

शक्ति भी, शान्ति भी भगतोंके गीतमें है।
धरतीके वासियोंकी मुक्ति प्रीतिमें है॥

वही 'इकबाल' केवल तीन वर्ष विलायत रह आनेके बाद देशोत्थान, मानव-प्रेम और मनुष्य-सेवाके मादक गीत गाते-गाते मुस्लिम साम्राज्य-वाद, तबलीग, हिजाज़ और सम्प्रदायवादके विषैले तीर छोड़ने लगते हैं :—

यारब ! दिलेमुस्लिमको वह दर्देतमन्ना दे।
जो क़ल्बको गरमा दे जो रूहको तड़पा दे॥

× × ×

हमनशीं ! मुस्लिम हूँ मै तौहीदका हामिल हूँ मै।

× × ×

तुझको मालूम है लेता था कोई नाम तेरा ?
क़ुव्वतेबाज़ूए मुस्लिमने किया काम तेरा॥
पर तेरे नामपर तलवार उठाई किसने ?
बात जो बिगड़ी हुई थी, वह बनाई किसने ?

× × ×

चीनोअरब हमारा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहाँ हमारा॥
तेग़ोंके सायेमें हम पलकर बडे हुए हैं।
ख़ंजर हिलालका है क़ौमी निशाँ हमारा॥

केवल तीन वर्ष सुहबते फिरंगमे रहकर बागवाने गुलशने हिन्दोस्ताँ कुछसे कुछ बन बैठा। बकौल अकबर :—

मेरे सैयादकी तालीमकी है धूम गुलशनमें।
वहाँ जो आज फँसता है, वोह कल सैयाद होता है॥

इकबाल जैसे परिष्कृत मस्तिष्क और विशाल हृदयवाले राष्ट्रकविको यकायक सम्प्रदायवादके दलदलमे फँसते देख लोग कराह उठे —

हिन्दी होनेपर नाज़ जिसे कलतक था, हिजाज़ी बन बैठा।
अपनी महफिलका रिन्द पुराना, आज नमाज़ी बन बैठा॥

महफिलमें छुपा है कैसेहज़ी, दीवाना कोई सहरामें नही।
पैग़ामेजुनूँ जो लाता था, इकबाल वोह अब दुनियामें नहीं॥

ऐ मुतरिब! तेरे तरानोंमें अगली-सी अब वोह बात नही।
वोह ताज़गीये तख़य्योल नहीं, बेसाख़्तगीये जज़्बात नही॥

—आनन्दनारायण मुल्ला

इकबाल सम्प्रदायवादके व्यूहमें बैठकर कभी तो मुसलमानोको बाज़ पक्षीकी तरह आक्रमणकारी होनेका मन्त्र देते है, कभी तलवार उठानेका आदेश देते हैं और कभी गैर मुस्लिमोपर टूट पडनेका फतवा देते है। जिन्हे सुनकर मुस्लिम जनता रणोन्मत्त हो उठती है।

पाकिस्तानका अकुर विलायत-प्रवासमे सबसे प्रथम इकबालके ही मस्तिष्कमे अकुरित हुआ। जिन्हाने जब इकबालके मुँहसे पाकिस्तानीनारा सुना तो खिलखिलाकर हँस पडे और फर्माया कि इकबाल शायर है, इसलिए वे ख़याली दुनियामे रहते है और आस्मानमें उडान लेते हैं। परन्तु उन्हें क्या पता था कि एक दिन इकबालका जादू स्वय उनके सर चढकर बोलेगा।

'इकबालके कलामको मुस्लिम जनता कुरानकी तरह तलावत करती है। इकबालने जो रूह फूँकी है और जो सम्प्रदायवादका विष वमन किया है, उसके आगे जिन्हाकी हजार स्पीचें मान्द है।

यहाँ हम 'बालेजिबरीलसे कुछ इस तरहका कलाम दे रहे हैं, जिससे गैर मुस्लिम भी लाभ उठा सकें। फिर भी सम्प्रदायवादकी झाँकी यत्र-तत्र मिलेगी।

तूने यह क्या गजब किया? मुझको ही फ़ाश[१] कर दिया।
मैं ही तो एक राज़[२] था सीनयेकायनातमें[३]॥

× × ×

तेरे शीशेमें मय[४] बाक़ी नहीं है?
बता, क्या तू मेरा साक़ी नहीं है?
समन्दरसे मिले प्यासेको शबनम[५]!
बख़ीली[६] है, यह रज्जाक़ी[७] नहीं है!
इसी कोकबकी[८] तावानीसे है तेरा जहाँ रोशन।
ज़वाले[९] आदमे[१०] खाकी[११] ज़ियाँ[१२] तेरा है या मेरा?

× × ×

बागे बहिश्तसे मुझे हुक्मे सफ़र दिया था क्यों?
कारेजहाँदराज है अब मेरा इन्तज़ार कर॥

× × ×

रोज़ेहिसाब जब मेरा पेश हो दफ़्तरेअमल।
आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर!

× × ×

---

[१] प्रकट; [२] भेद, [३] ससारके हृदयमे; [४] शराब; [५] ओस; [६] कंजूसी; [७] उदारहृदयता, दानशीलता; [८] चमकदार तारेकी; [९,१०,११] खाकके पुतलेरूपी मनुष्यका पतन; [१२] हानि, नुकसान।

तेरी दुनिया जहानेमुर्गोमाही[1],
मेरी दुनिया फ़ुगानेसुबहगाही[2],
तेरी दुनियामें मैं महकूमो[3]मजबूर[4]
मेरी दुनियामें तेरी पादशाही[5]!

× × ×

मतायेबेबहा[6] है दर्दोसोज़े[7] आर्ज़ूमन्दी[8]।
मुकामे बन्दगी[9] देकर न लूँ शाने ख़ुदावन्दी[10]॥
तेरे आज़ादबन्दोंकी न यह दुनिया न वह दुनिया।
यहाँ मरनेकी पाबन्दी वहाँ जीनेकी पाबन्दी॥
गुज़र औकात कर लेता है यह कोहो-बयाबाँमें[11]।
कि शाहीं[12] के लिये ज़िल्लत है कारे आशियाँबन्दी[13]॥

× × ×

तेरी बन्दापरवरीसे[14] मेरे दिन गुज़र रहे हैं।
न गिला है दोस्तोंका न शिकायते ज़माना॥
ख़िरद[15] वाक़िफ़ नहीं है नेकोबदसे,
बढ़ी जाती है ज़ालिम अपनी हदसे।
ख़ुदा जाने मुझे क्या होगया है,
ख़िरद बेज़ार दिलसे, दिल ख़िरदसे॥

---

[1] मुर्ग और मछलियोकी दुनिया; [2] प्रात.कालीन रुदन; [3] आधीन; [4] असमर्थ; [5] बादशाही; [6] अनमोल धन, [7] दर्द और तपिश; [8] अभिलाषा [9] उपासनाका अधिकार, [10] ईश्वरत्वका गौरव; [11] पर्वतों-वनोमें; [12] बाज पक्षी; [13] घोंसला बनानेकी चिन्ता; [14] दीन-बन्धुत्वसे; [15] अक्ल।

इश्क़की एक जस्तने[1] तय कर दिया क़िस्सा तमाम।
इस ज़मीनोआस्माँको बेकराँ[2] समझा था मैं॥

× × ×

ख़ुदाई अहतमामे[3] ख़ुश्कोतर[4] है,
ख़ुदावन्दा! ख़ुदाई दर्देसर है।
वलेकिन बन्दगी! इस्तग़फ़ार अल्लाह,
यह दर्देसर नहीं दर्देजिगर है॥

× × ×

यही आदम है सुलताँ[5] बहरोबरका[6],
कहूँ क्या माजरा इस बेबसरका[7]।
न ख़ुदबीं[8] ना ख़ुदाबीं[9] ना जहाँबीं[10],
यही शहकार[11] है तेरे हुनरका?

× × ×

अपने भी ख़फ़ा मुझसे हैं बेगाने भी नाख़ुश।
मैं ज़हरे हलाहलको कभी कह न सका कन्द॥
हर हालमें मेरा दिले बेक़ैद है ख़ुर्रम[12]।
क्या छीनेगा गुंचेसे कोई ज़ौके[13]शकरख़न्द!

× × ×

---

[1] छलाँगने, [2] असीम; [3, 4] जल तथा स्थलकी व्यवस्था; [5] बादशाह, [6] जलथलका; [7] दृष्टि हीनका; [8] स्वयंको जाननेवाला; [9] ईश्वरको पहचाननेवाला, [10] संसारको समझनेवाला; [11] सर्वश्रेष्ठ कृति; [12] प्रसन्न; [13] मुस्कराहट शौक।

तेरा इमाम[1] बेहुजूर[2] तेरी नमाज़ बेसरूर[3]।
ऐसी नमाज़से गुज़र ऐसे इमामसे गुज़र[4]॥

× × ×

अपने मनमें डूबकर पा जा सुराग़े जिन्दगी।
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन, अपना तो बन॥

शिकायत है मुझे या रब! ख़ुदावन्दाने[5]मकतबसे।
सबक़ शाहीं[6] बच्चोंको दे रहे हैं खाकबाज़ीका[7]!

× × ×

दिलकी आज़ादी शहंशाही, शिकम[8] सामाने मौत।
फ़ैसला तेरा तेरे हाथोंमें है दिल या शिकम?

× × ×

ऐ मुसलमाँ! अपने दिलसे पूछ, मुल्लासे न पूछ।
होगया अल्लाहके बन्दोंसे क्यों खाली हरम[9]?

वह आँख कि है सुरमयेअफ़रंगसे[10] रोशन।
पुरकार[11] सख़ुनसाज़[12] है! नमनाक नहीं है॥

बिजली हूँ, नज़र कोहोबयाबाँ[13] पै है मेरी।
मेरे लिए शायाँ[14] ख़सोख़ाशाक[15] नहीं है॥

---

[1] नमाज़ पढानेवाला; [2] ईश्वर-आस्थाविहीन। [3] श्रद्धारहित, [4] भाग, बेकार है, [5] शिक्षकोंसे। [6] बाज़ पक्षी; [7] ज़मीन पर रहनेका; [8] पेटकी चिन्ता। [9] मस्जिद; [10] अंग्रेजियतके सुरमेसे, [11] चालाक, [12] वक्तृत्वसे ओतप्रोत, [13] पर्वतो-जगलो; [14] गौरव योग्य, [15] घासफूसका घोंसला।

आलम है फ़कत मोमिनेजाँबाजकी[1] मीरास[2]।
मोमिन नही जो साहबेलोलाक[3] नहीं है!

× × ×

हुजूम क्यों है ज़ियादा शराबख़ानेमें।
फ़क़त यह बात कि पीरेमुग़ाँ[4] है मर्देख़लीक़[5]॥

अगर हो इश्क, तो है कुफ़्र भी मुसलमानी।
न हो तो मर्देमुसलमाँ भी काफ़िरो जन्दीक़[6]॥

× × ×

काफ़िर है मुसलमाँ तो न शाही न फ़क़ीरी।
मोमिन है तो करता है फ़क़ीरीमें भी शाही!

काफ़िर है तो शमशीरपै करता है भरोसा।
मोमिन है तो बेतेग़ भी लड़ता है सिपाही!

काफ़िर है तो है ताबएतक़दीर[7] मुसलमाँ।
मोमिन है तो वह आप है तक़दीरेइलाही[8]॥

× × ×

खुदावन्दा! यह तेरे सादादिल बन्दे किधर जाएँ?
कि दरवेशी[9] भी ऐय्यारी है सुलतानी[10] भी ऐय्यारी॥

---

[1] वीर मुसलमानकी; [2] जागीर।
[3] समस्त विश्व को अपना समझनेवाला।
[4] शराबख़ानेका मालिक; [5] मिलनसार।
[6] नास्तिक और अनेक ईश्वरवादी।
[7] भाग्य-अधीन; [8] ईश्वरीय भाग्य।
[9] साधुता; [10] बादशाही।

मुझे तहजीबे हाजिरने अता[१] की है वह आजादी।
कि जाहिरमें तो आजादी है बातिनमें[२] गिरफ्तारी।।

× × ×

हुई न आम जहाँमें कभी हकूमते इश्क़।
सबब यह है कि मुहब्बत जमानासाज नहीं।।

× × ×

कहीं सरमायए महफिल थी मेरी गर्मगुफ्तारी[३]।
कहीं सबको परेशाँ कर गई मेरी कमआमेजी[४]।।

जलाले पादशाही[५] हो कि जमहूरी[६] तमाशा हो।
जुदा हो दीं सियासतसे तो रह जाती है चंगेजी।।

× × ×

फ़ारिग तो न बैठेगा, महशरमें जुनूँ अपना।
या अपना गिरेबाँ चाक या दामनेयजदाँ[७] चाक।।

× × ×

हर गुहरने[८] सदफ़को[९] तोड़ दिया।
तू ही आमादयेजहूर[१०] नही।।

× × ×

खुदी वह बहर[११] है जिसका कोई किनारा नहीं।
तू आबजू[१२] उसे समझा अगर तो चारा नहीं।।

---

[१] दान दी है; [२] वास्तवमे; [३] वाक्पटुता, [४] कम बोलना; [५] एकतंत्रशासन; [६] प्रजातन्त्र, [७] ईश्वरका परिधान, [८] मोतीने, [९] सीपको; [१०] प्रकाशमे आनेका प्रस्तुत, [११] दरिया, [१२] नदी, नहर।

ग़जब है रग़्बेकरममें[1] बुख़ील[2] है फ़ितरत[3]।
कि लालेनाबमें[4] आतिश[5] तो है शरारा[6] नहीं॥

× × ×

हर इक मुक़ामसे आगे मुक़ाम है तेरा।
हयात[7] जौक़ेसफ़रके[8] सिवा कुछ और नहीं॥

× × ×

किसे नहीं है तमन्नायेसरवरी[9] लेकिन।
ख़ुदीकी[10] मौत हो जिसमें यह सरवरी क्या है?

× × ×

मैं तुझको बताता हूँ तक़दीरेउमम[11] क्या है?
शमशीरोसनाँ[12] अव्वल, ताऊसो[13] रुबाब[14] आख़िर॥

मयख़ानये यूरुपके दस्तूर निराले हैं।
लाते हैं सरूर अव्वल देते हैं शराब आख़िर॥

× × ×

यह बन्दगी ख़ुदाई, वह बन्दगी गदाई[15]।
या बन्दयेख़ुदा बन या बन्दयेज़माना॥

× × ×

---

[1] कृपाके होते हुएभी; [2] कजूस; [3] प्रकृति; [4] निर्मल लालमें; [5] अग्नि; [6] चिनगारी; [7] जिन्दगी, [8] यात्राके शौकके; [9] नेतृत्वकी लालसा; [10] अपने अस्तित्वकी, [11] मुसलमानोंका भाग्य, [12] तीरकी नोक, भाला, [13] राज्यसिंहासन; [14] वाद्ययन्त्र; [15] फकीरी।

ग़ाफ़िल न हो ख़ुदीसे कर अपनी पासबानी[१]।
शायद किसी हरमका[२] तू भी है आस्तानी[३]॥

× × ×

खिरदमन्दोंसे[४] क्या पूछूँ कि मेरी इब्तदा[५] क्या है ?
कि मै इस फ़िक्रमें रहता हूँ मेरी इन्तहा[६] क्या है ?

ख़ुदीको कर बुलन्द इतना कि हर तक़दीरसे पहले।
खुदा बन्देसे ख़ुद पूछे बता तेरी रज़ा[७] क्या है ?

नवायेसुबहगाहीने[८] जिगर ख़ूँ कर दिया मेरा।
ख़ुदाया जिस ख़ताकी यह सज़ा है वह ख़ता क्या है ?

× × ×

ऐ तायरेलाहूती[९] ! उस रिज़्कसे[१०] मौत अच्छी।
जिस रिज़्कसे आती हो परवाज़में[११] कोताही[१२]॥

× × ×

यह मिसरा लिख दिया किस शोख़ने महरावे मस्जिदपर—
"यह नादाँ गिर गये सिजदोंमें जब वक़्ते कयाम आया"॥

चल ऐ मेरी ग़रीबीका तमाशा देखनेवाले।
वह महफ़िल उठ गई जिसदम तो मुझतक दौरेजाम आया॥

× × ×

---

[१] चौकसी; [२] मसजिदका; [३] दहलीज, प्रवेशद्वार।
[४] अक़्लमन्दोसे, [५] शुरुआत; [६] आख़ीर।
[७] इच्छा, [८] प्रात. कालीन सगीतने।
[९] ईश्वरत्वकी क्षमता रखनेवाले पक्षी।
[१०] जीविकासे; [११] उडानमे, विकासमे; [१२] कमी।

मुझे फ़ितरत, नवापर[1] पै-ब-पै[2] मजबूर करती है।
अभी महफ़िलमें है शायद कोई दर्दआश्ना बाक़ी ॥

× × ×

यकीं पैदा कर ऐ नादाँ ! यक़ींसे हाथ आती है।
वह दरवेशी कि जिसके सामने झुकती है फ़ग़फ़ूरी[3] ॥

× × ×

मीरी में, फ़क़ीरीमें, शाहीमें, ग़ुलामीमें।
कुछ काम नहीं बनता बेजुरअ़ते रिन्दाना ॥

× × ×

जिस खेतसे दहक़ाँको[4] मयस्सर नही रोजी।
उस खेतके हर खोशयेगन्दुमको[5] जलादो ॥

उक़ाबी[6] रूह जब बेदार होती है जवानोंमें।
नजर आती है उनको अपनी मंजिल आस्मानोंमें ॥

नहीं तेरा नशेमन क़सरे सुलतानीके गुम्बदपर।
तू शाहीं है ! बसेराकर पहाड़ोंकी चटानोंपर ॥

× × ×

है शबाब अपने लहूकी आगमें जलनेका नाम।
सख़्तकोशीसे[7] है तलखेज़िन्दगानी[8] अंगबीं[9] ॥

---

[1] गायन, मुँह खोलनेपर; [2] हर वक्त, बराबर, [3] चीनके एक प्रसिद्ध बादशाहकी सल्तनत; [4] किसानको; [5] अनाजको; [6] गिद्ध पक्षी; [7] कठिन परिश्रमसे; [8] जीवनकी कड़वाहट; [9] शहद (मधुर हो जाती है)।

जो कबूतरपर झपटनेमें मज़ा है ऐ पिसर !
वह मज़ा शायद कबूतरके लहूमें भी नहीं ॥

× × ×

उस मौजके मातममें रोती है भँवरकी आँख ।
दरियासे उठी लेकिन साहिलसे न टकराई ॥

× × ×

कहते हैं अरबी ज़बानका मशहूर शायर अब्बुल्ला मुअर्री निरामिष-भोजी था। उसके एक मित्रने छकानेके ख़यालसे उसे भुना हुआ तीतर भेजा। मृतक तीतरको देखकर मुअर्रीने उससे पूछा कि तुझे मालूम है कि किस दोषके कारण तेरी यह दुरावस्था हुई है। उन्ही भावोको इकबालने इस तरह कलमबन्द किया है :—

अफ़सोस सद अफ़सोस कि शाहीं[1] न बना तू ।
देखे न तेरी आँखने फ़ितरतके इशारे ॥
तकदीरके काज़ीका यह फ़तवा है अज़लसे—
"है जुर्मे ज़ईफ़ीकी सज़ा मर्गे मफ़ाजात[2] ॥"

× × ×

हमामो[3] कबूतरका भूखा नहीं मै ।
कि है जिन्दगी बाज़की ज़ाहिदाना[4] ॥
झपटना, पलटना, पलटकर झपटना ।
लहू गर्म रखनेका है इक बहाना ॥

---

[1] बाज़ पक्षी; [2] अकालमृत्यु, [3] कबूतर, निरीह पक्षी; [4] परहेज़गारी ।

यह पूरब, यह पच्छिम, चकोरोंकी दुनिया।
मेरा नीलगूँ आस्माँ बेकिनारा[1] ॥
परिन्दोंकी दुनियाका दरवेश[2] हूँ मैं।
कि शाहीं बनाता नहीं आशयाना ॥

इकबालने भारतीयोको विशेपकर मुसलमानोको जागृत करनेके लिए जो बोल गाए हैं वे मन्त्रोकी तरह प्रभावशाली और मूल्यवान है। १९३७मे आपकी मृत्यु होनेपर भारतमे, विशेषकर उर्दू-संसारमे, एक कोहराम मच गया। यूनिवर्सिटी, कॉलेज, हाईकोर्ट बन्द हुए। उर्दू-पत्रोंने विशेषाङ्क निकाले। आपकी शायरीपर हजारो तुलनात्मक लेख लिखे गए और लिखे जा रहे हैं। इकबाल मिर्जा 'दाग'के शिष्य थे, और 'दाग'को अपने इस शिष्यपर बेहद नाज था।

६ मार्च १९४७

[1] अनन्त; [2] साधु।

१३

पण्डित ब्रजनारायण 'चकबस्त'

(सन् १८८२ से १९२६ तक)

आवश्यकता आविष्कारकी जननी है। समयकी आवश्यकतानुसार अनेक परिवर्त्तन होते रहते है। जीती हुई वाजी हारकर १८५७के विद्रोहके बाद समूचा भारत सन्तप्त और भयभीत हो उठा। पादरियोके नित्य नये प्रचार, अङ्गरेज़ी सभ्यता और शिक्षाके प्रसारको वेगसे बढता हुआ देखकर लोगोको भय होने लगा कि राज्य गया तो गया, कही प्राणोसे भी अधिक प्रिय धर्म, सस्कृति और भाषाका भी सफाया न कर दिया जाय। इसी आशङ्कासे घबराकर हिन्दू, जैन, सिक्ख, मुसलमान, आदि हर सम्प्रदायमे इनकी रक्षाके लिए आन्दोलन उठ खडा हुआ। सिंह जितना ही अधिक आलसी होता है, गोली लगनेपर उतना ही अधिक विक्षुब्ध भी हो उठता है। दरियामे पर्वत-चट्टान गिरनेसे जितना अधिक गहरा गड्ढा होता है, उतने ही अधिक वेगसे चारो ओरका पानी दौडकर उस क्षतिको पूरा करता है। भारतके हर कौम और हर मजहबके लोग मर्दानावार खडे हो गए और वडी लगनके साथ अपने-अपने दायरेमे व्याख्यानो, लेखो, और कविताओ द्वारा धर्मपर मर मिटनेका प्रचार करने लगे। स्कूल और कॉलेजके मुकाविलेमे विद्यालय और अरबी मदर्से भी खोले गए। अङ्गरेजी सभ्यता और फैशनसे दूर रहनेके लिए भी काफी कहा गया। चूँकि घरकी फूटके कारण ही यह दुर्दिन देखने पडे। इसलिए हिन्दू-मुस्लिम एकताकी भी आवश्यकता महसूस हुई। अकबर इलाहाबादीकी शायरीमे दीन (धर्म)पर अमल करनेकी ताकीद,

अङ्गरेजी शिक्षा और सभ्यताका विरोध और हिन्दू-मुस्लिम-प्रेम देखनेको मिलता है। इक़बाल और चकबस्तने भारतके पर्वतों, दरियाओ, ऐतिहासिक इमारतो, शहरो, गाँवों और प्रकृतिका वर्णन करके लोगोंमें अपने देशके प्रति अनुराग उत्पन्न कर दिया।

बङ्ग-भङ्ग आन्दोलन, होमरूललीग और कॉङ्गरेसने जनतामे देशभक्तिकी एक लहर पैदा कर दी थी। प्रोफेसर 'एजाज' लिखते है कि "चकवस्त इस कामके लिए बहुत मौजूँ नजर आए।...उनका पैमानयेदिल कौमी जजबातसे लबरेज हो रहा था। मौक़ा मुनासिब पाया, जज़बाती रङ्ग देकर इतनी दिलकश नज्मोंमे दुनियाके सामने होमरूलके मतालिब पेश किए कि अवाम व खास दोनोमे उनकी शायरीका चर्चा होने लगा। उनके अशआर हर सियासी या नीम सियासी (अर्द्ध राजनैतिक) मजलिसके लिए बाइसे ज़ीनत हुए। इसने दूसरे शुअराको भी सियासी तहरीकमे दिलचस्पी लेनेपर माइल किया। छोटे-बड़े शुअरा कुछ न कुछ अपने तौरपर मुल्कके मज़ाक़का अन्दाजा करके अखबारो, रिसालो और जल्सोकी जीनत अपने कलामसे बढाते रहे। यूँ तो चकबस्तके अलावा और शुअरा मसलन जफरअली खॉ, अकबर वगैरह भी वक्तनफवक्तन सियासी नज्में कहते रहे। लेकिन होमरूलके सिलसिलेमें सबसे सरबरआवुरदह चकबस्त ही नजर आते है।....चकबस्तकी नज्मोमें ख़ाली जोश व नुमाइश ही नही, बल्कि इन्कलाबकी दिलचस्प अहमियत और हिम्मत-अफ़जाई भी मौजूद है। वे अपने वतनकी तारीफ़ भी करते हैं और फिर गैरत दिलानेके लिए अपनी बेकसी और वतनकी बरबादीका भी जिक्र करते है।

"इसी सिलसिलेमे चकबस्तके मुत्तालिक यह भी लिख देना जरूरी मालूम होता है कि उन्होने न सिर्फ उस तहरीकसे दिलचस्पी ही ली थी, बल्कि उस तहरीकसे दिलचस्पी लेनेवालोसे भी एक खास किस्मकी अकीदत का इज़हार वक़्तन-फवक़्तन खलूस और जोशके साथ करते रहे। उनके

कहे हुए मर्सिये इस अम्रकी शहादतके लिए वहुत काफी है। जब किसी खास रहनुमाका इन्तकाल होता था तो उसका मातम निहायत जोशके साथ अपनी शायरीमे करते थे।. ..इस सिलसिलेमे चकवस्त आप अपनी मिसाल है। उर्दू-शायरीमे इस लिहाजसे उनका कोई हरीफ नजर नही आता[1]।"

डॉ० सर तेजबहादुर सप्रू लिखते है :—

"..........I have known the poet intimately for the last twenty-five years and admired him for his high ideals in literature and life, and have enjoyed some of the best moments of my life in reading his poetry.......... If Iqbal is more spiritual and mystical than Chakbast, that is probably due to his Philosophy of life—on the other hand, if Chakbast is more elegant in form, and shows greater pathos, if he appeals more to human feeling than to intellect, it is because of his environments in Lucknow........Brij Narain Chakbast's merits as a poet and artist are universally acknowledged by his contemporaries; and succeeding generations will recognise him as a great pioneer of a new school of poetry."

"××× पिछले २५ वर्षसे कवि (चकवस्त)से मेरा घनिष्ठ परिचय है। मैने सदा ही उन्हे उनके साहित्य और जीवनके ऊँचे आदर्शोके लिए सराहा है तथा जिन क्षणोमे मैने उनकी कवितायें पढकर आनन्द

[1] नये अदवी रुजहानात, पृष्ठ ९५-१०० ।

उठाया है, उन्हें मै जीवनके सर्वोत्तम क्षण मानता हूँ। ××× यदि इकबाल चकबस्तकी अपेक्षा अधिक आध्यात्मिक और रहस्यवादी है तो वह इसलिए कि उनके जीवनकी फिलॉसफी ही ऐसी है—दूसरी ओर, यदि चकबस्तकी शायरीमे शब्द और शैलीकी सुन्दरता है, और उसमें अधिक करुणा है, यदि वह आदमीके मनके बजाय उसके हृदयको प्रभावित करती है, तो इसका कारण है कविका लखनऊका वातावरण। ××× कवि और कलाकारके रूपमे चकवस्तमे जो गुण है, उन्हे उनके समकालीन एकमतसे स्वीकार करते है; और आनेवाली पीढियाँ उन्हें कविताके नये युगका महान प्रवर्त्तक मानेगी ही[1]।"

चकबस्त सन् १८८२मे फैजाबादमे उत्पन्न हुए और बचपनमे ही अपने असली वतन लखनऊ आ गये। १९०५मे कैनिङ्ग कॉलेजसे बी० ए० और कानूनकी डिगरी प्राप्त करके लखनऊमें ही वकालत प्रारम्भ की, जहाँ थोडे ही अर्सेमे आप प्रथम श्रेणीके वकीलोंमें शुमार होने लगे। चकवस्तको शेरोशायरीका शौक बचपनसे ही था। कहा जाता है, कि उन्होने ९ वर्षकी उम्रमे ही गजल कही थी। आप विद्यार्थी-अवस्थामे भी लिखते रहे। कॉलेजके मुशायरोमे पदक व पुरस्कार भी प्राप्त करते रहे। आप ख्यातिसे दूर भागते थे। यहाँ तक कि अपना उपनाम (तखल्लुस) भी नही रक्खा। पारिवारिक नाम 'चकबस्त'के नामसे ही लिखते रहे। आपने अपना कोई उस्ताद नही बनाया।

'तारीख़े-अदब उर्दू'के विद्वान् लेखक लिखते है कि—"चकबस्तकी जबान निहायत साफ शुस्ता और शीरी है। कलाममें लखनऊका रङ्ग है। मगर बहतरीन किस्म और आला दरजेकी एक ख़ास खुसूसियत यह भी है कि मुनासिब हिन्दी अल्फ़ाज कलाममे मिलाकर कलामकी शीरीनी और असरको दुबाला कर देते है। बसबब आला अङ्गरेजी-

---

[1] सुबहे वतनकी भूमिकासे।

दानीके चकवस्त मशरकी और मगरवी दोनों किस्मकी तनकीदो (आलोचनाओ)से वखूवी आगाह थे। इसी वजहसे उनकी राये अदवी (साहित्यिक) मुआमलातमे वहुत जँची-तुली मुन्सिफाना और गैर जानिवदाराना थी। कभी किसीकी तारीफ़ या तनकीद आँख वन्द करके या मुवालिगेके साथ नही करते थे। जैसा कि खुद कहते है :—

उलझ पडूँ किसी दामनसे मै वोह खार नही।
वोह फूल हूँ जो किसीके गलेका हार नहीं॥

उनके मज़ामीन 'दाग', 'सरशार' और उर्दू-शायरीपर निहायत आला दर्जेके है और वडी वाकफियत और मालूमातका पता देते है। नसरमें भी मसल नज्मके उनका पाया वहुत वुलन्द था।"[1]

चकवस्त वास्तवमें देशके वकील थे। इकवाल भी उनके समकालीन थे। मगर इकवाल राष्ट्र-भेरी वजाते-वजाते अजान देने लगे और चकवस्तने जो विगुल उठाया उसे मरते-दम तक वजाते रहे। जव कौमी जहाजको वचानेके लिए हाली और अकवरने आवाज वुलन्द की तो दो नौजवान ख्वावे-गफलतसे चौंके और उन्होने लपककर उन वूढे हाथोसे चप्पू अपने हाथोमे लेकर इन खूवीसे हाथ मारे कि जहाज़ चट्टानसे टकरानेसे वाल-वाल वच गया। मगर अफसोस, तूफान वढता ही गया। ये वहादुर नौजवान जितना ही ज्यादा जानपर खेलने गये, समुद्र उतना ही अधिक क्षुब्ध होता चला गया। इकवाल उम्रमें वडा था, वह काफी थक गया था। उसने समूचे जहाजको वचता न देख पानीमे कश्ती डाल दी और जो भी वच सके गनीमत है, यह सोचकर वह कश्तीमें मुसलमानोको उतारने लगा और अपनी इस सूझमें सफल भी हुआ। मगर चकवस्तसे यह न हुआ। उसके चश्मेमें दाढी और चोटी न दिखाई देकर केवल

---

[1] जमीमये तारीखे अदवे उर्दू, पृ० १५-१६।

मनुष्योके आकुल चेहरे दिखाई दिये। मनुष्यता उसकी जाति और देश-सेवा उसका धर्म था। वह अपनी धुनमें डटा ही रहा जब तक कि वह चूर-चूर होकर समाप्त नही हो गया।

१२ जनवरी, १९२६को उनके स्वर्गवासपर समस्त उर्दू-संसारमें शोक छा गया। लखनऊकी अदालतें बन्द कर दी गई। शोक-सभाएँ की गईं। व्याख्यानोके अतिरिक्त प्रसिद्ध शायरोने नोहे पढ़े, तारीखें कहीं। 'महशर' साहबने तो उनके इस मिसरेपर ही तारीख़ कहकर लोगोंको रुला दिया :—

उनके ही मिसरेसे तारीख है हमराह अजा।
'मौत क्या है, इन्हीं अजजाका परेशाँ होना*' ॥

१—ख़ाके हिन्द (भारत की रज)

* * *

अगलीसी ताजगी[1] है फूलोंमें और फलोंमें।
करते हैं रक़्स[2] अबतक ताऊस[3] जङ्गलोंमें॥
अबतक वही कड़क है बिजलीकी बादलोंमें।
पस्ती-सी[4] आगई है, पर दिलके हौसलोंमें॥
गुल[5] शमए अंजुमन[6] है, गो अंजुमन[7] वही है।
हुब्बेवतन[8] नहीं है, ख़ाकेवतन[9] वही है॥

---

* इस मिसरेसे १३४४ हिजरी सन् उनके स्वर्गवासका बनता है।

[1] नवीनता, [2] नृत्य; [3] मोर।
[4] निरूत्साहता; [5] बुझा हुआ।
[6] महफिलका चिराग; [7] महफिल।
[8] स्वदेश प्रेम; [9] स्वदेशकी मिट्टी।

बरसोंसे हो रहा है बरहम[1] समाँ[2] हमारा।
दुनियासे मिट रहा है नामों निशाँ हमारा॥
कुछ कम नहीं अजलसे[3] ख्वाबेगराँ[4] हमारा।
इक लाशे बेकफन है हिन्दोस्ताँ हमारा॥

इल्मो-कमाल[5] ओ ईमाँ बरबाद हो रहे हैं।
ऐशोतरबके[6] बन्दे[7] गफ़लतमें सो रहे हैं॥

ऐ सूरे[8] हुब्बेकौमी[9]! इस ख्वाबसे[10] जगा दे।
भूला हुआ फिसाना[11] कानोंको फिर सुना दे॥
मुर्दा तबीयतोंकी[12] अफसुर्दगी[13] मिटा दे।
उठते हुए शरारे[14] इस राखसे दिखा दे॥

हुब्बेवतन[15] समाए आँखोंमें नूर[16] होकर।
सरमें खुमार[17] होकर, दिलमें सुरूर[18] होकर॥

* * *

है जूयेशीर[19] हमको नूरे-सहर[20] वतनका।
आँखोंकी रोशनी है जल्वा[21] इस अंजुमनका॥

---

[1] अस्त-व्यस्त, [2] हाल, [3] मृत्युसे, [4] गहरी नीद।
[5] विद्या और कार्य-कुशलता, [6] भोग-विलासके; [7] दास।
[8] नरसिंहा बाजा, [9] जातीय प्रेम, [10] नीदसे।
[11] कहानी; [12] कुम्हलाये हृदयोकी।
[13] मुरझाया-पन, [14] चिनगारियाँ [15] स्वदेश-प्रेम।
[16] प्रकाश, [17] उतरा हुआ नशा; [18] चढता हुआ नशा।
[19] दूधकी नदी; [20] प्रभातका प्रकाश।
[21] आलोक।

है रश्केमहर[1] ज़र्रह[2] इस मंजिले कुहनका[3]।
तुलता है बर्गेगुलसे[4] काँटा भी इस चमनका॥

गर्दोग़ुबार[5] यहाँका ख़िलअत[6] है अपने तनको।
मरकर भी चाहते हैं ख़ाकेवतन[7] कफ़नको॥

२—वतन का राग

* * *

वतनपरस्त[8] शहीदोंकी[9] ख़ाक लायेंगे।
हम अपनी आँखका सुर्मा उसे बनाएँगे॥

ग़रीब माँके लिए दर्द दुख उठाएँगे।
यही पयामेवफ़ा[10] क़ौमको सुनाएँगे॥

तलब फ़िज़ूल है काँटोंकी फूलके बदले।
न लें बहिश्त[11] भी हम होमरूलके बदले॥

* * *

बसे हुए हैं मुहब्बतसे जिनकी क़ौमके घर।
वतनका पास[12] है उनको सुहागसे[13] बढ़कर॥

जो शीरख़्वार[14] हैं हिन्दोस्ताँके लख़्तेजिगर[15]।
यह माँके दूधसे लिक्खा है उनके सीनेपर[16]॥

---

[1] सूर्यको लज्जित करनेवाला; [2] वालुकण, [3] प्राचीन-पथका, [4] फूलकी पत्तीसे, [5] मिट्टी, धूल, [6] पोशाक; [7] स्वदेश-रज, [8] देशभक्त; [9] प्राण समर्पित करनेवालोकी, [10] कृतज्ञताका सदेश; [11] स्वर्ग; [12] खयाल; [13] सौभाग्यसे; [14] दुग्धपायी; [15] कलेजेके टुकड़े; [16] छातीपर।

तलब फ़िज़ूल है काँटोंकी फूलके बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूलके बदले॥

यह जोशेपाक[१] ज़माना दबा नही सकता।
रगोंमें ख़ूँकीहरारत[२] मिटा नहीं सकता॥
ये आग वो है जो पानी बुझा नही सकता।
दिलोंमें आके यह अरमान[३] जा नहीं सकता॥
तलब फिज़ूल है काँटोंकी फूलके बदले।
न लें बहिश्त भी हम होमरूलके बदले॥

३—पयामे-वफ़ा

हो चुकी क़ौमके मातममें[४] बहुत सीनाज़नी[५]।
अब हो इस रंगका संन्यास[६] यह है दिलमें ठनी॥
मादरे-हिन्दकी[७] तस्वीर हो सीनेपै बनी।
बेड़ियाँ पैरमें हो और गलेमें कफ़नी॥
हो यह सूरतसे अयाँ[८] आशिके आज़ादी[९] है।
कुफ़्ल[१०] है जिनकी ज़बाँपर यह वह फरियादी है॥

आजसे शौकेवफाका[११] यही जौहर[१२] होगा।
फर्श काँटोंका हमें फूलोंका बिस्तर होगा॥

---

[१] पवित्र उत्साह, [२] रक्तकी गर्मी; [३] कामना; [४] दुःख, शोकमे, [५] छाती पीटना; [६] दीक्षित होना, रगमे रगना, [७] भारतमाताकी; [८] प्रकट, [९] स्वतन्त्रताके प्रेमी, [१०] ताला, [११] सद्व्यवहारकी लगनका; [१२] गुण, भेष।

फूल हो जाएगा छातीपै जो पत्थर होगा।
क़ैदख़ाना जिसे कहते हैं, वही घर होगा॥

सन्तरी देखके इस जोशको शरमायेंगे।
गीत जंजीरकी झनकारपै हम गायेंगे॥

* * *

४—फ़रियादे-क़ौम

* * *

लुटे हैं यूँ कि किसीकी गिरहमें दाम नहीं।
नसीब[१] रातको पड़ रहनेका मुक़ाम नहीं॥

यतीम बच्चोंके खानेका इन्तजाम नहीं।
जो सुबह ख़ैरसे[२] गुज़री उमीदे-शाम नहीं॥

अगर जिये भी तो कपड़ा नही बदनके लिए।
मरे तो लाश पड़ी रह गई कफ़नके लिए॥

नसीब चैन नही भूख-प्यासके मारे।
हैं किस अज़ाबमें[३] हिन्दोस्तानके प्यारे॥

तुम्हें तो ऐशके सामान जमा हैं सारे।
यहाँ बदनसे रवाँ[४] हैं लहूके फ़व्वारे॥

जो चुप रहें तो हवा क़ौमकी बिगड़ती है।
जो सर उठायें तो कोड़ोंकी मार पड़ती है॥

---

[१] प्राप्त, भाग्यमे; [२] कुशलसे, [३] विपत्तिमे। [४] जारी।

अगर दिलोंमें नहीं अब भी जोश ग़ैरतका[1]।
तो पढ़ दो फ़ातहा[2] क़ौमीवक़ारोइज़्ज़तका[3]॥

वफ़ाको[4] फूँक दो मातम[5] करो मुहब्बतका।
जनाज़ा[6] लेके चलो क़ौमी-दीनो-मिल्लतका[7]॥

निशाँ मिटा दो उमङ्गोंका और इरादोंका।
लहूमें गर्क़[8] सफ़ीना[9] करो मुरादोंका[10]॥

:

भँवरमें क़ौमका बेड़ा है हिन्दियो! हुशियार।
अँधेरी रात है, काली घटा है और मँझधार॥

अगर पड़े रहे ग़फ़लतकी नींदमें सरशार[11]।
तो ज़ेरेमौजेफ़ना[12] होगा आबरूका[13] मज़ार[14]॥

मिटेगी क़ौम यह बेड़ा तमाम डूबेगा।
जहाँमें भीषमो अर्जुनका नाम डूबेगा॥

:

रहेगा माल, न हमराह[15] जायगी दौलत।
गई तो क़ब्र तलक साथ जायगी ज़िल्लत[16]॥

करो जो एक रुपयेसे भी क़ौमकी ख़िदमत।
तुम्हारी ज़ातसे हो इक यतीमको[17] राहत॥

---

[1] लज्जाका, [2] तिलाजलि देना, [3] जातीय प्रतिष्ठाका, [4] नेकीको, [5] शोक, (यहाँ त्याग); [6] अरथी; [7] जातीय धर्म और मेल-जोलका; [8] डुबाना; [9] नाव; [10] अभीष्ट मनोरथोंका, [11] मस्त, बेहोश, [12] मृत्युकी लहरोंके नीचे; [13] प्रतिष्ठाका; [14] क़ब्र; भावार्थ यह हमारी प्रतिष्ठाका अन्त हो जाएगा; [15] साथ; [16] बदनामी; [17] अनाथको।

मिले हिजाबकी[१] चादर किसीकी अस्मतको[२]।
कफ़न नसीब[३] हो शायद किसीकी मैयतको[४] ॥

जो दबके बैठ रहे सर उठाओगे फिर क्या ?
उदूए-क़ौमको[५] नीचा दिखाओगे फिर क्या ?

रहेगा कौल यही उनसे उनकी माओंका—
"लहू रगोंमें तुम्हारी है बेहयाओंका" ॥

मिटा जो नाम तो दौलतकी जुस्तजू[६] क्या है ?
निसार[७] हो न वतनपर, तो आबरू क्या है ?

लगा दे आग न दिलमें तो आरज़ू[८] क्या है ?
न जोश खाय जो ग़ैरतसे वह लहू क्या है ?

फ़िदा[९] वतनपै जो हो, आदमी दिलेर है वोह।
जो यह नहीं तो फ़क़त हड्डियोंका ढेर है वोह ॥

५—फूलमाला

(कन्याओंको सम्बोधन करते हुए)

रविशेख़ामपै[१०] मर्दों की न जाना हर्गिज़।
दाग़ तालीममें[११] अपनी न लगाना हरगिज़ ॥

नाम रक्खा है नुमायशका[१२] तरक़्क़ी व रिफ़ॉर्म[१३]।
तुम इस अन्दाजके[१४] धोखेमें न आना हर्गिज़ ॥

---

[१] लाजकी, [२] पाकदामनीको, [३] प्राप्त; [४] लाशको, [५] जातीय शत्रुको, [६] तलाश, खोज, [७] न्योछावर, [८] कामना, इच्छा, [९] आसक्त, [१०] कच्चे ढगपर; [११] शिक्षामें, [१२] दिखलावेका; [१३] उन्नति व सुधार; [१४] ढगके।

रंग है जिनमें मगर बूए-वफ़ा[1] कुछ भी नहीं।
ऐसे फूलोंसे न घर अपना सजाना हर्गिज़ ॥

नक़्ल यूरपकी मुनासिब है मगर याद रहे।
ख़ाकमें ग़ैरते-क़ौमी[2] न मिलाना हर्गिज़ ॥

ख़ुदपरस्तीको[3] लकब[4] देते हैं आज़ादीका।
ऐसे इख़लाक़पै[5] ईमान न लाना हर्गिज़ ॥

रङ्गो रोगन[6] तुम्हें यूरपका मुबारिक लेकिन।
क़ौमका नक़्श न चेहरेसे मिटाना हर्गिज़ ॥

जो बनाते हैं नुमाइशका खिलौना तुमको।
उनकी ख़ातिरसे यह ज़िल्लत[7] न उठाना हर्गिज़ ॥

रुख़से[8] पर्देको हटाया तो बहुत ठीक किया।
पर्दएशर्मको[9] दिलसे न उठाना हर्गिज़ ॥

नक़्द इख़लाक़का[10] हम नलकी तरह हार चुके।
तुम हो दमयन्ति, यह दौलत न लुटाना हर्गिज़ ॥

गो[11] बुज़ुर्गोंमें तुम्हारे न हो इस वक़्तका रङ्ग।
इन ज़ईफ़ोंको[12] न हँस-हँसके रुलाना हर्गिज़ ॥

होगा परलय जो गिरा आँखसे इनके आँसू।
बचपनेसे न यह तूफ़ान उठाना हर्गिज़ ॥

---

[1] गुणोंकी गन्ध; [2] जातीय लज्जा।
[3] स्वच्छन्दताको; [4] पदवी।
[5] शिष्टाचारपर, [6] पाउडर, इत्यादि।
[7] बदनामी, [8] चेहरेसे, [9] लाजके पर्देको।
[10] शिष्टाचारका, [11] यद्यपि, [12] वृद्धोंको।

— ६ —

क्या कहूँ कौन हवा सरमें भरी रहती है।
बे-पिए आठ पहर बेखबरी रहती है॥

— ७ —

अपने ही दिलका पियाला पिये मदहोश हूँ मैं।
झूठी पीता नहीं मग़रिबकी[1] वह मै-नोश[2] हूँ मैं॥

— ८ —

आबरू[3] क्या है, तमन्नाए-वफ़ामें[4] मरना।
दीन[5] क्या है, किसी कामिलकी[6] परस्तिश[7] करना॥

— ९ —

गुल न हो दिलके शिवालेमें हमैयतका[8] चिराग़।
बेगुनाहोंके लहूका न हो तलवारमें दाग़॥
रास्ता है यही क़ौमोंकी तबाहीके लिए।
खून मासूमका[9] दोजख[10] है सिपाहीके लिए॥

— १० —

वह खुदग़रज़ हैं जो दौलतपै जान देते हैं।
वही हैं मर्द जो विद्याका दान देते हैं॥

---

[1] पश्चिम (यूरोप)की; [2] शराबी।
[3] प्रतिष्ठा, इज्ज़त, [4] नेकीकी अभिलाषामें।
[5] धर्म; [6] सिद्ध पुरुषकी।
[7] उपासना, सेवा, [8] सदाचरणका।
[9] निरपराधका, [10] नरक।

– ११ –

क़ौमी मुसद्दस

गुनाह क़ौमके धुल जाएँ अब वोह काम करो।
मिटे कलङ्कका टीका वह फ़ैज़ेआम[१] करो॥
निफ़ाकको[२] जुहलको[३] बस दूरसे सलाम करो।
कुछ अपनी कौमके बच्चोंका इन्तज़ाम करो॥
जो तुमने अब भी न दुनियामें काम कर जाना।
तो यह समझ लो कि बेहतर है इससे मर जाना॥

अगर जो ख़्वाबसे[४] अब भी न तुम हुए बेदार[५]।
तो जान लो कि है इस क़ौमकी चिता तैयार॥
मिटेगा दीन[६] भी और आबरू[७] भी जाएगी।
तुम्हारे नामसे दुनियाको शर्म आएगी॥
अगर हो मर्द न यूँ उम्र रायगाँ[८] काटो।
ग़रीब कौमके पैरोंकी बेड़ियाँ काटो॥

यह कारेख़ैर[९] वोह हो नाम चारसू[१०] रह जाय।
तुम्हारी बात ज़मानेके रूबरू[११] रह जाय॥
जो ग़ैर हैं उन्हें हँसनेकी आरज़ू[१२] रह जाय।
ग़रीब कौमकी दुनियामें आबरू रह जाय॥

---

[१] व्यापक दान; [२] द्वेष, [३] मूर्खताका।
[४] स्वप्नसे, [५] जागृत; [६] धर्म।
[७] प्रतिष्ठा; [८] व्यर्थ; [९] भला कार्य।
[१०] चारो तरफ, [११] समक्ष; [१२] अभिलाषा।

– १२ –

मज़हबे शायरान

पीता हूँ वह मय, नशा उतरता नही जिसका।
ख़ाली नही होता है वह पैमाना है मेरा॥
जिसजा[1] हो ख़ुशी, है वह मुझे मंजिले-राहत[2]।
जिस घरमें हो मातम[3], वह अज़ाख़ाना[4] है मेरा॥
जिस गोशएदुनियामें[5] परिस्तिश[6] हो वफ़ा की।
काबा है वही और वही बुतख़ाना है मेरा॥

– १३ –

जुनूने[7] हुब्बेवतन का मजा शबाब[8] में है।
लहू में फिर यह रवानी[9] रहे-रहे, न रहे॥
जो दिल में ज़ख़्म लगे है वह ख़ुद पुकारेंगे।
ज़बाँ की सैफ़बयानी[10] रहे-रहे, न रहे॥

– १४ –

मिटने वालों को वफ़ा[11] का यह सबक़ याद रहे।
बेड़ियाँ पैरमें हों, और दिल आज़ाद रहे॥

---

[1] स्थानमे, [2] सुखद स्थान।
[3] शोक, रोना-पीटना; [4] शोकगृह।
[5] ससारके कोनेमे, [6] पूजा।
[7] देशभक्तिका उन्माद, [8] युवावस्था।
[9] जोश, बहाव, [10] कथन-शक्ति।
[11] नेकीका,।

दिल वह दिल है जो सदा ज़ब्त[1]से नाशाद[2] रहे।
लब[3] वह लब है जो न शर्मिन्दये[4] फ़रियाद रहे॥

ख़ुशनवाईका[5] सबक़ मैंने क़फ़समें[6] सीखा।
क्या कहूँ और, सलामत मेरा सैयाद[7] रहे॥

मुझको मिल जाय चहकनेके लिए शाख़ मेरी।
कौन कहता है कि गुलशनमें न सैयाद रहे॥

जज़बए-क़ौम[8]से ख़ाली न हो सौदाए-शबाब[9]।
वह जवानी है जो इस शौक़में बरबाद रहे॥

— १५ —

यह बेकसी[10] भी अजब बेकसी है दुनियामें।
कोई सताए हमें हम सता नहीं सकते॥

चिराग़ क़ौमका रौशन है अर्शपर[11] दिलके।
इसे हवाके फ़रिश्ते[12] बुझा नही सकते॥

— १६ —

दरे तदबीरपर[13] सर फोड़ना शेवा[14] रहा अपना।
वसीले[15] हाथ ही आये न किस्मत आज़माईके॥

---

[1] सहन-शक्ति, [2] उदास, रजीदा; [3] होठ।

[4] आत्म-निवेदन करनेसे शर्म आना, स्वार्थकी बात करते हुए सकुचाना।

[5] मधुर वाणी; [6] पिंजरेमे, [7] शिकारी, चिड़ीमार।

[8] जातीय प्रेम, [9] जवानीका नशा, [10] लाचारी।

[11] आस्मानपर; [12] देवता; [13] पुरुषार्थकी चौखटपर।

[14] कर्त्तव्य, आदत, ढग; [15] साधन।

— १७ —

अगर दर्दे-मुहब्बतसे न इन्साँ[1] आश्ना[2] होता।
न मरनेका सितम[3] होता, न जीनेका मज़ा होता॥

हज़ारों जान देते हैं बुतोंकी[4] बेवफ़ाईपर[5]॥
अगर इनमेंसे कोई बावफ़ा[6] होता तो क्या होता?

हविस[7] जीनेकी है यूँ उम्रके बेकार कटनेपर।
जो हमसे जिन्दगीका हक़ अदा होता तो क्या होता?

यह मरना बेहिजाबाना[8] निगाहें[9] क़हर[10] करती है।
मगर हुस्ने-हयापरवरका[11] आलम[12] दूसरा होता।

ज़बाँके ज़ोरपर हँगामाआराईसे[13] क्या हासिल[14]?
वतनमें एक दिल होता, मगर दर्द-आश्ना[15] होता॥

— १८ —

अहले[16]हिम्मत मंज़िलेमक़सूद[17] तक आ ही गये।
बन्दए[18]तक़दीर क़िस्मतका गिला[19] करते रहे॥

— १९ —

निफ़ाक़[20] गबरू[21] मुसलमाँका यूँ मिटा आख़िर।
यह बुतको[22] भूल गये, वह खुदाको भूल गये॥

---

[1] मनुष्य; [2] परिचित; [3] दुख, रंज; [4] माशूक़, प्रेमिकाकी; [5] कृतघ्नतापर; [6] भलामानस, कृतज्ञ; [7] तृष्णा; [8] बेपर्दा, बेशर्म; [9] आँखे; [10] गजब; [11] लज्जायुक्त सौन्दर्यका; [12] दृश्य; [13] फिसाद उठानेसे; [14] लाभ; [15] दुखमे सहानुभूति रखनेवाला; [16] साहसी पुरुष; [17] अभीष्ट स्थान; [18] प्रारब्धको ही सब कुछ समझानेवाले; [19] शिकायत; [20] झगड़ा; [21] आतिशपरस्त; [22] मूर्त्ति (पूजा) को।

— २० —

बाग़बाँने यह अनोखा सितम[1] ईजाद[2] किया।
आशियाँ[3] फूँकके पानीको बहुत याद किया॥

दरेज़िन्दाँपै[4] लिखा है किसी दीवानेने—
'वही आज़ाद है जिसने इसे आबाद किया'॥

जिसपर अहबाब[5] बहुत रोए, फ़क़त इतना था।
घरको वीरान किया, क़ब्रको आबाद किया॥

इसको नाक़दरिये[6] आलमका सिला[7] कहते हैं।
मर चुके हम तो ज़मानेने बहुत याद किया॥

— २१ —

राहतसे[8] भी अज़ीज़[9] है राहतकी आरज़ू[10]।
दिल ढूँढ़ता है सिलसिलये[11]इन्तज़ारको॥

— २२ —

कुछ दाग़ गुनाहोंके[12] हैं कुछ अश्केनदामत[13]।
इबरतका[14] मुरक़्क़ा[15] है मेरे दामनेतरमें[16]॥

---

[1] अत्याचार; [2] आविष्कार; [3] घोसला।
[4] कारावासके द्वारपर; [5] मित्र, कुटुम्बी।
[6] नेकीके प्रति संसारकी उपेक्षा, [7] बदला।
[8] चैन, सुखसे; [9] सुप्रिय; [10] अभिलाषा।
[11] प्रतीक्षाका छोर, मार्ग; [12] पापोंके।
[13] प्रायश्चित्त (शरमिन्दगी)के आँसू।
[14] सम्मिलित, मिश्रित; [15] तसवीर; [16] भीगे वस्त्रोंमें।

– २३ –

यह ग़लत है कि हमें तर्ज़फ़ुग़ाँ[1] याद नहीं।
अब वह आलम[2] है कि गुंजाइशे[3]फ़रियाद नहीं॥
जब कोई ज़ुल्म नया करते हैं, फ़र्माते हैं—
"अगले वक़्तोंके हमें तर्ज़ेसितम[4] याद नहीं"॥

– २४ –

मुझसे रौशन इन दिनों दैरो[5] हरमका[6] नाम है।
पाएबुतपर[7] है जबीं[8] लबपर[9] ख़ुदाका नाम है॥
देखना है हुस्नके[10] जल्वे[11] तो बुतख़ानेमें[12] आ।
तेरे काबेमें तो बस वाइज़[13] ! ख़ुदाका नाम है॥
शर्त है पीकर मुकरना, पारसाईके[14] लिए।
जो सरे बाज़ार पीता है वही बदनाम है॥
मेरे मज़हबमें है वायज़ ! तर्केमयनोशी[15] हराम[16]।
छोड़कर पीता हूँ फिर, तौबा[17] इसीका नाम है॥

– २५ –

मुफ़लिसी मेरी मुहब्बतकी कसौटी बन गई।
हिम्मते अहबाबके[18] जौहर नुमायाँ[19] हो गये॥

---

[1] रोनेका ढग; [2] हालत, दशा; [3] प्रार्थनाकी जरूरत; [4] अत्याचारके तरीके; [5] मन्दिर; [6] मसजिदका; [7] मूर्त्तिके चरणपर; [8] मस्तक; [9] होठपर; [10] सौन्दर्यके; [11] प्रकाश, करामात; [12] मन्दिरमे; [13] व्याख्याता; [14] नेकचलनीके; [15] शरावका त्याग; [16] पाप; [17] प्रतिज्ञा, प्रायश्चित्त; [18] मित्रोंकी हिम्मतके; [19] प्रकट।

– २६ –

दर्देदिल, पासेवफ़ा,[१] जज़बए[२]ईमाँ होना।
आदमीयत है यही, औ यही इन्साँ होना॥

दुनियासे ले चला है जो तू हसरतोंका[३] बोझ।
काफ़ी नहीं है सरपै गुनाहोंका[४] बार[५] क्या?

बादेफना[६] फ़िज़ूल है नामोनिशाँकी फ़िक्र।
जब हम नहीं रहे तो रहेगा मज़ार[७] क्या?

– २८ –

आशना[८] हों, कान क्या, इन्सानकी फ़रियादसे?
शेख़को[९] फ़ुर्सत नही मिलती ख़ुदाकी यादसे॥

– २९ –

उसे यह फ़िक्र है हरदम नया तर्ज़ेवफा[१०] क्या है?
हमें यह शौक है देखें सितमकी[११] इन्तहा[१२] क्या है?

गुनहगारोंमें[१३] शामिल है गुनाहोंसे नहीं वाक़िफ़।
सज़ाको जानते हैं हम, ख़ुदा जाने खता क्या है?

नया बिस्मिल[१४] हूँ मैं वाकिफ नहीं रस्मे-शहादतसे[१५]।
बता दे तूही ऐ ज़ालिम! तड़पनेकी अदा क्या है?

---

[१] प्रीतिका वर्त्ताव; [२] ईमानदारीका गुण; [३] अभिलाषाओंका, [४] पापोंका, [५] बोझ, [६] मृत्युके बाद; [७] कब्र; [८] परिचित, [९] धर्माचार्यको; [१०] अत्याचारका ढग, [११] अत्याचारकी; [१२] अन्त, हद, [१३] अपराधियों, [१४] अर्धमृतक,. वेदनासे तड़पनेवाला. [१५] मरनेके न्योछवर होनेके रीति-रिवाजसे।

चमकता है शहीदोंका लहू क़ुदरतके परदेमें।
शफ़क़का[1] हुस्न[2] क्या है, फूलकी रङ्गी क़बा[3] क्या है?

— ३० —

अभी नया जोश इश्क़का है सलाह सुनते नहीं किसीकी।
करेंगे आखिरमें फिर वही हम जो चार यार आश्ना[4] कहेंगे॥

हमारे और जाहिदोंके[5] मजहबमें, फ़र्क़ अगर है तो इस कदर है।
कहेंगे हम जिसको पासे इन्सॉ[6], वह उसको ख़ौफ़े ख़ुदा कहेंगे॥

— ३१ —

चमनको दीदयेउल्फ़तसे[7] देख ऐ बुलबुल!
गुलोंसे फूटके रङ्गे-ख़िज़ॉ[8] निकल आया॥

अज़लके[9] दिन जो तबाहीकी फ़ाल देखी गई।
तो नामे किश्वरे हिन्दोस्तॉ[10] निकल आया॥

— ३२ —

जिसकी दुनियाको ख़बर हो यह वह नासूर[11] नहीं।
तेरे मातमकी[12] नुमाइश[13] मुझे मंजूर नहीं॥

---

[1] सूर्यास्तके समयका दृश्य; [2] सौन्दर्य।
[3] पोशाक; [4] मित्र; [5] परहेजगारोंके।
[6] मनुष्यका कर्त्तव्य, [7] प्रेमदृष्टि।
[8] पतझड़का रग; [9] सृष्टिके आदिमें।
[10] भारत देश; [11] कभी न भरनेवाला घाव।
[12] मृत्यु शोककी; [13] प्रदर्शन, दिखलावा।

— ३३ —

गरूरो जुहलने[1] हिन्दोस्ताँको लूट लिया।
बजुज[2] निफाकके[3] अब खाक भी वतनमें नही॥

— ३४ —

गुलोने बाग छोड़ा तंग आकर जौरेगुलचीसे।
चमन वीरान होता है, खबर ले बागबाँ अपनी॥

— ३५ —

जिसे है फिक्र मरहमकी, उसे कातिल समझते है।
इलाही खैर हो, यह जख्म अच्छा हो नहीं सकता॥
कमालेबुजदिली है पस्त होना अपनी आँखोंमें ;
अगर थोड़ीसी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता ?
उभरने ही नहीं देती यहाँ बेमायगी[4] दिलकी,
नही तो कौन कतरा है जो दरिया हो नहीं सकता ?

— ३६ —

फनाका[5] होश आना, जिन्दगीका दर्देसर जाना।
अजल[6] क्या है खुमारेबादएहस्ती[7] उतर जाना॥

— ३७ —

शिरकतेगमको[8] अजीजोसे[9] तमन्ना[10] क्या हो।
इम्तहाँ[11] इनकी वफाका मुझे मंजूर नहीं॥

---

[1] घमण्ड और नादानीने, [2] सिवाय; [3] द्वेषने; [4] बेसामानी, [5] नाश, बरबादीका; [6] मृत्यु, [7] जिन्दगीकी शराबका नशा, [8] दुख बँटानेकी, [9] स्नेही मित्रोसे, [10] आशा; [11] परीक्षा।

— ३८ —

अबकी तो शामेग़मकी[१] सियाही कुछ और है।
मंज़ूर है तुझे मेरे परवरदिगार क्या?॥

— ३९ —

मेरे अहबाब पेश आते हैं मुझसे बेवफ़ाईसे।
वफ़ादारीमें शायद कर रहे हैं इम्तहाँ मेरा॥

— ४० —

ज़िन्दगी नाम था जिसका उसे खो बैठे हम।
अब उमीदोंकी फ़क़त जलवागरी[२] बाक़ी है॥

२८ अगस्त १९४४

[१] रजकी सन्ध्याकी; [२] चमत्कार।

जागरण

: ७ :

सन् १८५७-५८ के महासमर के बाद राजनैतिक चेतना

साम्राज्य-विरोधी, मजदूर-किसान-हितैषी शायर

जागरण

सन् १९१४-१८के महासमरके बाद
राजनैतिक चेतना

जिस तरह १८५७के विद्रोहके झटकेसे भारतवासियोकी तन्द्रा दूर हुई, और अनेक परिवर्त्तनोके साथ उर्दू-शायरीने भी अपना परिधान वदला, उसी तरह १९१४-१८के गत महासमरके पश्चात् भारतमे जागरणके चिन्ह दिखाई देने लगे। महासमरके कारण विश्वका नक्शा ही बदल गया। कोई देश मुँहके बल औंधा पडा और कोई सीना तानकर खडा होनेमे समर्थ हो गया। कुछ देश पराधीनताके वन्धनमे जकडे गये और कुछने स्वतत्रता देवीका वरदान पाया। कितने ही लोग मटियामेट हो गये और कितने ही मालामाल वन बैठे। अखिल विश्वमे एक अभूतपूर्व परिवर्त्तन हो उठा। कुम्भकर्णी नीदको मात करनेवाले भारतकी भी आँखे खुलीं। लाखों लालोकी बलि देनेपर भी उसे अँगूठा दिखाया गया। युवती स्त्रियाँ भरी जवानीमे मॉगका सिंदूर धो वैठी। वृद्धाएँ निपूती हो गई। दुधमुँहे वच्चे विलखते हुए अनाथ हो गये। भारतके धन-जनकी पूर्णाहुति दी गई। परिणाम-स्वरूप इसके शासक अजेय बन बैठे और यह मुँह देखता ही रह गया। इतने महान त्याग और उपकारके एवजमे पारितोषिक-रूपमे कुछ देनेके बजाय गिडगिडाते भारतपर 'रौलट ऐक्ट' लादकर उल्टा उसकी पीठमे लात मार दी। रोटीके वदले गोली खानेको मिली। इस कृतघ्नताके अपमानको भारतीय सहन न कर सके। और सहन करते भी कैसे ? भारतवासी भी आखिर मनुष्य थे। मनुष्य तो मनुष्य, दवाव पड़नेपर तो पाँवोंकी ठुकराई हुई मिट्टी भी सरपर आ जाती है :—

गर्द उड़ी आशिक़की तुर्बतसे तो झुँझलाकर कहा—
"वाह ! सर चढ़ने लगी पाँवोंकी ठुकराई हुई ॥"

—अज्ञात्

अतः सारे भारतमे एक कोहराम मच गया। महात्मा गाँधीने आगे बढकर धोसेपर चोट जमाई, और उनके नेतृत्वमें सामूहिक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। ६ अप्रैल १६१६को समग्र भारतमें विरोध-स्वरूप विराट हड़ताल हुई। उस रोज़ बालकों तकने उपवास किये। मल्लाहों, क़ुलियो और ताँगेवालोने भी काम नही किया। विरोध-प्रदर्शन करनेके लिए जनसमूह उमड़ पड़ा। शान्त किन्तु आर्त्तस्वरमें अपनी वेदना व्यक्त करनेको मुँह खोला तो निहत्थोपर गोलियोकी बौछार हुई। इतने भयानक दमनके बाद भी आन्दोलन उग्रतर होता गया। मुसलमान भी टर्कीके कारण क्षुब्ध थे। अत. हिन्दू-मुस्लिम संगठित हो गये और उनकी वेदना असहयोग आन्दोलनके रूपमे फूट पडी। सारे भारतमें जागरणके चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे। कांग्रेस द्वारा कॉलिजो, कौसिलो, अदालतो और विदेशी वस्तुओके बहिष्कारका प्रस्ताव पास होते ही अनेक वकीलोने वकालत छोड़कर, हज़ारो विद्यार्थियोंने कॉलिजसे निकलकर, कौसिल-मेम्बरोंने कौसिलको धता बताकर आन्दोलनको प्रचण्ड रूप देनेमे सक्रिय भाग लिया। जनसाधारणने विदेशी वस्त्र, शराब आदिका ऐसा बहिष्कार किया कि लंकाशायर डाँवाडोल हो गया। आन्दोलनको कुचलनेके लिए गोलियाँ चलाई गईं, जेलख़ाने भरे गये, घर-बार नीलाम किये गये; परन्तु आन्दोलन उभरता ही गया।

साहित्यपर देशकी परिस्थिति और समयका बड़ा भारी प्रभाव पडता है। अतः इस युगान्तर उत्पन्न करनेवाली स्थितिसे उर्दू-शायरी कैसे अछूती रह सकती थी ? घरमे आग लगनेपर मादकसंगीत कैसे गाया जा सकता था ? अतः उर्दू-शायरोंने भी अपना रुख़ बदला। देशके नेताओके बलिदान और त्यागके ऊपर नज़्मे लिखी जाने लगी। परा-

धीनता, स्वतंत्रता, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, बहिष्कार, जलियानवाला बाग आदिपर काफ़ी लिखा गया। इस मैदानके शूरमा ज़फर, लालचन्द फ़लक किशनचन्द ज़ेबा आदिने अच्छे हाथ दिखाए। १९१४से २५ तकका युग राजनैतिक क्षेत्रमें उर्दूका प्रवेश-युग है। शनैः शनैः भारतमे किसान मज़दूर, साम्राज्यवाद, लोकतंत्रवाद, ग्रामोद्धार, बेकारी, विद्रोह, आन्दोलनोंका दौर आया तो उर्दू-शायरी जवानीकी चौखटपर खड़ी थी। आगेके पृष्ठोमें इसी युवा युगकी झाँकी मिलेगी। प्रारम्भकी राजनैतिक गतिविधिकी शायरी जान-बूझकर छोड़ दी गई है।

२५ मार्च १९४५

१४

शबीर हसन खाँ 'जोश' मलीहाबादी

(जन्म सन् १८९६)

इस युगके शायरोमे 'जोश'का नाम सबसे पहले आता है। १८५७के विद्रोहके बाद 'आजाद' और 'हाली'के प्रयत्नसे उर्दू-शायरी जम्हाइयाँ और करवट-सी लेती हुई मालूम होती है। 'इकबाल' और 'चकबस्त'के प्रयत्नसे उसकी नीद उचाट होती है। ये लोग युगान्तरकारी थे। उर्दू-शायरीके युगान्तरकारी महलका 'आजाद' और 'हाली'ने शिलारोपण किया, 'इकबाल' और 'चकबस्त'ने दीवारे खडी की और 'जोश'ने उनके अधूरे कामको पूरा किया।

'जोश' स्पष्टवादी है। जो उनके मनमें होता है वही जबानपर, और नोकेकलमसे कागजपर आता है। वह अपने भावोको शायरीके रगीन पर्देमे छुपाकर तीर नही छोड़ते, अपितु एक वीर सैनिककी भॉति ललकारकर मैदानमे आते है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक गढ़ोंपर इस वीरता-धीरतासे उन्होने आक्रमण किया है, वह करारी चोट पहुँचाई है कि बरबस मुँहसे वाह-वाह निकल पड़ती है। 'जोश'ने बादशाहोंकी मसनवी न लिखकर किसानका गुणगान किया है। फरिश्तेसे बेहतर मज़दूरको समझा है। भारतपर जन्नतको कुरबान किया है। दोज़ख़से बदतर उन्होंने साम्राज्यवादको बताया है। 'जोश'की कहानी उनकी ही ज़बानी सुनिये :—

"मैने नौ बरसकी उम्रसे शेर कहना शुरू कर दिया था। जब मेरे दूसरे हमसिन बच्चे पतग उड़ाते और गोलियाँ खेलते थे, उस वक़्त किसी

अलहदा गोशेमें शेर मुझसे अपनेको कहलवाया करता था। शायरीसे जब फुर्सत पाता था तो एक ऊँची-सी मेजपर बैठकर साथी बच्चोको जो जीमे आता अनाप-शनाप दर्स (उपदेश) दिया करता था। दर्स देते वक़्त मेरी मेजपर एक पतला-सा बेंत रखा रहता था। ग़ौरसे न सुननेवाले बच्चोको मै बुरी तरह मारता था। मै लडकपनमे बलाका शौलाखू था। ज़रा-सी खिलाफ वातपर मेरे मुँहसे चिनगारियाँ निकलने लगती थी। तीस फी सदी जमानेकी गर्दिश और सत्तर फी सदी फिक्र, परेशानी और मुहब्बतने मेरे मिजाजको अब इस कदर बदल दिया है कि मुझे खुद हैरत होती है।"

"शायरी करते हुए यह मेरी चौथी पुश्त है। मेरा लडका और मेरी लड़की भी मौजूँतबह हैं। अगर आइन्दा यह दोनो शायरी करेंगे तो 'पाँचवी पुश्त हैं शब्बीरकी मद्दाहोमें' कहनेके मुस्तहक होंगे। मेरे वालिदने मुझे शायरीसे हमेशा रोका और सख्तीके साथ रोका। फर्माते—'बेटा! शायरी मनहूस चीज़ है। अगर इसमें पडोगे तो तवाह हो जाओगे।' एक रोज मैंने बडी जिसारतसे काम लेकर डरते-डरते सवाल किया—'आप और दादामियाँ भी तो शेर कहते हैं, वो तो तबाह नही हुए, मै क्यो तवाह हो जाऊँगा?' उन्होने आँखोमे आँसू भरकर जवाब दिया कि 'चार-पाँच पुश्तोसे हमारी जायदाद लडको और लडकियोमे तकसीम-दर-तकसीम होती चली आ रही है, और तुम्हारे दादाने अपने कुछ ऊपर सौ लडको और लड़कियोमे अपने ताल्लुकेको जिस तौरसे तकसीम फ़रमाया है, उसके मायने है कि जो जायदाद मेरे हिस्सेमे आई है वोह मेरे वाद तुम तीनो भाइयो और चारो बहनोमे तक़सीम होनेके वाद हरगिज इस काबिल नही रहेगी कि एक शायरकी जौके-खानुमाँवरदारीको बरदाश्त कर सके।' चूनाचे वही हुआ जिसका मेरे वापको अन्देशा था।"

"घरमे दौलत पानीकी तरह वहती फिरती थी। हुकूमतका तनतना भी शामिल था। जिन्दगी और ज़िन्दगीकी तल्खियोसे कतई नावाकिफि-यत। फिर भी, मुझे याद है कि कोई शै मेरे दिलमे रह-रहकर चुभा

करती थी। साथ ही मुझे हुस्नेमनाज़िर (प्राकृतिक सौन्दर्य)से खुशी और हुस्नेइन्सानीसे दुख महसूस हुआ करता था। यह सब क्यों होता था, मै नहीं समझ पाता था।....उन दिनो नमाज़का सख्त पाबन्द था। दाढी रख ली थी, और कमरा बन्द करके घंटों इबादतमें खोया रहता था। चारपाईपर लेटना, गोश्त खाना, तर्क कर दिया था। एक मशहूर खानकाहके सज्जादहनशींके हाथपर बेत कर ली थी। जरा-जरा-सी बातमें मेरे आँसू निकल आते थे।....मैं कबीर, टैगोरकी शायरीका दिलदादा और हाफिज़ेशीराज़का परिस्तार था।.... लेकिन कभी-कभी यह भी महसूस होता था जैसे मेरे दमाग़के अन्दर कोई खतरनाक कमानी खुल रही है, जो आखिरकार मुझसे मेरी इस दुनियाए लताफ़तको छीन लेगी। वक़्त गुजरता गया, कमानी खुलती चली गई, और कुछ दिनके बाद मुझे एक किस्मका हल्का बागियाना (विद्रोही) मैलान पैदा हो गया और तरक्की करने लगा। नौबत यहाँ तक पहुँची कि मेरी नमाजें तर्क हो गईं, दाढ़ी मुँड़ गई, रातका रोना, सुबहका आहें भरना खत्म हो गया, और मै उस मंज़िलमे आगया जहाँ हर कदीमी रस्मो-रिवाज रिवायत (पुरातन प्रथाओ, रूढियों, किंबदन्तियो)पर एतराज़ करनेको जी चाहता है।"

"मेरे वालिदने मुझे बड़ी नरमी और अहतियातके साथ समझाया, फिर धमकाया, मगर मुझपर कोई असर न हुआ। मेरी बगावत बढ़ती ही चली गई। नतीजा यह हुआ कि मेरे बापने वसीयतनामा तहरीर फ़र्माकर मेरे पास भेज दिया कि अगर अब भी मैं अपनी ज़िदपर क़ायम रहूँगा तो सिर्फ़ १०० रुपये माहवार वजीफ़ेके अलावा कुल जायदादसे महरूम कर दिया जाऊँगा। लेकिन मुझपर इसका भी मुतलक असर नहीं हुआ। छः माहके बाद उनके तलब किये जानेपर सर झुकाये अदबके साथ वालिदके पास पहुँचा। मेरे शफीक़ बापने मुझसे कहा—'शबीर!' और मैंने नज़र उठाई तो देखा कि मेरे बापकी बड़ी-बड़ी गुलाबी आँखोंमें

आँसू डबडबाये हुए है। 'यह देखो, दूसरा वसीअतनामा। मैंने जायदादमें हिस्सा तुम्हारे दोनों भाइयोके बराबर कर दिया है।' मेरे बापने भर्राई हुई आवाज़में मुझसे कहा—'शबीर ! इस दौलत और जायदादकी खातिर लोग माँ-बाप और भाई-बहन तकको मार डालते है और यहाँ तक कि ईमानको भी गँवा देते है। मगर तुमने इस दौलत और जायदाद-की अपने उसूलके सामने जर्रा बराबर भी परवाह न की। मुझे तुम्हारी यह बात बहुत पसन्द आई'।"

उक्त आत्मपरिचयसे स्पष्ट हो जाता है कि 'जोश' किस धातुके बने है। 'जोश'का जन्म १८९६मे मलीहाबाद, जिला लखनऊमें हुआ। आप ९ वर्षकी आयुसे १२-१३ वर्षकी आयु तक 'अज़ीज' लखनवीसे इसलाह लेते रहे। बादमे स्वतंत्र होकर शायरी करने लगे। कॉलिज छोड कर १९२४मे निज़ाम-स्टेटमें सर्विस की, और १९३४मे 'लिटरेरी सीनियर'के पदको छोडकर देहलीमे 'कलीम' मासिकपत्र निकालने लगे।

'जोश' इतने नेक है कि दुश्मनके बदी करनेपर उन्हे स्वय शर्म आ जाती है। लेकिन स्वाभिमानको ठेस पहुँचनेपर आग हो जाते है। फ़र्माया भी है :—

"दिल हमारा जज़्बयेग़ैरतको[1] खो सकता नहीं।
हम किसीके सामने झुक जायें हो सकता नहीं॥
राहेख़ुद्दारीसे[2] मरकर भी भटक सकते नहीं।
टूट तो सकते है हम, लेकिन लचक सकते नहीं॥
हश्रमें[3] भी ख़ुसरवाना[4] शानसे जायेंगे हम।
और अगर पुरसिश[5] न होगी तो पलट आयेंगे हम॥

[1] लज्जा (यहाँ व्यक्तित्वकी आन); [2] स्वाभिमानके पथसे। [3] प्रलयवाले दिन ईश्वरके समक्ष; [4] बादशाही; [5] आवभगत।

अहलेदुनिया क्या हैं और उनका असर क्या चीज है।
हम खुदासे नाज करते हैं बशर[1] क्या चीज है ?

नाज कर ऐ यार ! अपनी दिलवरीपर नाज कर।
'जोश'सा मग़रूर है तेरा गुलामेकमतरीं[2] ॥"

अभिमानकी गन्ध तक नहीं है। सर्वसाधारणसे बड़ी नम्रता और सहृदयतासे मिलते हैं। एक बार मुझे अपने मित्र सुमत बाबू (जो आजकल रोहतकमें फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट हैं, और तब एम० ए०के विद्यार्थी थे)के साथ एक मुशायरेके सिलसिलेमे मुलाकातका इत्तफ़ाक हुआ। उन दिनो वे करौलबाग दिल्लीमे रहते थे। मकान तलाश करते हुए एक और नामी बुजुर्ग शायरके यहाँ अचानक पहुँच गये। पहुँचनेका मक़सद छुपाकर इस तरह बातचीत की मानों हम उन्हें निमन्त्रित करनेको ही आये थे। बातचीतके सिलसिलेमे 'जोश' साहबके घरका पता पूछा तो हजरत भड़क गये। बोले—" 'जोश' जैसे काफिरको बुलाओगे तो भई हम नही आनेके।" हम किसी तरह वहाँसे उठे और जोश साहबके यहाँ पहुँचे तो वहाँ आलम ही दूसरा था। कमरेमे कालीन-गद्दे बिछे हुए थे। रेशमीन रिजाई ओढ़े कई साहब बैठे थे। चाय-पकौड़ीका दौर चल रहा था, और शेरोशायरीका सिलसिला जारी था। हमारी स्कीम सुनी तो खूब पसन्द की और आनेका बगैर किसी हीले-हवालेके इक़रार किया। कसदन उन बुजुर्गवारके भी मशायरेमे शामिल होनेका जिक्र किया कि देखे यह भी उनके नामसे भडकते है या नही। जहाँ तक मुझे याद है 'जोश' साहबने उनकी तारीफ़ ही की।

पटनेके एक मुस्लिम सज्जनने एक मुशायरेका जिक्र करते हुए बतलाया कि जोश साहब पटने आये तो कॉलेजके एक सहपाठीसे बगलगीर

---

[1] मनुष्य; [2] विनम्र सेवक।

होनेपर जोशको उनके पुराने नौकरकी भी याद आगई। और उस बूढ़े नौकरके आनेपर उससे भी बड़ी मुहब्बतसे सबके सामने पेश आये।

'जोश' उदार हृदय और दानी स्वभावके हैं—भद्र और नेक हैं। मुस्लिम वंशमे उत्पन्न हुए है, परन्तु 'जोश'का मजहब मनुष्य-सेवा और ईमान देशकी स्वतन्त्रता है।

'जोश' एक कामयाब शायर है। वे सही मायनोमे शायराना दिलो-दिमाग लेकर पैदा हुए हैं। उनके कलाममे वोह सच्चाई है जो उनके फलसफे-को उभारती है। लाहौरके एक बहुत बड़े जल्सेमे जिसमें टैगोर और सरोजिनी नायडू भी थी, जल्सेके सभापति प० बृजमोहन दत्तात्रय साहब 'कैफी'ने 'जोश'का परिचय देते हुए फर्माया था—" 'जोश'की शायरीने हमे इस काबिल बना दिया है कि आँखे नीची किये बगैर अपनी शायरीको तरक़्कीयाफ्ता जबानोकी शायरीके मुकाबिलेमे रख सकते हैं।"[1]

'जोश'ने प्राकृतिक सौन्दर्य, प्रेम, देशभक्ति, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, स्वतन्त्रता, किसान-मजदूर, मुफलिस, सरमायेदार और मानसिक, धार्मिक, सामाजिक रूढियोंपर बहुत काफी लिखा है। उसी सागरके कुछ मोतियो-की बानगी देखिए।

ग़ुलामों से ख़िताब :—

('जोश'की देशभक्तिका परिचय)

जब दो देशोमे युद्ध होता है, तब एक-न-एककी हार निश्चित है। फलस्वरूप विजित देश परतन्त्रताकी नारकीय यन्त्रणा सहन करनेको बाध्य हो जाता है। विजित होनेपर भी वह अपने पूर्व गौरवको नही भूलता और अपनी वर्त्तमान स्थितिसे सदैव असन्तुष्ट और क्षुब्ध रहता है। उसके मनमे लुटने और पिटनेका खयाल सदैव काँटेकी तरह चुभता रहता है।

---

[1] देखिए—नक़्शेनिगारकी भूमिका।

और यही खयाल (अहसास) कभी-न-कभी अवसर और साधन मिलते ही परतंत्र जातियोंको स्वतंत्रताका सुनहरा प्रभात दिखला देता है। जीती हुई बाजी हार जाना, धोखे-फ़रेबमें फँस जाना, साधन, शक्ति-क्षीण, समय प्रतिकूल, असावधानता, अल्पसंख्यक अथवा भाग्य प्रतिकूल होनेके कारण हार जाना कुछ आश्चर्यकी बात नही। आश्चर्य तो हार जानेके अहसासके नष्ट होनेमें है, क्योंकि अहसास बना रहेगा, परतंत्रता अनुभव करता रहेगा तो कभी-न-कभी अवसर आ सकता है। इसी भावका द्योतक सर 'इक़बाल'ने क्या ख़ूब शेर कहा है !:—

"वायेनाकामी मताए कारवाँ जाता रहा।
कारवाँके दिलसे अहसासेज़ियाँ जाता रहा* ॥"

ऐसे ही अभागे गुलामोसे तंग आकर 'जोश' खीझकर फ़र्माते है :—

'इन बुज़दिलोंके हुस्नपै[1] शैदा[2] किया है क्यों ?
नामर्द क़ौममें मुझे पैदा किया है क्यों ?'

'मुल्कों के रजज़' शीर्षकमें स्वतंत्र देशोंकी तुलना करते हुए भारतकी शोचनीय स्थितिका वर्णन उसीके मुँहमे किन मार्मिक शब्दोमे रक्खा है :—

"निहंगोंका[3] समन्दर हूँ, दरिन्दोंका[4] बयाबाँ हूँ।
उदूसे क्या ग़रज़ अपनोंसे ही दस्तोगरीबाँ[5] हूँ ॥

---

* खेद है कि यात्रियोका धन (मताए कारवाँ) लूट लिया गया। परन्तु इससे भी अधिक खेद अथवा निराशाकी बात (वायेनाकामी) तो ये हैं कि यात्री-दलके हृदयसे लुट जानेकी सज्ञा (अहसासे ज़ियां) ही नष्ट हो गई।

[1] सौन्दर्य्यपर; [2] मोहित; [3] घड़ियाल, मगर, जलजन्तुओंका; [4] फाड़ खानेवाले शेर चीते, भेड़िये आदिका; [5] परस्पर झगड़ा करना।

ख़ुदाके फ़ज़्लसे बदबख़्त हूँ, बुज़दिल हूँ, नादाँ हूँ।
मेरी गर्दनमें है तौक़ेगुलामी पाबजौलाँ[1] हूँ॥
दरेआक़ा[2] पै सर है, क़फ़्श[3]बरदारी पै नाज़ाँ[4] हूँ॥"

गुलामीसे आपको इस कदर चिढ है कि 'मुस्तक़बिल के गुलाम' शीर्षकमे आप सन्तान भी पसन्द नही करते, क्योकि :—

इक दिन 'जलील'ओ 'वहशी' इनके भी नाम होंगे।
अपनी ही तरह इक दिन यह भी गुलाम होंगे॥
(शोलओ शबनम)

पस्तक़ौम :—

गर्दनका तौक पाँवकी जंजीर काट दे।
इतनी गुलामकौममें हिम्मत कहाँ है 'जोश' ?
अपनी तबाहियोंपै कभी ग़ौर कर सके।
इतनी जलील मुल्कको फ़ुर्सत कहाँ है 'जोश' ?
इक हर्फ़ेगर्म सुनते ही लौ दे उठे दमाग़।
हिन्दोस्तानमें वह हरारत कहाँ है 'जोश' ?
(सैफोसुबू)

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर दिल्ली गए तो म्यूनस्पल कमेटीने अभिनन्दन देनेसे मना कर दिया। उसी भावावेशमे लिखते है :—

....'आह ! ऐ टैगोर ! तू क्यों हिन्दमें पैदा हुआ ?
सच बता तू किस अदायेमुल्कपर शैदा हुआ ?

---

[1] पाँवोमे बेड़ियाँ पहने हुए।
[2] परतंत्र बनानेवालेकी चौखट।
[3] जूता उठानेपर; [4] गर्वित।

इस जगह तो काँपती है क़हरकी परछाइयाँ।
ज़िन्दगी ग़ायब है मुर्दे साँस लेते हैं यहाँ॥'

भारतकी गुलामीसे 'जोश' इतने दुखी हैं कि इसपर उन्होंने उम्र भर लिखा है। अपने इकलौते पुत्रको सम्बोधित करते हुए **"सज्जाद से"**—शीर्षकमें उन्होंने जो लिखा है उसीसे उनकी असीम देश-भक्तिका परिचय मिलता है :—

. . . .

क़ब्रमें रूहेपिदरको शाद करनेके लिए।
सर कटाना, हिन्दको आज़ाद करनेके लिए॥

. . . .

बापकी सोती हुई क़िस्मत जगानेके लिए।
क़ब्रपर दो फूल ले आना चढ़ानेके लिए॥

बाग़ेहस्तीके न वोह बाग़े जिनांके फूल हों।
मुज़दए[1] आज़ादिये हिन्दोस्तांके फूल हों॥'

(शोलओ शबनम)

हुब्बे वतन और मुसलमान :—

मज़हबी इख़लाक़के जज़्बेको ठुकराता है जो।
आदमीको आदमीका गोश्त खिलवाता है जो॥

फ़र्ज़ भी कर लूँ कि हिन्दू हिन्दकी रुसवाई है।
लेकिन इसको क्या करूँ, फिर भी वोह मेरा भाई है॥

बाज़ आया मैं तो ऐसे मज़हबी ताऊनसे।
भाइयोंका हाथ तर हो भाइयोंके ख़ूनसे॥

---

[1] शुभ समाचाररूपी फूल।

. . . .

तेरे लबपर हैं इराको, शामो, मिस्रो, रूमो, चीन।
लेकिन अपने ही वतनके नामसे वाकिफ़ नहीं॥

सबसे पहले मर्द बन हिन्दोस्ताँके वास्ते।
हिन्द जाग उट्ठे, तो फिर सारे जहाँके वास्ते॥

(हर्फ़ी हिकायत)

ग़द्दार से ख़िताब :—

उँगलियाँ उट्ठेंगी दुनियामें तेरी औलादपर।
ग़लग़ला होगा वह आते हैं रज़ालतके[1] पिसर[2]॥

तेरी मस्तूरातका बाज़ारमें होगा क़याम।
मारिज़ेदुश्नाममें[3] तेरा लिया जायेगा नाम॥

उस तरफ मुँह करके थूकेगा न कोई नौजवाँ।
बरकी[4] हसरतमें रहेंगी तेरे घरकी लड़कियाँ॥

क्या जवानोके ग़ज़बका ज़िक्र ओ इब्नेखिताब[5]!
सुनके तेरा नाम उड़ जाएगा बूढ़ोंका ख़िज़ाब॥

फ़ाश! समझी जायेंगी महलोंमें तेरी दास्ताँ।
काँप उट्ठेंगी ज़िक्रसे तेरे कँवारी लड़कियाँ॥

आयेगा तारीख़का जिस वक़्त जुम्बिशमें कलम।
कब्र तेरी दे उठेगी लौ, जहन्नुमकी कसम॥

---

[1] कमीनापनके; [2] वंशज।

[3] दुर्वचनोका आदर्श (यानी ग़द्दार कह देना ही सबसे बडी गाली होगी)।

[4] दूल्हाकी, [5] स्वार्थी सम्बोधनवाल।

भूखा हिन्दोस्तान :—

(दरिद्र कुटुम्बका चित्र खीचते हुए अभिलषित वस्तु न मिलनेपर एक बालककी मनोव्यथाका कैसा सजीव वर्णन है :—

'खेलनेमें तिफ़्लके[१] गुलफ़ाम था डूबा हुआ।
आई इतनेमें गलीसे आमवालेकी सदा॥

देखकर माँकी उदासी हो गई पामाले यास।
अँखड़ियोंमें आमकी सुर्ख़ी, तख़ैयुलमें मिठास॥

होंठ काँपे ख़ुद-ब-ख़ुद और रह गए फिर काँपकर।
दिलमें फिर चुभने लगे अगली जिदोंके तजरुबे॥

....

छा गया चेहरेपै सन्नाटा दिले नाकामका।
अश्क बनकर आँखसे टपका तसव्वुर आमका॥

.. ..

आह! ऐ हिन्दोस्ताँ! ऐ मुफ़लिसोंकी सरजमीं।
इस क़ुरेपर कोई तेरा पूछनेवाला नहीं?

ताकुजा[२] यह ख़्वाब? ऐ हिन्दोस्ताँ आ होशमें।
आज भी हैं सैकड़ों अर्जुन तेरे आग़ोशमें॥'

(शोलओ श...)

चलाए जा तलवार :—

सन् १९३०मे लखनऊकी पुलिसने निर्दोष निहत्थी जनतापर गोली चलाई थी। उसीको लक्ष्य करते हुए फ़र्माया है :—

---

[१] गुलाब-सा सुन्दर बच्चा; [२] कबतक।

'भेड़ियोंके तौरसे इन्साँका करता है शिकार।
ख़ाक हो जा ऐ जहाँबानीके[1] झूठे इक़्तदार[2]॥
बेकसोंके ख़ूनको नामर्द समझे जा हलाल।
देख, ख़ंजर तौलनेपर है मशीय्यतका[3] जलाल[4]॥
औरतोंकी अस्मतें, बच्चोके दिल, बूढ़ोंके सर।
हाँ, चढ़ाए जा जहाँबानीकी क़ुर्बांगाहपर॥
ठोकरें खाता फिरेगा कजकुलाहीका[5] ग़रूर।
दबके भेजेसे निकल जाएगा शाहीका गरूर॥'

(हर्फ़ो कायनात)

'मक़तले कानपुर'—शीर्षकमे 'जोश'ने १९३१मे कानपुरमे हुए हिन्दू-मुस्लिम फिसाद—जिसमे श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी बलि हुए, अपने हृदयकी वेदना किस ढंगसे व्यक्त की है, और मुसलमानोपर किस तरह बरसे है नमूना देखिये :—

'ऐ सियह रू, बेहया, वहशी, कमीने, बदगुमाँ!
ऐ जबीने अर्ज़के दाग़, ऐ दनी[6] हिन्दोस्ताँ!!
तुझपै लानत ऐ फ़िरंगीके गुलामे बेशऊर!
यह फिजाये सुलह परवर, यह कताले कानपूर॥
तेग़ेबुर्राँ और औरतका गला क्यों बदसिफात?
छूट जायें तेरी नब्ज़ें, टूट जाएँ तेरे हात॥
कोहनियोंसे यह तेरी कैसा टपकता है लहू?
यह तो है ऐ संगदिल! बच्चोंका ख़ूने मुश्कबू॥

---

[1]-[2] विश्व-विजयके झूठे दावेदार; [3] ईश्वरका; [4] तेज; [5] बादशाही तिर्छे कुल्लेपर बँधा हुआ तिर्छा साफा अर्थात् अकड; [6] हिन्दके कमीन।

मर्द है तो उससे लड़ पहले जो मारे फिर मरे।
तूने बच्चोंको चबा डाला, ख़ुदा ग़ारत करे॥

तूने ओ बुज़दिल! लगाई है घरोंमें जिनके आग।
क्या इन्हीं हाथोंमें लेगा रख़्शे आज़ादीकी बाग[1]?

इस तरह इन्सान, और शिद्दत करे इन्सानपर।
तुफ़ है तेरे दीनपर, लानत तेरे ईमानपर॥

दर्दे मुश्तरक :—

ऐक्यका कैसा ज़ोरदार समर्थन है :—

सुनते हैं सैलाबमें डूबा हुआ था इक दरख़्त।
जिसकी चोटीपर डरे बैठे थे दो आशुफ़्ता बख़्त॥

एक उनमें साँप था और एक सहमा नौजवाँ।
दो ज़दोंका एक भीगी शाख़पर था आशियाँ॥

सच है दर्देमुश्तरकमें है वोह रूहे इत्तहाद।
इश्क़में जिसके बदल जाते हैं आईने इनाद॥

लेकिन ऐ ग़ाफ़िल मुसलमानो! मुदब्बिर हिन्दुओ!
हिन्दके सैलाबमें इक शाख़पर तुम भी तो हो?

नाज़ुक अन्दाज़ाने कॉलिज से ख़िताब शीर्षकमें फैशनेबुल विलासी युवकोकी किस तरह ख़बर ली है :—

जंग और नाज़ुक कलाई पेच है तकदीरके।
मुड़ न जाएगी निगोड़ी बोझसे शमशीरके?

सुन लो जो मौज़ूँ नहीं मर्दाना सीरतके लिए।
ज़िन्दगी उनकी बबा है आदमीयतके लिए॥

---

[1] स्वतन्त्रता तुरंगकी लगाम।

मर्द कहते हैं उसे ऐ माँग-चोटीके ग़ुलाम !
जिसके हाथोंमें हो तूफानी अनासिरकी लगाम ॥

मर्दकी तख़लीक है ज़ोर आजमानेके लिए।
गर्दनें सरकश हवादिसकी भुकानेके लिए ॥

मर्द है सैलाबके अन्दर अकड़नेके लिए।
बहरकी बिफरी हुई मौजोंसे लड़नेके लिए ॥

. . . .

जंगमें हो बाँकपन जिसकी शुजाअतका गवाह।
रज़्मके मैदाँमें कज करता हो माथेपर कुलाह ॥

दौड़ता हो शोलाख़ू बिजलीका दामन थामने।
मुस्कराता हो गरजते बादलो के सामने ॥

मज़हका करता हो ख़ूँ आशाम तलवारोंके साथ।
खेलती हो जिसकी नींदें सुर्ख़ अंगारोंके साथ ॥

. . .

जिन्दगी तूफान है और नाव हो तुम पापकी।
आह, जीती-जागती बदबख़्तियाँ माँ-बापकी ॥

किसान और मज़दूर :—

'किसान'—शीर्षकमें सन्ध्या-कालीन दृश्यका वर्णन करते हुए फर्माया है —

'ख़ून है जिसकी जवानीका बहारे रोज़गार।
जिसके अश्कोंपर फराग़तके[1] तबस्सुमका[2] मदार ॥

[1] सुख चैन, आरामके; [2] मुस्कराहटका।

. . . .

दौड़ती है रातको जिसकी नज़र अफ़लाकपर[1]।
दिनको जिसकी उँगलियाँ रहती है नब्जेख़ाकपर ॥

. . . .

ख़ून जिसका दौड़ता है नब्जे इस्तक़लालमें[2]।
लोच भर देता है जो शहज़ादियोंकी चालमें ॥

. . . .

धूपके झुलसे हुए रुखपर मशक़्क़तके निशाँ।
खेतसे फेरे हुए मुँह, घरकी जानिब है रवाँ ॥
टोकरा सरपर, बग़लमें फावड़ा, तेवरपै बल।
सामने बैलोंकी जोड़ी, दोशपर[3] मज़बूत हल ॥

. . . .

जिसका मस[4] ख़ाशाकमें[5] बुनता है इक चादर महीन।
जिसका लोहा मानकर सोना उगलती है ज़मीन ॥

. . . .

सोचता जाता है—"किन आँखोंसे देखा जाएगा।
बेरिदा[6] बीबीका सर, बच्चोंका मुँह उतरा हुआ ॥
सीमोज़र,[7] नानोनमक,[8] आबोगिज़ा[9] कुछ भी नहीं।
घरमें इक ख़ामोश मातमके सिवा कुछ भी नहीं ॥"

. . . .

---

[1] आकाशपर, [2] सन्तोष, दृढतासे, [3] कन्धेपर।
[4] स्पर्श करनेकी शक्ति, (यहाँ हल जोतनेसे तात्पर्य है)।
[5] कूडा-करकट; [6] नगे सिर, चादर रहित; [7] चाँदी-सोना।
[8] रोटी नमक; [9] खुराक पानी।

'ज़वाले जहाँबानी'—शीर्षकसे किसानको सावधान करते हुए कहा है :—

तुझे मालूम है तारीकियाँ[1] बढ़ती है जब हदसे ।
उबलने लगती है जर्राते खाकीसे दरख़्शानी[2] ॥

. . . .

गये वोह दिन कि तू महरूमिये किस्मतपै रोता था ।
जरूरत है तुझे अब आफ़तोपै मुस्करानेको ॥
तड़प, पैहम तड़प, इतना तड़प बर्केतपाँ[3] बन जा ।
ख़ुदारा ! ऐ ज़मीने वेहकीक़त ! ! आस्माँ बन जा ॥

(शोलओ शबनम)

ईद मिलने वाले :—

कहूँ क्या दिलपै क्या-क्या हौलनाक आलाम सहता हूँ ।
न पूछ ऐ हमनशीं ! क्यों ईदके दिन सुस्त रहता हूँ ?
वोह सदमे जो लगे रहते हैं आसाइशकी घातोंमें ।
वोह दुनिया सिसकियाँ भरती है जो तारीक रातोंमें ॥
वोह चश्मा ग़मका सीनेसे जमींके जो उबलता है ।
वोह ग़मगीं करवटें जो आस्माँ शबको बदलता है ॥
वोह झूठी राहतें जिनसे तपाँ है दर्दके पहलू ।
वोह फीके कहकहे गिरते हैं जिनसे ख़ूनके आँसू ॥
वोह कौन्दे[4] ग़मके रूहोंके उफ़क़पर[5] जो लपकते हैं ।
वोह दिल जो सीनए जर्रातमें[6] पैहम[7] धड़कते हैं ॥

---

[1] अँधयारियाँ, [2] चमक रोशनी, [3] जलती हुई बिजली ।
[4] शोले, लपट; [5] आसमान, [6] धूलके कणो; [7] सदैव ।

वोह झोंके नर्म जिनमें रात भर दम ही नहीं लेती।
ग़रीब इन्सानियतकी सुस्तरू ग़मनाक मौसीक़ी[1] ॥

वोह दिल मशग़ूल हैं जो जिन्दगीके दर्देपैहममें।
वोह आँसू जो हैं गल्ताँ दीदये[2] इशयाये आलममें॥

सबाए[3] ईदके जिस वक़्त जल्वे मुस्कराते हैं
यह सब रोते हुए मुझसे गले मिलनेको आते हैं
(फ़िक्र: निशात)

मुफ़लिसोंकी ईद :—

अहलेदुवलमें[4] धूम थी रोज़े सईदकी।
मुफ़लिसके दिलमें थी न किरन भी उमीदकी ॥

इतनेमें और चर्ख़ने मिट्टी पलीद की।
बच्चेने मुस्कराके खबर दी जो ईदकी ॥

फ़र्तेमहनसे[5] नब्ज़की रफ़्तार रुक गई।
माँ-बापकी निगाह उठी और झुक गई ॥

आँखें झुकीं कि दस्तेतहीपर[6] नज़र गई।
बच्चोंके वलवलोंकी दिलों तक खबर गई ॥

ज़ुल्फ़ें शबातग़मकी हवासे बिखर गईं।
बर्छी-सी एक दिलसे जिगर तक उतर गई ॥

दोनों हजूमेग़मसे हम आग़ोश हो गये।
एक दूसरेको देखके ख़ामोश हो गये ॥
(नक्शोनिगार)

---

[1] संगीत, [2] भरणपोषणकी चीजोके जुटानेमे त्रस्त; [3] हवा; [4] अमीरोंमे, [5] आकस्मिक चिन्ताकी अधिकतासे; [6] खाली हाथकी ओर, दरिद्रतापर।

दीने आदमियत :—

(सामाजिक उन्नतिमे रोडे अटकानेवाले वडे-बूढोके प्रति)

नौजवानो ! यह वड़े बूढ़े न मानेंगे कभी।
सेहतेअफकारसे[1] खाली है उनकी जिन्दगी॥

सुबहका जब नाम आता है तो सो जाते है ये।
रोशनीको देखते ही कोर हो जाते है ये॥

इनके शानोपर तो ऐसे सर है ऐ अहलेनिगाह !
जिनका गूदा जल चुका है, जिनके खाने है सियाह॥

और वोह खाने है जिन तक रोशनी जाती नहीं।
आँधियोके वक्त भी जिनमें हवा आती नही॥

बुझ चुके है जुहलके[2] झोंकोसे उन सबके चिराग।
कबसे है जीकुलनफ़समें[3] मुब्तला[4] उनके दमाग़॥

.. ..

योमे पैदाइशसे है यह अपने सीनोमें लिये।
काँपते, बूढ़े अकीदे, थरथराते वसवसे[5]॥

. .. .

सैकड़ो हूरोका हर नेकीपै है इनको यकीं।
सूद लेनेमें 'खुदा'से भी ये शर्माते नही॥

(हर्फो हिकायत)

धार्मिक विद्रोहकी भावना यहॉ तक प्रबल हो उठी है कि पुराने सडे-गले खुदाको भी नही चाहते :—

---

[1] विचारधारासे, [2] जहालत, मूर्खताके, [3] स्वास रोगसे पीड़ित; [4] घिरे हुए; [5] वहम, विचार।

'मज़ाक़ेबन्दगीये[1] असरेनौकी[2] तुझको क़सम।
नये मिज़ाजका परविर्दगार पैदाकर॥

बहारमें तो ज़मींसे बहार उबलती है।
जो मर्द है तो खिज़ाँमें बहार पैदा कर॥

बनवासी बाबू :—

(प्राकृतिक सौन्दर्यकी कुछ झलक)

जंगलोंके सर्दगोशे,[3] रेल बल खाती हुई।
जुहलके[4] सीनेपै ज़ुल्फ़ेइल्म[5] लहराती हुई॥

बज़्मेवहशतमें[6] तमद्दुन[7] नाज़ फ़रमाता हुआ।
तुन्द[8] ऐंजिनका धुआँ मैदाँपै बल खाता हुआ॥

फूल घबराये हुए-से, पत्तियाँ डरती हुई।
गर्म पुर्ज़ोंकी सदाएँ शोखियाँ करती हुईं॥

एक इस्टेशन फ़सुर्दा, मुज़महल, तनहा, उदास।
झुटपुटेकी बदलियाँ, पुरहौल जंगल आसपास॥

मलजगेनाले, अँधेरी वादियाँ, हल्की फुवार।
बनके गर्दोपेश कोसों तक खजूरोंकी कतार॥

क़द्दे आदम घास, गहरी नद्दियाँ, ऊँचे पहाड़।
एक इस्टेशन फ़क़त ले-देके, बाकी सब उजाड़॥

---

[1] उपासनाकी अभिलाषा; [2] नवीन युगकी; [3] शीतल स्थानोमे; [4] अज्ञानता रूपी अन्धकारके; [5] शिक्षा रूपी जुल्फ़े; [6] दीवानगीके दरबारमे; [7] नागरिकता, शहरियत; [8] उग्र।

काश ! जाकर बाबुओंसे 'जोश' यह पूछे कोई ।
जंगलोंमें कट रही है किस तरहसे जिन्दगी ?

.. . .

सच कहो, उठते हैं बादल जब अँधेरी रातमें ।
जब पपीहा कूक उठता है भरी बरसातमें ॥

शबको होता है घने जंगलमें जब बारिशका शोर ।
साइयाँ[1] भ गी हुई रातोंमें जब करता है शोर ॥

रूह तो उस वक़्त फ़र्तेगमसे घबराती नहीं ?
तुमको अपने अहदेमाजीकी[2] तो याद आती नहीं ?

(शालम्र शबनम)

दुनिया में आग लगी है :—

मोजे हवाके अन्दर शोला भड़क रहा है ।
गर्मीकी दोपहर है, सूरज दहक रहा है ॥

तपती हुई जमीसे आँचें निकल रही हैं ।
पत्थर सुलग रहे हैं, कानें पिघल रही हैं ॥

हर क़ल्ब फुँक रहा है तहखाना चाहता है ।
पर्देमें लूके गोया आलम कराहता है ॥

लौ दे रहे है काँटे, और फूल काँपते हैं ।
ताइर[3] सकूतमें[4] हैं, चौपाये हाँपते हैं ॥

क्यों जिस्मेंनाजनीको लूमें जला रहे हो ?
रूमाल मुंहपै डाले किस सिम्त जा रहे हो ?

---

[1] सिंह, [2] भूतकालकी; [3] परिन्दे ।
[4] मौनावस्थामें ।

वक़्तेजलाल अपनी शाने अताबपर है ।
ठहरो, कि दोपहरकी गर्मी शबाबपर है ॥

देखो यह मेरा मस्कन[1] किस दर्जा पुरफ़िज़ा[2] है ।
साया भी है मयस्सर दरिया भी बह रहा है ॥

पानी है सर्दोशीरीं, ख़ुनकी भी दिलनशीं है ।
नज़दीक, दूर कोई ऐसी जगह नहीं है ॥

दुखते हुए जिगरकी हालत दिखाऊँ तुमको ।
ठहरो तो बाँसुरीपर आहें सुनाऊँ तुमको ॥

साँस लो या ख़ुश रहो :—

क़सम उस मौतकी उठती जवानीमें जो आती है ।
उरूसेनौको[3] बेवा, माँको दीवाना बनाती है ॥
जहाँसे झुटपुटेके वक़्त इक ताबूत[4] निकला हो ।
क़सम उस शबकी जो पहले पहल उस घरमें आती है ॥

अज़ीज़ोंकी निगाहें ढूँढ़ती हैं मरनेवालोंको ।
कसम उस सुबहकी जो गमका यह मंज़र दिखाती है ॥

क़सम साइलके[5] उस अहसासकी[6] जब देखकर उसको ।
सियाही दफ़अतन[7] कंजूसके माथेपै आती है ॥

. . . .

क़सम उन आँसुओंकी माँकी आँखोंसे जो बहते हैं ।
जिगर थामे हुए जब लाशपर बेटेकी आती है ॥

---

[1] स्थान, [2] शोभायुक्त ।
[3] नव दुल्हनको; [4] अर्थी; [5] भिक्षुके ।
[6] भावनाकी, [7] यकायक ।

कसम उस बेबसीकी अपने शौहरके जनाज़ेपर।
कलेजा थामकर ताज़ा दुल्हन जब सर झुकाती है॥
नज़र पड़ते ही इक ज़ोमर्तबा[1] मेहमाँके चेहरेपर।
कसम उस शर्मकी मुफ़लिसकी आँखोंमें जो आती है॥

.. ..

कि यह दुनिया सरासर ख़्वाब और ख़्वाबे परीशाँ है।
'ख़ुशी' आती नहीं सीनेमें जब तक 'साँस' आती है॥

हमारी सैर :—

लोग हँसते हैं चहचहाते हैं।
शामको सैरसे जब आते हैं॥
लैम्पकी रोशनीमें यारोंको।
दास्तानें नई सुनाते हैं॥

हम पलटते हैं जब गुलिस्ताँसे।
आह भरते हैं थरथराते हैं॥
मेज़पर सरसे फेंककर टोपी।
एक कुर्सीपै लेट जाते हैं॥

आप समझे यह माजरा क्या है?
सुनिये, हम आपको सुनाते हैं॥
वोह लगाते हैं सिर्फ़ चक्कर ही।
हम मनाज़िर से दिल लगाते हैं॥

वोह नज़र डालते हैं लहरोंपर।
और हम तहमें डूब जाते हैं॥

---

[1] भद्र।

घर पलटते हैं वोह 'हवा' खाकर।
और हम 'ज़ख्म' खाके आते हैं॥

(रुहे अदब)

फुटकर :—

मर्द वह कब है भँवरसे जो उभर सकता नहीं।
हक़ हो जीनेका नही उसको जो मर सकता नहीं॥

× × ×

जिसको ज़िल्लतका न हो अहसास वोह नामर्द है।
तंग पहलू है वोह दिल जो बेनियाज़े[1] दर्द है॥
हक़ नहीं जीनेका उसको जिसका चेहरा ज़र्द है।
ख़ुदकशी है फ़र्ज़ उसपर ख़ून जिसका सर्द है॥

× × ×

दौरेमहकूमीमें[2] राहत[3] कुफ़्र, इशरत[4] है हराम।
महवशोंकी[5] चाह, साक़ीकी मुहब्बत है हराम॥
इल्म नाजाइज़ है, दस्तारेफ़ज़ीलत[6] है हराम।
इन्तहा ये है, ग़ुलामोंकी इबादत है हराम॥
कूएज़िल्लतमें ठहरना क्या, गुज़रना भी हराम।
सिर्फ़ जीना ही नहीं, इस तरह मरना भी हराम॥

× × ×

[1] अनभिज्ञ; [2] परतन्त्र अवस्थामें।
[3] चैन; [4] विलास; [5] चन्द्रमुखियोंकी।
[6] विद्या-युक्त होनेकी पगड़ी बँधवाना।

अहानत[1] गवारा नही आशिकीकी।
गुलामीमें भी सरवरी[2] चाहता हूँ॥

मिज़ाजेतमन्नाये[3] खुद्दार[4] तौबा।
इबादतमें भी दावरी[5] चाहता हूँ॥

मुसिर[6] है अगर दिलबरी 'दावरी'पर।
कमज़कम मैं पैगम्बरी चाहता हूँ॥

जो पैगम्बरीमें भी दुश्वारियाँ हों।
तो हगामिये[7] काफ़िरी चाहता हूँ॥

खुलासा है यह 'जोश' इस दास्ताँका।
कि जौहर हूँ और जौहरी चाहता हूँ॥

× × ×

बिठा दे कश्तियेआलमके[8] नाखुदाओं को।
खुद आज कश्तियेआलमका नाखुदा[9] हो जा॥

बशक्लेबन्दा तो रहता है उम्रभर ऐ 'जोश'!
उठ, और चन्द नफ़सके लिए खुदा हो जा॥

वेहतर तो यही है हँसता रह, तू कोह[10] है खुदको काह[11] न कर।
यह बन न पड़े तो कम-से-कम, खामोश ही रह और आह न कर॥

कुछ दिनमें यह दुनिया गश खाकर क़दमोंपर तिरे झुक जाएगी।
गोगाए[12] मसाइबसे न झिजक परवाए गमेजाँ काह न कर॥

---

[1] वेइज्ज़ती, [2] बराबरी, [3] [4] स्वाभिमानीकी अभिलाषा तो देखिये; [5] न्यायाधीशका वह पद जो हश्रमे न्याय करे, [6] जिद, अनधिकार चेष्टा; [7] नास्तिकका विद्रोह; [8] सासारिक नावके मल्लाहोको; [9] मल्लाह नेता; [10] पर्वत, [11] तिनका; [12] आपत्तियोकी भीड़से या शोरसे।

रुबाइयात

अपनी ही ग़रज़से जी रहे हैं जो लोग।
अपनी ही अबाएँ[1] सी रहे हैं ज़ो लोग॥
उनको भी है क्या शराब पीनेसे गुरेज़ ?
इन्सानका ख़ून पी रहे हैं जो लोग॥

सबक़ इबरतका ले नादान! बालोंकी सुफ़ेदीसे।
कफ़न ओढ़ा है जीते जी निगारेज़िन्दगानीने[2]॥
नज़रकर झुर्रियोंसे शेबके सिमटे हुए रुख़पर।
यह वोह बिस्तर है दम तोड़ा है जिसपर नौजवानीने॥

फाड़ते ही जैसे मैला चीथड़ा उठती है गर्द,
यूँ ही वोह दो शख़्स जो इक दूसरेसे हैं ख़फ़ा।
गुफ़्तगू करते हैं जब आपसमें अज़राहेनिफ़ाक़[3],
देखता हूँ उनके होठोंसे गुबार उड़ता हुआ॥

गुबार इक दूसरेपर फेंकते हैं तेज़ रौ मोटर।
मुख़ालिफ़ सिम्तसे हमदोश होकर जब गुज़रते हैं॥
यूँ ही दो बदगुहर[4] अशख़ास जब मिलते हैं आपसमें।
नई तारीकियाँ इक दूसरेसे अख़्ज़[5] करते हैं॥

दश्त है तारीक और रह-रहके कौंदेकी लपक।
छू रही है यूँ उफ़क़को[6] ज़ुल्मते ख़ामोशको॥

---

[1] चोगे; [2] जिन्दगीके सौन्दर्यने; [3] द्वेषभावसे।
[4] कटुभाषी; [5] प्राप्त, [6] आकाशको।

जैसे उस मायूसकी आँखोंका आलम जो ग़रीब।
हाल कहना चाहता हो और कह सकता न हो॥

वक़्तेशब कुछ और भी तारीक कर जाती है यूँ।
अपनी चमकाती हुई ज़ुल्मतको मोटरका गुबार॥

जिस तरह काँधेपै रखकर हाथ दम भरको ख़ुशी।
दोशपर[1] ग़मका नया इक और रख जाती है बार॥

नर्म हो जाता है पुलटिशसे जो पककर फोडा।
बेश्तर नश्तरेजर्राहसे होता है फ़िगार[2]॥

फ़र्शेगुलकी यूँही हो जाती है ख़ूगर[3] जो क़ौम।
होना पड़ता है उसे ख़ारेमुग़ीलाँसे[4] दो-चार॥

गुज़रजा

(१६मेंसे २ बन्द)

यह माना कि यह जिन्दगी पुरअलम है।
यह माना कि यह जिन्दगी सौजेसम है॥

यह माना कि यह जिन्दगी इक सितम है।
यह माना कि यह जिन्दगी गम ही ग़म है॥
सरेग़मपै ठोकर लगाता गुज़र जा।

अगर हर नफ़स है सतानेपै माइल।
अगर जिन्दगी है रुलानेपै माइल॥

---

[1] कन्धेपर; [2] चिरना।
[3] आदी, [4] कीकरका काँटा, मुसीबत।

अगर आस्माँ है मिटाने पै माइल।
अगर दहर है रंग उड़ानेपै माइल॥
खुद इस दहरका रंग उड़ाता गुज़र जा।

नौजवानीमें मसाइबसे[1] डराता है मुझे।
नासिहा! नादाँ यह है वोह मौसमे बर्क़ोशरर[2]॥

आलिमेकैफ़ोजुनूँमें[3] मारती है क़हक़हे।
जिन्दगी जब मौतकी आँखोंमें आँखें डालकर॥

ग़ज़लें

ज़माना ही बुरा है दूर क्यों जाओ, हमें देखो।
जवाँ है और कोई वलवला बाक़ी नहीं दिलमें॥

जो मौक़ा मिल गया तो ख़िज्रसे यह बात पूछेंगे—
"जिसे हो जुस्तजू अपनी वोह बेचारा किधर जाये?"

जब कोई बनता है लाखों हस्तियोंको मेटकर।
सुबह तारोंको दबाती है उभरनेके लिए॥

हँस रहे हैं शबेवादा वोह मकाँमें अपने।
हम इधर ऐशका सामान किये बैठे हैं॥

शहरोंमें गश्त कर लें, सहरामें ख़ाक उड़ा लें।
तुमको भी ढूँढ़ लेंगे अपनेको पहले पा लें॥

अगर सच पूछिये इससे कहीं आसान है मरना।
ग़यूर[4] इन्सानका नाअहलसे[5] हाजत[6]तलब करना॥

---

[1] मुसीबतोंसे; [2] बिजली और शोलोंकी ऋतु; [3] उन्नमत्तावस्थामें; [4] आन रखनेवाला; [5] अयोग्यसे; [6] अभिलाषापूर्ति।

जौक़ेकरम[1] नहीं है, ताबेजफ़ा[2] नहीं है।
बुज़दिलको ज़िन्दगीका कोई मज़ा नहीं है॥

बढ़े जाओ न यूँ डूबो ज़रा ग़ौरोतामुलमें[3]।
तरक़्क़ी थकके सो जाती है आग़ोशेतनज़्ज़ुलमें[4]॥

बढ़के सामान ऐशोइशरतका।
ख़ून करता है आदमीयतका॥

कहते हो 'ग़मसे परीशान हुए जाते है।'
यह नही कहते कि 'इन्सान हुए जाते हैं'॥

पपीहा जब तड़पता है घटामें 'पी कहाँ ?' कहकर।
हमारी रूह सोज़ेइश्क़से इस तरह जलती है॥

तलाशेतुरबतेआशिक़में कोई नाज़नीं जैसे।
दलाकी धूपमें पत्थरपै नंगे पाँव चलती है॥

इक वबा है आलिमेइख़लाक़में[5] उसका वजूद[6]।
तुझमें इक ज़र्रा भी ग़ैरत हो तो उस ज़ालिमसे डर॥

उस कमीनेसे हुज़रकर, भाग उस मनहूससे।
ख़र्च कर डाले जो इज़्ज़त और बचा ले मालोज़र॥

रेशये पीरी

निगह बेनूर होकर रातका मंजर दिखाती है।
तनफ़्फ़ुस आह भरता है कज़ा लोरी सुनाती है॥

---

[1] महरबानीका शौक; [2] अत्याचारकी शक्ति।
[3] सोच फ़िक्रमे, [4] असफलताकी गोदमे; [5] चारित्र-लोकमे;
[6] अस्तित्व।

जईफ़ीका यह रेशा जिससे जुम्बिशमें है सब आज़ा[1] ।
यह है दरअस्ल क्या ? कुछ अक़्लमें यह बात आती है ?

यह है इक 'पालना' डोरी हिलाती है रगें जिसकी ।
यह इक 'झूला' है जिसमें ज़िन्दगीको नींद आती है ॥

इबादत :—

इबादत करते हैं जो लोग जन्नतकी तमन्नामें ।
इबादत तो नहीं है, इक तरहकी वोह 'तिजारत' है ॥

जो डरकर नारेदोज़ख़से ख़ुदाका नाम लेते हैं ।
इबादत क्या वोह ख़ाली बुज़दिलाना एक ख़िदमत है ॥

मगर जब शुक्रेनेमतमें जबीं झुकती है बन्देकी ।
वोह सच्ची बन्दगी है, इक शरीफ़ाना अताअ़त है ॥

कुचल दे हसरतोंको बेनियाज़े मुद्दआ़ हो जा ।
ख़ुदीको झाड़ दे दामनसे मर्देबाख़ुदा हो जा ॥

उठा लेती हैं लहरें तहनशीं होता है जब कोई ।
उभरना है तो ग़र्क़े मौजयेबहरेफ़ना हो जा ॥

५ अप्रैल १९४५

[1] अंगोपांग ।

१५

शेख़ आशिक़ हुसैन 'सीमाब' अकबराबादी

[जन्म आगरा सन् १८८० ई०]

अल्लामा 'सीमाब' अकबराबादी उर्दू-शायरीके लब्धप्रतिष्ठ काव्यगुरुओ-मे है। आपके कई सहस्र शिष्य है जो भारतवर्षके हर कोनेमें बिखरे हुए है। सैकडोंकी संख्यामे सीमाब-सोसायटीकी शाखाएँ उर्दूका प्रसार कर रही है। 'सीमाव' मानो उर्दूका प्रसार करनेके लिए ही पैदा हुए है। साहित्य-सेवा ही आपके जीवनका ध्येय है। दिन-रात उसीमे रत रहते है। उर्दू-ससार आपकी सेवाओसे उऋण नही हो सकता। सर इकवालकी तरह फसीहुल्मुल्क मिर्जा 'दाग' देहलवी आपके भी काव्य-गुरु थे। किन्तु 'इकवाल' और 'सीमाव' दोनोने ही उनके पथका अनु-सरण न करके अपना पृथक-पृथक मार्ग चुना। 'इकबाल' और 'सीमाब' दोनो एक गुरुके शिष्य और युगान्तरकारी कवि होते हुए भी दोनो भिन्न-भिन्न दिशाओमे वढते हुए दिखाई देते है। 'इकबाल' अन्तमे पूर्ण-रूपेण इस्लामके लिए चिन्ताग्रस्त नजर आते है। उनकी शायरीका समूचा प्रवाह इस्लामी शिक्षा-दीक्षाकी ओर वढता है, और इस्लाम ही उनकी दृष्टिका लक्ष्य वनकर रह जाता है। 'सीमाव' किसी विशेष जाति या सम्प्रदायके मोहमे न फँसकर अखिल विश्वके लिए चिन्तातुर नज़र आते है। वे अपने सन्देशसे विश्वकी समस्त पिछडी हुई जातियोको जगाना चाहते है। आप उर्दू-शायरीके पुराने स्कूलके स्नातक और वयोवृद्ध होते हुए भी एक क्रान्तिकारी शायर है। आपके सन्देशमें विध्वस और नाशकी खटास न होकर रचनात्मक मिठास मिलती है। खूबी

ये है कि आप गजल और नज्म (पुरानी-नई) दोनों प्रणालियोके ख्याति-प्राप्त उस्तादोंमे है। आपने गजलोका ढाँचा ही बदल दिया है। सीमाब-का कलाम विश्वहित, देशभक्ति, स्वतत्रता, रचनात्मक, आध्यात्मिक और दार्शनिक भावोसे ओत-प्रोत होता है। प्रसिद्ध उर्दू पत्रकार और आलोचक 'नियाज' फ़तहपुरीके शब्दोंमें :—

"सीमाबका तगज्जुल (गजलें) सुनकर पढ़ने और पढ़कर समझनेकी चीज़ है"।[1]

दुआ :—

'साज़ो आहंग नामक पुस्तक आप इस दुआसे प्रारम्भ करते है :—

यारब ! ग़मेदुनियासे इक लहमेकी फ़ुर्सत दे।
कुछ फ़िक्रेवतन कर लूँ इतनी मुझे मुहलत दे॥

जंगी तराना :—

दिलावराने तेज़दम, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
बहादुराने मोहतरिम, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

यह दुश्मनोंके मोर्चे फ़क़त हैं ढेर ख़ाकके।
तुम्हारे सामने जमे कहाँ किसीमें हौसले ?

नहीं हो तुम किसीसे कम,
बढ़े चलो, बढ़े चलो। दिलावराने० ॥

सितमके तमतराक़को[2] बढ़ाके हाथ छीन लो।
है फ़तह सामने चलो, उठो, उठो, बढ़ो, वढ़ो॥

---

[1] देखिये—'आजकल' (उर्दू) पृष्ठ २९, १ दिसम्बर, १९४४।
[2] शानोशौकत, कर्रोफ़रको।

यह जामेजम, वोह तख़्तेजम,
बढ़े चलो, बढ़े चलो। दिलावराने० ॥

× × ×

वतन :—

जहाँ जाऊँ वतनकी याद मेरे साथ रहती है।
निशाते महफ़िलेआबाद[1] मेरे साथ रहती है॥

× × ×

वतन प्यारे वतन तेरी मुहब्बत जुज़्वे ईमाँ है।
तू जैसा है, तू जो कुछ है, सकूनेदिलका सामाँ है॥
वतनमें मुझको जीना है, वतनमें मुझको मरना है।
वतनपर जिन्दगीको एक दिन क़ुरबान करना है॥

दावते इन्क़लाब :—

'आगे बढ़ो . . . . या वक़्तकी रफ़्तार रोकदो'

. . . .

तुझे है याद नुस्ख़ा ज़ुल्मतेआलम[2] बदलनेका।
तो फिर क्यों मुन्तज़िर[3] बैठा है तू सूरज निकलनेका॥

मिसाले माहेताबाँ[4] ज़ूफ़िशाँ[5] हो और आगे बढ़।
मिसाले शमा क्यों ख़ूगर है जल-जलकर पिघलनेका॥

ख़ुदाने आज तक उस क़ौमकी हालत नहीं बदली।
न हो ख़ुद जिसको अहसास अपनी हालतके बदलनेका॥

---

[1] भरी मजलिसोंके वैभव; [2] संसारके अँधेरे।
[3] प्रतीक्षामें; [4] चमकता हुआ चाँद; [5] प्रकाशमान।

जवानाने वतन :—

बढ़के आगे दूरिये साहिलका[1] अन्दाजा करो।
इज़्तराबे[2] गर्मिये महफ़िलका अन्दाजा करो॥
खोलकर आँखें हक़ोबातिलका[3] अन्दाजा करो।
आनेवाली हर नई मुश्किलका अन्दाजा करो॥
इम्तिहाँ लेनेको है दौरेपरीशानेवतन।
ऐ जवानानेवतन!!

सोच लो आजाद हो जानेकी तदबीरें तमाम।
जमा कर लो जहनमें रफअतकी[4] तनवीरें[5] तमाम॥
फेंक दो हाथोंसे मायूसीकी तस्वीरें तमाम।
खोल दो प्यारे वतनसे आज जंजीरें तमाम॥
तोड़ दो बन्देग़ुलामी ऐ ग़ुलामानेवतन!
ऐ जवानानेवतन!!

ख़्वाबआश्नाये जमूद से :—

जहाँमें इन्क़लाबे ताजा बरपा होनेवाला है।
गुलामीके अँधेरेमें उजाला होनेवाला है॥
मुरत्तिब[6] अज़सरेनौ[7] नज़्मेदुनिया[8] होनेवाला है।
मिसाले नक़्शेक़ालीं[9] बेहिसोहरकत[10] पड़ा है तू॥
अरे क्या सो रहा है तू?

---

[1] दरियाका किनारा; [2] बेचैनी; [3] सत्य-असत्य; [4] मुश्किल वक्तकी; [5] ज्ञान, उजाला; [6] तय्यार; [7] नये ढंगसे; [8] संसारकी व्यवस्था; [9] गलीचे परकी तसवीरकी तरह; [10] निर्जीव-सा।

जवानानेवतनमें इक तड़प इक जोश पैदा है ।
गुलिस्तानेवतनका पत्ता-पत्ता चौंक उट्ठा है ॥
बयाबानेवतनका जर्रा-जर्रा शोला बरपा है ।
मगर अबतक जमूदोकस्लमें[1] ही मुब्तिला है तू ॥
अरे क्या सो रहा है तू ?

ग़द्दारे क़ौम और वतन :—

किया था जमा जाँबाज़ोंने जिसको जाँफ़रोशीसे ।
रुपहले चन्द टुकड़ोंपर वोह इज्ज़त बेच दी तूने ॥
कोई तुझ-सा भी बेग़ैरत ज़मानेमें कहाँ होगा ?
भरे बाज़ारमें तक़दीरेमिल्लत[2] बेच दी तूने ॥

फुटकर :—

सच कहा था यह किसी दोस्तने मुझसे 'सीमाब' !
'अमन हो जाय अगर मुल्कमें अख़बार न हो' ॥

* * *

जिन्दगी इल्मोहुनर अज़्मोअमलका नाम है ।
जिन्दगी उसकी है जिसको है शऊरे जिन्दगी ॥
सजदे करूँ, सवाल करूँ, इल्तजा करूँ ।
यूँ दे तो कायनात मेरे कामकी नहीं ॥
वोह ख़ुद अता करे तो जहन्नुम भी है बहिश्त ।
माँगी हुई निजात मेरे कामकी नहीं ॥

---

[1] आलस्य और ढोंगमें ।
[2] क़ौमियत ।

मज़दूर :—

गर्द चेहरेपर, पसीनेमें जबीं डूबी हुई।
आँसुओंमें कुहनियों तक आस्तीं डूबी हुई॥
पीठपर नाकाबिले बरदाश्त इक बारेगिराँ।
ज़ोफ़से लरजी हुई सारे बदनकी झुर्रियाँ॥
हड्डियोंमें तेज चलनेसे चटखनेकी सदा।
दर्दमें डूबी हुई मजरूह[1] टखनेकी सदा॥
पाँव मिट्टीकी तहोंमें मैलसे चिकटे हुए।
एक बदबूदार मैला चीथड़ा बाँधे हुए॥
जा रहा है जानवरकी तरह घबराता हुआ।
हाँफता, गिरता, लरजता, ठोकरें खाता हुआ॥
मुजमहिल[2] वामाँदगीसे[3] और फ़ाक़ोंसे निढाल।
चार पैसेकी तवक़्क़ोह[4] सारे कुनबेका खयाल॥

* * *

अपनी ख़िलक़तको[5] गुनाहोंकी सज़ा समझे हुए।
आदमी होनेको लानत और बला समझे हुए॥

* * *

इसके दिल तक जिन्दगीकी रोशनी जाती नहीं।
भूलकर भी इसके होठों तक हँसी आती नहीं॥

* * *

---

[1]घायल; [2]बहुत थका हुआ; [3]दुर्बलताके कारण; [4]आशा; [5]अपने जन्मको।

शायरे इमरोज :—

क्या है कोई शेर तेरा तर्जुमाने-दर्देकौम[1] ?
तूने क्या मंजूम[2] की है दास्ताने दर्देकौम ?

अपने सोजेदिलसे गरमाया है सीनोको कभी ?
तर किया है आँसुओसे आस्तीनोंको कभी ?

क़ौमके गममें किया है ख़ूनको पानी कभी ?
रहगुजारे[3]जंगमें की है हुदीख्वानी[4] कभी ?

क्या रुलाया है लहू तूने किसी मजमूनसे ?
नज्मे आजादी कभी लिक्खी है अपने खूनसे ?

हिन्दोस्तानी माँ का पैग़ाम :—

मेरे बच्चे सफशिकन[5] थे और तीरन्दाज भी।
मनचले भी, साहवेहिम्मत भी, सरअफराज[6] भी॥

मैं उलट देती थी दुश्मनकी सफें तलवारसे।
दिल दहल जाते थे शेरोंके मेरी ललकारसे॥

जुरअत[7] ऐसी, खेलती थी दश्ना ओ ख़ंजरके साथ।
बावफ़ा ऐसी कि होती थी फ़ना शोहरके साथ॥

छीनकर तलवार पहना दीं सुनेहरी चूड़ियाँ।
रख दिया हर जोड़पर जेवरका एक बारेगिराँ॥

---

[1] समाजके दर्दका सन्देश, [2] नज्म; [3] युद्धमे मार्गके; [4] बलिदानोकी प्रशसा; [5] व्यूह तोड़नेवाले, [6] सर ऊँचा रखने वाले; [7] दिलेरी।

दर्सआज़ादीका[1] देती क्या तुझे आग़ोशमें[2] ?
मैं तो ख़ुद ही क़ैद थी इक मजलिसे गुलपोशमें ।।

मैंने दानिस्ता बनाया ख़ायफ़ोबुज़दिल[3] तुझे ।
मैंने दी कम हिम्मतीकी दावते बातिल तुझे ।।

दिलको पानी करनेवाली लोरियाँ देती थी मैं ।
जब गरज होती थी दामनमें छुपा लेती थी मैं ।।

हाँ, तेरी इस पस्त ज़हनीयतकी मैं हूँ ज़िम्मेदार ।
तू तो मेरी गोद ही में था गुलामीका शिकार ।।

सुन कि इस दुनियामें मिलता है उसीको इक्तदार[4] ।
जिसको अपनी कूवते[5]तामीरपर हो इख़्तियार ।।

ग़ज़लोंके कुछ शेर :—

(खेद है कि आपकी गजलोके संग्रह युद्धके कारण अप्राप्य होनेसे हम इधर-उधरसे लेकर कुछ नमूने दे रहे हैं । काश ! आपका दीवान मिला होता, तब असली जौहर देखनेका अवसर मिलता ।)

आ ऐ गुलेफ़[6]सुर्दा ! लगा लूँ गले तुझे ।
तू भी तो मेरी तरह लुटा है शबाबमें ।।[7]

कहानी कहनेवाले हाय, क्यों जिकरेजवानी है ?
जवानीकी कहानी क्या ? जवानी ख़ुद कहानी है ।।

कहानी मेरी रूदादे जहाँ मालूम होती है ।
जो सुनता है उसीकी दास्ताँ मालूम होती है ।।

---

[1]स्वतन्त्रताका पाठ; [2]गोदमें; [3]भयभीत और कायर; [4]अधिकार; [5]निर्माण-बलपर; [6]मुरझाए फूल, [7]भरी जवानीमें ।

कर रहे थे जाने हम अल्लाहसे किसका गिला ।
आप अपना सर झुकाकर क्यों पशेमाँ हो गये ?

न पूछ मुझसे तेरे जब्रोअख़्तियारकी ख़ैर ।
गुनाह हो न सका या गुनाह कर न सका ॥

आज़ुर्दा इस कदर हूँ स[1]राबे ख़यालसे ।
जी चाहता है तुम भी न आओ ख़यालमें ॥

मुहब्बतमें एक ऐसा वक़्त भी आता है इन्साँपर ।
सितारोंकी चमकसे चोट लगती है रगेजाँपर ॥

अगर तू चाहता है आरज़ू तेरी करे दुनिया ।
तो दिलपर जब्र करके बेनियाज़े[2] आरज़ू होजा ॥

मिटा दे अपनी ग़फलत फिर जगा अरबाबेग़फ़लतको ।[3]
उन्हें सोने दे, पहले ख्वाबसे बेदार तू हो जा ॥

यह सोचता हूँ तो सिजदेसे[4] सर नहीं उठता ।
जो था फरिश्तोंका मसजूद[5] क्या वही हूँ मैं ?

तेरा जलवा, मेरा जलवा, जो है तू मैं हूँ वही ।
परदा इतना है कि मैं ज़ाहिर हूँ तू मस्तूर[6] है ॥

वोह सिजदा क्या, रहे अहसास[7] जिसमें सर उठानेका ।
इबादत और बक़ैदेहोश, तौहीनेइबादत है ॥

---

[1] ख़यालके धोखेसे; [2] बेपरवाह ।
[3] गफलतमे पड़े हुओंको; [4] ईशप्रार्थनामे झुका हुआ सर ।
[5] उपास्य; [6] परदेमे छुपा हुआ ।
[7] ज्ञान ।

दीवानेको तहकीरसे क्यों देख रहा है ?
दीवाना मुहब्बतकी ख़ुदाईका ख़ुदा है ॥

सच है कि खुदा तक है मुहब्बतकी रसाई।
और तुमको यक़ीं हो तो मुहब्बत ही खुदा है ॥

क़फ़सकी तीलियोंमें जाने क्या तरकीब रक्खी है।
कि हर बिजली क़रीबेआशियाँ मालूम होती है ॥

वोह कोई और है जो मुझको तूफ़ाँसे बचाएगा।
ख़िरदको[1] एतबारे नाख़ुदासे[2] खेल लेने दो ॥

उन्हें हिजाब, उदू शादमाँ, अजीज़ निढ़ाल।
मेरा जनाज़ा भी कोई उठायेगा कि नहीं ?

न सरमें सौदा है रहबरीका[3] न दिलमें जज़्बा है रहबरीका।
कुछ ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि थक गया पाँव जिन्दगीका ॥

मिला है तुझको दिले शकिस्ता तो और उसे तोड़ता चला जा।
शकिस्त हो जाये ग़ैरमुमकिन कमाल ये है शकिस्तगीका ॥

तू अपनी ज़ातमें ताज़ा सिफ़ात पैदा कर।
हो जिसमें शानेबदाअत वोह ज़ात पैदा कर ॥

कमाले इल्मोअमलकी हुदूद और बढ़ा।
नये शऊर नई हिस्सयात पैदा कर ॥

है मुश्किलातका बढ़ना ही वजहे आसानी।
जो हल न हो सके वह मुश्किलात पैदा कर ॥

---

[1] अक़्लको; [2] मल्लाहके विश्वाससे; [3] नेतागिरीका।

क़दीम मज़हबो मिल्लतसे गर नहीं तसकीं।
तो फिर नई कोई राहेनिजात पैदा कर॥

बढ़ती ही चली जाती है दुनियाकी ख़राबी।
इसपर यह कयामत अभी रहना है यही और॥

मैंने शबेग़म जिनको समेटा था बमुश्किल।
वोह तीरगियाँ[१] बादेसहर[२] फैल गईं और॥

हैं गौर तलब इश्कको पस्तीओबुलन्दी।
[३]आईनेनज़र और हैं दस्तूरेजबीं[४] और॥

मैं हौसलोंसे यूँ शबेग़म काट रहा हूँ।
जैसे कोई बाद इसके मुसीबत ही नहीं और॥

* * *

सैयाद दे रहा है सबक सब्रोज़ब्तका।
क़ैदेकफस[५] है सिल्सिलये आगही[६] मुझे॥

बजाय हाथ उठानेके अपने पाँव बढ़ा।
दुआ तो वहमेअसरके सिवा कुछ और नहीं॥

जहाँ दिल है वहाँ वो है, जहाँ वो है वहाँ सब कुछ।
मगर पहले मुकामेदिल समझनेकी ज़रूरत है॥

बकदरेयकनफ़[७]स ग़म माँग ले और मुतमइन हो जा।
भिकारी! यह मनाजाते निशाते जाविदाँ[८] कब तक?

---

[१] अन्धेरे, [२] प्रात.कालके पश्चात्; [३] नज़रोका कानून; [४] मस्तिष्क का नियम, [५] पिंजरेकी कैद; [६] बराबर आते रहनेवाली आपत्तियोकी सूचना है; [७] शरीरकी सामर्थ्यके अनुसार; [८] स्थाई सुख-भोगकी प्रार्थना।

बहुत मुश्किल है क़ैदेज़िन्दगीमें मुतमइन होना।
चमन भी इक मुसीबत था, क़फ़स भी इक मुसीबत है ॥

मुक़ाम इक इन्तहायेइश्क़में ऐसा भी आता है।
ज़मानेंकी नज़र अपनी नज़र मालूम होती है ॥

जो मुमकिन हो जगह दिलमें न दे दर्देमुहब्बतको।
घड़ीभरकी खलिश फिर उम्रभर मालूम होती है ॥

* * *

हर इक फूल एक चश्मेतर है सुबहेचाकदामाँकी।
कभी शबनमके आँसू बनके देख आँखें गुलिस्ताँकी ॥

फ़क़त अहसासेआज़ादीसे आज़ादी इबारत है।
वही दीवार घरकी है वही दीवार ज़िन्दाँकी ॥

१५ अप्रैल १९४५

१६

अहसान बिन दानिश

[जन्म कान्धला (मेरठ) १९१० ई० के करीब]

'अहसान' शोषित वर्गके पैगम्बर कहलानेके अधिकारी है। वे उन्हीके लिए जीते है, उन्हीके लिए सोचते है और उन्हीकी व्यथाओको कागजपर सजीव रूप देते है। उनके यहाँ निरी कल्पना, भावुकता और उडान नही। उनका एक-एक अक्षर आपबीती और जगबीतीका मुँहबोलता हुआ चित्रपट है। उनका कलाम सुनने या पढते हुए ऐसा मालूम होता है कि हम सब आँखोसे देख रहे है। उन्होने जीवनके लक्ष्य तक पहुँचनेमे जिन कण्टकाकीर्ण और दुर्गम मार्गोको तय किया है, उसीमे जो देखनेको मिला वही कागजपर चित्रित कर दिया है।

'अहसान' अपने सीनेमे एक दहकती हुई आग लिये फिरते है और उसी आगकी चमकमे जो भी देख लेते है उसे चमका देते है। खतौलीसे मेरठ जाते हुए एक अशिक्षिता नारीको घूरे जाते हुए देखनेपर नारी-समाजके इस पतनपर उबल पडते है। सरयू नदीके घाटपर सैर करते हुए एक युवती कन्याकी अर्थीको देखकर विह्वल हो उठते है। हिन्दू मज़दूरको दीवाली और मुस्लिम मजदूरको ईदके रोज़ भी चिन्ताग्रस्त पाकर ईश्वर तकसे कैफियत तलब कर बैठते है। मुस्लिम-समाजमे विधवा-विवाह प्रचलित होते हुए भी भाई-भावजकी सताई विधवाको पुनर्विवाहका विरोध करते हुए सुनकर उसके पति-प्रेमका ज्वलन्त दृश्य खीचते है, तो कही अपने मित्रकी सुहागरातको ही मृत्यु हो जानेपर विकल हो जाते है। एक साधुकी चिता और दो शिशुओकी कब्रे देख पाते है तो असार-संसारका दृश्य

खींचकर रख देते है। भूखेके घर अतिथि और असहाय बीबी-बच्चोको बिलखते छोड़कर मजदूरको मरते देख 'अहसान' कलेजा थामकर रह जाते है। जहाँ मजदूरसे कुत्तेकी अवस्था श्रेष्ठ और रोजीकी तलाशमें निर्दोष मज़दूरका चालान होता है, उस पापी समुदायसे आप सिहर उठते है। और ऐसे ही पापियोंका शिकार करनेके लिए अपने एक शिकारी मित्रको परामर्श देते हैं। ससारको नर्क बना देनेवाले पूँजीपतियोसे आप कितनी घृणा करते हैं, यह 'बाग़ीका ख्वाब' पढकर ही जाना जा सकता है। सन् ४२के आन्दोलनमे जो हुआ वह १०-१२ वर्ष पूर्व ही दिव्यदृष्टा अहसानने बाग़ीके ख्वाबमे लिख दिया था।

'अहसान'को बचपनमें सस्कृत और हिन्दी पढ़नेका चाव था। परन्तु दरिद्र परिवारके एकमात्र कमाऊ पिताको रुग्ण-शैया पकडनेपर पढ़ाई-लिखाईके सब स्वप्न भंग हो गये। स्वयं मजदूरी करना प्रारम्भ कर दिया। किशोरावस्था और उसपर अचानक घोर परिश्रम। 'अहसान' भी चारपाईपर गिर पड़े। मगर मरता क्या न करता? पडे-पड़े भी परिवारके भरण-पोषणकी चिन्ताने चैन न लेने दिया। रुग्णावस्थामें ही म्युनिस्पिल कमेटीमें हल्की-सी नौकरी कर ली। चेचककी पीपसे शरीरमे कपड़े चिपक जाते फिर भी नौकरी करनेको विवश थे।

अनेक प्रयत्न करनेपर भी जब जीवन-निर्वाह दूभर हो उठा तो मातृभूमिसे विदा होकर कितने ही स्थानोंमे चक्कर काटनेको विवश हुए, परन्तु कही भी ढंग न बैठा। अन्तमें लाहौर आये और वहाँ ईट-गारा ढो कर जीवन निर्वाह करने लगे। परिश्रमी और जहीन तो थे ही। धीरे-धीरे राज-मिस्त्रीका कार्य करने लगे। भाग्यका खेल देखिये कि जिसे साहित्य-निर्माण करना था वह भवन-निर्माण-कार्य करनेपर मजबूर होता है। जो पूँजीपतियोके प्रति असीम घृणा रखता था उसीको उनके महल बनानेको बाध्य होना पड़ा।

'अहसान' राजमिस्त्रीका कार्य करते हुए लाहौर किलेकी बुलन्द

दीवारसे गिरे और महीनो खटिया सेककर उठे तो मिन्नत-खुशामद करके किसी रईसकी कोठीमे चौकीदार हो गये। वही धीरे-धीरे बागबानी भी सीख ली। इस चौकीदारीके कार्यसे 'अहसान' अत्यन्त प्रफुल्लता और गर्वका अनुभव करते थे क्योकि यहाँ पढने-लिखनेकी सुविधा मिल जाती थी। परन्तु किस्मतकी मार 'अहसान'की यह नौकरी भी जाती रही। फिर वही रोज़ीकी तलाशमे दर-दरकी खाक छाननी शुरू कर दी। कभी रेलवेमे नौकरी मिली तो कभी मोचीका कार्य करना पडा। यहाँ तक कि बगैर रमज़ान आये रोज़े रखने पड़े तथा कपड़ेपर कंट्रोल न होते हुए भी फटेहाल रहना पडा। परन्तु अपनी वज़ेहदारी और गरूरे-मुफलिसीपर बाल नही आने दिया। 'अहसान'की इस आनका उल्लेख तौकीर साहब इस तरह करते है :—

"अहसान मुझे अपने कुटुम्बियो और प्रियजनोमे सबसे अधिक प्रिय है। यदि 'अहसान' मेरे स्नेहपूर्ण आग्रहको मान लेता तो मै इस योग्य अवश्य था कि उसे लाहौरमे दरिद्रताके अभिशापसे बचा लेता। किन्तु आवश्यकतासे अधिक इस स्वाभिमानीने आग उगलती हुई दोपहरमे मज़दूरी करना तो श्रेष्ठ समझा, परन्तु मुझ-जैसे अन्तरंग मित्रसे भी सहायता लेना अपमान समझा।

मुझे वे दिन अच्छी तरह स्मरण है कि जब दोपहरको सब मज़दूर आराम करते थे और 'अहसान' सबसे जुदा एकान्तमे पत्र-पत्रिकाएँ पढा करता था। मै उन रातोको नही भूल सकता जब कि 'अहसान' अकेला एक तग कोठरीमें टाटके बिस्तरपर बैठा हुआ मिट्टीके तेलकी डिबिया एक चीडके सन्दूकपर जलाये हुए पुस्तकोमे तल्लीन पाया जाता था। 'अहसान'ने लाहौरमे मजदूरी भी की और मेमारी भी। पहरेदारी भी और बागबानी भी। लेकिन उसे कभी रातको १२ बजेसे पहले और प्रात. ४ बजेके बाद सोते हुए नही पाया। और आज तक उसका यही नियम चला आता है।

परिश्रम किसीका व्यर्थ नहीं जाता। फलस्वरूप 'अहसान' आज ख्यातिप्राप्त शायर है। 'अहसान'की यद्यपि वह खस्ता हालत नही रही है, फिर भी वह साहसको तोड़ देनेवाली घाटियोसे गुजर रहा है। उसका कहना है कि 'मेरी बोरियेपर आँखें खुली, मगर दम कालीनपर निकलेगा।' अभी चन्द रोज हुए बरेलीसे वह एक दरी खरीद लाया। एक दोस्तने व्यंगमें पूछा—'अहसान साहब! बोरियेसे दरी तक तो आ गये हो, अब कालीनमे कितना अर्सा है?' 'अहसान'ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—'सिर्फ बालका फर्क है।' "[1]

'अहसान' साहबकी नज्मोंके ६-७ संग्रह प्रकाशित हो चुके है। नमूनेके तौरपर उनकी ५ नज्मोंका थोडा-थोड़ा अश दिया जा रहा है। यद्यपि इस तरहसे बीच-बीचके अंश छोड़ देनेसे कविताका प्रवाह और सौन्दर्य बिगड़ जाता है; परन्तु क्या करे, स्थानाभावके कारण लाचारी है।

---

[1] नवाएकारगरसे।

नाख़्वान्दा ख़ातून (अशिक्षिता नारी)

खतौलीसे मेरठ आते हुए एक आँखो देखा दृश्य चित्रित करते हैं —

. . . .

याद है अब तक वोह मन्ज़र[1] ढल चुका था आफताब ।
धीमा-धीमा था शररअफ़रोज़[2] किरणोंका रुबाब ॥

कट चुके थे जंगलोंमें जाबजा गेहूँके खेत ।
जम रही थी पाँवसे पिचके हुए तिनकोंपै रेत ॥

झुक रही थी मअबदे[3] मग़रिबमें सूरजकी जबीं ।
चुप थी ख़ाली गोद फैलाये हुए बेवा ज़मीं ॥

खारोखसमें[4] परशकिस्ता[5] टिड्डियोंकी आहटें ।
नहरकी पटरीपै जालोंके तले धुँधलाहटें ॥

बढ़ रही थी छाँव खेतोंके किनारोंकी तरफ ।
फैलते जाते थे साये रहगुज़ारोंकी[6] तरफ ॥

नालाज़न[7] थी फ़ाख्ताएँ[8] ढल रही थी दोपहर ।
हलकी-हलकी साँस लेती चल रही थी दोपहर ॥

सनसनाती कीकरोंकी टहनियाँ कुछ ख़म-सी थी ।
धूपकी शिद्दत, लुओंकी सीटियाँ मद्धम-सी थी ॥

इसी तरह प्राकृतिक सौन्दर्यकी छटा बखेरते हुए आगे कहते हैं —

---

[1] दृश्य; [2] प्रकाशकी शोभा बढानेवाला; [3] मन्दिर-मस्जिद; [4] कूडा-करकट, काँटे और घास, [5] पर टूटे हुए; [6] मार्गोंकी, [7] फरियादी, आर्त, [8] बुलबुले ।

आ रहा था मैं खतौलीसे थका हारा हुआ।
प्यास का, पैदल सफ़रका, धूपका मारा हुआ॥

* * *

रफ़्ता-रफ़्ता शहरमें 'अहसान' जब मैं आ गया।
वोह समाँ देखा ग़रूरेज़िन्दगी थर्रा गया॥

* * *

एक अशिक्षिता नारीका चित्र खीचते हुए आगे फर्माते हैं :—

आई है घरसे निकलकर ख़त लिखानेके लिए।
गोशेनामहरमको[1] राज़ेदिल[2] सुनानेके लिए॥

* * *

शर्मसे मामूर[3] आँखें बेकसीकी[4] नोहाख्वाँ[5]।
थरथराते लफ़्ज़, शरमाता बयाँ, रुकती ज़बाँ॥

यह तो हालत और ज़ालिम सुस्तरौ नामानिगार[6]।
लिखते-लिखते रोक लेता है क़लमको बार-बार॥

* * *

ताकि चश्मेबदसे[7] वोह इस नेकख़ूको[8] देख ले।
दीदयेबेआबरूसे[9] आबरूको[10] देख ले॥

* * *

अशिक्षिता नारीकी इस बेबसीपर 'अहसान' उबल पड़ते हैं। भारतीयोको झाड बताते हुए आगे फर्माते है :—

---

[1] हृदयकी बातसे अनभिज्ञको; [2] हृदयका भेद, [3] पूर्ण; [4] लाचारीकी; [5] रुदन करनेवाली, [6] पत्र लिखनेवाला मुंशी; [7] कुदृष्टिसे; [8] भद्रको; [9] निर्लज्ज नेत्रोसे; [10] साकार लज्जाको।

जिनका दूध उनको मयस्सर था वोह माएँ और थीं।
जिनसे यह परवान चढ़ते थे दुआएँ और थीं ॥

हाँ, अगर पहली-सी माएँ हों तो फिर पैदा हो मर्द।
जिनका मशरब हो उखव्वत[1] शग्ल हो जिनका नबर्द[2] ॥
जिनका दिल बेदार[3] हो तौकोसलासिल[4] देखकर।
जो चलें हर राहचेपर हक़[5] ओ बातिल[6] देखकर ॥
जिनकी आँखें हों भयानक घाटियोंकी राज़दार[7]।
सर झुकाये सामने जिनके फ़राज़े[8] कोहसार[9] ॥
जिनको तूफ़ाने तबाही में नज़र आए चमन।
जिनकी फ़ितरत हो तड़पती बिजलियोंपर ख़न्दाज़न[10] ॥
जिनकी ठोकरसे रहे पामाल[11] मैदानेअजल[12]।
मक़बरे जिनको नज़र आते हों जन्नतके महल ॥
जिनके क़दमोंके तले रुककर चले पत्थरकी नब्ज़।
देखती हों जिनको लम्बी उँगलियाँ ख़ंजरकी नब्ज़ ॥
साइदोंपर[13] जिनके हो ख़ूँरेज़ शमशेरोंको नाज़।
चुटकियोंपर जिनके हो मर्गआफ़रीं तीरोंको नाज़ ॥
तनतनेसे जिनके हो सैलाबे ख़ूँका रंग फ़क़।
जिनकी इक ललकारसे आ जाए शेरोंको अरक़ ॥
कर सकें जो दुश्मनोंके मोर्चे ज़ेरोज़बर।
सो सकें रातोंको रखकर लाशएइन्साँपै सर ॥

---

[1]भ्रातृत्वभाव, [2]युद्ध, [3]जागना, [4]तौक़ और बेड़ियाँ, [5]सत्य; [6]असत्य; [7]भेद जाननेवाली; [8]उच्च, [9]पर्वत, [10]मुस्करानेवाली; [11]नष्ट; [12]मृत्युक्षेत्र; [13]बाज़ुओंपर, कलाइयोंपर।

क़हक़हे मारें जो बारानेबलाको देखकर।
नारएहक सर करें बाबेक़ज़ाको देखकर॥

धूपमें ख़ंजर हों जब क़ालीन-सा बुनते हुए।
मुस्करायें ज़ख़्मियोंकी सिस्कियाँ सुनते हुए॥

जाएँ तोपोंके धमाकोंमें गज़र दम झूमकर।
बछियाँ लेकर बढ़ें ठंढी अनीको चूमकर॥

माँओंके सीने अगर हों मायादारे इल्मोफ़न।
क्यों न फिर बच्चे हों पैदा अर्जमन्दो सफ़शिकन॥

—नवाए कारगरसे।

मज़दूरकी मौत :—

एक टूटा-सा मकाँ है यासोहिरमाँ[1] दर किनार।
बामोदर[2] सहमे हुए, ख़स्ता मुँडेरे सोगबार॥

सुरमई छप्पर धुएँसे सहन नाहमवार-सा[3]।
ज़र्रा-ज़र्रा सरबसर, नासाज़-सा बीमार-सा॥

आग चूल्हेमें नहीं यह शिद्दतेइफ़लास[4] है।
घरका घर ओढ़े हुए गोया रदाएयास[5] है॥

ताक है काले धुओंसे और घड़ोंपर काई है।
नीमजाँ ज़र्रातकी डूबी हुई बीनाई है॥

घरके एक कोनेमें चक्की मुफ़लिसीकी राज़दाँ।
छतमें जालोंकी चटें, जालोंके अन्दर मकड़ियाँ॥

---

[1]निराशा; [2]छत और दर्वाजे; [3]टूटा-फूटा; [4]दरिद्रताकी बहुलता; [5]निराशाकी चादर।

इक तरफ़को जंगआलूदा तवा रक्खा हुआ।
खस्ता दीवटपर सिसकता-सा दिया रक्खा हुआ॥

* * *

मशरिकी[1] हिस्सेमें इक मजदूर बीमारोज़ईफ़[2]।
नामुरादो,[3] नातवाँ,[4] मजबूरो, माजूरो[5] नहीफ़[6]॥
है अरकमें तरबतर उलझी हुई दाढ़ीके बाल।
डूबती नब्ज़ें, उलझती हिचकियाँ, चेहरा निढाल॥

* * *

पास बीबी गोदमें बच्चा लिये ख़ामोश है।
जिसकी ख़ातिर बेवगी, खोले हुए आग़ोश[7] है॥

* * *

देगची खाली है चूल्हेपर दिखानेके लिए।
मुज़तरब[8] बच्चोंको बहलाकर सुलानेके लिए॥

* * *

जिस तरह लेकर सम्भाला शमा होती है ख़मोश।
यूँही जब दम तोड़ते मजदूरको आता है होश॥

तो बीबीको तसल्ली देते हुए, ईश्वरसे प्रार्थना करते हुए कहता है —

गर्चे कुछ सामाँ नहीं है अहतमामेमर्गका[9]।
ख़ैर मकदम दिलसे करता हूँ पयामेमर्गका॥

* * *

---

[1]पूर्वी; [2]वृद्ध, [3]असफल; [4]दुबला; [5]मजबूर; [6]दुर्बल, पतला; [7]गोद; [8]बेचैन; [9]मृत्युके स्वागतका।

मेरे बाद इन खस्ताजानोंको परेशानी न हो।
लरज़ाबरअन्दाम इनकी शमअ ईमानी न हो॥

यह न हो यह जाके फैलाएँ कहीं दस्तेसवाल।
यह न हो उतरे हुए चेहरे हों तसवीरेमलाल॥

यह न हो इनका गरूरेमुफ़लिसी बरबाद हो।
यह न हो इनके लबोंपर नालओफ़रियाद हो॥

यह न हो ये फूल हमसायोंकी[1] ठोकरमें रहें।
यह न हो ये ज़ालिमोंके जोरे बेपायाँ सहें॥

* * *

यह न हो इस नेकदिल बेवाको दुनिया हो वबाल।
यह न हो जीना इसे हो जाये मरनेसे मुहाल॥

मुफलिसी बढ़कर कहीं अस्मतकी दुश्मन हो न जाय।
मामता औलादकी ईमाँकी रहज़न[2] हो न जाय॥

इसी तरह कहते-कहते मजदूर दम तोड़ देता है, तब शायर खुदासे पूछता है :—

क्या यही इंसाफेयज़दानी[3] है ऐ परविरदगार?
क्या तेरे बन्दे यूँही रहते हैं आफ़तके शिकार?

* * *

यह तेरी ग़ैरतमें जज़बे बेनियाजी हाय! हाय!
क्या इसीका नाम है मुफ़लिसनवाज़ी हाय! हाय!

—नवाए कारगरसे।

---

[1]पडोसियोकी; [2]लुटेरी।
[3]ईश्वरीय न्याय।

एक शिकारीसे—

ऐ अनीसे दश्त ! ऐ मेरे बहादुर हमसआश !
शेरनी और फिर दुनालीसे गिरा दी जिन्दहबाश ॥

लेकिन इस मंजरसे मेरा दिल हुआ जाता है शक ।
है अचानक मौतसे इसकी मुझे बेहद क़लक ॥

इसका यह नाजुक शिकम, यह जर्द मखमलका गुलू ।
आह ! यह छकड़ेके पहियोंपर जवानीका लहू ॥

इसका नर फुरकतमें इसकी बावला हो जायगा ।
हाल बच्चोंका न जानें क्या-से-क्या हो जायगा ॥

भेड़िये हो, रीछ हों, चीते हों या खूँख्वार शेर ।
दस्तेवादी तक बहादुर है नशिस्ता तक दिलेर ॥

यह कभी आबादियोंमें आके गुर्राते नहीं ।
यह किसानों और मजदूरोंका हक खाते नहीं ॥

· · ·

इनसे बढ़कर वोह दरिन्दे हैं शकीदिल गुर्ग खूँ ।
चूस लेते हैं जो मजदूरोंकी शहरगका लहू ॥

इनसे बढ़कर वे दरिन्दे है कि जालिम बरमला ।
घोंट देते हैं अदालतमें सदाकतका गला ॥

इनसे बढ़कर वे दरिन्दे हैं बशक्ले राहबर ।
दिनदहाड़े लूट लेते हैं जो बेवाओंके घर ॥

· · ·

इनसे बढ़कर वे दरिन्दे है जो पोशिश देखकर ।
अपने मुफलिस हमनशीनोसे चुराते हैं नजर ॥

इनसे बढ़कर वे दरिन्दे हैं जो इशरतके लिए।
दाम फैलाते हैं बेवाओंकी अस्मतके लिए॥

इनसे बढ़कर वे दरिन्दे हैं जो ज़रके वास्ते।
बाइसे तकलीफ़ है नोए बशरके वास्ते॥

लाख हैवाँ हों अखुव्वतको यह खो सकते नहीं।
शेर चीते ऐसे बेइन्साफ़ हो सकते नहीं॥

—आतिशे ख़ामोशसे

नौ उरूसे बेवा—

'अहसान' साहबके एक मित्र सुहागरातको ही चल बसे। उनका जिस लड़कीसे प्रेम था उसीसे जैसे-तैसे विवाह हुआ। पर हायरे भाग्य! सुहागरातको दुल्हनके बजाय मौतने आलिंगन किया। उस वज्रपातका आँखो देखा दृश्य कैसे हृदयद्रावक शब्दोमे खीचते है:—

सितारोंकी फ़लकपर जगमगाती अंजुमन टूटी।
इधर दूल्हाका दम निकला उधर पहली किरन फूटी॥

शिकन बिस्तरमें दिलकी आरज़ू लाने न पाई थी।
नसीमे ख्वाब बेदारीमें लहराने न पाई थी॥

मचा कुहराम हलचल पड़ गई सीने फड़क उट्ठे।
दिलोंमें आतिशेअन्दोहके शोले भड़क उट्ठे॥

* * *

जो सुनता था कि दूल्हा मर गया दिल थाम लेता था।
तहय्युर आँखसे नोकेज़बाँका काम लेता था॥

वज़ीफ़ेकी तरह माँके लबोंपर नाम जारी था।
अलमसे बापपर इक आलमे वहशत-सा तारी था॥

* * *

दमादम हो रही थी मौत और हस्तीमें नज़दीकी।
कि जैसे चाँद छुपनेसे बढ़े जंगलमें तारीकी॥
उरूसेनौका सीना बेबसीसे पारा-पारा था।
न खुलकर रो ही सकती थी न ज़ब्तेगमका चारा था॥
क़यामत है क़यामत कारज़ारेज़िन्दगानीमें।
किसी दूल्हाका पहली रात मर जाना जवानीमें॥
दरोदीवार थर्राते हुए मालूम होते थे।
ज़मीनोचर्ख़ चकराते हुए मालूम होते थे॥
हुजूमे बेकराँ था कर्बसे जाँ खोनेवालोंका।
वोह मुँह तकती थी दीवानोंकी सूरत रोनेवालोंका॥
वोह शर्मिन्दा थी मातीमोंकी अन्दाज़ेहिकारतसे।
कली जैसे कोई मुरझाये सूरजकी तमाज़तसे॥

अलमने रौंद डाला था गरूरेकामरानीको।
बहारें जा रही थीं छोड़कर बेकस जवानीको॥

हयासे रह गये थे अश्क यूँ लहराके आँखोंमें।
गुमां होता था मोती जम गये हैं आके आँखोंमें॥

वह रोते देखती थी सबको लेकिन रो न सकती थी।
हयासे मातमेशौहरमें शामिल हो न सकती थी॥
मुहल्लेकी छतोंपर दूर तक एक हश्रेमातम था।
असरसे माँके हर मासूम बच्चा चश्मेपुरनम था।

सहर दुहरा रही थी रातकी खूनी कहानीको।
लिबासे नौउरूसी रो रहा था नौजवानीको॥

वही कमरा कि जिसकी शाम थी राहत असर उसको।
उसी कमरेमें जाते मौत आती थी नजर उसको॥

यह नौ आमोज थी मगमूम होना भी न आता था।
सलीक़ेसे जवाँ शौहरको रोना भी न आता था॥

विधवा विलाप करते हुए सोचती है :—

मुसीबत है मुसीबतमें अगर मैकेमें जा बैठी।
मचेगा शोर "डायन खाके शौहर माँके आ बैठी"॥

मेरी हर एक साथिन मुझको नामानूस समझेगी।
सुहागन हो कि दोशीजा मुझे मनहूस समझेगी॥

....

—नवाएकारगरसे

कुत्ता और मज़दूर

अहसान साहब घूमने जा रहे थे कि—

....

कुत्ता इक कोठीके दरवाजेपै भूँका यकबयक।
रुईकी गद्दी थी जिसकी पुश्तसे गरदन तलक॥

रास्तेकी सिम्त सीना बेखतर ताने हुए।
लपका इक मज़दूरपर वह सैद गरदाने हुए॥

जो यक़ीनन शुक्र ख़ालिक़का अदा करता हुआ।
सर झुकाये जा रहा था, सिसकियाँ भरता हुआ॥

पाँव नंगे फावड़ा काँधेपै यह हाले तबाह।
उँगलियाँ ठिठरी हुई धुँधली फिज़ाओंपर निगाह॥

जिस्मपर बेग्रास्तीं मैला, पुराना-सा लिबास।
पिंडलियोंपर नीली-नीली सी रगें चेहरा उदास॥

ख़ौफ़से भागा बिचारा ठोकरें खाता हुआ।
संगदिल ज़रदारके कुत्तेसे थर्राता हुआ॥

क्या यह एक धब्बा नहीं हिन्दोस्ताँकी शानपर।
यह मुसीबत और ख़ुदाके लाड़ले इनसानपर॥

क्या है इस दारुलमहनमें आदमीयतका विक़ार?
जब है इक मज़दूरसे बहतर सगे सरमायादार॥

एक वोह हैं जिनकी रातें हैं गुनाहोंके लिए।
एक वो हैं जिनपै शब आती है आहोंके लिए॥

—दर्देज़िन्दगीसे

३० अप्रैल १९४५

१७

महाराज बहादुर 'बर्क़' बी० ए०

[जन्म-देहली, जुलाई १८८४, मृत्यु १२ फरवरी १९३६]

'बर्क' पैदायशी और खानदानी शायर थे। उनकी आँखे शायरीके वातावरणमे खुली थी। उनके नाना और पिता दोनों ही शायर थे। शायरी आपको मानों पारिवारिक सम्पत्तिके रूपमे मिली थी। अतएव बचपनसे ही आपको शेरोशायरीसे दिलचस्पी थी। एक बार बचपनमे आपकी आँखें दुखने आई। किसी हमजोलीके मिजाज पूछने पर आपके मुँहसे बेसाख्ता निकल पडा :—

दिल तो आता था मगर अब आँख भी आने लगी।
पुख्ताकारी इश्क़की यह रंग दिखलाने लगी॥

किशोरावस्था और उस पर भी फड़कता हुआ यह फिलबदी शेर ! हवामे तैर गया। जिसने भी सुना कलेजा थाम कर रह गया। इश्क, मुश्क, खाँसी खुश्क छिपायेसे नही छिपते। धीरे-धीरे बर्ककी इस हाजिर जवाबी और शेरोशायरीकी गन्ध आपके पिता तक भी पहुँची तो बाग-बाग हो गये। परन्तु विद्याध्ययनमे विघ्न पड़नेके भयसे इस ओर अधिक झुकाव न होने दिया। आखिर १९०३ मे मैट्रिक पास कर लेनेपर दिल्लीके मुशायरोमे कभी-कभी सम्मिलित होनेकी आज्ञा मिली।

'बर्क'साहबने शायरीकी चौखट पर जब कदम रखा तो 'आजाद' और 'हाली' ग़ज़ल कहना छोड़ चुके थे। मिर्ज़ा 'दाग' देहली छोड़कर

हैदराबाद रहने लगे थे। दिल्लीमे रहे-सहे नवाब 'साइल', 'बेखुद' 'आगाशायर', 'कैफी', 'शैदा', 'माइल', और लाला श्रीराम जैसे शायरो और अदीबोका दम गनीमत था। इन्हीके दमसे देहलीकी बज्मेग्रदबकी शमा रोशन थी। रौनकेमहफिल मिर्जा 'गालिब' 'जौक' 'मोमिन' 'दाग' जैसे बाकमाल उस्ताद नही रहे थे।

हजारों उठ गये लेकिन वही रोनक है महफिलकी।

फिर भी मुशायरे उसी उत्साहसे पुरलुत्फ और बारीनक़ होते थे। उस्ताद चल बसे थे। मगर अपने शागिर्दोको उस्तादीकी मसनदपर बिठा गये थे। बकौल 'वर्क'.—

'नाम लेवा उनके हम जेरेफ़लक बाक़ी तो हैं।
मिटते-मिटते भी जहाँमें आजतक बाकी तो हैं॥

'वर्क'ने इन्ही प्राचीन प्रणाली के उस्तादो की सुहबतमे होश सम्हाला। अत. आपकी कविताका श्रीगणेश भी गजलगोईसे ही हुआ। परन्तु धीरे-धीरे नज्मकी ओर रुचि बढती गई। आपकी पहली नज्म 'कारेखैर' जनवरी १९०८के 'जबान'मे प्रकाशित हुई। यह जनतामे काफ़ी पसन्द की गई। उत्तरोत्तर 'वर्क' साहबकी ख्याति फैलती चली गई। बैरिस्टर आनफअली साहब (वर्त्तमान उडीसा प्रान्तके गवर्नर) के शब्दोमे "देहली और देहलीवाले ही नही उर्दूके हामी 'वर्क़'के कमाल पर जितना नाज करें बजा है। 'वर्क' देहलीकी वोह सुथरी जबान लिखते थे, जो सनद मानी जा सकती थी।.. . . . .

'वर्क'की तबियत मे पहाडी चश्मेका-सा बहाव था कि जिससे हमेशा साफ वा निथरा हुआ पानी उबलता रहता है। उनके कलाम मे उबलने आखिर तक मौलिकी-सी शान पाई जाती है। अगर उन्होने फूलोकी दुनियामे सुफ्येक़रतास (पृष्ठो)को सजाया तो इस तरह कि फूलोके रंगोबू और पत्तियोंकी नर्माहट कायम रही। और अगर

जुगनुओंकी धूप-छाँवपर नजर डाली तो बिजलीके ठण्डे शरर क़ायम रखे। कुदरतके मनाजर (प्राकृतिक दृश्य) की तसवीरे खींची तो ऐसे पुर-असरार लूकाजा (मनमोहक कूची)से रंग भरे कि सब्जा लहलहाता, फूल खिलखिलाते, घटाये उमड़ती, शवनम शुआओ (सूर्यकी किरणो)के परोपर उड़ती और मुर्गाने चमन (कोयल, बुलबुल आदि) बज्मेतरब (खुशीकी महफिल) को आरास्ता (शृगार) करते नजर आते है"।

मतलयेअनवारकी भूमिका लिखते हुए मौलाना असगर गोण्डवी फर्माते है :—

"बर्क साहबकी नज्मोंकी सबसे बड़ी खूबी ये है कि उनकी नज्मो-की आत्मा और वेष-भूषा सब कुछ भारतीय है। इंगलिश साहित्य का ज्ञान उनके विचारोको परिष्कृत तो करता है पर उनकी मौलिकता और भारतीय भावनाको छू नही पाता है। और यही वह सबसे वड़ी कामयाबी है जो किसी वड़े-से-बड़े नवीन प्रणालीके शायरको हो सकती है"।[२]

मुझे 'बर्क' साहबको सैकडो बार दिल्लीके धार्मिक, सामाजिक शिक्षाकेन्द्रों और मुशायरोंमे सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अहले देहलीको 'बर्क'पर नाज था। जहाँ भी जाते समाँ बाध देते थे। जो कहते थे सबसे जुदा और अनूठा कहते थे। अभिमान लेशमात्र भी नही था। अपनेसे बडोका विनय और छोटोको प्यार करते थे। मगर स्वाभिमान इतना कि एक बार आपके पढनेको उद्यत होनेपर एक उर्दू दैनिक पत्रके मालिक और सम्पादक बीचमे उठकर जाने लगे तो आपने वही ऐसी झाड पिलाई कि बार-बार क्षमा-याचना करनेपर उन्हे फिर बैठने की आज्ञा मिली। जीवन सरल, स्वभाव मृदु और व्यक्तित्व ऊँचा था।

---

[१] हर्फेनातमाम, पृष्ठ ३४; [२] मतलये अनवार, पृष्ठ ५३।

'बर्क' साहब कुछ दिन और जीवित रहते तो न जाने कैसे-कैसे अनमोल मोती छोड़ जाते। फिर भी जो लिख गये हैं, उर्दू साहित्यके लिये गौरवकी वस्तु है। खेद है कि इस गुटबन्दीकी दुनियाँ में उनका कोई गुट न होनेसे पब्लिसिटी न हो पाई और जो ख्याति उनको मिलनी चाहिये थी वह न मिली। 'बर्क'के ही शब्दोमें —

खिलके मुर्झा भी गया आँख किसीको न पड़ी।

नसीमे सुबह

[प्रातः कालीन वायु]

तू चमनमें आई इश्क़ेगुलका दम भरती हुई।
छाओंमें तारोंकी गिन-गिनकर क़दम धरती हुई॥

पहले आहिस्ता चली अठखेलियाँ करती हुई।
फिर वही बरती अदाएँ रोज़की बरती हुईं॥

गुलको छेड़ा तुर्रयेसम्बुल[1] परेशाँ कर दिया।
गुंचये नौखेज़का[2] सदचाक दामाँ कर दिया॥

छाओंमें तारोंकी वोह आना तेरा अन्दाज़से।
वोह जगाना नींदके मातोंको ख़्वाबेनाज़से॥

जैसे सरगोशी[3] करे कोई किसी दमसाज़से[4]।
या कहे देकर ठहोके यूँ दबी आवाज़से—

"ले चुके अँगड़ाइयाँ बस गेसुओंवालो उठो।
नूरका तड़का हुआ ऐ शबके मतवालो उठो"॥

चौधरी जगत मोहन लाल 'रवाँ'के शब्दोंमे :—

"उक्त बन्द पढ़नेसे ऐसा मालूम होता है कि कोई डर-डरकर पाँव रखता चला आ रहा है और जैसे कोई आशिक अपने महबूबकी बारेगाहेनाज (प्रेमिकाके शयन-कक्ष)मे जाते हुए जरा झिझकता है।

---

[1]सुगन्धित वनस्पतिका ताज; [2]नवजात कलीका; [3]छेड़छाड़; [4]झूँठमूँठ सोनेवालेसे।

इसीलिए चूँकि 'नसीमे सुबह' इश्क़ेगुलका दम भरती हुई आई है, बेबाक तरीक़ेसे जल्द-जल्द नही चली आती बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता तारोकी छाओमें आती है। ज्यो-ज्यो सुबहके आसार ज्यादह नुमायाँ होते जाते है 'नसीमेसुबह' भी निस्बतन शोख होती जाती है।"

मिट्टी का चिराग़

हल्का-हल्का नूर बरसाता है मिट्टीका चिराग़।
इसकी ज़ूपाशीसे[1] मिट जाता है ज़ुल्मतका सुराग़॥
वोह चमक है इसमें तारे चर्ख़पर खाते है दाग़।
बादएनाबेतजल्लीका[2] है छोटा-सा अयाग़[3]॥
लैलियेशबका शरारेहुस्न बेपरदा है ये।
रूकशे महरेज़ियापरवर है वोह ज़र्रा है ये॥

* * *

ये वोह शै है रोशनीका बोलबाला इससे है।
गर्मियेबज़्मेतरब, घर-घर उजाला इससे है॥
लक्ष्मीपूजाकी ज़ीनत दीप-माला इससे है।
मुँह शबेतारीकका दुनियामें काला इससे है॥
झोंपड़ी मुफलिसकी रोशन है इसीके नूरसे।
यह मुसाफ़िरको दिखा देता है मंज़िल दूरसे॥

* * *

जुगनू

आतिशेहुस्नकी उड़ती हुई चिनगारी है।
शबेतारीकमें जो महवेज़िया बारी है॥

* * *

---

[1]रोशनीसे; [2]परिपूर्ण प्रकाशरूपी मदिराका; [3]प्याला।

किसी नाशादकी आहोंका शरारा तो नहीं ?
आस्माँसे कोई टूटा हुआ तारा तो नहीं ?

* * *

जल्वयेहुस्न तेरा परदेसे मानूस नहीं ।
तू है वह शम्अ कि शर्मिन्दये फ़ानूस नहीं ॥

शफ़क़

(सूर्यास्तकी लाली)

रंग लाया है शफ़क़ बनकर शहीदोंका लहू ।
लोहेगरदूँसे अयाँ है नक़्शेखूनेआरज़ू ॥

* * *

सुर्ख़ जोड़ा लैलियेशबने किया है जेबेतन ।
रोज़ेरोशनसे है हमआग़ोश चौथीकी दुल्हन ॥

* * *

बादयेगुलरंगका तेरे मज़ा लेता हूँ मैं ।
तिश्नगीये ज़ौक़े नज़्ज़ारा बुझा लेता हूँ मैं ॥

* * *

महव हो जाते हैं दम भरमें तेरे नक़्शोनिगार ।
है यूँही वक़्फ़ेख़िज़ाँ उम्रे दोरोज़ाकी बहार ॥
जल्वयेगुल तू है मुश्ताक़ेतमाशाके लिए ।
मंज़रेइबरतनुमा है चश्मेबीनाके लिए ॥

* * *

सुबहे उम्मीद

(आशाका प्रभात)

बिस्तरेमर्गपै ढारस है यह बीमारोंकी ।
अश्कशोई[1] यही करती है अज़ादारोंकी[2] ॥
यह मददगार यतीमोंकी है नाचारोंकी ।
है हवाख्वाह यही जानसे बेज़ारोंकी ॥
नक़्श इसके दिलेमुज़तरमें[3] जो जम जाते हैं ।
अश्क रुखसारपै बहते हुए थम जाते हैं ॥
हर तरफ होता है जब ग़मकी घटाओंका हुजूम ।
दिलसे हो जाता है नक़्शेरुख़े राहत मादूम[4] ॥
जिन्दगी होती है जब मौतसे बदतर मालूम ।
यासअफज़ा[5] नज़र आती है हयातेमोहूम[6] ॥
इसके जल्वेकी झलक राहतेजाँ होती है ।
रोशनीका शबेहिरमाँमें[7] निशाँ होती है ॥

* * *

टूट जाए दिलेनाशाद अगर आस न हो ।
जिन्दगीका किसी ज़ीरूहको[8] अहसास[9] न हो ॥

अहलेहिन्द

(भारतीय)

इनक़लाबेदहरसे सब शानवाले मिट गये ।
रूमवाले मिट गये, यूनानवाले मिट गये ॥

---

[1]आँसू पोछना; [2]मातम करने वालोकी, [3]विकल हृदयमें, [4]नष्ट; [5]निराशा-बर्द्धक; [6]कल्पित जीवन, [7]निराशारूपी रात्रिमें; [8]ज़िन्दे आदमीको; [9]आभास ।

सीरियावाले मिटे, तूरानवाले मिट गये।
कौन कहता है कि हिन्दुस्तानवाले मिट गये ?
नक़्शेबातिल[1] हम नहीं जिनको मिटाये आस्माँ।
हम नहीं मिटनेके जबतक है बिनाए आस्माँ॥
हमने यह माना हमारे आनवाले मिट गये।
भोज-से, विक्रम-से आलीशानवाले मिट गये॥
भीष्म ओ अर्जुनसे योद्धा बानवाले मिट गये।
अकबरो परतापसे मैदानवाले मिट गये॥
नामलेवा उनके हम जेरेफ़लक बाक़ी तो है।
मिटते-मिटते भी जहाँमें आजतक बाक़ी तो है॥

. . . .

क्या थे अहलेहिन्द यह चर्खेकुहनसे पूछ लो।
या हिमालयकी गुफाओंके दहनसे पूछ लो॥
अपना अफ़साना लबेगंगोजमनसे पूछ लो।
पूछ लो, हर ज़र्रये खाकेवतनसे पूछ लो॥
अपने मुँहसे क्या बतायें हम कि क्या वे लोग थे।
नफ्सकुश[2] नेकीके पुतले थे मुजस्सिमयोग[3] थे॥

* * *

तेग़े हिन्दी

(भारतीय तलवार)

साफ़ करती सफ़ेदुश्मन[4] तू जिधर चलती है।
हाथ बाँधे तेरे साये में ज़फ़र[5] चलती है॥

* * *

---

[1]व्यर्थचिह्न; [2]सयमी; [3]पूर्णरूपेण योगी।
[4]शत्रुओका व्यूह, [5]विजय।

तुझमें वोह आब है शेरोंका जिगर पानी है।
दुश्मनोंके लिए जुम्बिश तेरी तूफ़ानी है॥

तू वोह है बहरेरवाँ[1] जिससे रवानी[2] माँगे।
तेरा मारा हुआ मैदाँमें न पानी माँगे॥

* * *

दिल लरज़ते हैं ज़रा तू जो लचक जाती है।
चश्मेगद्दारमें[3] बिजली-सी चमक जाती है॥
अपने मरकज़से[4] जभी रनकी सरक जाती है।
मौत भी सामने आये तो झिझक जाती है॥

* * *

जब कभी रनमें चमकती हुई तू निकली है।
ख़ौफसे होके फ़ना जानेउदू निकली है॥

* * *

लोहा माने हुए बैठा है ज़माना तेरा।
कि लबेज़ख्मपर अबतक है फिसाना तेरा॥

पयामे शौक़

(अमरीकासे एक भारतीयका सन्देश)

ंवाले सितारे! ऐ लबेबाम आफ़ताब!
तमीने हिन्दमें होनेको है तू बारयाब॥
वहाँ चमके उफ़क़में ज़ेरेदामाने सहाब।
जानिबसे वतनको इस तरह करना ख़िताब॥

---

[1]प्रवाहित समन्दर; [2]बहाव; [3]देशद्रोहीके नेत्रोंमें;
द्रसे।

इक मुसाफ़िरको ज़मींबोसीका तेरी ज़ौक़ है।
दूर उफ़्तादा[1] तेरा चश्मेसरापा[2] शौक़ है॥

ईसकी हसरत है कि जबतक आँखसे आँसू गिरें।
जज़्बेसादिक़के[3] असरसे सब दुरेशबनम[4] बनें।
तेरे साहिल[5] तक उन्हें मौजेंसबा[6] की ले उड़ें।
गोहरेनायाब तुझपर वारकर सदक़े करें॥

क़तराहाये अश्केहसरत मिलके तेरी ख़ाकमें।
बेलबूटे बनके निकलें सरज़मीने पाकमें॥

* * *

सब्ज़ाये बेगाना

(घास-पात)

अत्याचारीको सम्बोधन करते हुए किस ख़ूबीसे चुटकी लेते हुए सावधान करते हैं :—

ओ मस्तेनाज़[7] रौंद ना ज़ेरेक़दम मुझे।
ज़ालिम ! बना न तख़्तये मश्क़े सितम मुझे॥
ठंडी हवामें लेने दे बेदर्द दम मुझे।
इतना न कर असीरे अज़ाबे अलम मुझे॥

ठुकरा न इस तरह कि गयाहेहज़ीं[8] हूँ मैं।
ख़ुदफ़र्ते[9] इंकेसारसे[10] फ़र्शेज़मीं हूँ मैं॥

---

[1] दूर पड़ा हुआ; [2] देखनेको लालायित; [3] सत्यनिष्ठ भावनाके; [4] मोती जैसे; [5] किनारे; [6] हवाकी लहरें; [7] मदमस्त; [8] दुखिया घास; [9-10] स्वयं अपनी नम्रतासे।

ोखिरामेनाज़[1]! क़दंम रख सम्हालकर।
ादगाने[2] ख़ाकका भी कुछ ख़याल कर॥
ीज़ काह[3] हूँ मै ज़रा देखभाल कर।
का शबाबका न मुझे पायमाल कर॥
　　मेरे लिये है आफ़तेजाँ शोख़ियाँ तेरी।
　　ढाती है मुझपै क़हर ये अठखेलियाँ तेरी॥

ाके चल न ओ सितमईजाद[4]! ख़ैर है।
; ख़ानुमॉख़राबसे[5] क्या तुझको बैर है॥
छा यह शग़ल है तेरा अच्छी ये सैर है।
ा सरेनियाज़ है और तेरा पैर है॥
　　आया है बाग़में पए गुलगश्तेबाग़[6] तू।
　　पज़मुर्दगीका[7] दे न मेरे दिलपै दाग़ तू॥

* * *

गिज़ सितम न तोड़ किसी नातवान[8] पर।
ायदा अज़ाब न ले अपनी जानपर॥
रेफ़नामें[9] फूल ना इज़्ज़ोशानपर।
मुश्तेख़ाक! उड़के ना चल आस्मानपर॥
　　हुश्यार है तो दहरमें दीवाना बनके रह।
　　बागेजहाँमें सब्ज़ये बेगाना बनके रह॥

---

[1] मस्तचालमे लीन; [2] ख़ाक मे पड़े हुओका; [3] घास।
[4] अत्याचारोके आविष्कारक; [5] बे घरबारवालेसे।
[6] बागकी सैरको; [7] मुर्झानेका; [8] निर्बल।
[9] असार संसारमें।

दिले दर्द आश्ना

जिसे राहेतलबमें[1] खेल हो अपना मिटा देना।
हमेशा जिसकी ख़ू[2] हो जलके भी बूएवफ़ा देना॥
जिसे आता हो जोरेंनारवा[3] सहकर दुआ देना।
वदीयत[4] जिसकी फ़ितरतमें[5] हो रोतोंको हँसा देना॥
मेरे पहलूमें यारब ! वोह दिलेंदर्द आश्ना देना।

कमरबस्ता रहे जो हर नफ़स इमदादे बेकसपर।
हमेशा गोशबरआवाज़[6] हो फ़रियादे बेकसपर॥
जो अश्केखूँ बहाये ख़ातिरेनाशादेबेंकसपर।
तड़प उट्ठें जो दर्दअंगेंजियें[7] रूदादेबेंकसपर[8]॥
मेरे पहलूमें यारब ! वोह दिलेंदर्द आश्ना देना।

जिसे गर्मेतपिश रक्खे तड़पना बेक़रारोंका।
न देखा जाय जिससे हालेज़ार आफ़तके मारोंका॥
जिसे बेताब करदे शोरेमातम सोगवारोंका।
जो अंगारोंपै लोटें सुनके नाला दिलफ़िगारोंका॥
मेरे पहलूमें यारब ! वोह दिलेंदर्द आश्ना देना।

जेबुन्निसाकी क़ब्र

(औरंगज़ेबकी पुत्री की समाधि)

* * *

गुम्बद है, मक़बरा है, ना लोहेमजार है।
तावीज़ेकब्रका भी है मिटता हुआ निशाँ॥

---

[1] आवश्यकता पड़नेपर; [2] आदत; [3] अनुचित ज़ुल्म; [4] धरोहर; [5] स्वभावमें; [6] चौकन्ना, सजग; [7] करुण पुकारपर; [8] निरीहकी आवाज़पर।

न शमअ़ है, न चादरेगुल है, न क़ब्रपोश।
मिट्टीका एक ढेर है इबरतकी दास्ताँ॥
वीरानियेलहद[1] है मजावर[2] सरेमजार।
जाइर[3] हुजूमेयास,[4] तबाही है पासबाँ[5]॥
है गर्दसे अटा हुआ अम्बार ख़ाकका।
सब्ज़ा तो क्या कि शक्लेनमू[6] भी नहीं अयाँ॥
उड़ती है ख़ाक और बरसती है तीरगी[7]।
छाया हुआ है हसरतोअन्दोहका[8] समाँ॥
रोती है बेकसी सरेबालीं खड़ी हुई।
तुरबतपै कसमपुरसीका आलम है नौहाख़्वाँ॥
बादेसबा चढ़ाती है चादर ग़ुबारकी।
है जर्राहाये रेगेबयाबाँ गुहर फ़िशाँ॥
है उसकी ख़्वाबगह यह शबिस्तानेख़ाक अब।
जोबिन्दहै जिसके दमसे थे किसरे फ़लकनिशाँ॥

*   *   *

उसको फ़सेफ़ना है ये मटियामहल नसीब।
दामनको जिसके गर्द सरेराह थी गिराँ॥

*   *   *

बच्चेकी गुलाबी मुस्कराहट

ख़न्दयेगुलमें यह रंगीनी कहाँ?
यह लताफतबेज शीरीनी कहाँ?

---

[1] क़ब्रकी वीरानी; [2] क़ब्रका रक्षक; [3] ज़ियारत करनेवाला, क़ब्र पर आनेवाला; [4] निराशाओंकी भीड़; [5] रक्षक; [6] तिनका उगनेका; [7] अन्धेरा; [8] अभिलाषा और दुखका।

इस सबाहतपर यह नमकीनी कहाँ ?
इसमें हैं जाएसखुनचीनी कहाँ ?

खत्म है तेरे लबोंपर वाह ! वाह !!
यह गुलाबी मुस्कराहटकी अदा ॥

* * *

कोई हसरतकश है या महजूर है।
शादमानी जिससे कोसों दूर है॥
लाख जोशेग़मसे दिल मामूर है।
तुझसे मिलते ही नज़र मसरूर है॥

खत्म है तेरे लबोंपर वाह ! वाह !!
यह गुलाबी मुस्कराहटकी अदा ॥

* * *

अब्रे करम बरस

* * *

हसरतसे देखते हैं मुए आस्माँ किसान।
बादलके नामका नज़र आता नहीं निशान॥
बारिश कहाँ है आह जो है खेतियोंकी जान।
फिरते हैं जानवर भी निकाले हुए जबान॥

प्यासी जमीन है तो शजर तिश्ना काम हैं।
रिन्दानेबादहख्वार भी आतिश बजाम हैं॥

ताख़ीर किसलिए है यह अब्रेकरम बरस।
बारिश बग़ैर ख़ल्क़का है लबपै दम बरस॥

अब ताबे इन्तज़ार नही बेशोकम बरस।
है रहमतेकरीमकी तुझको क़सम बरस॥
ऐसा बरस कि दूर जमानेसे काल हो।
जंगल हरे हों, सब्ज़ ये गुलशन निहाल हो॥

कारेखैर

(क्या किया तूनें?)

बता ऐ खाकके पुतले कि दुनियामें किया क्या है?
बता कै दाँत है मुँहमें तेरे, खाया पिया क्या है?
बता खैरात क्या की, राहे मौलामें दिया क्या है?
यहाँसे आकबतके[1] वास्ते तोशाह[2] लिया क्या है?
दुआएँ ली कभी ठंडा किया दिल तुफ़्तह[3] जानोका?
हुआ है तू कभी राहतरसाँ[4] तिश्नादहानोंका[5]?
किसी गुमकरदहरहको[6] खिज्र[7] बनकर रहनुमाई[8] की?
किसीकी नाखुनेतद्बीरसे[9] उक्दाकुशाई[10] की?
दमेमुश्किल[11] किसी मजलूमकी[12] हाजतरवाई[13] की?
किसीकी दस्तगीरी की, किसीकी कुछ भलाई की?
कभी कुछ काम भी आया किसी आफ़तरसीदाके?
कभी दामनसे पूंछे तूने आँसू आब्दीदाके?
शरीके दर्देदिल होकर किसीका दुख बटाया है?
मुसीबतमें किसी आफतज्दाके काम आया है?

---

[1]परलोकके, [2]सामान; [3]दग्ध हृदयों; [4]चैन देनेवाला; [5]प्यासोका; [6]भूले भटकेकी; [7]मार्ग प्रदर्शक, [8]मार्ग सुझाना; [9]अक्लसे; [10]मुश्किल हल करना; [11]आड़ेवक्त; [12]पीडितकी; [13]इच्छापूर्ति।

पराई आगमें पड़कर कभी दिल भी जलाया है ?
किसी बेकसकी ख़ातिर जानपर सदमा उठाया है ?

कभी आँसू बहाये हैं किसीकी बदनसीबीपर ?
कभी दिल तेरा भर आया है मुफ़्लिसकी गरीबीपर ?

किसीका उक़्दयेमुश्किल[1] कभी आसाँ किया तूने ?
किसी दर्मांतलबके[2] दर्दका दर्मां किया तूने ?
किसी दिलगीरका[3] दिल गुंचयेख़न्दाँ[4] किया तूने ?
किसीको भी कभी शर्मिन्दयेअहसाँ किया तूने ?

किसी दरमान्दये[5] मंजिलके सरसे बोझ उतारा है ?
बिसातेदर्दमन्दीपर किसीसे क़ौल हारा है ?

कभी तूने किसी बरगश्ता[6] क़िस्मतकी ख़बर ली है ?
किसी मातमज़दाकी तूने दिलजोई कभी की है ?
किसीके वास्ते आफ़तमें अपनी जान डाली है ?
किसी बेख़ानुमाँकी वक़्तेमुश्किल कुछ मदद की है ?

हजूमेयासमें[7] हिम्मत बढ़ाई दिलशकिस्ताकी ?
कभी कुछ चाराफ़रमाई[8] भी की जख़्मी ओ ख़स्ताकी ?

कभी इम्दाद दी तूने किसी बेकस बिचारेको ?
सख़ी बनकर दिया कुछ तूने मुफ़लिसके गुजारेको ?
तसल्ली दी कभी तूने किसी आफ़तके मारेको ?
कभी तूने सहारा भी दिया है बेसहारेको ?

---

[1]उलझन; [2]रोगीके; [3]उदासका।
[4]कलीकी तरह खिला हुआ; [5]थके हुए।
[6]फिरी हुई; [7]निराशाओंकी भीड़मे, [8]इलाज।

कभी फ़रियादरस बनकर ख़बर ली बेनवाओंकी[1]
लगी है चोट भी दिलपर सदा सुनकर गदाओंकी[2] ?

किसी बरगश्ता[3] किस्मत बेनवाकी[4] दिलनवाज़ी[5] की ?
किसीके ख़न्दये ज़ख्मे जिगरकी चारासाज़ी की ?

किसीके वास्ते ग़ममें घुला क्या जाँगुदाज़ी[6] की ?
अगर था साहिबेतोफ़ीक़[7] क्या बन्दानवाज़ी[8] की ?

सुना कब कान धरकर नालयेग़म बेनवाओंका ?
हमेशा वालओशैदा[9] रहा अपनी अदाओंका ॥

रहा तू रात-दिन मसरूफ़ शग़लेमयपरस्तीमें[10] ।
गँवाई रायगाँ[11] उम्रे दो रोज़ा कैफ़ेमस्तीमें[12] ॥

तुला फूलोंमें गुलछर्रे उड़ाए बाग़ेहस्तीमें ।
गिरा ग़र्क़ेनिशातो[13]ऐश होकर ग़ारेपस्तीमें[14] ॥

रचाये रंग तूने ख़ूब पी-पी कर मयेअहमर[15] ।
शबेमहताबमें जल्से रहे हैं माहताबीपर ॥

रहा महवे तमाशा हुस्नका अन्दाज़का शैदा ।
रहा सौ जानसे तू हर अदाएनाज़का शैदा ॥

रहा इशरतका ख्वाहिशमन्द हिर्सोआज़का[16] शैदा ।
रहा दौलतका दिलदादा रहा एजाज़का[17] शैदा ॥

---

[1] निराश्रितोकी, अनबोलोकी; [2] फकीरो; [3] फिरी हुई; [4] बेसहारेकी; [5] दिल बहलाना; [6] मनघुलाना; [7] दान देनेमे समर्थ; [8] मनुष्योकी भलाई; [9] अनुरक्त; [10] शराबमे व्यस्त; [11] व्यर्थ मस्तीकी हालत; [12] विलासितामे, [13] रगरलियोंमे डूबकर; [14] पतनके कूपमें; [15] लाल शराब, [16] लालचका, तृष्णांका, [17] प्रतिष्ठाका ।

सदा मिटता रहा आराइशोंपर[1] जामाज़ेबीपर[2]।
बहुत नाज़ाँ रहा अपनी अदायेदिलफ़रेबीपर ॥

बहुत तूने बहारें जिन्दगानीके मज़े लूटे।
बहुत ज़ेरे क़दम तूने किये पामाल गुल बूटे ॥
बहुत जामेमयेगुल रंग तेरे हाथसे टूटे।
बहुत लाला रुखोंके लाले लब तूने किये झूठे ॥

रहा तू बेगुलोगश महव शग़्ले ऐशकोशीमें[3]।
कभी फ़िक्रे मआल आया न ज़ौक़े ख़ुद फ़रोशीमें।

कुछ शेर

हमें राहेतलबमें ख़ाक हो जानेसे मतलब है।
क़दम पहुँचे न पहुँचे मंजिलेमक़सूदपर अपना ॥
मुसाफ़िर हूँ अदमकी राहमें फ़िक्रे अक़ामत क्या?
वहीं मंजिल है जिस जा ख़त्म हो जाये सफ़र अपना ॥

उन्हींको हम जहाँमें रहरवे कामिल समझते हैं।
जो हस्तीको सफ़र और क़ब्रको मंजिल समझते हैं ॥
जो हैं जाँबाज़ कब मुश्किलको वोह मुश्किल समझते हैं?
शनावर[4] मौजें तूफ़ाँख़ेज़को साहिल समझते हैं ॥

न मिज़गाँसे वफ़ूरेज़ब्तने ढलने दिये आँसू।
यह दरिया ग़र्क होकर रह गया अपने किनारोंमें ॥

आलामसे बचनेकी जो सूझी कोई तदबीर।
नाकामियेतक़दीर भी शामिल ही नज़र आई ॥

२४ जुलाई १९४६

---

[1] सजावटोंपर; [2] वेश-भूषा, पोशाकपर; [3] भोगविलासमे; [4] तैराक।

सफल प्रयास

: ८ :

उर्दू-शायरी एक नए मोड़पर,
सरल भाषाके समर्थक

हिन्दुस्तानमे इस छोरसे उस छोर तक बसने वाले हिन्दू-मुसलमान जिस भाषामे परस्पर बोल सके, उस हिन्दी या हिन्दुस्तानी ज़बानकी दागबेल अमीर खुसरोने डाली। जायसी, रसखान, रहीम और कबीर वगैरह इसी दागबेल पर ऐसा हिन्दी-मन्दिर बनानेमे सराबोर रहे, जहाँ हर हिन्दुस्तानी, चाहे वह किसी भी मजहब या प्रान्तका हो बिना किसी भेद-भावके अपना दिल खोल कर रख सके और दूसरेके मनको पढ सके। मगर वली वगैरहको यह गगा-जमुनी देशी ढग न भाया। उन्हे अरब, फारस और तुर्कीकी कला अधिक पसन्द आई। भाव, भाषा, कल्पना, उपमा, अलंकार अनुप्रास, पिगल, व्याकरण, जो भी वहाँसे ला सके लाये। हिन्दुस्तानसे केवल वही लिया जो दूसरी जगह न मिल सका। फिर भी इस विदेशी अरबी-फारसी मिश्रित दुरूह उर्दू काव्य-कला-मन्दिरमे हिन्दी-शब्द पच्चीकारीमे मीनेकी तरह लगते ही रहे।

वली द्वारा प्रचलित इस क्लिष्ट उर्दू शायरीको सबसे पहले सरल भाषा और भारतीय भावोका रूपरग नजीर अकबराबादीने दिया। मिर्जा दाग, अमीर मीनाई और अकबर इलाहाबादी वगैरहने इसे बडी खूबीसे सँवारा और अब तो इस बागीचेमे तरह-तरहके रंग बिरगे फूल खिलते नज़र आ रहे है। सैकडो बाकमाल कलाकार अपना-अपना कौशल दिखला रहे है। इस गगा-जमुनी छटाको हम तीन तरहसे देखते है —

१—भाषा उर्दू, मगर आसान—

अप्रचलित शब्दोको छोडकर आसान-से-आसान भाषामे लिखनेकी इस प्रणालीको नवाब साइल, आगा शायर, बेखुद, नूह, जिगर, रियाज़, जलील, बिस्मिल, बहजाद, दिल और आरजू वगैरहने बड़ी लगनके साथ आगे बढाया। और अब तो एक आम धारणा बन चुकी है कि

लेखक, कवि और वक्ता वही अधिक सफल होते है जो अपने भावों को ज्यादासे ज्यादा लोगोके मनमें आसानीसे विठा सकें।

२—उर्दूमें हिन्दी शब्द—

जिस तरह आपसके मेलजोलके कारण हिन्दीमे हजारों शब्द अरबी, फारसी, अंग्रेजी वगैरहके घुलमिल गये है और रोजानाके काम-काजमे इस्तेमाल होते है, उसी तरह उर्दूमे भी हजारो शब्द हिन्दीके समाये हुए है। यहाँ तक कि उर्दूकी नज्मोंमे भी बड़ी खूबीके साथ हिन्दी शब्द पिरोये जाने लगे है। अल्लामा इकबाल और चकबस्त जैसे उर्दूके महान कलाकार भी इस लोभ को सवरण न कर सके। उन्होने उर्दूकी वहर (छन्द) और उर्दूके ही शब्दोमें हिन्दी शब्दोकी कही-कही पुट दे कर एक अजीब मिठास भर दी है। हिन्दीकी क़लम लगाकर उर्दू शायरीके चमनको काफ़ी विकसित किया जा रहा है।

३—केवल हिन्दी—

वह युग लद गया जब कि हर भाषा-भाषी अपने भावोंको कठिनसे-कठिन शब्दोमें प्रकट करना एक शान समझता था। अब जमानेने एक और करवट बदली है। उर्दू शायरीमे कुछ बहरे (छन्द) नियत थी। उन्ही बहरोंमे गज़ले और नज्मे लिखते-गाते लोगोका मन अब ऊव चुका था। संसारकी दूसरी भाषाओं—अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला आदिमें नित नई तर्जे निकल रही थी। उर्दूमे ऐसे गीतोका नितान्त अभाव था। खुद उर्दू शायरोके घरोमे, पडोसमे, महफिलोमे रोज़ाना ऐसे गीत गाये जाते और ये मन मारके रह जाते थे। गीतोंके आगे गजलें फीकी पड़ने लगी। यहाँ तक कि बेखुदीमें शायर लोग भी उन गीतोको गुन-गुनाने लगते। इस कमीको महसूस तो सब करते थे मगर उपाय न सूझता था। इस ओर सबसे पहला कदम जनाब हफ़ीज़ जालन्धरीने उठाया। उन्होने ग़जले और नज्मे लिखनी कम करके वोह मादक

गीत लिखे और गाये कि उर्दू दुनिया अश-अश कर उठी। फिर तो इन गीतोंकी ऐसी बाढ-सी आई कि उर्दू 'पत्र-पत्रिकाओमे, मुशायरोमे, व्यक्तिगत सोहबतोमे गीत ही गीतोकी भरमार रहने लगी। सागिर निज़ामी, अख़्तर शीरानी, अमरचन्द कैस, अजमत अल्लाह खाँ, डा० मुहम्मद दीन तासीर, मकबूल हुसेन अहमदपुरी, विकार अम्बालवी, प० इन्द्रजीतशर्मा, अहसान बिन दानिश, हफीज होश्यारपुरी, मीराजी, हामिद अल्लाह अफसर, मौ० बशीर अहमद, मौ० हामिदअली खाँ राजामहदीअलीखाँ, वहज़ाद लखनवी, सिराजुद्दीन जफर, अहमद नदीम कासिमी जैसे ख्याति-प्राप्त उर्दू शायरोने प्रेम, भक्ति, विरह, प्रकृति-सौन्दर्य, रहस्यवाद, सावन, बसन्त, होली, झूला, लोरी आदि भिन्न-भिन्न पहलुओ पर इतना अधिक लिखा है कि कई बडे-बड़े सग्रह तैयार हो सकते है।

प्रथम तो प्रस्तुत पुस्तकका उद्देश्य हिन्दी पाठकोको केवल उर्दू कविताका रसास्वादन कराना है। दूसरे, हिन्दीमे नित नए एकसे एक बढ कर गीत देखनेमे आ रहे है। हिन्दी पाठकोको शायद गीत अधिक न रुचे इसलिये हम इस युगके ख्याति प्राप्त—१ हफीज जालन्धरी; २ सागर निज़ामी, ३ अख़्तर शीरानी और ४ अर्श मलसियानीके नमूनेके तौर पर केवल एक-एक दो-दो गीत, कुछ नज्मे और चन्द गज़लोंके अशआर दे कर सन्तोष करेंगे।

१२ अगस्त १९४६-

१८

हफ़ीज़ जालन्धरी

यह कौन बेअदब है जो मिर्जा गालिब पर भी चोट करनेका साहस कर सकता है? बड़े-बड़े बाकमाल उस्ताद तो मिर्ज़ाके मिसरे पर गिरह लगाने में भी झिझकते है, और एक ये है कि बआवाज बुलन्द कह रहे हैं :—

"किया पाबन्देनै नालेको मैंने
यह तर्जेख़ास है ईजाद मेरी ।।"

क्या खूब! मिर्ज़ाने फर्माया है कि नाला लयके आधीन नही है[1] और आपका दावा है कि नालेको मैंने लयके आधीन कर लिया है।

यही परस्पर विरोधी बात देखनेको १२-१३ वर्ष पहले हफीज़ जालन्धरीके 'नग़्मयेज़ार' और 'सोजोसाज' पढ़ने बैठा तो उर्दू साहित्यकी दुनिया ही बदली-सी दिखाई देने लगी। यह कृष्ण कन्हैया, बाँसुरी, प्रीतिकी रीति, बसन्त, रावी और चिनाव नदियाँ, हिमालय, लाहौर

---

[1] मिर्जा ग़ालिब का वह शेर ये है :—

"फ़रियादकी कोई लै नहीं है।
नाला पाबन्दे नै नहीं है ।।"

यानी फरियाद—कष्टोंकी करुण पुकार—की कोई लय नही होती। यह पुकार तो चश्मेकी तरह हृदयसे अपने आप फूट पडती है। नाला—आह, व्यथा, वेदना, क्रन्दन—ताल-स्वरके आधीन नही है। तात्पर्य यह है कि जब सचमुच रोना आता है तब वह गाया नही जाता।

वगैरह उर्दू शायरीके मजबूत गढमे क्योकर घस गये ? जो शायरी अभी तक अभारतीय रही, वही भारतीय-सी कैसे दीखने लगी ?

जो उर्दू शायर सदियोसे भारतमें रहते-सहते हुए भी अधिकाश अपनेको हिरात, अफ़गान, गजनी, दुर्रानी, तवस्तान, कावुल, वगदाद वगैरहका मूल निवासी वतानेमे आत्मगौरव समझते है, तो कोई विदेशी विद्वान भारतको देखे वगैर केवल उनके कलामको पढ कर भारतको ईरानका सूवा या जिला समझनेकी भूल कर वैठे तो कोई आश्चर्य नही। यह माना कि वल, पौरुष, सभ्यता, सुन्दरता आदि मे इन शायरोके दृष्टिकोणसे भारतमे कुछ भी उल्लेख योग्य नही था। लेकिन मशहूर उर्दू अदीव प० हरिश्चन्द्र 'अख्तर'के कथनानुसार "क्या इस विशाल जनसंख्या वाले भारतमें—जहाँ दुनियाँकी जनसख्याका पाँचवाँ हिस्सा वसता है—किसी कमवख्तको आशिक हो जानेकी भी तौफीक नही हुई ? और अगर हुई तो क्या उसका महवूव ऐसा गया-गुज़रा था कि हमारे शायरोको उसका जिक्र तक गवारा नही हुआ ?"[1]

इसी त्रुटिको अनुभव करते हुए एक उर्दू-साहित्यिक लिखते है—"अगर हमारे अदीव[2] देशी जवानके होते हुए परदेशी ज़वानोके अलफाज इस्तेमाल न करे तो हमारी वहुत-सी मुश्किले आसान हो सकती है। हमारे अदीव अभी तक पुरानी लकीरके फकीर बने हुए है। शायर वदस्तूर कुमरी और वुलवुलपर आशिक है। गजलमे मुकामी रग मफ़कूद[3] है। गगाके किनारे वैठकर दजलह[4] और फ़िरातके[5] ख्वाव देखे जाते है। नतीजा यह है कि हमारी शायरी हकीकतसे वहुत दूर हो गई है। सुहराव और रुस्तमका जिक्र सुनते-सुनते कान पक गये, अर्जुन और भीमका नाम कोई नही लेता।

---

[1] सोज़ोसाज़की भूमिका, पृष्ठ १३।

[2] साहित्यिक, [3] गायव; [4] वगदादकी एक नदी; [5] रूमकी एक नदी।

नर्गिस और सोसनसे ज्यादा ख़ूबसूरत और खुशबूदार कँवल और चम्पा है। शीरी-फरहाद, लैला-मजनूँकी दास्तानोसे ज्यादा दिलचस्प और दिलको मोहने वाली नल-दमयन्ती, हीर-राँझेकी कहानियाँ है। महज बुलबुल और कुमरी ही खुशइल[1]हानियाँ नही करती, कोयल और पपीहेकी आवाजमे भी रस है। बगदादकी शामसे ज्यादा दिलफरेब सुबहे-बनारस है। गुलजारे रूम तो ग्रहदे अतीक़ (पुराने वक्तो)की दास्तान है लेकिन गुलकदहे काश्मीर वाकई फिरदौसेबरीका नमूना है।"[2]

कीजे न 'जमील' उर्दूका सिंगार, अब ईरानी तलमीहोंसे।
पहनेंगी विदेशी गहने क्यों यह बेटी भारतमाताकी॥

हमारी गुलामी जहनियतका यह हाल है कि हम हिन्दी रज-वीर्यसे उत्पन्न हुए; हिन्दी आबोहवामे पले और हिन्दी खाकमे अपने बुजुर्गोंकी तरह एक रोज मिल जाएँगे। फिर भी हमारी हर बातमे अहिन्दी भूत घुसा हुआ है। कुछ लोग तो यहाँके हरे-भरे बागीचे उजाड़ कर उसमे खजूरके पेड़ लगाना और रेत बिछाना ही सवाब समझते है। हाथीसे ऊँटको तरजीह देते हैं। उर्दूके मशहूर शायर 'सौदा'का बस चलता तो अपने हिन्दी माँ-बापसे यहाँ पैदा किये जानेकी कैफ़ियत भी तलब करते। आपको अपने बाप-दादाओंके वतन हिन्दुस्तानसे इस कदर नफरत थी कि पेट भरनेका कही और ठिकाना होता तो एक लमहे भरको यहाँ न रहते।

गर हो कशिश शाहे खुरासान की 'सौदा'।
सिजदा न करूँ हिन्दकी नापाक जमींपर॥

ऐसे ही भले आदमियोंकी औलाद आज "हिन्दोस्तान मुर्दाबाद"के नारे लगाती है, और देशको रसातलमे पहुँचानके अधम प्रयत्न करती हैं तो आश्चर्यकी इसमें क्या बात है?

---

[1] मधुर गायन; [2] हिन्दीके मुसलमान शायर, पृष्ठ ४।

जिन मजहबी अन्ध विश्वासोको अरबने धता वता दी, खिलाफतको टर्कीने तलाक देदी, उन्हीको हिन्दुस्तानमे पनाह दी गई है। उर्दू-हिन्दी शब्दकोषके सम्पादक ब्रा० रामचन्द्रजी वर्माने सत्य ही लिखा है :—

"तुर्कोने अरबी शब्दोका वहिष्कार किया था, ईराननने भी उसका अनुकरण किया। वहाँ की भाषामें आधेके लगभग जो अरबी शव्द घुस गये थे, व सब सरकारी आज्ञासे वहिष्कृत होने लगे, और उनके स्थान पर ईरानी या फारसी भाषाके शब्द चलने लगे। उन्होने अरबीके अल्लाह और रसूल तक की जगह अपने यहाँ के 'खुदा' 'पैगम्बर' शव्द चलाये। अब अफगानिम्तान भला क्यों पीछे रहता? उसने अरबी और फारसी दोनों भाषाओके शब्दोका वहिष्कार आरम्भ किया है। यह सब तो स्वतन्त्र देशोकी वातें है। हमारा देश तो परतत्र है, यहाँ उलटी गगा बहे तो कोई आश्चर्य नही।"[1]

एक ऐसे ही हिन्दी-द्वेषी 'नातिक' गुलाठवीके ५ जून १९४४ के पत्रका उत्तर देते हुए जनाब "एजाज" सद्दीकी साहब (सपादक "शाइर" आगरा, सुपुत्र अल्लामा 'सीमाव' अकबरावादी) लिखते है —

"हिन्दी शायरी क्या है और किस क़िस्म का अदव[2] पेश कर रही है, इसका जवाब बहुत तफसील तलव है, लेकिन उर्दू को हिदुस्तानकी वाहिद मुश्तरका मुल्की जवान समझते हुए और उसका सच्चा खिदमतगार व परिस्तार होते हुए मे निहायत ईमानदारीके साथ यह अर्ज करनेकी जुरअत कर रहा हूँ, कि हिन्दी शायरी हमारी आपकी आम उर्दू शायरीसे कही मुफीद और कारआमद है। यहाँ यह सवाल नही कि हिन्दी शायरीमे-सस्कृत अल्फाजकी भरमार होती है, और आम तौर पर उसे समझा नही जा सकता। मेरे मुहतरिम! वहुतसे उर्दू शायरोका कलाम आम तौरसे कव समझा जाता है? हिन्दी जाननेवालोको जाने दीजिये;

---

[1] अच्छी हिन्दी, पृ० १६७;   [2] साहित्य।

उर्दू पढ़े लिखे ऐसे कितने हैं जो 'गालिब', 'इक़बाल', 'सीमाब 'फ़ानी', 'असगर' और बाज दूसरे बुलन्दगो शोअराके अल्फाज व मुफाहिमको[1] आसानीसे समझ लेते है।

"आजका हिन्दी शायर उर्दू शोअराकी तरह जुल्फ़ो गेसू, गुलो बुलबुल, आरिजो-रुखसार, हिजरो-विसाल, जैसे सैकड़ों फरसूदा[2] खयालात का शिकार नही। उसकी शायरीमें जिन्दा रहने वाली क़ौमोके जज्बात मौजजन है। वह अमल व जहादका[4] पैगाम देता है, और जिन्दगीकी--दुखती हुई रगोपर हाथ रखता है। आजकी हिन्दी शायरी रिवायती अनासिरसे[6] कतअन पाक है। यही वजह है, कि हिन्दी कवियोको कवि-सम्मेलनो में दाद नहीं मिलती। जो शेर दर्स व पयाम और ठोस खयालातका हामिल होगा उस पर कभी वाह-वाह नही होगी। वाह-वाह तो सिर्फ ऐसे अशआर पर होती है, जो मामला बन्दीकी मुकम्मिल तसवीर हो और जिन्सयाती[7] नजरियातके[8] ऐन मुताबिक। आज जिस तरह हिन्दू कौमी, मुल्की, सियासी,[9] मआशरती,[10] तालीम और मजहबी अमूरमे[11] आगे निकल चुका है उसी तरह उसका अदब भी तरक्की[12] पजीर है। मै सही उल अक़ीदा मुसलमान हूँ, और इसलामके नाम पर अपना सब कुछ क़ुरबान करनेके लिए तैयार, मगर हिन्दोस्तानी मुसलमानोकी रविशे-कारसे बहुत मगमूम[13]। हाँ मायूस नही हूँ। मुसलमान सिर्फ ऐतराज़ करना जानता है, लेकिन अपनी ग़लतियोकी तरफ भूल कर भी उसकी निगाह नही जाती। मै मजहबी तास्सुवसे[14] खालिउलजेहन[15] होकर हर मामलेमें गौर करनेका आदी हूँ। अगर हिन्दू अपनी क़दीम

---

[1] तात्पर्य्यको; [2] व्यर्थ; [3] भाव; [4] धार्मिक युद्धका; [5] नकलची; [6] तत्वोसे; [7] इन्द्रिय वासना सम्बन्धी; [8] दृष्टिकोणके; [9] राजनैतिक; [10] आर्थिक; [11] क्षेत्रोंमें; [12] उन्नतशील; [13] दुखी; [14] ईर्ष्यासे; [15] रहित।

जवानकी वकाके[1] लिये जद्दोजेहद[2] करता है, तो यह कोई गुनाह नही। रहा तरदीज[3] व उर्दूअशायतका[4] सवाल, तो जिस चीजमे जितना फैलनेकी सलाहियत[5] होगी वह फितरतन उतनी ही फैले और सिकुड़ेगी।

"जिस तरह मुसलमान सस्कृतकी शायरी पर एतराज करते हैं, क्या उसी तरह हिन्दुओने भी कभी यह कहा कि मुसलमान फारसीमे शायरी—क्यो करते है? हाफ़िज़, जामी, अनवरी, और सादी वगैरह को जाने—दीजिये, डाक्टर इकबाल मरहूमका फारसी कलाम सैकड़ों हिन्दुओके जेरेमताला[6] रहता है। सिर्फ इसलिये कि वह फारसी भी जानते हैं। और, फ़ारसी जानना—उनके यहाँ कोई गुनाह नही, क्या मुसलमानोने भी कभी यह कोशिश की कि वह संस्कृत या आसान हिन्दी ज़बानका कभी मताला करे?

"मैने तालिब इल्मीके जमानेमे कभी एक लफ्ज़ हिन्दीका याद करके पण्डितजीको नही सुनाया, और हमेशा उन्हे एक दो पान खिलाकर सालाना इम्तहानमे नम्बर हासिल कर लिए। चूँकि दिमाग की सही नश्वोनुमा[7] नही हुई थी, और तास्सुबकी[8] घटाये छाई हुई थी, इसलिए आजतक उसका खमियाजा[9] भुगत रहा हूँ। अगर मसजिदमे जानेसे हिन्दू मुसलमान और मन्दिरमे जानेसे मुसलमान हिन्दू हो जाये, तो जबानोके सीखनेसे भी यकीनन मजहबी अजमत पर धब्बा आना चाहिये।

"मुहतरिमी! सिर्फ एक कदीम हिन्दुस्तानी जबान न जानने की वजहसे हम उसके साथ अछूतोका-सा बरताव कर रहे हैं। अगर हमें इसमें थोड़ा बहुत भी दर्क होता, तो हिन्दी या सस्कृतकी शायरी बारे समाअत[10] न होती। हज़ारों हिन्दुस्तानी जो अगरेज़ी ज़बानसे अच्छी तरह

---

[1] अस्तित्व; [2] प्रयत्न; [3] उर्दूका अप्रसार; [4] उर्दू साहित्यका प्रसार; [5] मुलामियत, अच्छाई; [6] अध्ययनमें; [7] उन्नति; [8] ईर्ष्याकी; [9] हानि; [10] कर्ण-कटु।

वाकिफ हैं, उन्हें उर्दू या संस्कृतकी शायरीमें वह लुत्फ़ नहीं आता, जो मग़रबी शायरीमे आता है। आख़िर क्यो? अगरेजी जबानके ख़िलाफ़ मुसलमानोमे जज्बये नफरत क्यो नही पाया जाता और वह उठते-बैठते-सोते-जागते खाते-पीते बजाय उर्दू या व्रज भाषाके अंगरेज़ीमे गुफ्तगू क्यों किया करते है? मैंने अक्सर देखा है कि दौराने गुफ्तगूमे दो लफ्ज अगर उर्दूके बोलते है तो चार अंगरेज़ीके। यह क्या है? हिन्दू अगर उर्दूमें संस्कृतकी आमेजिश कर रहे है तो क्या बुरा कर रहे है, गो वह जानते है कि यह बेल मढे नही चढेगी। मुसलमानोके पास इस एत-राजका क्या जवाब है, कि वह उर्दू जबानमें अस्सी फीसदी अरबी और फ़ारसीके अल्फ़ाज इस्तेमाल करते हैं। दरअसल हिन्दुस्तानियोंकी — ज़हनियतें इस क़दर पस्त हो गई है कि, वह कदम-क़दम पर "हिन्दूपानी" और "मुसलमान पानीकी" आवाजे सुननेके आदी हो गये है। काश! कोई मुल्की और समाजी कानून ऐसा होता, जो दिमागोंसे इस लगवियतको छीलकर फेक देता। मै मानता हूँ कि मुसलमान हिन्दुओके साथ बहुत ज्यादा रवादार रहे, लेकिन उर्दू हिन्दीके मुआमिलेमें मुसलमानोने रवादारीसे काम नही लिया। हकीकतन यह मसला मुसलमानोके लिए क़ाबिले तवज्जह होना ही नही चाहिए था। उर्दूके वगैर हिन्दुस्तानी ज़िन्दा नही रह सकता। अगर हिन्दुओके प्रोपेगंडे और कोशिशसे उर्दूको किसी कदर नुकसान पहुँचा भी है—(जिसे मै माननेके लिए तैयार नही)— तो वह महज जिदकी बिना पर। क्या यह जुल्म नही कि एक ऐसी मशरकी ज़बानको मिटा दिया जाये जिसमे क़दीम हिन्दुस्तानके तारीख़ी नकूश जगमगा रहे हैं। जिसमे हिन्दुस्तानके एक कदीम मजहबकी तालीम महफ़ूज है, और जो ज़रा आसान होकर अपने अन्दर इतना लोच, इतनी लचक, और इतना रस रखती है कि कोई दूसरी ज़बान मुश्किलसे उसका मुक़ा-बिला कर सकती है। क्या आम फहम हिन्दी गीत सुननेके बाद वे अख़्ति-याराना दिल पर हाथ रख लेनेको जी नही चाहता? और क्या हम एक

ग़ैर-मामूली लज़्ज़त महसूस नही करते? .....रहा हिन्दू शायरीके उसूल व कवायद और बहरोवजनका सवाल, तो जहाँ तक मुझे इल्म है यह सब मुज्जबित है, और अबसे नही बल्कि जमाने कदीमसे। अलबत्ता इसमें अब कुछ तब्दीलिया की गई है। हिन्दी ज़बानमे ऐसी कितनी किताबें मिलती है और शायद किसी एक किताबका उर्दू मे तरजुमा भी हो चुका है। हिन्दीके तमाम मशहूर कवि उसूल व कवायदके मातहत ही शेर कहते है। इनके यहाँ असनाद भी मिल सकती है। हिन्दी और संस्कृतके लुगात भी मौजूद है, यही नही बल्कि अलफ़ाज़के माखिज और उनके मुतरादिफात भी कसीर तादादमे हैं। हम किसी तरह संस्कृतको नामुकम्मिल ज़बान नहीं कह सकते। बल्कि यह एक जामा और बुलन्दतरीन ज़बान है।

"हजरत मौलाना! क्या मैं दरियाफ्त कर सकता हूँ कि आपने अपने गिरामी नामोंमे हिन्दी या सस्कृतके मुश्किल तरीन अल्फाज क्यो इस्तेमाल फरमाये? इसे रवादारी पर महमूल करूँ या जिद पर? इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानोको चिढाते है।"[1]

हफीज जालन्धरीके कलाममे मुझे भारतीय रंग और रूपकी छटा खिलखिलाती नजर आई है। यद्यपि बक़ौल जनाब 'पितरस' हफ़ीज़ कभी-कभी कनखियोसे तुर्के शीराजको देख लेता है, फिर भी उनका यह भारतीय प्रेम सराहने योग्य है। उनकी विरह गज़लोको पढनेसे मालूम होता है कि पतिके परदेश चले जाने पर कोई गौनावाली दुल्हन काली साडी पहन कर विरहा गा रही है। हफीज़ की नज्मे देखो तो आभास होता है विवाह योग्य क्वारी छोकरियाँ झूला झूल रही है। उनके गीत किसीको गुनगुनाते सुनो तो प्रतीत होता है कि साक्षात कामदेव दुन्दुभि बजाते हुए आ रहा है।

---

[1] "शायर" जुलाई—अगस्त १९४४, पृ० ६६–६७।

मिसरी-जैसी भाषा, कन्या-सी अछूती कल्पना और कृष्णकन्हाईकी बाँसुरीसे निकले हुए-से मादक गीत आनन्द-विभोर कर देनेके लिए काफी है।

जनाब हफीज शायरीकी बदौलत आज बड़े आदमी है। लाहौर रेडियोविभागमे उच्च पद पर प्रतिष्ठित है। "शाहनामाए इस्लाम" जैसी कृति लिख कर हफीज उर्दू शायरोंकी उच्च श्रेणीमें बैठ गये है। अब वे ख्याति-प्राप्तउर्दूके प्रतिष्ठित शायरोमे से है। किन्तु आम जनताकी दृष्टिमे हफीज़ वही १५-२० वर्ष पूर्व संगीतमय नज्म और मादक गीतोके आविष्कारककी हैसियतसे आसीन है। आज उनके कलामके लिए-उर्दू-पत्र पत्रिकाएँ बाट जोहा करती है। बज्मेअदब के सचालक रास्ता तका करते है। हालाँ कि प्रारम्भमे जब उन्होने गीत लिखने शुरू किये तो उनके साहित्यिक मित्रोने भी अपने पत्रोमे उन्हे स्थान देना उचित नही समझा। मुशायरोमे उनके गीत और नज्म गलेबाजी समझे गये। फिर धीरे-धीरे उनके गीतों और नज्मोकी लोकप्रियता बढने लगी। काफी नौजवान शायरोने उनकी इस नवीन प्रणालीको अपनाया, और अब तो गीत भी उर्दू-शायरीका एक अग समझा जाने लगा है। प्रत्येक पत्र-पत्रिकामे रोजमर्रा अच्छे-अच्छे गीत देखनेमे आते है।

२० अगस्त १९४६ ई०

नज़्म

१ जल्वये सहर :—(१४ वन्दोमेसे १ वन्दका नमूना देखिये)

उठे हसीन ख़्वाबसे, कि धोये मुँह गुलाबसे।
यह इशवह[1] साज़ियोंमें है।
अदातराज़ियोमें है॥
इधरसे इश्क भी उठा, मगर है अपनी हाँकमें।
इधर गया, उधर फिरा, फ़िज़ूल ताक-झाँकमें॥
शबाब जिसकी रात भी।
निशातोऐशमें[2] कटी॥
वह नींद ही का होगया, उठा, फिर उठके सो गया।
उठे हसीन ख़्वाबसे, कि धोये मुँह गुलाबसे॥

[नग्मये ज़ारसे]

२ तूफ़ानी कश्ती :—(९ वन्दमेसे केवल ३ वन्द)

नाव तूफानमे घिरी हुई हो, उसमें पानी भरा चला जा रहा हो, तव मुसाफिरोकी दयनीय स्थिति देखिये)—

नग़मोंका[3] जोश खामोश, सब नावनोश[4] खामोश।
है यह बरात किसकी
नोशाह[5] और बराती
लौटे हैं लेके डोली

---

[1]नाज़-नखरा; [2]सुख-भोगमे; [3]मधुर-स्वरोका, गीतोका; [4]पीना-पीलाना; [5]दूल्हा।

मायूस[1] हैं निगाहें, रक्सॉं[2] लबोंपै आहें।
डोलीमें हूर[3]पैकर
क्या कॉंपती है थर-थर
लेकिन है मुहर लबपर

दूल्हाके सरपै सेहरा, लेकिन उदास चेहरा।
इशरतकी[4] आरज़ू थी
उल्फ़तकी जुस्तजू थी
उम्मीद रोबरू थी

यह इन्कलाब क्या है, आग़ोशेमर्गवा[5] है।
अफ़सोस है इलाही!
क्या आ गई तबाही!
क़िस्मतकी कमनिगाही[6]!!

बैठी है एक बेवा, है सब्र जिसका शेवा[7]।
दिल हाथसे दबाए
बच्चा गले लगाए
तीरे उम्मीद खाए

यह बापकी निशानी, सरमायए[8] जवानी।
इक दिन जवान होगा
अम्माका मान होगा
हक़ महर्बान होगा

—नग़मयेज़ारसे

---

[1] निराश; [2] थिरकती हुई; [3] अप्सरा, लावण्यवती; [4] आनन्दकी; [5] मृत्यु गोदमें लेनेको खडी है; [6] भाग्यकी कुदृष्टि; [7] स्वभाव; [8] धन।

३ ईदका चान्द :—

जीती रहो, मगर मुझे आता नहीं नजर।
बेटी ! कहाँ है चान्द ? मुझे भी बता किधर ?

अफ़सोस, अब निगाह भी कमजोर हो गई।
नेमत खुदाने दी थी बुढ़ापेमें खो गई॥

मीनारेखानक़ाहके ऊपर ? कहाँ-कहाँ ?
कुछ भी नहीं, कोई भी नहीं है वहाँ कहाँ ?

हाँ, डालियोंके बीचमें होगा वहीं कहीं।
वोह है जहाँ पै अब्रकी[1] सुर्ख़ी कहीं-कहीं॥

अब हो चुकी है उम्र भी नौ और साठ साल।
गुजरे तेरे खुसुरको[2] भी गुजरे है आठ साल॥

तेरी तरहसे मैं भी कभी हाँ, जवान थी।
वोह दिन भले थे और भली उनकी शान थी॥

हर इकसे पहले देखती थी मैं हिलालेईद[3]।
दस-बीस दिनसे रहता था हरदम खयाले ईद॥

अब दिन तुम्हारे, वक़्त तुम्हारा, तुम्हारी ईद।
बेटी ! तुम्हारी ईदसे है अब हमारी ईद॥

चान्द देख लेने पर दुआ माँगते हुए :—

यारब ! तेरे हुजूरमें हाजिर खड़ी हूँ मैं।
आसी[4] गुनहगार[5] तो बेशक बड़ी हूँ मैं॥

---

[1] बादलकी; [2] सुसर; [3] ईदका चान्द; [4] अपराधिन;
[5] मुजरिम।

लेकिन मेरे गुनाहोख़तापर निगह न कर।
यारब ! तू अपनी शानेकरीमी[१]पै रख नज़र ॥

अल्लाह ! मेरे चाँद-से नूरेनज़रकी खैर।
मेरे कमाऊ, मेरे मुसाफ़िर पिसरकी खैर ॥

अल्लाह ! मुझको घरका उजाला नसीब हो।
बेटा बहूको, और मुझे पोता नसीब हो ॥

—नग़मयेज़ारसे

४ शामेरंगीं :—

(सध्याका दृश्य खींचते हुए आगे फ़रमाते है।)—

....

खेतोंमें काम करके लौटे हैं कामवाले।
चादर सरोंपै डाले कन्धोंपै हल सम्हाले ॥

अब शाम आगई है, जागे हैं भाग उनके।
हरसिम्त[२] गूँजते हैं रस्तोंमें रंग उनके ॥

ले-लेके ढोर-डंगर चरवाहे[३] आ रहे हैं।
सीटी बजा रहे हैं और गीत गा रहे हैं ॥

कमसिन सहेलियोंका पनघटपै जमघटा है।
जाने अकेलियोंका दिन किस तरह कटा है ?

यह बार-बार बातें, यह बार-बार हँसना।
यह बेशुमार बातें, ये बेशुमार हँसना ॥

---

[१] क्षमा कर देनेवाला व्यक्तित्व; [२] हर तरफ़ ; [३] चौपाये चरानेवाले।

वह गुदगुदा रही है, वह खिलखिला रही है।
यह भर चुकी है पानी, ऊपर उठा रही है॥

शरमा के उसने खींचे मुँहपै हँसीके मारे।
रंगीन ओढ़नीके भीगे हुए किनारे॥

शर्मोहयाकी सुर्खी चेहरेपै छा रही है।
शाम उसको देखती है और मुस्करा रही है॥

—सोजोसाजसे

५ खैबरका दर्रह :—

न इसमें घास उगती है, न इसमें फूल खिलते हैं।
मगर इस सरजमींसे आस्माँ भी झुकके मिलते हैं॥

कड़कती बिजलियोंकी इस जगह छाती दहलती है।
घटा बचकर निकलती है, हवा थर्राके चलती है॥

इन्हीं दुश्वारियोंसे आर्योंका कारवाँ[१] गुजरा।
जमीने हिन्दपै जाता हुआ एक आस्माँ गुजरा॥

इसे तैमूरने रौंदा, इसे बाबरने ठुकराया।
मगर इस खाककी आलीविकारीमें[२] न फ़र्क़ आया॥

—सोजोसाजसे

६ तसवीरे काश्मीर :—

५८ बन्दोमें बहुत आकर्षक कश्मीरका वर्णन किया है। एक बन्द बतौर नमूना दर्ज किया जाता है :—

---

[१] यात्रीदल; [२] उच्च प्रतिष्ठा, शानमें।

आमियोंने[1] कह दिया कश्मीरको जन्नतनिशाँ[2]।
वर्ना जन्नतमें यह हुस्नो रंगो शादाबी[3] कहाँ ?
क्या है जन्नत ? चन्द हूरें, इक चमन, दो नद्दियाँ।
ख़ैर, जाहिदकी रिआयतसे यह कहता हूँ कि हाँ ॥
आलिमेबालाएँ[4] है परतौ[5] इसी कश्मीरका।
एक पहलू यह भी है कश्मीरकी तसवीरका ॥

७ प्रीतका गीत :—

हफीज़के बहुतसे हिन्दी गीतोंमें से केवल एक गीतका पाँचवाँ अंश नीचे दिया जाता है :—

अपने मनमें प्रीत
बसाले
अपने मनमें प्रीत
मनमन्दिरमें प्रीत बसाले, ओ मूरख ! ओ भोलेभाले !
दिलकी दुनिया करले रोशन, अपने घरमें जोत जगाले।
प्रीत है तेरी रीत पुरानी, भूल गया ओ भारतवाले ॥
भूलगया ओ भारतवाले
प्रीत है ऐसी रीत
बसाले
अपने मनमें प्रीत ॥

नफ़रत इक आज़ार है प्यारे, दुखका दारू प्यार है प्यारे।
आजा असली रूपमें आजा, प्रेम का तू अवतार है प्यारे ॥
यह हारा तो सब कुछ हारा, मनके हारे हार है प्यारे ॥

---

[1] मूर्खोंने; [2] स्वर्ग-बहिश्तके समान; [3] हरियाली; [4] आस्मान पर; [5] प्रतिच्छाया।

मनके हारे हार है प्यारे
मनके जीते जीत
बसाले
अपने मनमें प्रीत

सोज़ोसाज़से

हफ़ीज़की गजलोके नमूने :—

होगया जब इश्क हमआगोशे तूफ़ानेशबाब।
अक़्ल बैठी रह गई साहिलपै शरमाई हुई॥

ओ बेनसीब ! हश्रके वादोंका हश्र देख।
वोह रफ़्ता-रफ़्ता वादा फ़रामोश होगये॥

मुझे डर है गुलोके बोझसे मरक़द न दब जाए।
उन्हें आदत है जब आना जरूर अहसान धर जाना॥

अब इब्तदाये इश्कका आलम कहाँ 'हफ़ीज़'!
किश्ती मेरी डबोके वोह दरिया उतर गया॥

काबेको जा रहा हूँ निगह सूएदैर है।
फिर-फिरके देखता हूँ कोई देखता न हो॥*

यह हुस्न कहीं इश्कको बेज़ार न करदे।
दुनियाकी हक़ीक़तसे खबरदार न करदे॥

---

* इस क़ाफ़ियेमें 'निज़ाम' रामपुरीका शेर याद आया :—

अन्दाज़ अपना देखते हैं आईनेमें वोह।
और यह भी देखते हैं कोई देखता न हो॥

सकूनेजिन्दगी हासिल हुआ तर्के अमल करके।
न खुश होता हूँ आसाँसे न घबराता हूँ मुश्किलसे॥

बनानेवाले शायद तेरा कोई खास मक़सद था।
मेरी फूटी हुई तक़दीरसे, टूटे हुए दिलसे॥

सरे मक़तल 'हफ़ीज़' अपना कोई हमदम न था लेकिन।
निगह कुछ देर तक लड़ती रही शमशीरे क़ातिलसे॥

रूहको खाकके दामनमें लिए बैठा हूँ।
मेरा क़ालिब ही हक़ीक़तमें है मदफ़न मेरा॥

यह खूब क्या है, यह जीस्त[1] क्या है, जहाँकी असली सरिश्त[2] क्या है?
बड़ा मजा हो तमाम चेहरे अगर कोई बेनक़ाब करदे॥

तेरे करमके मुआमिलेको तेरे करम ही पै छोड़ता हूँ।
मेरी खताएँ शुमार करले मेरी सजाका हिसाब करदे॥

न दर्दे मुहब्बत न जोशेजवानी।
यह जन्नत है, तो हाय! दुनियाएफ़ानी॥
तू फिर आगई गर्दिशे आस्मानी।
बड़ी महर्बानी, बड़ी महर्बानी॥
सुनाता है क्या हैरत अंगेज क़िस्से।
हसीनोंमें खोई हो जिसने जवानी॥

हुस्न बेचारा तो हो जाता है अक्सर महर्बाँ।
फिर उसे आमादये बेदाद कर लेता हूँ मैं॥

---

[1] ज़िन्दगी; [2] स्वभाव।

आई है बेहया मेरा ईमाँ ख़रीदने।
दुनिया खड़ी है दौलतेदुनिया लिये हुए ॥

ओ नंगेऐतबार! दुआपर न रख मदार।
ओ बेवक़ूफ़! हिम्मतेमर्दाना चाहिये ॥

रहने दे जामेजम मुझे अंजामेजम पिला।
खुल जाय जिससे आँख वोह अफ़साना चाहिये ॥

तुमने दुनिया ही बदल डाली मेरी।
अब तो रहने दो यह दुनियादारियाँ ॥

मेरी जिन्दगीपर ताज्जुब नहीं था।
मेरी मौतपर उनको हैरानियाँ हैं ॥

नदामत हुई हश्रमें जिनके बदले।
जवानीकी दो-चार नादानियाँ हैं ॥

मेरा तजरुबा है कि इस जिन्दगी में।
परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं ॥

ना आश्ना है रुत्बयेदीवानगीसे दोस्त!
कम्बख़्त जानते नहीं क्या होगया हूँ मैं ॥

हाँ कैफ़े बेखुदीकी वोह साइत भी याद है।
महसूस हो रहा था ख़ुदा होगया हूँ मैं ॥

समझा हुआ हूँ सूमिये दस्ते दुआको मैं।
कुछ रोज़ और देख रहा हूँ ख़ुदाको मैं ॥

साबित क़दम रहूँ कि तलातुमका साथ दूँ।
साहिलके रुख़ तो ला न सकूँगा हवाको मैं ॥

किश्ती खुदापै छोड़के बैठा है मुतमईन।
दरियामें फेंक दूँ न कहीं नाखुदाको मैं॥

इन्सान हूँ खताएवफ़ा बख़्श दीजिए।
बस कीजिए, पहुँच तो चुका हूँ सज़ाको मैं॥

मतलबपरस्त दोस्त ना आये फ़रेबमें।
बैठा रहा लिये हुए दामेवफ़ाको मैं॥

है अजलकी इस ग़लत बख़्शीपै हैरानी मुझे।
इश्क़ लाफ़ानी मिला है ज़िन्दगी फ़ानी मुझे॥

कहीं ज़ेरदस्तोंको राहत नहीं है।
न ज़ेरे फ़लक है न ज़ेरेज़मीं है॥

तनज्ज़ुलकी हद देखना चाहता हूँ।
कि शायद वहीं हो तरक़्क़ीका ज़ीना॥

मेरे डूब जानेका बाइस तो पूछो।
किनारेसे टकरा गया था सफ़ीना॥

असीरीसे रिहाई पानेवालो!
तुम्हें पहुँचे मुबारिकबाद मेरी॥

सहारा क्यों लिया था नाखुदाका।
ख़ुदा भी क्यों करे इमदाद मेरी?

ख़िरदमन्दो! ख़िरदसे दूर हूँ मैं।
बहुत ख़ुश हूँ बहुत मसरूर हूँ मैं॥

किसीने भी न पहचाना वतनमें।
मैं समझा था बहुत मशहूर हूँ मैं॥

यानी मैं नामुराद भी हूँ बेवक़ूफ़ भी।
कुछ इस तरह वोह दादेवफ़ा दे गये मुझे॥
जिनसे कोई उम्मीद न थी उनसे क्या उम्मीद?
जिनसे उम्मीद थी वोह दग़ा दे गये मुझे॥
फ़रमा गये बुज़ुर्ग कि "उम्रतदराज बाद"[१]।
मेरी शरारतोंकी सज़ा दे गये मुझे॥

जबसे देखा है जल मरना नन्हीं-नन्हीं जानोंका।
शमआका परवाना न सही, परवाना हूँ परवानोंका॥
ले चल, हाँ, मझधारमें ले चल, साहिल-साहिल क्या चलना?
मेरी इतनी फ़िक्र न कर मैं ख़ूगर हूँ तूफ़ानोंका॥

---

[१] तेरी आयु अधिक हो।

१६

साग़र निज़ामी

सागर एक रूपवान् सजीला शायर है। वह अपनी इश्किया और रोमानी शायरीकी बदौलत समूचे हिन्दुस्तानमें ख्याति पा चुका है। उसके कलाममें प्यार, विरह, और वेदना है। कंठमे उसके ज़ादू है। सुननेवालोको वह मंत्र-मुग्ध-सा कर देता है। जब वह पढ़ने बैठता है तो मालूम होता है सारी राग-रागिनियाँ एकाकार होकर बैठ गई है। भारतके हर रेडियो-स्टेशनसे उसके नग़मे गूँजते रहते है। बड़े-बड़े मुशायरोंमें उसकी उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है। उसके उठनेमें, बैठनेमें एक सलीका है—अन्दाज है। बोलता है तो फूल-से झडते है। वह जितना मधुर लिखता और बोलता है उतनी ही मधुरता अपने व्यक्तिगत जीवनमे भी रखता है। उसकी आँखोमें मादकता और संकल्पकी दृढ़ता घुल-मिल कर खेलती है। वह लजीला और विनयशील है, मगर स्वाभिमानको नही बिछुड़ने देता। मुख पर हँसी, मगर हृदयमें क्रान्तिकी आग। जन्मसे मुसलमान, मगर मजहब उसका मनुष्यप्रेम। जीवनकी कितनी ही अन्धेरी कन्दराओसे निकल कर बेदाग़ हीरेकी तरह स्वच्छ और दृढ़।

सागिर देशभक्त, सुधारक, परिवर्त्तनवादी और प्रगतिशील शायर है। प्यार भरे स्वरमे पुजारन, भिखारन, पनिहारीको टेरता है तो ससारकी भलाईके लिए वह नये ईश्वर बनानेकी भी बात सोचता है। देशप्रेमके आगे वह सब कुछ हेच समझता है। एक ख़तकी तरदीद करते हुए लिखता है:—

"जहाँ तक हिन्दोस्तानकी आज़ादी, हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद (ऐक्य)

और एक मुत्तहद (अखण्ड) आज़ाद मुल्कका सवाल है मै इनके मुका-विलेमे दुनियाकी बादशाहतको ठुकरा दूँगा। मुझे हिन्दोस्तान और उसकी आज़ादी अपने माँ-बाप, अपने भाई, अपनी बीवी और अपनी जानसे भी ज्यादा अजीज़ है। मै मर जाना पसन्द करूँगा, लेकिन उन तबकों (पार्टियों)का साथ न दूँगा जो हिन्दुस्तानकी आज़ादीके दुश्मन हैं। यह मेरा महफूज़ (सुरक्षित) और मजबूत ईमान है जो कभी मुतज़लज़ल (डगमगानेवाला) नही हुआ और कभी नही होगा।..........

"मेरे और उनके दरमियान लाखों खलीजे है। वे बरतानवी साम्रा-ज्यकी मशीनके एक-पुर्जे, अंग्रेजोके तनख्वाहदार मुलाजिम यानी रजिस्टर्ड सरकारी आदमी—मै हिन्दुस्तान और उसकी कौमोका खादिम, मुझसे उनका क्या वास्ता ? वह नौकर, मै आज़ाद ! वह गुलामी पर नाज़ाँ, मै गुलामीसे नाफिर। इसलिये हर अक्लमन्द बाआसानी फैसला कर सकता है कि मेरा उनका क्या इत्तहाद हो सकता है।"[१]

सागिर आजकल बम्बईमें रौनक अफरोज हैं। वहाँ किसी फिल्म कम्पनीमें कहानी और गीत लेखक है। और वहीसे उर्दू में एशिया मासिक पत्र निकालते हैं। सागिरने ऊँचे पाये की गजल और गीत लिखे हैं। उर्दूके पत्र-पत्रिकाओंमे उनका कलाम प्रकाशित होता रहता है। उनके सरल कलामका संक्षिप्त नमूना आगे देखिये।

---

[१] एशिया (उर्दू) सितम्बर १९४३, पृष्ठ ८।

चन्द गजलोंके नमूने :—

दिल हुस्नके हाथोंसे दामनको छुड़ाये है।
लेकिन कोई दामनको खींचे लिये जाये है॥

क्या शै है मुहब्बत भी, कोहसारको[1] ढाये है।
तिरतोंको डुबोवे है, डूबोंको तिराये है॥

जब प्रेमकी नद्दीमें तूफ़ान-सा आये है।
नैया ही नहीं, नद्दी हिचकोले-से खाये है॥

यह तेरा तसव्वुर है या मेरी तमन्नाएँ।
दिलमें कोई रह-रहके दीपक-से जलाये है॥

जिस सिम्त न दुनिया है, ऐ दोस्त! न उक़बा[2] है।
उस सिम्त मुझे कोई खींचे लिये जाये है॥

सीना हो दाग़दार क्यों, आँख हो अश्कबार क्यों?
ग़म कोई ताजरी नहीं, ग़मका हो इश्तहार क्यों?

ख़ाम है जौक़े इन्तजार जीस्त[3] अगर हुई है बार।
उनका जब इन्तजार है, मौतका इन्तजार क्यों?

सब्र नहीं है जिन्दगी, जब्र नहीं है आशिक़ी।
दिलपै नहीं है अख़्तियार, उनपै हो अख़्तियार क्यों?

अपना ही बुतकदा सजा, अपने ही बुतपै लोट जा।
तेरे दिमाग़ोदिलपै हो, दैरोहरमका बार क्यों?

---

[1] पर्वतको; [2] परलोक।
[3] ज़िन्दगी।

उभरूँगा फिर लिबासे ख़िज़ाँमें बतर्ज़े नौ।
मुझको कुचल दिया जो ख़िरामेबहारने॥

जो इक नग़मा भी दिलसे अन्दलीबेज़ार हो जाये।
चमन कैसा, चमनकी ख़ाक भी बेदार हो जाये॥

तेरे सरकी कसम गर तू न हो मेरे तसव्वुरमें।
मेरी नाज़ुक तबीयतपै यह दुनिया बार हो जाये॥

इसी लमहेको शायद यासकी तकमील कहते हैं।
मुहब्बत जब मिज़ाजे आशिक़ीपर बार हो जाये॥

न गुल है न कलियाँ, न कलियाँ न काँटे।
तही दामनी-सी तही दामनी है॥

न मौजें न तूफ़ाँ, न माँझी न साहिल।
मगर मनकी नैया बही जा रही है॥

चला जा रहा हूँ वफ़ाका मुसाफ़िर।
जिधर भी तमन्ना लिये जा रही है॥

है साजिदसे मसजूद, सजदोंसे काबा।
मेरी बन्दगीसे तेरी दावरी है॥

मेरी ख़ाकपर साज़ेयकतार लेकर।
उमीद अब भी इक गीत-सा गा रही है॥

वोह दामनको अपने झटकते रहेंगे।
जो मैं ख़ाक हूँ, उड़के छाता रहूँगा॥

× × ×

तेरे नामपर नौजवानी लुटा दी।
जवानी नहीं, ज़िन्दगानी लुटा दी॥

यहाँ इशरतें जिन्दगानी लुटा दी।
वहाँ दौलते जावदानी लुटा दी॥

यह इकरोज मिटती, यह इकरोज लुटती।
यह इक चीज थी आनी-जानी लुटा दी॥

जवानीके लुटनेका ग़म हो तो क्यों हो?
जवानी थी फ़ानी, जवानी लुटा दी॥

ख़िरदको यह जिद थी न लुटती यह दौलत।
इसी जिदपै हमने जवानी लुटा दी॥

वोह गलियाँ अभी तक हसीनो जवाँ हैं।
जहाँ हमने अपनी जवानी लुटा दी॥

मुहब्बतमें हम और क्या कुछ लुटाते?
मताए ग़रूरे जवानी लुटा दी॥

× × ×

कैफ़े ख़ुदीने मौजको किश्ती बना दिया।
फ़िक्रे खुदा है अब न ग़मे नाख़ुदा मुझे॥

यह सहनेमस्जिद, यह दौरे साग़िर।
बहके नमाजी, डूबे नमाजी॥

बग़ावत जवानीका मजहब है 'साग़िर'!
ग़ुलामी है पीरी, बग़ावत जवानी॥

समझना तेरा कोई आसाँ है जालिम।
यह क्या कम है खुद आश्ना हो गये हम॥

भटककर पड़े रहजनोंके जो हाथों।
लुटे इस क़दर रहनुमा हो गये हम॥

जुनूने ख़ुदीका यह ऐजाज़ देखो।
कि जब मौज आई ख़ुदा हो गये हम ॥

मुहब्बतने उम्रे अबद हमको बख़्शी।
मगर सब यह समझे फ़ना हो गये हम ॥

यह दोज़ख़, यह जन्नत, यह अमरोनवाही।
फ़सूने रवायात है, और क्या है?

—'रंगमहल'से

रोकती ही रह गई मासूम दूरन्देशियाँ।
उनके लबपर मेरा ज़िक्रे नातमाम आ ही गया ॥

है जहाँ इश्क़ो हविसको एतराफ़े बेकसी।
तलख़िया हस्तीके क़ुरवाँ वोह मुकाम आही गया ॥

जैसे साग़िरसे छलक जाये मचलती मौजेमय।
काँपते होठोंपै उनके मेरा नाम आ ही गया ॥

—उर्दू 'आजकल'से

नज़्म

संग-तराशका गीत

नया आदम तराशूँगा, नई हव्वा बनाऊँगा।
नया माबूद[1] ढालूँगा, नया बन्दा बनाऊँगा॥
इसी मिट्टीसे इक हँसती हुई दुनिया बनाऊँगा।

हर इक ज़र्रेके दिलमें इक जहन्नुम-सा दहकता है।
न जाने ख़ाकको कबसे ख़ुदा बननेका जज़्बा है॥
नई दुनियामें हर बन्देको मैं देवता बनाऊँगा।
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा॥

तराने ज़िन्दगीके इन बुतोंसे फूट निकलेंगे।
फ़िसाने ज़िन्दगीके इन बुतोंसे फूट निकलेंगे॥
मैं इस गूँगे जहाँको बोलती दुनिया बनाऊँगा।
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा॥

नयी धरती, नया आकाश होगा और नये तारे।
नये जंगल, नये गुलशन, नई नदियाँ, नये धारे॥
इसी दुनियाकी बुनियादोंपै इक दुनिया बनाऊँगा।
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा॥

हर इक तूफ़ानकी फेंकी हुई हलकान लहरोंमें।
पुरानी कश्तियोंकी ख़ाक और बेजान लहरोंमें॥
नई कश्ती बनाऊँगा, नये दरिया बनाऊँगा;
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा॥

---

[1] उपासनाके योग्य देवता।

कहाँ तक जिन्दगी उकटी रहे कुदरतके खाँचेमें।
कहाँ तक मै ढलूँ दुनियाके इस महदूद साँचेमें ॥
यह दुनिया जिसमें ढल जाये मैं वह साँचा बनाऊँगा।
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा ॥
जो आँसू दिलके पर्देमें छिपे हैं दिलका ग़म बनकर।
जो आँसू मेरे दामनपर गिरे हैं दिलका ग़म बनकर ॥
मैं उनसे ज़िन्दगीकी एक नई दुनिया बनाऊँगा।
नया आदम बनाऊँगा, नई हव्वा बनाऊँगा ॥

'एशिया' मार्च १९४४

अहद (प्रतिज्ञा)

जब तिलाई[1] रंग सिक्कोंको नचाया जायगा।
जब मेरी ग़ैरतको[2] दौलतसे लड़ाया जायगा।
जब रगेइफ़लासको[3] मेरी दबाया जायगा।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा॥
और अपने पाँवसे अम्बारेज़र[4] ठुकराऊँगा॥

जब मुझे पेड़ोंसे उरियाँ[5] करके बाँधा जायगा।
गर्म आहनसे[6] मेरे होठोंको दाग़ा जायगा॥
जब दहकती आगपर मुझको लिटाया जायगा।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा॥
तेरे नग़्मे गाऊँगा और आगपर सो जाऊँगा॥

ऐ वतन! जब तुझपै दुश्मन गोलियाँ बरसायेंगे।
सुर्ख़ बादल जब फ़सीलोंपर[7] तेरी छा जायँगे॥
जब समन्दर आगके बुर्जोंसे टक्कर खायेंगे।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा॥
तेग़की झंकार बनकर मिस्लेतूफ़ाँ[8] आऊँगा॥

गोलियाँ चारों तरफ़से घेर लेंगी जब मुझे।
और तनहा छोड़ देगा जब मेरा मरकब[9] मुझे॥

---

[1] सुनहरी; [2] स्वाभिमानको; [3] दरिद्रताकी नसको; [4] दौलतका ढेर; [5]-नग्न; [6] लोहेसे; [7] चहारदीवारीपर; [8] तूफानकी तरह; [9] घोड़ा।

और संगीनोंपै चाहेंगे उठाना सब मुझे।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा॥
मरते-मरते इक तमाशायेवफ़ा[1] बन जाऊँगा॥

ख़ूनसे रंगीन हो जायेंगी जब तेरी बहार।
सामने होंगी मेरे जब सर्द लाशें बेशुमार॥
जब मिरे बाज़ूपै सर आकर गिरेंगे बार बार।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा॥
और दुश्मनकी सफ़ोंपर[2] बिजलियाँ बरसाऊँगा॥

जब दरेज़िन्दाँ[3] खुलेगा बरमला[4] मेरे लिए।
इन्तहाई[5] जब सज़ा होगी रवा[6] मेरे लिए॥
हर नफ़स[7] जब होगा पैग़ामेक़ज़ा[8] मेरे लिए।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा॥
बादाकश[9] हूँ, ज़हरकी तल्ख़ी[10]से क्यों घबराऊँगा?

हुक्म आख़िर क़त्लगहमें[11] जब सुनाया जायगा।
जब मुझे फाँसीके तख़्तेपर चढ़ाया जायगा॥
जब यकायक तख़्तयेख़ूनीं हटाया जायगा।
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा॥
अहद करता हूँ कि मैं तुझपर फ़िदा हो जाऊँगा॥

---

[1] प्रेम निर्वाहका तमाशा; [2] श्रेणी-कतारपर; [3] कारागृह-द्वार; [4] तत्काल; [5] अधिकसेअधिक, [6] जायज़; [7] स्वास; [8] मृत्युका सन्देश; [9] शराबी; [10] कड़ुआहट; [11] वध-स्थान।

क़ौमी तराना

अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन,[1] जानेमन, जानेमन !!

—१—

ज़र्रे ज़र्रेमें महफ़िल सजा देंगे हम,
तेरे दीवारोदर जगमगा देंगे हम ॥
तुझको हस्तीका[2] गुलशन बना देंगे हम,
आसमानोंपै तुझको बिठा देंगे हम ॥
बनके दुश्मन तेरा जो उठेगा यहाँ,
उसको तहतुस्सरामें[3] गिरा देंगे हम ।
और तहतुस्सराको फ़नाके[4] समन्दरमें,
अर्थी बनाके बहा देंगे हम ।
अय वतन, अय वतन !!
सुन लें यह इन्सो[5] जानो[6] ज़मीनोज़मन[7] ॥
अय वतन, अय वतन, अय वतन ।
जानेमन, जानेमन, जानेमन !

—२—

सोनेवालोंको इक दिन जगा देंगे हम,
रस्मो राहे ग़ुलामी मिटा देंगे हम ।

---

[1] मेरे प्राण; [2] जीवनका; [3] पातालमें; [4] मृत्युके; [5] आदमी; [6] जान; [7] जिन-परी ।

तेरे बैरीके टुकड़े उड़ा देंगे हम,
आसमानो ज़मीको हिला देंगे हम।
कौन कहता है कमज़ोर निर्बल है तू,
हर तरफ ख़ूंके दरिया बहा देंगे हम।
जिस तरफ़से पुकारेगा हिन्दोस्ताँ,
उस तरफ़ ही वफ़ाकी सदा देंगे हम।
अय वतन, अय वतन,
सरसे बाँधे हुए हैं तिरंगा कफ़न।
अय वतन, अय वतन, अय वतन।
जानेमन, जानेमन, जानेमन!

— ३ —

तेरी हस्ती हिमालयकी चोटी बनी,
माहोख़ुरशीदकी[१] उसपै बिन्दी लगी।
रोशनी शर्क़से[२] ग़र्ब[३] तक हो गई,
सजदेमें झुक गई अज़मतेज़िन्दगी[४]।
अज़मते ज़िन्दगीकी क़सम है हमें,
तेरी इज़्ज़तपै सर तक कटा देंगे हम।
वक़्त आने दे, ऐ माँ तेरे नामपर,
अपनी हस्ती व मस्ती मिटा देंगे हम।
अय वतन, अय वतन, अय वतन!
ख़ूनसे अपने भर देंगे गंगोजमन,

---

[१] चाँद-सूरजकी; [२] पूरबसे; [३] पश्चिम; [४] ज़िन्दगीकी शान।

अय वतन, अय वतन,
जानेमन, जानेमन, जानेमन !

— ४ —

मस्तोख़ुशबू हवाओंसे शीतल है तू,
माधुरी है मनोहर है कोमल है तू।
प्रेम मदिराकी लबरेज़[1] छागल है तू,
सरपै आलमकी रहमतका[2] बादल है तू।

आँख उठाके जो देखा किसीने तुझे,
छावनी अपनी लाशोंसे छा देंगे हम।
तेरे पाकीज़ापैकरको[3] रूहोंकी बारीक
चादरके नीचे छिपा देंगे हम।

अय वतन, अय वतन!
तुझपै क़ुरबाँ ज़रोमाल और जानो तन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन!
जानेमन, जानेमन, जानेमन!

— ५ —

तेरी नदियाँ रसीली मधुर नग़मारुवाँ[4],
तेरे परबत तेरी अज़मतोंके निशाँ।
तेरे जंगल भी हँसते हुए गुलसिताँ,
तेरे गुलशन भी रश्केबहारेजिनाँ[5]।

---

[1] भरा हुआ; [2] महरबानी; [3] पवित्र शरीरको; [4] गानेवाली; [5] बैकुण्ठकी शोभा को शर्मानेवाला।

जिन्दाबाद, ऐ ग़रीबोंके हिन्दोस्ताँ !
तेरा सिक्का दिलोंपर बिठा देंगे हम।

जो भी पूछेगा जन्नतका हमसे पता,
राहेकश्मीर उसको दिखा देंगे हम।

अय वतन, अय वतन !
तू चमन दर चमन[1] है अदन दर अदन[2],
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

— ६ —

गुलशने ऐशोआरामोराहत है तू,
बेकसीमें कनारेमुहब्बत[3] है तू।
बेबसों और गुलामोंकी दौलत है तू,
ज़िन्दगीके जहन्नुममें जन्नत है तू।

सींचकर खूनेदिलसे तेरी क्यारियाँ,
और भी तुझको जन्नत बना देंगे हम।

हो वह गुलची कि सैयाद दोनोके सर,
तेरे क़दमोंपै इक दिन झुका देंगे हम।

अय वतन, अय वतन !
हम तेरे फूल है तू हमारा चमन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !!

---

[1] बागोसे भरा हुआ; [2] जन्नतमे जन्नत; [3] प्रेमकी गोद।

— ७ —

जिसका पानी है अमृत, वो मख़ज़न[१] है तू,
जिसके दाने हैं बिजली, वो ख़िरमन[२] है तू।
जिसके कंकर हैं हीरे वो मादन[३] है तू,
जिससे जन्नत है दुनिया वो गुलशन है तू।

देवियों देवताओंका मस्कन[४] है तू,
तुझको सिजदोंसे काबा बना देंगे हम।
सिर्फ़ उल्फ़त नहीं सारे संसारमें,
तेरी अज़मतका डंका बजा देंगे हम।

अय वतन, अय वतन!
यह फबन, ये विक़ार,[५] और यह बाँकपन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन।
जानेमन, जानेमन, जानेमन!!

— ८ —

यह सितारे यह निखरा हुआ आसमाँ,
आसमाँसे हिमालयकी सरगोशियाँ।
यह तिरी अज़मतोंका अटल राज़दाँ,
मुस्तक़िल मौतबिर मुहतशिम जाविदाँ।

इसकी चोटीसे ख़ूँख्वार दुनियाको फिर,
हम पयामे हयातोवफ़ा देंगे हम।
फिर मुहब्बतका नग़मा सुना देंगे हम,
फिर ज़मानेको जीना सिखा देंगे हम।

---

[१] भण्डार; [२] खलिहान; [३] खान; [४] घर; [५] शान।

अय वतन, अय वतन।
ज़िन्दगी फिर भी लेगी हमारी शरन,
अय वतन, अय वतन, अय वतन !
जानेमन, जानेमन, जानेमन !

पनघटकी रानी—

आई वो पनघटकी देवी, वोह पनघटकी रानी।
दुनिया है मतवाली जिसकी, और फ़ितरत दीवानी॥
माथेपर सिन्दूरी टीका, रंगीं और नूरानी।
सूरज है आकाशमें जिसकी जौ[1]से पानी-पानी॥
छम-छम उसके बिछवे बोलें जैसे गाये पानी।
आई वो पनघटकी देवी, वो पनघटकी रानी॥

× × ×

रग-रग जिसकी है इक बाजा और नस-नस जंजीर।
कृष्णमुरारीकी बंसी है या अर्जुनका तीर॥
सरसे पा तक शोख़ीकी वो इक रंगीं तस्वीर।
पनघट बेकल जिसकी ख़ातिर चंचल जमना नीर॥
जिसका रस्ता टक-टक देखे सूरज-सा रहगीर।
आई वह पनघटकी देवी, वह पनघटकी रानी॥

सरपर इक पीतलकी गागर जोहराको शरमाय।
शौक़े पाबोसीमें जिससे पानी छलका जाय॥
प्रेमका सागर बूँदे बनकर झूमा उमड़ा आय।
सर से बरसे और सीनेके दरपनको चमकाय॥
उस दरपनको जिससे जवानी झाँके और शरमाय।
आई वह पनघटकी देवी, वह पनघटकी रानी॥

—रस-सागरसे

---

[1] प्रकाश।

हुस्ने गुज़रान—

आये वो मेरे पास तो शरमाके चल दिये।
आँचलको कुछ सम्हालके कतराके चल दिये॥
ईमानोदीनोहोशको तड़पाके चल दिये।
बहके हुओंको और भी बहकाके चल दिये॥

× × ×

आँखें वो मस्त, मस्त तबस्सुम[1] वो मौज-मौज।
हर चीज पै शराब-सी बरसाके चल दिये॥
वो जज़बये तरन्नुमोमस्ती न पूछिये।
हस्तीपै एक शबाब-सा बरसाके चल दिये॥

× × ×

जो आग रूहोदिलमें जहन्नुम फ़रोज थी।
उस आगको वोह और भी भड़काके चल दिये॥

औरत—

मैंने यह माना कि तू है मादरे नौए बशर।
एक-एक ज़र्रेमें सौ आलम बसा सकती है तू॥
फितरते खल्लाक़के जौहर दिखा सकती है तू।
गौतम और ईसाको फिर दुनियामें ला सकती है तू॥
रंगो नस्लो क़ौमके किलओंको ढा सकती है तू।
मशरिको मगरिबको इक कुनबा बना सकती है तू॥
'आमिना' और देवकीने जो पिलाया था कभी।
फिर वही साग़िर ज़मानेको पिला सकती है तू॥

---

[1] मुस्कान।

मरियमो सीताकी शीरीं मुस्कराहटकी क़सम।
आज भी संसारको जन्नत बना सकती है तू॥

× × ×

लोग जिन्दोंको लिए फिरते हैं ऐ रूहे हयात!
मैं तो यह कहता हूँ मुर्दोंको जिला सकती है तू॥

× × ×

दहरमें जिस अक़्लकी बेदारियोंकी धूम है।
उसको तो सिर्फ एक लोरीमें सुला सकती है तू॥

—'रंगमहल'से

बुझा हुआ दीपक—

जीवनकी कुटियामें हूँ मैं बुझा हुआ-सा दीपक।
आशाके मन्दिरमें हूँ मैं बुझा हुआ-सा दीपक॥
बुझा हुआ-सा दीपक हूँ मैं बुझा हुआ-सा दीपक।

× × ×

कजराये दीवटपै धरा हूँ यूँ कुटियामें, हाय!
जैसे कोयल सीस नवाकर अम्बुआपर सो जाय॥
जैसे श्यामा गाते-गाते कुहरेमें खो जाय।
जैसे दीपक आगमें अपनी आप भस्म हो जाय॥
विरहमें जैसे आँख किसी क्वारीकी पथरा जाय।
बुझा हुआ-सा दीपक हूँ मैं, बुझा हुआ-सा दीपक॥

× × ×

आतम, हिरदय, जीवन, मृत्यु, सतयुग, कलियुग, माया।
हर रिश्तेपर मैंने अपने नूरका जाल बिछाया॥

चारों ओर चमककर अपनी किरनोंको दौड़ाया।
जितना ढूँढ़ा उतना खोया, खोकर ख़ाक न पाया॥
बीत गये जुग लेकिन 'साग़िर' मुझतक कोई न आया।
बुझा हुआ-सा दीपक हूँ मैं बुझा हुआ-सा दीपक॥

× × ×

आख़िर बिल्कुल बुझ जानेकी हो ली जब तैयारी।
आकर मेरे कानमें बोली इक शब यूँ अँधियारी॥
जगमें जिसको कोई न पूछे वह क़िस्मतकी मारी॥
मन-मन्दिरमें मुझे बिठालो ऐ ज्योतीके रसिया!
बुझे हुए-से दीपक तुम, मैं थकी हुई अँधियारी।
बुझा हुआ-सा दीपक हूँ मैं बुझा हुआ-सा दीपक॥

अँधियारीकी बातें सुनकर मन बोला—उठ जाग।
यही तिरी मंज़िल है दीपक! यही है तेरे भाग॥
भड़क उठी सीनेमें विरहकी दबी हुई-सी आग।
आशाके मंदिरमें गूँजा इक तूफ़ानी राग॥
आँखोंमें जलते आँसू थे होठोंपर थी आहें।
डाल दी अँधियारीके गलेमें रोकर मैंने बाहें॥
बुझा हुआ-सा दीपक हूँ, मैं बुझा हुआ-सा दीपक॥

—रस-सागरसे

नाग—

× × ×

मस्तीका लहराता पैकर[1] सिरसे पा तक काले।
मौतकी वादीके[2] रखवाले, ऐ क़हरोंके[3] पाले॥

---

[1] चित्र; [2] घाटीके; [3] आफतके।

अब्रे-सियाह[1] उतरा है ज़मींपर ताज़ा शबनम[2] पीने।
हब्शी कोई लूट रहा है या मोतीके ख़ज़ीने॥
मैं भी इक मोतीको उठा लूँ?
ऐ बाम्बीके बासी!
आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी॥

अपनी ही मस्तीकी धुनमें झूम रहे हो ऐसे।
जैसे कोई दखिनी क्वारी मदिरा पीकर झूमे॥
अँधियारी दर्पन है तुम्हारा नूर तुम्हारा हाला।
रातकी देवी क्या जंगलमें भूल गई है माला?
अपने गलेमें तुमको डालूँ?
ऐ बाम्बीके बासी!
आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी॥

कुसुमकी टहनीपर भौंरोंने या डाला है डेरा।
बिन पत्तोंकी शाख़पै है या कोयल रैन बसेरा॥
बिजलीसे मामूर घटायें उमड़ रही हों जैसे।
या सावनकी काली रातें सिमट गई हों जैसे॥
आओ तुमको बीन बना लूँ?
ऐ बाम्बीके बासी!
आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी॥

या कोई मग़रूर जवानी झूम रही हो पीकर।
या तूफ़ानोंमें लहराए जैसे काला सागर॥
पापकी मीठी अँधियारी हो या मस्तीका सवेरा।
मौतकी रौशन तारीकी हो या जीवनका अँधेरा॥

---

[1] काला बादल; [2] ओस।

उम्मीदोंका दीप जला लूँ ?
ऐ बाम्बीके बासी !
आओ मैं तम-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी ॥

× × ×

ऐ बाम्बीके बसनेवाले तुम क्या हो ज़हरीले ।
लाखों नाग हैं इनसानोंमें गोरे, काले, पीले ॥
मुल्ला, नेता, पीर और पंडित, राजे पांडे, लाले ।
बसते हैं दुनियामें तुमसे बढ़कर डसनेसाले ॥
तुमसे मैं क्या मनको डसालूँ ?
ऐ बाम्बीके बासी !
आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी ॥

विष है तुम्हारा बूँद बराबर, इनका ज़हर समन्दर ।
डङ्क तुम्हारा वीरानो तक, इनका डसना घर-घर ॥
तेरा काटा एक दिन जीवे, इनका काटा पलभर ।
सहर[1] तुम्हारा सरपर बोले, इनका जादू मनपर ॥
मनसे इनका ज़हर हटा लूँ ।
ऐ बाम्बीके बासी !
आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी ॥

× × ×

इनसानी नागोंके बयाँ हों क्या ज़हरी अफसाने ।
तेरा डसना छुप-छुपकर है, इनका खुले ख़ज़ाने ॥

---

[1] जादू ।

डसते हैं और फिर कहते हैं मौत न आने पाए।
तेरा विष तो रखता है हर ज़ख्मी दिल पर फाए॥

दारूयेआलाम[1] चुरा लूँ?
ऐ बाम्बीके बासी।

आओ मैं तन-मनमें बसा लूँ ऐ बाम्बीके बासी॥

—रंगमहलसे

---

[1] विपत्तिके दूर करनेका उपाय।

गीत

महात्मा गांधी

दुनिया थी गो उसकी बैरी दुश्मन था जग सारा।
आख़िरमें जब देखा साधू वह जीता जग हारा॥

कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी, कैसा सन्त हमारा।

सच्चाईके नूरसे इसके मनमें है उजियारा।
बातिनमें[1] शक्ती ही शक्ती जाहिरमें बेचारा॥

कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी, कैसा सन्त हमारा।

गौतम है या नए जन्ममें बंसीका मतवारा।
मोहन नाम सही पर 'साग़िर' रूप वही है सारा॥

कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी, कैसा सन्त हमारा।

भारतके आकाशपै है वह एक चमकता तारा।
सचमुच ज्ञानी सचमुच मोहन सचमुच प्यारा-प्यारा॥

कैसा सन्त हमारा,
कैसा सन्त हमारा गान्धी, कैसा सन्त हमारा।

—रस-सागरसे

---

[1] अन्तरंगमें।

पुजारिन

ऐ मंदिरका राज़ पुजारिन, ऐ फ़ितरतका साज़ पुजारिन !
प्रेमनगरकी रहनेवाली, हरकी बतिया कहनेवाली,
सीधी-साधी भोली-भाली, बात निराली गात निराली,
गर्दनमें तुलसीकी माला, दिलमें इक ख़ामोश शिवाला,
होठोंपर पैमाने रक्साँ[1], आँखोंमें मयख़ाने रक्साँ।

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

भीनी-भीनी बू सारीमें, सारी मदमें तू सारीमें,
आँखोंमें जमुनाकी मौजें, बालोंमें गंगाकी लहरें,
नूर तेरे रुख़सारे हसींपर, रंगीं टीका पाक जबींपर,
जैसे फ़लकपर सुबहका तारा, रौशन-रौशन प्यारा-प्यारा,
शर्मीली मासूम निगाहें, गोरी-गोरी नाजुक बाहें।

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

फूलोंकी इक हाथमें थाली, मोहन, मदमाती, मतवाली,
नीची नजरें तिरछी चितवन, मस्त पुजारन हरिकी जोगन,
चाल है मस्तानी मतवाली, और कमर फूलोंकी डाली,
दिल तेरा नेकीकी मंजिल, लाखों बुतख़ानोंका हासिल,
हस्ती तुझमें झूम रही है, मस्ती आँखें चूम रही है।

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

---

[1] नाचते हुए।

नूरके तड़के घाटपै जाकर, गंगाका सम्मान बढ़ाकर,
फिर लेकर खुशबूएँ सारी, चंदन, जल औ' दूब सुपारी,
सुबहके जल्वोंको तड़पाकर, नज्जारोंसे आँख बचाकर,
ऐ मन्दिरमें आनेवाली, प्रेमके फूल चढ़ानेवाली,
हस्ती भी है गुल्शन तुझसे, सूरज भी है रौशन तुझसे।

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

लौट चली तू करके पूजा, देख लिया ईश्वरका जल्वा,
ठहर-ठहर ऐ प्रेम-पुजारिन, मैं भी कर लूँ तेरे दर्शन,
देख इधर घूँघटको हटा कर, अपने पुजारीपर किरपा कर,
सबकी पूजा जोहदो[1]-ताअत,[2] मेरी पूजा तेरी उलफत,
हरिका घर है तेरा पैकर,[3] तू खुद है इक सुन्दर मंदिर।

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

आँखमें मेरी है इक आँसू, जैसे हो नद्दीपर जुगनू,
मालामें इसको शामिल कर, यह मोती है तेरे क़ाबिल,
ध्यानसे अपने प्राण बचाकर, पाँवसे तेरे आँख मिलाकर,
प्रेमका अपने नीर बहा दूँ, सबकुछ तुझपै भेंट चढ़ा दूँ,
पापी दिल मेरा सुख पाए, मेरी पूजा क्यों रह जाए ?

ऐ देवीका रूप पुजारिन !
तेरा रूप अनूप पुजारिन !

आ तेरी सूरतको पूजूँ, मैं जीवित मूरतको पूजूँ,
तू देवी मैं तेरा पुजारी, नाम तेरा हर साँससे जारी,

---

[1] पवित्रता; [2] वन्दन; [3] वस्त्र।

लागकी आगने तनको भूना, फिर मन्दिर है दिलका सूना,
मनमें तेरा रूप बसा लूँ, तुझको मनका चैन बना लूँ,
छिप जा मेरे दिलके अन्दर, हो जाये आबाद यह मंदिर।

ऐ देवीका रूप पुजारिन!
तेरा रूप अनूप पुजारिन!

तुझको दिलके गीत सुनाऊँ, फिर चरनोंमें सीस नवाऊँ,
तीन लोक आकाश झुका दूँ, धरतीकी शक्ती लचका दूँ,
तारे, चाँद और भूरे बादल, बाग़, नदी, दरिया, औ' जंगल,
पर्बत, रूख औ मसजिद, मंदिर, साक़ी, पैमाना औ साग़र,
दुनिया हो तेरे क़दमोंपर, क़दमोंके नीचे मेरा सर।

ऐ देवीका रूप पुजारिन!
तेरा रूप अनूप पुजारिन!

एक पुजारिन, एक पुजारी, प्रीतकी रीतें कर दें जारी,
देशमें प्रीत और प्यारको भर दें, प्रेमसे कुल संसारको भर दें,
लोभ मोहके बुतको तोड़ें, पाप, क्रोधका नास न छोड़ें,
प्रेमका रस दौड़े रग-रगमें, हो इक प्रेमकी पूजा जगमें,
दोनों इस धुनमें मर जाएँ, तीरथ एक अजीब बनाएँ।

ऐ देवीका रूप पुजारिन!
तेरा रूप अनूप पुजारिन!

—रस-सागरसे

२४ अगस्त १९४६

२०

अख़्तर शीरानी

अख़्तर शीरानी आस्माने शायरीमें सचमुच अख़्तरकी तरह चमक रहे है। उनकी नज्म और गीत पजाबमे बच्चे-बच्चेकी जबान पर थिरकते है। प्रेमका वह मधुर स्वर छेड़ते हैं कि सुप्त हृद्तंत्री भी झकृत हो उठती है। कभी वह गाँवोके खेतो और कुओ पर देहाती छोकरियोमे कान्हा बने दिखाई देते है, तो कभी स्वार्थी ससारसे विरक्त होकर किसी अज्ञात स्थानको जानेके लिए उद्यत दिखाई देते हैं। कभी वतन और कौमकी दयनीय स्थिति उन्हे चौका देती है

अख़्तर शीरानीकी अपनी लय है, अपने बोल है और अपनी एक दुनिया है, जिसमे वह योगीकी तरह मस्त घूमते है।

१—मुझे बददुआ न दे

इक़रार है मुझे कि गुनहगार हूँ तेरा।
मुजरिम हूँ, बेवफ़ा हूँ, खतावार हूँ तेरा ॥
लेकिन तू रहमकर मुझे ऐसी सजा न दे।
ओ नाजनी ! खुदाके लिये बददुआ न दे ॥

यह क्या कहा "खुदा करे तेरा भी आये दिल।
मेरी ही तरह कोई तेरा भी दुखाये दिल।
और दिल भी यूं दुखाये कि क़ुदरत शफ़ा न दे"
ओ नाजनी ! ख़ुदाके लिए बददुआ न दे ॥

माना कि तेरे इश्क़को दिलसे भुला दिया।
नक़्शेवफ़ाको सीनेसे अपने मिटा दिया ॥
लेकिन तू मेरी पिछली वफ़ाएँ भुला न दे।
ओ नाजनी ! खुदाके लिए बददुआ न दे ॥

अपने कियेपै आप ही पछता रहा हूँ मैं।
तेरी निगाहेदर्दसे शरमा रहा हूँ मैं ॥
दिलसे भुला दे, अपनी नजरसे गिरा न दे।
ओ नाजनी ! खुदाके लिए बददुआ न दे ॥

२—नग़मये सेहर

एक देहाती युवती चक्की पीसते हुए गा रही है :—

यह बरखा रितु भी बीती जा रही है !
हवा जो गाँवको महका रही है, मेरे मैकेसे शायद आ रही है !
घटाकी ऊदी-ऊदी चुनरियोसे, मेरी सखियोकी बू-बास आ रही है।

मुझे लेने न आए अच्छे बावल, तुम्हारी याद आफ़त ढा रही है।
मेरी अम्माको हो इसकी ख़बर क्या? कि चंपा इस जगह घबरा रही है।

न ली भैयाने भी सुध-बुध हमारी, जहाँसे चाह उठती जा रही है।
भला क्योंकर थमें आँसू कि जीपर, उदासीकी बदरिया छा रही है।

नए फूलोंसे जंगल बस चले हैं, मेरे मनकी कली कुम्हला रही है।
कोई इस बावली बदलीसे पूछे, पराये देशमें क्यों छा रही है?

नहीं खेतोंमें ये सावनकी गुड़ियाँ, हमारी आँख खूँ बरसा रही है।
घटा है या कोई बिछड़ी सहेली, मेरे घरसे संदेशा ला रही है।

गया पींगें बढ़ानेका ज़माना, वह अमरय्योंपै कोयल गा रही है।
यों ही वह अपनी ग़मगीं रागनीसे, दरो-दीवारको तड़पा रही है।

३—ऐ इश्क़!

ऐ इश्क कहीं ले चल इस पापकी बस्तीसे,
नफरतगहे आलमसे, लानतगहे हस्तीसे,
इन नफ़्स-परस्तोंसे, इस नफ़्स-परस्तीसे,
दूर और कही ले चल, ऐ इश्क! कहीं ले चल॥

हम प्रेम-पुजारी हैं, तू प्रेम-कन्हैया है,
तू प्रेम-कन्हैया है, यह प्रेमकी नैया है,
यह प्रेमकी नैया है, तू इसका खेवैया है,
कुछ फिक्र नही, ले चल, ऐ इश्क! कही ले चल॥

बेरहम ज़मानेको अब छोड़ रहे हैं हम,
बेदर्द अज़ीज़ोंसे मुँह मोड़ रहे हैं हम,
जो आस की थी वह भी अब तोड़ रहे हैं हम,
बस, ताब नहीं, ले चल, ऐ इश्क! कही ले चल॥

आपसमें छल और धोके संसारकी रीतें हैं,
इस पापकी नगरीमें उजड़ी हुई प्रीतें हैं,
याँ न्यायकी हारें हैं, अन्यायकी जीतें हैं,
सुख-चैन नहीं, ले चल, ऐ इश्क़ कहीं ले चल

ये दर्द भरी दुनिया बस्ती है गुनाहोंकी,
दिलचाक उम्मीदोंकी, सफ़्फ़ाक निगाहोंकी,
ज़ुल्मोंकी, जफ़ाओंकी, आहोंकी, कराहोंकी,
हैं ग़मसे हज़ी, ले चल, ऐ इश्क़ ! कहीं ले चल।

एक ऐसी जगह जिसमें इन्सान न बसते हों,
ये मकरोजफ़ा पेशा हैवान न बसते हों,
इन्साँकी क़बामें ये शैतान न बसते हों,
तो ख़ौफ़ नहीं, ले चल, ऐ इश्क ! कहीं ले चल॥

इन चाँद-सितारोके बिखरे हुए शहरोंमें,
इन नूरकी किरनोंकी ठहरी हुई नहरोंमें,
ठहरी हुई नहरोंमें, सोई हुई लहरोंमें,
ऐ ख़िज्रेहसीं ! ले चल, ऐ इश्क़ ! कहीं ले चल॥

संसारके उस पार इक इस तरहकी बस्ती हो,
जो सदियोंसे इन्साँकी सूरतको तरसती हो,
औ' जिसके नज़ारोंपर तनहाई बरसती हो,
यूँ हो तो वहीं ले चल, ऐ इश्क ! कहीं ले चल॥

४—सलमा

कहती है सब "यह किसकी तड़पा गई है सूरत ?
'सलमा'की शायद इसके मन भा गई है सूरत !
और उसके ग़ममें इतनी मुरझा गई है सूरत।
मुरझा गई है सूरत, कुम्हला गई है सूरत॥

सँवला गई है सूरत सलमासे दिल लगाकर।"
बस्तीकी लड़कियोंमें बदनाम हो रहा हूँ॥

पनघटपै जब कि सारी होती है जमा आकर।
गाग़रको अपनी रखकर घूँघट उठा-उठाकर॥
यह किस्सा छेड़ती है मुझको बता-बताकर।
"सलमासे बातें करते देखा है इसको जाकर॥
हमने नजर बचाकर" सलमासे दिल लगाकर।
बस्तीकी लड़कियोंमें बदनाम हो रहा हूँ॥

रातोंको गीत गाने जब मिलकर आती है सब।
तालाबके किनारे धूमें मचाती है सब॥
जंगलकी चाँदनीमें मंगल मनाती है सब।
तो मेरे और सलमाके गीत गाती है सब॥
और हँसती जाती है सब, सलमासे दिल लगाकर।
बस्तीकी लड़कियोंमें बदनाम हो रहा हूँ॥

खेतोंसे लौटती है जब दिन छिपे मकाँको।
तब रास्तेमें बाहम वोह मेरी दास्ताँको॥
दुहराके छेड़ती है, सलमाको, मेरी जाँको।
और वह हयाकी मारी सी लेती है जबाँको॥
क्या छेड़े उस बयाँको सलमासे दिल लगाकर।
बस्तीकी लड़कियोंमें बदनाम हो रहा हूँ॥

एक शोख़ छेड़ती है इस तरह पास आकर—
"देखो वोह जा रही है सलमा नज़र बचाकर॥
शरमाके मुस्कराकर, आँचलसे मुँह छिपाकर।
जाओ न पीछे-पीछे दो बात कर लो जाकर।

खेतोंमें छिप छिपाकर" सलमासे दिल लगाकर।
बस्तीकी लड़कियोंमें बदनाम हो रहा हूँ॥
—सुबहे बहार

४—आख़िरी उम्मीद

मेरा नन्हा जवाँ होगा!

ख़ुदा रक्खे जवाँ होगा, तो ऐसा नौजवाँ होगा।
हसीनो कारवाँ होगा, दिलेरो तेग़राँ होगा॥
बहुत शीरींजबाँ होगा, बहुत शीरीं बयाँ होगा।
यह महबूबेजहाँ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

वतन और क़ौमकी सौ जानसे ख़िदमत करेगा यह।
ख़ुदाकी और ख़ुदाके हुक्मकी इज्ज़त करेगा यह॥
हर अपने और परायेसे सदा उल्फ़त करेगा यह।
हर इकपर महर्बां होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

मेरा नन्हा बहादुर एक दिन हथियार उठायेगा।
सिपाही बनके सूए अर्सगाहे रज़्म जायेगा॥
वतनके दुश्मनोंके ख़ूनकी नहरें बहायेगा।
और आख़िर कामराँ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

वतनकी जंगेआज़ादीमें जिसने सर कटाया है।
यह उस शैदायेमिल्लत बापका पुरजोश बेटा है॥
अभीसे आलमेतिफ़लीका हर अन्दाज़ कहता है।
वतनका पासबाँ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

वतनके नामपर इक रोज़ यह तलवार उठायेगा।
वतनके दुश्मनोंको कुंजेतुरबतमें सुलायेगा।

और अपने मुल्कको गैरोंके पंजेसे छुड़ायेगा।
गरूरेख़ानदाँ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

सफेदुश्मनमें तलवार इसकी जब शोले गिरायेगी।
शुजाअत बाजुओंमें बनके बिजली लहलहायेगी॥
जबींकी हर शिकनमें मर्गेदुश्मन थरथराएगी।
यह ऐसा तेगरॉ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

सरे मैदान जिस दम दुश्मन इसको घेरते होंगे।
बजाए ख़ूँ रगोंमें इसकी शोले तैरते होंगे॥
सब इसके हमलए शेरानासे मुँह फेरते होंगे।
तहोबाला जहाँ होगा, मेरा नन्हा जवाँ होगा॥

५—मदर्सेकी लड़कियोंकी दुआ

यारब ! यही दुआ है तुझसे सदा हमारी।
हिम्मत बढ़ा हमारी, क़िस्मत बना हमारी॥
तालीममें कुछ ऐसी हम सब करें तरक्की।
गैरोंकी इन्तहाँ भी हो इब्तदा हमारी॥
नफरत बुराईसे हो, उल्फ़त भलाईसे हो।
रगबत सफ़ाईसे हो, यह है दुआ हमारी॥
पढ़ लिखके नाम पाएँ, कुछ काम कर दिखाएँ।
तेरे हुज़ूरमें है यह इल्तजा हमारी॥

६—औरत

हयातो हुरमतो महरो नफाकी शान है औरत।
शबाबोहुस्नो अन्दाजो अदाकी जान है औरत॥
हिजाबो अस्मतो, शर्मोहयाकी कान है औरत।
जो देखो गौरसे हर मर्दका ईमान है औरत॥

अगर औरत न आती कुल जहाँ मातमकदा होता।
अगर औरत न होती हर मकाँ इक ग़मकदा होता॥

× × ×

जहाँमें करती है शाही मगर लश्कर नहीं रखती।
दिलोंको करती है ज़ख़्मी मगर ख़ंज़र नहीं रखती॥

कहीं मासूमतिफ़्ली इसके नग़मोंसे बहलती है।
कहीं बेख़ुद जवानी इसके नोशेलबसे फलती है॥
कहीं मजबूर पीरी इसकी बातोंसे सम्भलती है।
कहीं आरामसे जान इसके क़दमोंपर निकलती है॥

नहीं है किब्रिया लेकिन वोह शानेकिब्रियाई है।
हमारी सारी प्यारी उम्रपर इसकी ख़ुदाई है॥

वोह रोती है तो सारी कायनात आँसू बहाती है।
वोह हँसती है तो फ़ितरत बेख़ुदीसे मुस्कराती है॥
वोह सोती है तो सातों आस्माँको नींद आती है।
वो उठती है तो कुल ख्वाबीदा दुनियाको उठाती है॥

वही अरमानेहस्ती है, वही ईमानेहस्ती है।
बदन कहिये अगर हस्तीको तो वोह जानेहस्ती है॥

वोह चाहे तो उलट दे परदये दुनियाये फ़ानीको।
वोह चाहे तो मिटा दे जोशेबहरे जिन्दगानीको॥
वोह चाहे तो जला दे नख़्लेज़ारे हुक्मरानीको।
वोह चाहे तो बदल दे रंगेबज़्मे आस्मानीको॥

वह कह दे तो बहारेजल्वा मिट जाये नज़ारोंसे।
वोह कह दे तो लिबासे नूर छिन जाये सितारोंसे॥

दुनिया

अख़्तर शेरानी अग्ररेजी-छन्द सानीट (१४ लाइनका लघु छन्द) को उर्दूमे सम्भवतया सबसे पहले लाये हैं। इस लघुछन्दमे अब काफी लोग लिखने लगे हैं।

इस छन्दका आधा अंश नीचे दिया जा रहा है :—

तेरी दुनियामें गर मक्कार ही मक्कार बसते हैं।
तो मेरा सीना क्यों अख़लाससे मामूर है यारब ?
मेरा ही दिल मयेउल्फ़तसे क्यों मख़मूर है यारब ?
तेरे मयख़ानये हस्तीमें गर सैय्यार बसते हैं।
तेरी दुनिया अगर बेदर्द इनसानोका मसकन है।
तो मुझको क्यों किया है दर्देदिलसे आश्ना तूने।
मुझीको क्यों बनाया पैकरे रहमो वफ़ा तूने॥
तेरी दुनिया अगर ख़ूँख्वार हैवानोका मसकन है।

'शेरस्तानसे'

२६ अगस्त १९४६

२१

पं० बालमुकन्द 'अर्श' मलसियानी

अर्श साहबके पिता प० लभ्भूराम 'जोश' मलसियानी उर्दू गजलके माने हुए उस्तादोंमेसे एक है। हम उनका परिचय अपनी 'उर्दूके हिन्दू शायर' पुस्तकमें दे रहे है।

अर्श साहबकी ख्याति और प्रतिभाको देखते हुए निस्संकोच कहा जा सकता है कि यह उदीयमान तरुण कवि एक रोज आस्माने शायरीपर अवश्य चमकेगे। आप गजल, नज्म और गीत बड़े आकर्षक ढंगसे कहते है। स्थानाभावके कारण केवल १ गजल और २ गीत बतौर नमूना पेश किये जा रहे है—

क्या मानी ?

जिस ग़मसे दिलको राहत हो उस ग़मका मदावा[१] क्या मानी ?
जब फ़ितरत तूफ़ानी ठहरी साहिलकी[२] तमन्ना क्या मानी ?
राहतमें[३] रंजकी आमेजिश,[४] इशरत[५]में अलम[६]की आलाइश[७],
जब दुनिया ऐसी दुनिया है, फिर दुनिया-दुनिया क्या मानी ?
खुद शेखोबिरहमन मुजरिम हैं एक जामसे दोनों पी न सके,
साक़ीकी बुख्लपसन्दी[८]पर साक़ीका शिकवा[९] क्या मानी ?

---

[१] इलाज; [२] किनारा-घाटकी, [३] सुख-चैन।
[४] मिलावट; [५] ऐश्वर्य; [६] दुख।
[७] मिलावट; [८] मितव्ययता, कंजूसी; [९] शिकायत।

अख़लासो[1] वफाके सजदोंकी जिस दरपर दाद नहीं मिलती,
ऐ ग़ैरते दिल ऐ अज़्मेख़ुदी[2] उस दरपर सजदा क्या मानी ?
ऐ साहिबे नक़्दोनजर माना, इन्सांका निज़ाम नहीं अच्छा,
इसकी इस्लाहके पर्देमें अल्लाहसे झगड़ा क्या मानी ?
जलवोंका तो यह दस्तूर नहीं, परदोंसे कभी बाहर आए,
ऐ दीदये बेतौफ़ीक़[3] तेरा यह ज़ौक़े तमाशा क्या मानी ?
मयख़ानेमें तो ऐ वाइज़ ! तलक़ीनके[4] कुछ असलूब[5] बदल,
अल्लाहका बन्दा बननेको जन्नतका सहारा क्या मानी ?
हर लख़्त फ़ज़ूँ हो जोशे अमल, तस्लीमोरज़ाकी राहपै चल,
तकदीरका रोना क्या मतलब, तदबीरका शिकवा क्या मानी ?
इज़हारेवफा लाज़िम ही सही ऐ 'अर्श' मगर फ़रियादें क्यों ?
वो बात जो सबपर ज़ाहिर है उस बातका चर्चा क्या मानी ?

आजकल १५ नवम्बर १९४६

*

जागा सब संसार

शबनमने मोती रोले,
कलियोंने घूँघट खोले,
सब सोये पंछी बोले,
हुआ गीत गुंजार 'उठो अब भोर भई'।
जागा सब संसार उठो अब भोर भई ॥

जागा हर प्रीतम प्यारा,
दर्शन-मदका मतवारा,
हर मनमें हुआ उजयारा,

---

[1] नेकचलनी; [2] स्वाभिमानका इरादा; [3] देखने अयोग्य; [4] उपदेश; [5] ढग।

खुले प्रेमके द्वार उठो अब भोर भई।
जागा सब संसार उठो अब भोर भई॥

मन्दिरको चले नर-नारी,
मतवाले प्रेम-पुजारी,
पूजनकी आशा धारी,

ले पूजन उपहार, उठो अब भोर भई।
जागा सब संसार उठो अब भोर भई॥

पूजन है एक बहाना,
दर्शन भी एक फ़साना,
कहता है तुम्हें ज़माना,

करो प्रेम संचार उठो अब भोर भई।
जागा सब संसार उठो अब भोर भई॥

आजकल १५ दि० १९४४

मेरे मनकी आशा जाग

मनका मनोरथ मिल जाएगा मनका कँवल भी खिल जाएगा।
मनकी मुण्डेरपै बोल रहा है कल्पन रूपी काग॥
मेरे मनकी आशा जाग

निद्राका सुख मौतका सुख है, निद्रामें तो दुख ही दुःख है।
रैन नहीं अब हुआ सवेरा, उठ निद्राको त्याग॥
मेरे मनकी आशा जाग

क़िस्मतके हेटे भी जागे, निद्राके बेटे भी जागे।
तू जागे तो फिर क्या कहना, जाग उठेंगे भाग॥
मेरे मनकी आशा जाग

मनमें ऐसी लय बस जावे, नागन बनके जो डस जावे।
लयका जहर चढ़े नस-नसमें, छेड़ दे दीपक राग ॥
मेरे मनकी आशा जाग

आजकल १५ अक्तूबर १९४६

१५ मार्च १९४८

प्रगतिशील युग

: ६ :
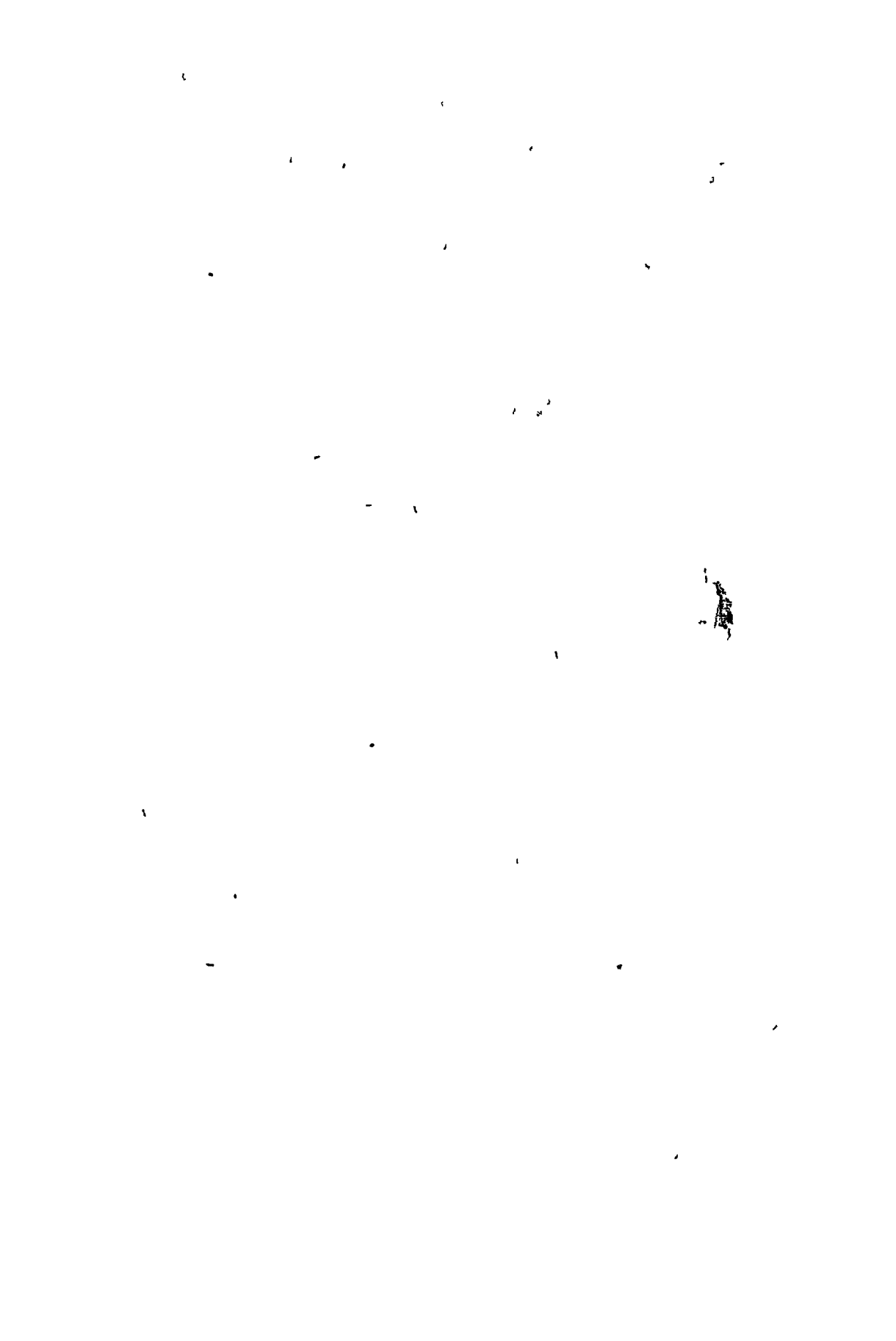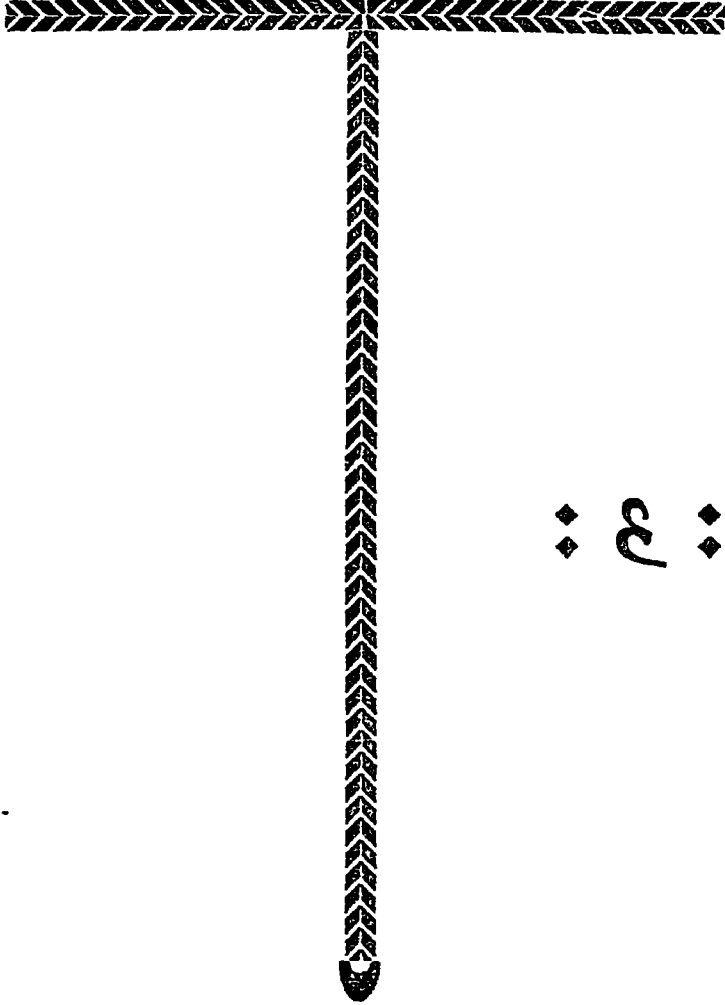
प्राचीन इश्क़िया शायरी नवीन प्रेम-मार्ग पर
वर्त्तमान युगके उदीयमान कवि

अतीत और वर्त्तमान युगमे पृथ्वी-आकाशका अन्तर है। सभ्यता और सस्कृतिने परिधान बदल लिये है। शिक्षा और दीक्षाके रूप-रंग कुछ-से कुछ हो गये। रथ-मझोलीकी आवश्यकताएँ वायुयान पूरी करने लगे है। तीर-तलवारके आसन पर एटम बम बैठ गया है। कासिद-का नाजुक काम तार और वायरलेसने ले लिया है। महफिलोकी रौनक रेडियोने उजाड़ दी है। परवानोसे कही ज्यादा अब मनुष्य छटपटा कर मरते नजर आते है। दूधकी नदियाँ तो दरकिनार, मिट्टीके तेलके दर्शन नही होते। अन्नके पर्वत पर खडा होनेवाला किसान कीड़ोसे बिलबिलाते मुट्ठी भर आटेके लिए दिन भर लाइनमे खडे होनेको मजबूर है। सीता-सावित्रीकी दुलारियाँ लुच्चे-लफङ्गोकी भीड़मे पाँच गज कपड़ेके लिए खड़ी होनेको विवश है। देशका नक़्शा ही नहीं बदला, समूची दुनिया ही बदल गई है। फिर उर्दू शायरीका भी काया-कल्प क्यो न होता?

वह युग हवा हुआ जब जमीन पर रहते हुए भी लोग कल्पनाके उडनखटोले पर आकाशकी सैर किया करते थे। पुलाव खाते हुए और शर्बते अंगूर पीते हुए भी कहा करते थे :—

'ख़ूनेदिल पीते है और लख़्तेजिगर खाते है।'

× × ×

'ऐ इश्क़! देख हम भी है किस दिलके आदमी।
महमाँ बनाके गमको कलेजा खिला दिया॥'

चादरेगुल पर सोते हुए, एक सुशीला स्त्रीके होते हुए भी कल्पित माशूकके लिए जंगलोकी खाक छाननेका स्वप्न देखा करते थे, और कलेजे पर हाथ धर कर फर्माते थे :—

'इश्क़का मनसब[1] लिखा जिस दिन मेरी तक़दीरमें।
आहकी नकदी मिली, सहरा[2] मिला जागीरमें॥'

बादशाहों और नवाबोंकी खुशामदमें क़सीदे लिखते थे, मगर स्वाभिमानकी शेखी बघारनेसे नही चूकते थे :—

'आशिक़का बाँकपन न गया बादेमर्ग[3] भी।
तख्तेपै गुसलको जो लिटाया, अकड़ गया॥'

खुद हजारों बुलबुले मार कर खा जाते, मगर उसको पिंजरेमें पालने वालेको जी भर कोसते थे :—

'चमन सैयादने सींचा यहाँ तक खूने बुलबुलसे।
कि आखिर रंग बनकर फूट निकला आरिज़ेगुलसे[5]॥"

आजका शायर हवामे सचमुच उड़ता हुआ भी जमीनकी सोचता है। क्योंकि उसे वही जीना और मरना है। वह ऐसा हवाई क़िला नही बनाता जिसमें जिन्दगी झाँक भी नही सके। उसने आज ऐसे शिवालयकी कल्पना की है जहाँ हर इन्सान प्रीतिके मीठे मंत्र जप सके।

आजका प्रगतिशील शायर आखिर एक मनुष्य ही है। उसके पहलूमें भी दिल और दिलमे प्रेमका दरिया मौजें मार रहा है। वह भी प्रेम करता है, परन्तु मजनूँ और फरहाद नही बनता, अपने कुटुम्ब और व्यक्तित्वको डुबो नहीं देता; वह प्रेम-सागरमें डूब-कर गुम नही हो जाता, अपनेको जागरूक रखता है। देश पर शत्रुका आक्रमण, मनुष्योंकी सिसकियाँ, पूँजीपतियोंके खूनी पंजे, डायनकी तरह चीखती और मुँह फैलाये मिल-मशीन, जोंककी तरह आफिसोंकी यह नीली स्याही उसे महबूब छोड़नेके लिए मजबूर करते है। जिन्दगीके जगमें जब कभी वह महबूब को

---

[1] वसीयत, पट्टा; [2] जंगल; [3] मृत्युके बाद; [4] स्नान; [5] फूलोके कपोलोसे।

विसार देता है या आजीविका अथवा इन्सानी फराइज उसे आनेसे मजबूर करते है तब वह बेवस होकर कहता है :—

'मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग।'

या—

'तू बता अपने फराइजको भुला दूँ कैसे।
मैंने परचम[1] जो उठाया है गिरा दूँ कैसे॥
शम्मएअहसासे[2]वतन खुद ही बुझा दूँ कैसे।
तेरे फिरदौसमें[3] आया हूँ बहुत रोजके बाद॥

मेरे हमराह अगर चलनेका अरमाँ है तुझे।
यह दिलेराना इरादा तेरा मंजूर मुझे॥
तू भी चल एक नये साजपै गानेके लिए।
तेरे फ़िरदौसमें आया हूँ बहुत रोजके बाद॥

अपनी हस्तीका सफ़ीना[4] सूयेतूफ़ाँ[5] कर लें।
हम मुहब्बतको शरीकेगमे-इन्साँ[6] कर लें॥

—'मौज' साहबकी 'बाजपुर्स' नज्मके दो बन्द 'आजकल'से

आजका शायर प्रेयसीके लिये यह नही सोचता :—

'उम्मीद बावफाईकी उस बुतसे क्या करें?
क़ासिदको नाश भेजी है खतके जवाबमें॥'

वह तो इस निश्चयके साथ उसके पास जाता है :—

'महफिले खुरशीदमें मुझको बिठा सकती हो तुम।
नाजके क़ाबिल मेरी क़िस्मत बना सकती हो तुम॥

---

[1] झण्डा; [2] देशकी भावनाका दीपक; [3] जन्नतमें (प्रेयसीके स्थानको स्वर्गकी उपमा दी है)।

[4] कश्ती; [5] तूफानोकी ओर; [6] मनुष्यके दुःखका साथी।

मुझको दे सकती हो दर्से[1] होशो[2] तमकीनो[3] वक़ार[4]।
और अगर चाहो तो दीवाना बना सकती हो तुम ॥
शिकवये[5] ऐय्यामसे आज़ाद हो सकता हूँ मैं।
गर्दिशेऐय्यामको[6] नीचा दिखा सकती हो तुम ॥

× × ×

[7]सरमर्गी इसरार[8] छोड़ो इक ज़रा हिम्मत करो।
कुछ नहीं हूँ मैं, मगर सब कुछ बना सकती हो तुम ॥
है तुम्हारी हर नज़रमें दावते[9] सद[10] इन्क़लाब[11]।
हादसाते[12] दहरसे[13] आँखें लड़ा सकती हो तुम ॥
सबसे पहले तोड़ डालो ये समाजी बन्दिशें।
फिर ज़रा देखो कि क्या है ज़िन्दगीकी राहतें ॥

—'नूर' बिजनौरी

('शायर' जून १९४४)

आजके शायर की महबूब शराबखानेका छोकरा या हज़ारों मर्दोंमें आँखे लड़ानेवाली नारीजाति का अभिशाप नही होता। वह सौन्दर्यमे चाँदसे अधिक सुन्दर और सुकुमारतामे फूलसे अधिक कोमल नही होता। वह परी न होकर एक भोली-भाली सुशीला लड़की होती है, जो नारी जाति के परम्परागत लाज और शील-धनको बड़ी सावधानी से सम्हाले रखती है। उसके हृदय मे भी प्रेम-ज्वाला जलती है, पर उसकी लौसे वह अपने वंशकी मानमर्यादाको जला नही डालती। लोक-लिहाज और

---

[1] पाठ, नसीहत; [2] चेतना, बुद्धि; [3] इज्जत, शान; [4] वैभव, स्थिर चित्तता; [5] दुनियाके झंझटोंकी शिकायतोंमे; [6] ससार चक्र; [7] हठ; [8] आग्रह; [9-10-11] सैकड़ों क्रान्तियोका निमंत्रण; [12-13] ससारकी दुर्घटनाओसे।

वंशकी प्रतिष्ठाका ध्यान रखते हुए प्रेमका इज़हार करती है। वह अपने प्रेमी पर एक सतीकी भाँति न्यौछावर होना चाहती है।

पहले युग का महबूब दिल नही रखता था। वह पत्थर और बुत होता था:—

बुत बनके वोह सुना किये बेदादका गिला।
सूझा न कुछ जवाब तो पत्थरके हो गये॥
—'अज्ञात'

वह गोया कसाइयों और छिनालो का शिरमौर होता था :—

हमने उनके सामने पहले तो ख़ंजर रख दिया।
फिर कलेजा रख दिया, दिल रख दिया, सर रख दिया॥
—'दाग़'

सरसे पहले वोह ज़बाँ काट लिया करते हैं।
कि ख़ुदासे न करे कोई शिकायत मेरी॥
—'दाग़'

उदूसे तुम मिला करते हो यह तो मैं नही कहता।
मेरी जाँ देखनेवाले तुम्हारा नाम लेते हैं॥
—'अज्ञात'

माल जब उसने बहुत रद्दोबदलमें मारा।
हमने दिल अपना उठा अपनी बगलमें मारा॥
—'ज़ौक़'

आजकी महबूबा (प्रेयसी) ऐसी अछूती और शर्मीली लडकी है, जो नही जानती प्रेम क्या है ? और अनजाने प्रेम-भँवरमें फँस जाती है, और फिर उस भँवरसे निकलनेका नाम नही लेती—उसीमे डूब जाती है। अथवा अपने मन-मन्दिरमें प्रेमीको बिठाकर प्रेम-किवड़िया बन्द करके

आँसुओंसे उसके पग पखारती है। छातीकी प्रेम-ज्योतिसे आरती उतारती है, और श्रद्धाके फूल चढ़ाती है। और अन्तमे एकाकार होकर उसीमें लीन हो जाती है।

प्राचीन उर्दू शायरीने महबूबका बड़ा अश्लील, भयावह और अस्वाभाविक चित्रण किया है। सस्कृत और हिन्दीके कवि नारी जाति-का प्रेम, विरह, गुण, स्वभाव, शील आदिका वर्णन करनेमे अत्यन्त सफल और अनुपम रहे है। उनके शताश भागका भी कोई अन्य साहित्य मुका-बिला नही कर सकता। जिस साहित्यमे रामायण, महाभारत, साकेत, मेघनाद-वध, सिद्धराज, मेघदूत जैसे काव्य-ग्रन्थ मौजूद है उसे गद्गद् होकर प्रणाम करनेको जी चाहता है। शरत्बाबूने नारी जातिके गौरव को जिस स्याहीसे अमर किया है, काश! वह उर्दू शायरोंको भी मिल पाती! वे कितने महान थे जिन्होंने नारी जाति में सरस्वती, लक्ष्मी दुर्गा और भारत माँ की स्थापना करके उन्हे मातृत्व-दृष्टि से सम्मानित करनेकी मनुष्यको बुद्धि दी।

हिन्दी शायरीमे प्रेम और विरहकी यातना मे स्त्री छटपटाती है, उर्दू शायरी में पुरुष। स्त्री भी प्रेम-ज्वाला मे झुलस सकती है और कह सकती है :—

नाड़ी छूअत वैद्यके पड़े फफोले हाथ।

या

छातीसे छुआय दीवा बाती क्यों न बार लेय।

× × ×

सोना लेने पिउ गये, सूना कर गये देस।
सोना मिला न पिउ फिरे, रूपा हो गये केस॥

यह शायद उर्दू शायरों को पता न था। स्त्रियो के अहसास व जज्बात

जाहिर करने में उर्दू शायरी गूँगी है। काश, स्त्रियोके मनोभावोंका भी उसमे दिग्दर्शन होता ! हर्ष है कि अब बड़ी तेज़ी से मुस्लिम महिलाएँ इस ओर प्रयत्नशील है। वे कहानियाँ तो बडी सफलता पूर्वक लिखने ही लगी है, शायरी मे भी दिलचस्पी ले रही है।

मुहोतरिमा इक़बाल सलमाँ चश्ती का एकगीत—

यादमें तेरी जाने तमन्ना जानपै जब बन आती है।
भोली भाली तेरी सूरत दिलपर तीर चलाती है॥
कली-कलीको छेड़के जब यह मस्त हवा इठलाती है।
कू-कू की आवाज़से बनमें कोयल शोर मचाती है॥
यादमें तेरी जाने तमन्ना ! रूह मेरी घबराती है॥

सावनकी घनघोर घटा जब मनमें आग लगाती है।
कोस क़ज़ाकी मस्त दुलहन आकाशपै जब छा जाती है॥
डाल-डालपै बैठके बुलबुल प्रीतके नग़में गाती है।
विरह अगनमें फूँकके तन मन बरखा ऋतु तड़पाती है॥
यादमें तेरी जाने तमन्ना ! रूह मेरी घबराती है॥

पनघटपर जब मिलकर सखियाँ गीत खुशीके गाती है।
हल्की-हल्की मस्त हवामें ऐशका मुज़दह लाती है॥
मस्त निगाहें, शोख़ अदाएँ सबका जी भरमाती है।
राग मल्हार जगतके गाकर बिरहनको तड़पाती है॥
यादमें तेरी जाने तमन्ना ! रूह मेरी घबराती है॥

('आजकल' १५–३–१९४५)

'सुरैया' नज़र फैजाबादी 'पसेमजर' में रुपयेके कारनामोका बड़ी खूबीसे बयान करती है :—

इस चाँदीके इक टुकड़ेपर जॉ जाती है सर कटता है।
बेबाकी जवानी लुटती है, मुफलिसका नशेमन जलता है॥

हाँ, इसके खेल निराले हैं।
समझी कि नहीं ? यह सिक्का है ॥

हाँ, तेरी ही भोली बहनोंके दिल इससे लुभाये जाते हैं।
चाँदीके खुदाओंके दरपर मन भेंट चढ़ाये जाते हैं ॥
जज़्बातके हैवानी हमले होते हैं अँधेरी रातोंमें।
ज़ाहिदके भी लब छू लेते हैं साग़िरको भरी बरसातोंमें ॥
चाँदीके शजरकी छाओंमें जिस्मोंकी लहक देखी होगी।
मासूम मचलते सीनोंपर पंजोंकी झलक देखी होगी ॥
हर रोज़ भयानक गोशोंमें फ़ितरतके पुजारी हँसते हैं।
तन, मन, धन, पर क़ब्ज़ा पाकर ये जीते जुआरी हँसते हैं ॥
तू इन खेलोंको क्या जाने ?
समझी कि नहीं ?—यह सिक्का है।
('मुन्तख़िब नज़्में' १६४४से)

श्रीमती कनीज़फातमा 'हया' की 'दावते खुदी' का एक बन्द—

ज़ुल्मको मिटाके देख, धज्जियाँ उड़ाके देख।
सीनयेग़रूरपर बिजलियाँ गिराके देख ॥
खा न मुस्कराके तीर खंजर आज़माके देख ॥
वक्तकी सदा तो सुन जिन्दगीमें रूह फूँक।
('आजकल' १—४—१६४५से)

× × ×

श्रीइकबाल मारूफका 'डूबती नैया' गीतः—

कौन खेवनहार तुम बिन नैया डूबन लागी—जीवन नैया डूबन लागी।
गहरी नदिया, दूर किनारा, बीच भँवरमें मोरी नाव, साजन ! बीच भँवर मोरी नाव ॥

लहरें उठ-उठ अम्बर चूमें डगमग डोले नावं, मोरी डगमग डोले नाव।
राह तकत हूँ तुमरी साजन बिन खेवैया, आव, प्रीतम! बिन खेवैया आव ॥
कौन लगावे पार तुम बिन नैया डूबन लागी—मोरी नैया डूबन लागी ॥

× × ×

चन्दरमापर बादल छाये, आसका दीपक बुझता जाए।
मुझ बिरहनको कौन बचाये, आस निरासमें बदली जाए ॥
बादरवा घनघोर छाये, नैया अब हिचकोले खाये।
कौन लगावे पार यह नैया डूबन लागी, मोरी नैया डूबन लागी ॥
('आजकल' १ मई १९४५)

एक लड़की कनखियोसे घूरने वाले सज्जनोके सबन्ध मे अपनी डायरी मे नोट करती है:—

नौजवाँ अहबाब अक्सर मेरे भाई जानके।
रातको होते हैं मदऊ चाय पीनेके लिये ॥
भाई जान अबतक समझते है कि यह अहबाब सब।
सिर्फ़ उनके पास आते है बउम्मीदे तरब ॥
मैं समझती हूँ कि वोह आते है मेरे वास्ते।
दूरसे तकलीफ़ फ़रमाते है मेरे वास्ते ॥
मैं समझती हूँ कि वे खामोश होकर सर बसर।
गोश बर आवाज़ है मेरी सदाये साज़पर ॥
फिर मैं दानिस्ता ज़रा उभरी हुई आवाज़से।
अपनी मामाको सदा देती हूँ एक अन्दाज़से ॥
लफ़्ज़ भी उतने हसीं उस वक़्त करती हूँ अदा।
वोह अगर सुनलें तो तड़पा ही करें सुबहोमसा ॥'
('शायर' जनवरी १९४५)

उक्त ४-५ नज्मोंमें किस खूबीसे स्त्रियोके मनोभावोको व्यक्त किर गया है। पुरुष कितना ही सिद्धहस्त कलाकार हो, उसके काव्य मे व बात नही आसकती।

घायलकी गति घायल जाने और न जाने कोय।

पुरुष द्वारा व्यक्त किये हुये भावोमे अनुभवहीनता, अस्वाभाविकत और कृत्रिमताकी गन्ध आये और फिर आये। सस्कृत-हिन्दी काव्यों में नारी जातिकी अनुभूतिका बड़ा सुन्दर और कोमल चित्रण मिलता है, किन्तु वह सब पुरुपो द्वारा लिखा हुआ है। यदि वह स्त्रियो द्वारा लिखा हुआ होता तो उसका सौन्दर्य कितना अधिक बढ़ गया होता, कल्पना नही की जा सकती। आशा है स्त्रियोका यह प्रयास उर्दू शायरीमे इस अभाव-की पूर्ति करेगा। अभी उन्हें इस कूचेमे आये दिन ही कितने हुए है, नया-नया प्रयास है। तिसपर भी घरेलू अड़चने, सामाजिक बन्धन, पर्दा और कौटुम्बिक बाधाएँ उनके विकासमे काफी बाधक हैं। फिर भी वह दिन दूर नही जब इनमे मीर, गालिब, इक़बाल जैसी लब्धप्रतिष्ठ शायरा उत्पन्न होगी। प्रसगवश हमने ३-४ शायराओ के कलाम का नमूना दिया है। उर्दूशायराओं का विस्तृत परिचय हम अपनी दूसरी पुस्तकमें देंगे।

इस युगके अधिकांश उदीयमान शायर पिछले महा समर (१९१४) के आस-पास उत्पन्न हुए। लोरियोकी जगह युद्धके भयानक-हौलनाक समाचार कानोंमे पड़े। तोतली बोली छूटते और दूधके दाँत टूटते-टूटते कांग्रेस और खिलाफतके पुरजोश जुलूस देख लिए। खुद भी बाँसकी खपच्चीमें रंगीन कपड़ा बाँधकर भारत और गान्धीकी जय बोली। निहत्थी भीड़पर लाठियों और गोलियोंकी बौछार देखी। स्कूलोमे जाते-जाते (१९२४में) हिन्दू-मुस्लिम फिसादके घिनौने दृश्य भी देखनेको मिले। तभी दरियाओं-की प्रलयकारी बाढोंमे एक ही छप्पर पर साँप, बिल्ली, कुत्ता, और मनुष्य भयसे काँपते बहते हुए भी देखे। तनिक होश सम्हाला तो अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला, भगतसिंह, जतीन्द्रनाथ, चन्द्रशेखर

आजाद, जिन्दाबाद, इनकलाब-जिन्दाबादके नारे सुनाई पडने लगे। अखबारोमे, घरोमे, उनके रोमाचकारी वलिदानोकी चर्चाएँ सुनी। हड़ताल, किसान, मजदूर, पूँजीपति, साम्राज्यवाद, स्वराज्य, जैसे शब्द अनजाने गलेके नीचे उतर गये। पढना आया तो 'जोश' मलीहाबादीकी इन्कलाबी, 'अहसान' दानिशकी 'बागीका ख्वाब', 'सागिर'की 'ऐ वतन' जैसी नज्मे आँखोके सामने खूनी मजर दिखलाने लगी। नौजवानोके सरो पर खून सवार हो गया।

'सरफरोशीकी तमन्ना अब हमारे दिलमे है'—जैसी गजले बच्चोके दिलोंमे भी उतर गई। फिर जवानी आई तो अपने साथ दूसरा महा-समर घसीट लाई। हिटलर, मुसोलनी, रुजवेल्ट, ब्लैक आउट, कन्ट्रोल, टैंक, और एटम बमके करिश्मे जी भरके देखे। बकौल इकबाल 'तेगोके सायेमे जो पल कर बड़े हुए हैं' वे नौजवान आग उगले, अत्याचारो-की जड़ोको खोखली करनेकी तदबीरे बताये तो आश्चर्य ही क्या है?

'सबा' मथरावी फर्माते है :—

× × ×

जिन्दगीकी मजलिसोंपर हर तरफ़ छायेगी मौत।
जिन्दगी क्या मौतको भी एक दिन आयेगी मौत॥
जब यह बरबादी मुसल्लिम है तो क्यों रोकर मिटें?
जब है मिटना ही मुकद्दर, क्यों न खुश होकर मिटें?

× × ×

क्यों गरजते गूँजते जाएँ न धारोंकी तरह।
क्यो न बरसें मुस्कुराकर अब्रपारोंकी तरह॥
क्यों चटानोंकी तरह रासिख न हों अपने क़दम।
क्यों पहाड़ोंकी तरह कायम न हों जबतक है दम।

× × ×

यह भी कोई ज़िन्दगी है ग़मकी मारी ज़िन्दगी।
चीख़ती, रोती, बिलखती, बिलबिलाती ज़िन्दगी ॥

× × ×

यह भी कोई ज़िन्दगी है हर घड़ी सौ आफ़तें।
दुश्मनी, ग़ैबत, गिले शिकवे, शिकायत, तुहमतें ॥

× × ×

यह भी कोई ज़िन्दगी है जान हम खोते रहें।
लोग हमपर मुस्कुराएँ और हम रोते रहें ॥

× × ×

ऐ ग़ुलामे ज़िन्दगी ! इस ज़िन्दगीसे फ़ायदा ?
यह तो है बेचारगी, बेचारगीसे फ़ायदा ?

× × ×

ज़ख़्म खाकर मुस्कुरायें तीर खाकर हँस पड़ें।
आफ़तोंकी गोदमें खेला करें और ख़ुश रहें ॥
दिलमें टीसें हों मगर रक़्सां हो होठोंपर हँसी।
मौतसे लड़कर बनाए मौतको भी ज़िन्दगी ॥

('शायर' जनवरी १६४५)

ये उदीयमान शायर हृदयके भावोंको छिपाते नही। हृदयकी ज्वाला और सौन्दर्यकी प्यास किसीकी आडमे होकर नही बुझाते, अपितु जो मनमें होता है वही व्यक्त कर देते है। कभी मनकी वासनाको तृप्त करनेके लिये भौरेकी तरह लोलुप नज़र आते है। कभी आवारगीमे ताड़ीखानेमें घुसते हुए दिखाई देते है। कभी सासारिक मुसीबतोसे खीझकर ईश्वर तकसे विद्रोह कर बैठते है। कभी धर्मके ठेकेदार मुल्लाओ-पण्डितोको आड़े हाथ लेते हैं। कभी मजदूर और किसानकी बेबसी देख पूँजीपतियो पर बरस पड़ते है। कभी मज़हबी, सामाजिक, रस्मोरिवाज़के खिलाफ़

बग़ावतपर आमादा हो जाते हैं। तो कभी दरिया के किनारे बैठकर प्रेयसी-की यादमे मादक गीत गाते हैं, और वही किसी अव्यक्त वेदनासे तड़पकर सामाजिक वन्धनोको तोड़नेके लिये अधीर हो उठते हैं। गरज़ हर मज़-मून पर उनकी कलम चलती है। जो पाठक इनकी गज़लोमे मीर जैसी व्यथा, गालिब जैसी कल्पना, नज़्मोमे इकबाल जैसी गहराई, चकवस्त जैसी सुघराई, जोश जैसी आग और अहसान जैसी तड़प ढूँढना चाहेगे उन्हें निराश होना होगा। इनका अपना जुदा और नया रग है। अभी इनकी उम्र ही क्या है? होश सम्भाले दिन ही कितने हुए? सन् ३५से तो इस युगका प्रारम्भ ही होता है। फिर भी अपनी हल्की-हल्की, और भीनी-भीनी ख़ुशबूसे उर्दू दुनियाँ को महका दिया है। इनमे नून्-मीम राशिद, अहमद-नदीम कासिमी, डा० तासीर, सलाम मछलीशहरी, मीराजी, जगन्नाथ आज़ाद, परवेज़, मख़मूर जालन्धरी, मकबूलहुसेन अहमदपुरी, रविशसिद्दीकी, मुख़तार सिद्दीक़ी, अज़ीम, कुर्रेसी, फैज़, मजाज, जज्वी, साहिर वगैरह जैसे शायर भिन्न-भिन्न पहलुओपर अनेक तरहसे (गजलों, नज्मों, गीतो, लघुछन्दो और मुक्तिछन्दोमे) लिख रहे हैं। यहाँ हम अन्तिम केवल चार कवियोका परिचय दे रहे है।

२८ अगस्त १९४६ ई०

२२

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' एम० ए०

(जन्म १९१० सियालकोट)

'फैज' साहब अभी ७-८ वर्षसे ही साहित्यिक क्षेत्रमे आये हैं। आपकी कविताओंका संग्रह 'नक़्शे फ़रियादी' सन् १९४२में प्रकाशित हुआ है। आप आलोचनात्मक लेख भी सामयिक पत्रोंमें लिखते रहते हैं। पहिले सरकारी सर्विसमे फ़ौजमें कर्नल थे, आजकल लाहौरके अंग्रेजीके दैनिक पाकिस्तान टाइम्सके सम्पादक हैं।

'फैज़' साहबने भी शायरीकी बिस्मिल्लाह गजलसे ही की है। प्रारम्भ की गज़लें बड़ी रंगीन और लुभावनी रही हैं।

रात यूँ दिलमें तेरी खोई हुई याद आई।
जैसे वीरानेमें चुपकेसे बहार आजाये॥
जैसे सहराओंमें[1] हौले-से चले बादेनसीम[2]।
जैसे बीमारको बेवजह क़रार आजाये॥

× × ×

दिल रहीनेग़मेजहाँ[3] है आज,
हर नफ़स तिश्नयेफ़ुग़ाँ है आज।
सख़्त वीराँ है महफ़िले हस्ती,
ऐ ग़मेदोस्त! तू कहाँ है आज?

× × ×

---

[1] जंगलोंमे; [2] पवन; [3] संसारके दुखोंका केन्द्र।

फूल लाखों बरस नहीं रहते।
दो घड़ी और है बहारेशबाब॥

× × ×

सो रही है घने दरख़्तों पर, चाँदनीकी थकी हुई आवाज़।

× × ×

वक़्फ़े हिरमानोयास रहता है।
दिल है अक्सर उदास रहता है॥
तुम तो ग़म देके भूल जाते हो।
मुझको अहसाँका पास रहता है॥

× × ×

परन्तु बहुत शीघ्र फ़ैज़मे अभूतपूर्व परिवर्तन हो जाता है। हसीनोंके साथ-साथ उन्हें भूखे भी दीखने लगते है।

मौज़ूए सख़ुन

गुल हुई जाती है अफ़सुर्दा सुलगती हुई शाम।
धुलके निकलेगी अभी चश्मये मेहताबसे रात॥

× × ×

यह हसीं खेत, फटा पड़ता है जोबन जिनका।
किसलिये उनमें फ़क़त भूख उगा करती है?

× × ×

यह हरइक सिम्त पुरइसरार कड़ी दीवारें।
जलबुझे जिनमें हज़ारोंकी जवानीके चिराग़॥

× × ×

'फ़ैज़' प्रेम करते है, परन्तु उसमे अन्धे नही होते। अन्तर्चक्षु खुले रखते है। और प्रेम-पाठ पढ़ते हुए भी अपने आस-पास कराहती दुनियाको

कनखियोसे देख लेते हैं। 'फैज' मार्क्सवादी नही, वह एक मनुष्य है—शायर हैं और जब उन्हे मनुष्य-रक्तके पिपासु नजर आते है तो मनुष्यता और शायरीके नाते बेचैन हो उठते है —

रक़ीबसे

× × ×

आश्ना है तेरे क़दमोंसे वोह राहें जिनपर।
उसकी मदहोश जवानीने इनायत की है॥

× × ×

तूने देखी है वोह पेशानी, वोह रुखसार, वोह होंट।
जिन्दगी जिनके तसव्वुरमें लुटा दी हमने॥
तुझपै उठती हे वोह खोई हुई साहिर आँखें।
तुझको मालूम है, क्यों उम्र गँवा दी हमने?
हमपै मुश्तरका हैं अहसान ग़मेउल्फ़तके।
इतने अहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकूँ॥
हमने इस इश्क़में क्या खोया है क्या सीखा है।
जुज तेरे औरको समझाऊँ तो समझा न सकूँ॥
आजजी सीखी, ग़रीबोंकी हिमायत सीखी।
यासो हिरमानके दुख-दर्दके मानी सीखे॥
जेरदस्तोंके मसाइबको समझना सीखा।
सर्द आहोंके रुखे जर्दके मानी सीखे॥
जब कही बैठके रोते हैं वोह बेकस जिनके।
अश्क आँखोंमें बिलखते हुए सो जाते है॥
नातवानोंके निवालेपै झपटते हैं उकाब।
बाजू तोले हुए मँडलाते हुए आते हैं॥

जब कभी बिकता है बाज़ारमें मजदूरका गोश्त ।
शाहराहोंपै ग़रीबोंका लहू बहता है ॥
या कोई तोंदका बढ़ता हुआ सैलाब लिये ।
फाक़ामस्तोंको डुबोनेके लिए कहता है ॥

आग-सी सीनेमें रह-रहके उबलती है न पूछ ।
अपने दिलपर मुझे काबू ही नहीं रहता है ॥

पहली-सी मुहब्बत

मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग ।

× × ×

और भी दुख है ज़मानेमें मुहब्बतके सिवा ।
राहतें और भी हैं वस्लकी राहतके सिवा ।

× × ×

जा-बजा बिकते हुए कूचओबाज़ारमें जिस्म ।
खाकमें लिथड़े हुए खूनमें नहलाये हुए ॥

× × ×

लौट जाती है इधरको भी नज़र क्या कीजे ?
मुझसे पहली-सी मुहब्बत मेरी महबूब न माँग ॥

'फैज़' भावावेशमे वह नही जाते, स्थिर और अटल रहते है। उनका क्रोध दीपककी वह अन्तिम लौ नही जो एकबारगी भडक कर बुझ जाय। वह उपलेकी आगकी तरह छुपी-छुपी अपना काम करती रहती है —

चन्द रोज़ और

चन्दरोज़ और मेरी जान ! फ़क़त चन्द ही रोज़ ।
ज़ुल्मकी छाओंमें दम लेनेको मजबूर है हम ॥

और कुछ देर सितम सह लें, तड़प लें, रो लें।
अपने अजदादकी मीरास है माजूर हैं हम ॥
जिस्मपर क़ैद है, जज़बात पै जंजीरें हैं।
फ़िक्र महबूस है, गुफ़्तारपै ताज़ीरें हैं ॥
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं ॥

ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़लिसकी क़बा है जिसमें।
हर घड़ी दर्दके पेवन्द लगे जाते हैं ॥
लेकिन अब ज़ुल्मकी मीयादके दिन थोड़े हैं।
इक ज़रा सब्र, कि फ़रियादके दिन थोड़े हैं ॥

× × ×

'फ़ैज़' अत्याचार-पीड़ितोंके अहसास किस ख़ूबीसे उभारते हैं :—

कुत्ते

यह गलियोंके आवारा बेकार कुत्ते।
कि बख़्शा गया जिनको ज़ौक़े गदाई ॥
ज़मानेकी फटकार सरमाया उनका।
जहाँ भरकी धितकार उनकी कमाई ॥

न आराम शबको न राहत सवेरे।
ग़िलाज़तमें घर, नालियोंमें बसेरे ॥
जो बिगड़ें तो इक दूसरेसे लड़ा दो।
ज़रा एक रोटीका टुकड़ा दिखा दो ॥
यह हर एककी ठोकरें खानेवाले।
यह फ़ाक़ोंसे उकताके मर जानेवाले ॥

यह मज़लूम मख़लूक़ गर सर उठाये।
तो इनसान सब सरकशी भूल जाये ॥

यह चहें तो दुनियाको अपना बना लें।
यस आक़ाओंकी हड्डियाँ तक चबा लें॥

कोई उनको अहसासे ज़िल्लत दिला दे।
कोई उनकी सोई हुई दुम हिला दे॥

शायरके हृदयमे आग है। पर उसे आजीविकोपार्जन अथवा अन्य आवश्यक कार्योसे विदेश जानेकी सम्भावना दीख रही है। विरहकी ज्वालामे वह जलेगा, परन्तु अपनी प्रियाके कष्टोकी आशंकासे सिहर उठता है।

ख़ुदा वोह वक़्त न लाये

ख़ुदा वोह वक़्त न लाये कि सोगवार हो तू।
सकूँकी नींद तुझे भी हराम हो जाये।
तेरी मसर्रतें पैहम तमाम हो जाये।
तेरी हयात तुझे तल्ख़जाम हो जाये।
ग़मोंसे आईनये दिलगुदाज़ हो तेरा॥

हुजूमेयाससे बेताब होके रह जाये।
वफ़ूरे दर्दसे सीमाब होके रह जाये।
तेरा शबाब फ़क़त ख्वाब बनके रह जाये।
ग़रूरेहुस्न सरापा नियाज़ हो तेरा॥

'फ़ैज़' युवक है। उनसे उर्दू-साहित्यको बडी-बड़ी आशाएँ है। उनकी दो नज़्मोके अंश, चन्द अशआर नीचे और दिये जाते है:—

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्ताँमें सबसे अच्छा हो।
फ़रोग़ेनूर हो जिससे फ़िज़ाए रंगीमें॥

खिज़ाँके जोरोसितमको न जिसने देखा हो।
बहारने जिसे ख़ूने जिगरसे पाला हो॥
वोह एक फूल समाता है चश्मे गुलचींमें॥

हज़ार फूलोंसे आबाद बाग़ेहस्ती है,
अजलकी आँख फ़कत एकको तरसती है।
कई दिलोंकी उमीदोंका जो सहारा हो,
फ़िज़ाए दहरकी आलूदगीसे बाला हो,
जहाँमें आके अभी जिसने कुछ न देखा हो,
न क़हते ऐशो मसर्रत न ग़मकी अरज़ानी,
किनारेरहमते हक़में उसे सुलाती है।

× × ×

तनहाई

फिर कोई आया दिलेज़ार! नहीं, कोई नहीं।
राहरव होगा, कहीं और चला जायेगा॥

× × ×

अपने बेख्वाब किवाड़ोंको मुक़फ़्फ़ल कर लो।
अब यहाँ कोई नहीं, कोई नहीं आयेगा॥

× × ×

मेरी क़िस्मतसे खेलनेवाले।
मुझको क़िस्मतसे बेख़बर कर दे॥

× × ×

यह दुख तेरा है ना मेरा।
हम सबकी जागीर है प्यारे!

× × ×

क्यों न जहाँका गम अपना लें।
बादमें सब तदबीरें सोचें ।।
बादमें सुखके सुपने देखें।
सुपनोंकी ताबीरें सोचें ।।

× × ×

न जाने किसलिए उम्मीदवार बैठा हूँ।
इक ऐसी राहपै जो तेरी रहगुज़ार भी नही ।।

× × ×

शबेमहताबकी सहर आफ़रीं मदहोश मौसीकी।
तुम्हारी दिलनशीं आवाजमें आराम करती है ।।

× × ×

फरेबेआरज़ूकी सहलअंगारी नहीं जाती।
हम अपने दिलकी धड़कनको तेरी आवाज़े पा समझे ।।

× × ×

दोनो जहान तेरी मुहब्बतमें हारके।
वो कौन जा रहा है शबेगम गुज़ारके ?

३० अगस्त १९४६

२३

इसरारुल्लहक़ 'मजाज़' बी० ए०

(जन्म १९१३ ई०)

'मजाज़'की कविताओंका १९४३में प्रकाशित 'आहंग' संकलन हमारे सामने है। 'मजाज़' अपना परिचय इस तरह कराते हैं :—

× × ×

जिन्दगी क्या है गुनाहेआदम।
जिन्दगी है तो गुनहगार हूँ मैं॥

× × ×

कुफ़्रोइलहादसे नफ़रत है मुझे।
और मजहबसे भी बेजार हूँ मैं॥

× × ×

इक लपकता हुआ शोला हूँ मैं।
एक चलती हुई तलवार हूँ मैं॥

उक्त परिचयमें सब कुछ आ गया। 'मजाज' मनुष्य हैं, और मनुष्यसे भूल होना स्वाभाविक है। वे न नास्तिक हैं, न कठमुल्ले। वे अल्लामा इक़बालके इस शेरके क़ायल हैं :—

ख़ुदाके बन्दे तो हैं हजारों, बनोंमें फिरते हैं मारे-मारे।
मैं उनका बन्दा बनूँगा, जिनको ख़ुदाके बन्दोंसे प्यार होगा॥

यानी 'मजाज' साहब मनुष्य-सेवक हैं। रूढ़ियोंको जलानेके लिये चिनगारी और गुलामीकी जंजीर काटनेके लिये तलवार हैं।

'मजाज़' भी किसीको प्यार करते है, परन्तु लोक-लाजकी मर्यादा नहीं तोड़ते। प्रेमी और प्रेयसीको लैला-मजनूकी तरह गली-कूचोमें खाक़ नही छनवाते। 'मजबूरियाँ' शीर्षकमे लिखते है :—

न तूफ़ाँ रोक सकते है, न आँधी रोक सकती है।
मगर फिर भी मै उस क़िसरेहसी तक जा नहीं सकता॥
वह मुझको चाहते है और मुझतक आ नही सकते।
मैं उसको पूजता हूँ और उसको पा नहीं सकता॥
यह मजबूरी-सी मजबूरी, यह लाचारी-सी लाचारी।
कि उसके गीत भी जी खोलकर मै गा नही सकता॥
ज़बाँपर बेख़ुदीमें नाम उसका आ ही जाता है।
अगर पूछे कोई, यह कौन है? बतला नहीं सकता॥
कहाँ तक क़िस्सये आलामें फ़ुरकत? मुख़्तसिर ये है।
यहाँ वो आ नहीं सकते, वहाँ मैं जा नहीं सकता॥
हदें वोह खींच रक्खी है हरमके पासबानोने।
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुँचा नहीं सकता॥

'मजाज़'की प्रेयसी पुराने शायरोकी हरजाई—असती नारी नही। बल्कि शील-स्वभाव वाली एक लड़की है :—

सरापा रंगोबू है पैकरे हुस्नो लताफ़त है।

× × ×

मेरा ईमाँ है, मेरी ज़िन्दगी है, मेरी जन्नत है।

× × ×

वफ़ा खुद की है और मेरी वफ़ाको आज़माया है।
मुझे चाहा है मुझको अपनी आँखोपै बिठाया है॥

मेरे चेहरे पै जब भी फ़िक्रके आसार पाये हैं।
मुझे तस्कीन दी है मेरे अन्देशे मिटाये हैं॥

× × ×

कोई मेरे सिवा उसका निशाँ पा ही नहीं सकता।
कोई उस बारगाहे नाज़ तक जा ही नहीं सकता॥

'मजाज' नारीको केवल भोगकी वस्तु नही समझता। उसका दिल वोह लोटन कबूतर नही कि चूड़ियोंकी खनखनाहट और पायजेबकी आवाज पर लोट-पोट हो जाय। वह नारीको भी देशकी उन्नतिमें आवश्यक अंग समझता है। उसे पर्देमें सिमटी गुड़ियाकी तरह सजी देखकर किस खूबीसे कर्त्तव्यकी ओर सकेत करता है :—

नौजवाँ ख़ातून से :—

हिजाबे फ़ित्ना परवर अब उठा लेती तो अच्छा था।
ख़ुद अपने हुस्नको परदा बना लेती तो अच्छा था॥

तेरी नीची नज़र ख़ुद तेरी अस्मतकी मुहाफ़िज़ है।
तू इस नश्तरकी तेज़ी आज़मा लेती तो अच्छा था॥

दिले मजरूहको मजरूहतर करनेसे क्या हासिल?
तू आँसू पोंछकर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था॥

अगर ख़िलवतमें तूने सर उठाया भी तो क्या हासिल?
भरी महफ़िलमें आकर सर झुका लेती तो अच्छा था॥

तेरे माथेका टीका मर्दकी क़िस्मतका तारा है।
अगर तू साज़ेबेदारी उठा लेती तो अच्छा था॥

सनाएँ खींचलीं हैं सरफिरे बाग़ी जवानोंने।
तू सामाने जराहत अब उठा लेती तो अच्छा था॥

तेरे माथेपै यह आँचल बहुत ही खूब है लेकिन।
तू इस आँचलसे इक परचम बना लेती तो अच्छा था ॥

'मजाज़' जहाँ नारीको कार्य-क्षेत्रमे लाना चाहते है वहाँ युवकोको भी आदेश देते हैं। वे नही चाहते कि आजका एक भी युवक नाकारा बैठा हुआ हुस्नोइश्ककी दास्तान दोहराया करे और सीने पर हाथ रखकर ठढी साँस भरके कहा करे :—

सम्हाला होश तो मरने लगे हसीनोंपर।
हमें तो मौत ही आई शबाबके बदले ॥
जवानीको दुआ बचपनमें नाहक़ लोग देते हैं।
यही लड़के मिटाते हैं जवानीको जवाँ होकर ॥

'मजाज' फर्माते है :—

नौजवाँ से :—

तेरा शबाब अमानत है सारी दुनियाकी।
तू खारजारे जहाँमें गुलाब पैदा कर ॥
शराब खींची है सबने गरीबके खूँसे।
तू अब अमीरके खूँसे शराब पैदा कर ॥
बहे जमींपै जो तेरा लहू तो गम मत कर।
इसी जमींसे महकते गुलाब पैदा कर ॥
तू इन्कलाबकी आमदका इन्तजार न देख।
जो हो सके तो अभी इनकलाब पैदा कर ॥

फिर उन्ही नौजवानोंको सावधान करते हुए फर्माते हैं :—

सरमायादारी

कलेजा फुँक रहा है और जबाँ कहनेसे आरी है।
बताऊँ क्या तुम्हें क्या चीज यह सरमायेदारी है ॥

ये वोह आँधी है जिसकी रौमें मुफ़लिसका नशेमन है।
यह वोह बिजली है जिसकी ज़ौमें हर दहक़ाँका ख़िरमन है ।।

यह अपने हाथमें तहज़ीबका फ़ानूस लेती है।
मगर मज़दूरके तनसे लहूतक चूस लेती है ।।

यह इन्सानी बला ख़ुद ख़ूने इन्सानीकी गाहक है।
वबासे बढ़के मुहलक, मौतसे बढ़कर भयानक है ।।

न देखे हैं बुरे इसने न परखे हैं भले इसने।
शिकंजोंमें जकड़कर घोंट डाले हैं गले इसने ।।

क़यामत इसके गमज़े जानलेवा हैं सितम इसके।
हमेशा सीनयेमुफ़लिसपै पड़ते हैं क़दम इसके ।।

ग़रीबोंका मुक़द्दस ख़ून पी-पीकर बहकती है।
महलमें नाचती है रक़्सगाहोंमें थिरकती है ।।

जिधर चलती है बरबादीके सामाँ साथ चलते हैं।
नहूसत हमसफ़र होती है शैताँ साथ चलते हैं ।।

यह अक्सर लूटकर मासूम इन्सानोंको राहोंमें।
ख़ुदाके ज़मज़मे गाती है छिपकर ख़ानक़ाहोंमें ।।

जवाँ मर्दोंके हाथोंसे यह नेज़े छीन लेती है।
यह डाइन है भरी गोदोंसे बच्चे छीन लेती है ।।

यह ग़ैरत छीन लेती है, हमैयत छीन लेती है।
यह इन्सानोंसे इन्सानोंकी फ़ितरत छीन लेती है ।।

हमेशा ख़ून पीकर हड्डियोंके रथमें चलती है।
ज़माना चीख उठता है यह जब पहलू बदलती है ।।

मुबारिक दोस्तो! लबरेज़ है अब इसका पैमाना।
उठाओ आँधियाँ! कमज़ोर है बुनियादेकाशाना ।।

विदेशी महमानसे

'मजाज़' साहब अंग्रेज़को किस खूबीसे बोरिया-बधना बाँधनेकी सलाह दे रहे हैं :—

मुसाफ़िर भाग वक़्ते बेकसी है।
तेरे सरपर अजल मँडला रही है॥
तेरी जेबोंमें हैं सोनेके तोड़े।
यहाँ हर जेब ख़ाली हो चुकी है॥
यह आलम हो गया है मुफ़लिसीका।
कि रस्मे मेज़बानी उठ गई है॥
न दे ज़ालिम फ़रेबे चारासाज़ी।
यह बस्ती तुझसे अब तंग आ चुकी है॥
मुनासिब है कि अपना रास्ता ले।
वोह कश्ती देख साहिलसे लगी है॥

रात और रेल

'मजाज़'के दृश्य-वर्णनकी खूबी भी लगे हाथ देखलें :—

फिर चली है रेल इस्टेशनसे लहराती हुई।
नीमशबकी ख़ामुशीको ज़ेरे लब गाती हुई॥
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती।
बादिओ कोहसारकी ठंडी हवा खाती हुई॥
× × ×
नाज़से हर मोड़पर खाती हुई सौ पेचोख़म।
इक दुल्हन अपनी अदासे आप शरमाती हुई॥
जैसे आधीरातको निकली हो इक शाही बरात।
शादियानोंकी सदासे वज्दमें आती हुई॥

मुन्तशिर करके फ़िज़ामें जाबजा चिनगारियाँ।
दामन मौजे हवामें फूल बरसाती हुई॥
सोनये कोहसारपर चढ़ती हुई बेअख़्तियार।
एक नागन जिस तरह मस्तीमें लहराती हुई॥
जुस्तजूमें मंजिलेमक़सूदकी दीवानावार।
अपना सर धुनती फ़िज़ामें बाल बिखराती हुई॥
रेंगती, मुड़ती, मचलती, तिलमिलाती, हाँफती।
अपने दिलकी आतिशेपिनहाँको भड़काती हुई॥
पुलपै दरियाके दमादम कौन्दती ललकारती।
अपनी इस तूफ़ानअंगेज़ीपर इतराती हुई॥
पेश करती बीच नद्दीमें चिराग़ाँका समाँ।
साहिलोंपर रेतके ज़र्रोंको चमकाती हुई॥
मुँहमें घुसती है सुरंगोंके यकायक दौड़कर।
दनदनाती, चीख़ती, चिंघाड़ती, गाती हुई॥
आगे-आगे जुस्तजू आमेज़ नज़रें डालतीं।
शबके हैबतनाक नज़्ज़ारोंसे घबराती हुई॥
एक मुजरिमकी तरह सहमी हुई सिमटी हुई।
एक मुफ़लिसकी तरह सर्दीमें थर्राती हुई॥

× × ×

नन्हीं पुजारन

शायरीमे भी लोगोने कैसी-कैसी गन्द बखेरी है कि मारे शर्मके गर्दन नीची हो जाती है। एक सुकुमार अबोध कन्या जिसे हिन्दी-कवि सरस्वतीका अवतार समझते है, उसीको देखकर एक साहब फ़र्माते है :—

'जवानी आयेगी जब देखना कह्रे खुदा होगा ।'

× × ×

'अभी कमसिन हो, नादाँ हो, कहीं खो दोगे दिल मेरा ।
तुम्हारे ही लिए रक्खा है ले लेना जवाँ होकर ।।'

'मजाज़' ऐसी लडकियोमे सीताका रूप-शील देखते है .—

कैसी सुन्दर है क्या कहिये ।
नन्हीं-सी एक सीता कहिये ।।

धूप-चढ़े तारा चमका है ।
पत्थरपर इक फूल खिला है ।।

चाँदका टुकड़ा, फूलकी डाली ।
कमसिन, सीधी, भोली-भाली ।।

हाथमें पीतलकी थाली है ।
कानमें चाँदीकी बाली है ।।

दिलमें लेकिन ध्यान नही है ।
पूजाका कुछ ज्ञान नहीं है ।।

× × ×

हँसना-रोना इसका मजहब ।
इसको पूजासे क्या मतलब ?

खुद तो आई है मन्दरमें ।
मन उसका है गुड़ियाघरमें ।।

नूरा, नर्स

हुस्न आखिर हुस्न है । यह किसी वर्ग विशेषकी मीरास नही ।
वकौल 'जोश' :—

महतरानी हो कि रानी गुनगुनायेगी जरूर।
कोई आलम हो जवानी गुनगुनायेगी जरूर॥

और दिल आखिर दिल है। किसी पर भी आ जाय बसकी बात नहीं। और मनकी बात छिपाना आजका शायर पाप समझता है। 'जोश' महतरानीको देखकर उसके सौन्दर्यकी जी खोलकर सराहना करते हैं। 'साग़िर' पुजारनकी महिमा गाते हैं तो 'अहसान' तेलनको लेडीसे तरजीह देते हैं। 'सलाम' मछलीशहरी मज़दूर औरत पर फिसल जाते हैं, 'मखमूर' जालन्धरी एक मैली कुचैली मँगतनके लिये सोचते हैं। 'बूम'का चमारी नामा मशहूर ही है। 'मजाज़' साहब हास्पिटल की नूरा नर्सके सम्बन्धमें लिखते हैं :—

वह एक नर्स थी चारागर जिसको कहिये।
मदावाये दर्देजिगर जिसको कहिये॥

जवानीसे तिफ़्ली गले मिल रही थी।
हवा चल रही थी कली खिल रही थी॥

वोह पुररौब तेवर, वोह शादाब चेहरा।
मताये जवानीपै फ़ितरतका पहरा॥

मेरी हुक्मरानी है अहले जमींपर।
यह तहरीर था साफ़ उसकी जबींपर॥

सफ़ेद और शफ़्फ़ाफ़ कपड़े पहनकर।
मेरे पास आती थी एक हूर बनकर॥

× × ×

कभी उसकी शोख़ीमें संजीदगी थी।
कभी उसकी संजीदगीमें भी शोख़ी॥

घड़ी चुप, घड़ी करने लगती थी बातें।
सिरहाने मेरे काट देती थी रातें॥

× × ×

सिरहाने मेरे एक दिन सर झुकाये।
वोह् बैठी थी तकियेपै कोहनी टिकाये॥

खयालाते पैहममें खोई हुई-सी।
न जागी हुई-सी, न सोई हुई-सी॥

झपकती हुई बार-बार उसकी पलकें।
जबीपर शिकन बेकरार उसकी पलकें॥

× × ×

मुझे लेटे-लेटे शरारतकी सूझी।
जो सूझी भी तो किस क़यामतकी सूझी॥

जरा बढ़के कुछ और गर्दन झुका ली।
लबे लाल अफ़शाँसे इक शै चुराली॥

वोह् शै जिसको अब क्या कहूँ क्या समझिये।
बहिश्ते जवानीका तोहफा समझिये॥

मैं समझा था शायद बिगड़ जायगी वोह्।
हवाओंसे लड़ती है लड़ जायगी वोह्॥

मैं देखूँगा उसके बिफरनेका आलम।
जवानीका गुस्सा बिखरनेका आलम॥

इधर दिलमें इक शोरे महशर बपा था।
मगर उस तरफ रंग ही दूसरा था॥

हँसी और हँसी इस तरह खिलखिलाकर।
कि शमयेहया रह गई झिलमिलाकर॥

नहीं जानती है मेरा नाम तक वोह।
मगर भेज देती है पैग़ाम तक वोह॥

यह पैग़ाम आते ही रहते हैं अक्सर।
कि किस रोज़ आओगे बीमार होकर॥

फुटकर—

दिलको महवेग़मर्में दिलदार किये बैठे हैं।
रिन्द बनते हैं मगर ज़हर पिये बैठे हैं॥

चाहते हैं कि हर इक ज़र्रा शगूफ़ा बन जाय।
और ख़ुद दिल ही में एक ख़ार लिये बैठे हैं॥

× × ×

इश्क़का ज़ौक़े नज़ारा मुफ़्तमें बदनाम है।
हुस्न ख़ुद बेताब है जल्वे दिखानेके लिये॥

× × ×

छुप गये वे साज़े हस्ती छोड़कर।
अब तो बस आवाज़ ही आवाज़ है॥

२ सितम्बर १९४६

२४

मईन हुसेन 'जज़्बी' एम० ए०

(जन्म १९१२ के लगभग)

कॉलिजमे अध्ययन करते हुए 'जज्बी' साहब 'फानी' जैसे माहिरेफ़नसे इस्लाह लेते रहे। अत. उनके प्रारम्भके कलाममें 'फानी'की कला स्पष्ट झलकती है। आगे जाकर उस्ताद की व्यक्तिगत वेदना 'जज्बी'के यहाँ इन्सानी वेदनामे वदल जाती है; यानी 'जज्बी' फिर अपने कष्टोकी ओर तो ध्यान नही देते, मगर मनुष्योके दुखोंकी ओर उनका ध्यान वरवस खिच जाता है। ईदके चाँदको देखकर सुनक उठते है :—

तेरी जौपाशी है कब हम ग़मके मारोके लिये।
आह! तू निकला है इन सरमायेदारोंके लिये॥

'ऐ काश' शीर्षक नज्म मे फर्माते है :—

काश कहती न ये मजदूरकी गुलरंग नजर।
हसरते ख्वाव अभी दीदये वेख्वावमें है॥

काश मुफलिसके तवस्सुमसे न चलता यह पता।
कितने फ़ाकोकी सफत गैरते वेतावमें है॥

काश तोपोकी गरजमें न सुनाई देता।
जज्बये गैरते मजलूम अभी ख्वाव में है॥

और यह शोर गरजते हुए तूफ़ानोंका।
एक सैलाव सिसकते हुए इन्सानोंका॥

देशकी भुखमरीके होते हुए 'जज़्बी'का मन प्राकृतिक दृश्योंमें नहीं उलझता है। वे खीझकर कहते हैं :—

फ़ितरतके पुजारी कुछ तो बता, क्या हुस्न है इन गुलज़ारोंमें ?
है कौन-सी रानाई आखिर इन फूलोंमें इन ख़ारोंमें ??

× × ×

कोयलके रसीले गीत सुने, लेकिन यह कभी सोचा तूने ?
है उलझे हुए नग़मे कितने इक साज़के टूटे तारोंमें ??
बादलकी गरज, बिजलीकी चमक, बारिश वोह तेज़ी तीरोंकी।
मैं ठिठुरा, सिमटा सड़कोंपर, तू जाम-बलब मयख़्वारोंमें ॥

× × ×

जब जेबमें पैसे बजते हैं, जब पेटमें रोटी होती है।
उस वक़्त यह ज़र्रा हीरा है उस वक़्त यह शबनम मोती है।

'जज़्बी' अधिकतया ग़ज़लें लिखते हैं। उनकी नज़्मोंमे भी ग़जलकी सी मिठास मिलती है। उनके क़लामका संग्रह 'फ़िरोज़ाँ' प्रकाशित हो चुका है। उसमेंसे कुछ बानगी देखिये :—

ग़मकी तस्वीर बन गया हूँ मैं।
ख़ातिरेदर्द आश्ना हूँ मैं॥

हुस्न हूँ मैं कि इश्क़की तस्वीर ?
बेख़ुदी ! तुझसे पूछता हूँ मैं॥

दिलको होना था जुस्तजूमें खराब।
पास थी वर्ना मंज़िले मक़सूद॥

दिले नाकाम थकके बैठ गया।
जब नजर आई मंज़िले मक़सूद॥

तेरे जल्वोंकी हद मिली तो कब।
हो गई जब नजर भी लामहदूद॥

सम्हलने दे जरा बेताबिये दिल।
नजर आते हैं कुछ आसारे मंजिल॥

मजे नाकामियोंके उससे पूछो।
जिसे कहते हैं सब गुमकरदह मंजिल।

गिरा पड़ता हूँ क्यों हर-हर क़दमपर?
इलाही! आ गई क्या पास मंजिल??

दास्ताने शबेग़म किस्सये तूलानी है।
मुख़्तसिर ये है कि तूने मुझे बरबाद किया॥

हो न हो दिलको तेरे हुस्नसे कुछ निस्बत है।
जब उठा दर्द तो क्यों मैंने तुझे याद किया?

सकूँ नहीं न सही, दर्दे इन्तजार तो है।
हजार शुक्र कोई दिलका गमगुसार तो है॥

तुम्हारे जल्वोंकी रंगीनियोंका क्या कहना!
हमारे उजड़े हुए दिलमें इक बहार तो है॥

फ़िज़ूल राज मुहब्बतका सब छुपाते हैं।
बुझाये जो न बुझे आग वोह बुझाते हैं॥

सम्हल ओ जज्बये ख़ुद्दारिये दिले महजूँ।
किसीके सामने फिर अश्क आये जाते हैं॥

शकिस्ता दिल ही के नग़मे तो हैं वोह ऐ 'जज्बी'!
जिन्हें वोह सुनते हैं और झूम-झूम जाते हैं॥

रूठनेवालोंसे इतना कोई जाकर पूछे।
ख़ुद ही रूठे रहे या हमसे मनाया न गया॥
फूल चुनना भी अबस, सैरे वहाराँ भी फ़िज़ूल।
दिलका दामन ही जो काँटोंसे बचाया न गया॥

यह कैसा शिकवा तग़ाफ़ुलका हुस्नसे 'जज़्बी'!
तुम्हें तो भूलनेवालोंको भूल जाना था॥
जहाँतक आखिरी नजरें तेरी मुश्किलसे पहुँची हैं।
वही मंजिलकी हद है ख़्वाबे मंजिल देखनेवाले॥
मेरी दिक़्क़तपसन्दी देख, मेरा मुस्कराना देख।
निगाहेयाससे ओ मेरी मुश्किल देखनेवाले॥

शिकवा क्या करता कि उस महफ़िलमें कुछ ऐसे भी थे।
उम्र भर जो अपने ज़ख़्मोंपर नमक छिड़का किये॥

सवाले शौक़पै कुछ उनको इज्तनाब-सा है।
जवाब यह तो नहीं है मगर जवाब-सा है॥
मुस्कराकर डाल दी रुख़पर नक़ाब।
मिल गया जो कुछ कि मिलना था जवाब॥

मेरी ख़ाकेदिल भी आख़िर उनके काम आ ही गई।
कुछ नहीं तो उनको दामन ही बचाना आ गया॥

ऐशसे क्यों खुश हुए क्यों ग़मसे घबराया किये?
जिन्दगी क्या जाने क्या थी, और क्या समझा किये।
नाखुदा बेख़ुद, फिज़ा खामोश, साकित मौजेआब।
और हम साहिलसे थोड़ी दूरपर डूबा किये॥

मुख़्तसिर ये है हमारी दास्ताने ज़िन्दगी।
इक सकूने दिलकी ख़ातिर उम्र भर तड़पा किये॥
काट दी यूँ हमने 'जज़्बी' राहे मंज़िल काट दी।
गिर पड़े हर गामपर, हर गामपर सम्हला किये॥

ऐ हुस्न! हमको हिज्रकी रातोंका ख़ौफ़ क्या?
तेरा ख़याल जागेगा सोया करेंगे हम॥
यह दिलसे कहके आहोंके झोंके निकल गये।
उनको थपक-थपक के सुलाया करेंगे हम॥

मरनेकी दुआएँ क्यों माँगूँ, जीनेकी तमन्ना कौन करे?
यह दुनिया हो या वोह दुनिया, अब ख्वाहिशेदुनिया कौन करे?
जब किश्ती साबुत-औ-सालिम थी, साहिलकी तमन्ना किसको थी।
अब ऐसी शकिस्ता किश्तीपर साहिलकी तमन्ना कौन करे?
जो आग लगाई थी तुमने, उसको तो बुझाया अश्कोंने।
जो अश्कोंने भड़काई है, उस आगको ठंडा कौन करे?
दुनियाने हमें छोड़ा 'जज़्बी' हम छोड़ न दें क्यों दुनियाको?
दुनियाको समझकर बैठे है, अब दुनिया-दुनिया कौन करे?

न आये मौत ख़ुदाया तबाहहालीमें।
यह नाम होगा ग़मे रोज़गार सह न सका॥
यह सोचकर मेरी पलकोंपै रुक गया आँसू।
कि रायगाँ तेरी महफिलमें क्यों गुहर जाये॥

तेरी झूठी ख़फ़गीका था इल्म मुझको।
मगर तुझको सचमुच मनाया है मैंने॥

यही जिन्दगी मुसीबत, यही जिन्दगी मसर्रत।
यही जिन्दगी हक़ीक़त, यही जिन्दगी फ़िसाना॥

जिसको कहते हैं मुहब्बत, जिसको कहते है ख़लूस।
झोंपड़ोंमें हो तो हो पुख़्ता मकानोंमें नही॥
अब कहाँ मैं ढूँढ़ने जाऊँ सकूँको ऐ ख़ुदा!
इन जमीनोंमें नहीं, इन आसमानोंमें नहीं॥
वोह गुलामीका लहू जो था रगे इसलाफ़में।
शुक्र है 'जज्बी' कि अब हम नौजवानोंमें नहीं॥

तेरी ख़ामोश वफ़ाओंका सिला क्या होगा?
मेरे नाकरदह गुनाहोंकी सजा क्या होगी??

हम दहरके इस वीरानेमें जो कुछ भी नजारा करते हैं।
अश्कोंकी जबाँमें कहते हैं, आहोंमें इशारा करते हैं॥
ऐ मौजेबला! उनको भी जरा दो-चार थपेड़े हल्के-से।
कुछ लोग अभी तक साहिलसे तूफ़ाँका नजारा करते हैं॥
क्या जानिये कब यह पाप कटे, क्या जानिये वह दिन कब आए।
जिस दिनके लिये हम ऐ 'जज्बी' क्या कुछ न गवारा करते हैं॥

ऐ जोशेवफ़ा! उन क़दमोंकी इज्जत तो बढ़ा दी सर रखकर।
अब हम कैसे इस जिल्लतके अहसाससे छुटकारा पाएँ?

४ सितम्बर १९४६

२५

साहिर लुधियानवी

साहिरकी शायरी आजकी शायरी है। प्रगतिशील शायरोमे साहिर अपना एक विशेष स्थान रखते है। वे कल्पनाके घोड़े न दौड़ाकर अपने कड़ुवे-मीठे अनुभवोको मधुर और दर्द भरे ढंगसे पेश करते है :—

दुनियाने तजरुबातो हवादसकी शक्लमें।
जो कुछ मुझे दिया है, वह लौटा रहा हूँ मैं॥

साहिरके भी पहलूमें दिल है, वह भी जवानीकी चौखटपर पाँव रखते हुए अपनी प्रेयसीको प्रतीक्षामे खड़ी देखनेका अभिलाषी है, किन्तु उसका प्रेम सामाजिक असमानताओकी विषम दीवारोसे टकराकर चूर होजाता है और वह सहसा कराह उठता है :—

मायूसियोंने छीन लिये दिलके वलवले।
× × ×
मेरे बेचैन ख्यालोंको सकूं मिल न सका।

साहिरको केवल प्रेम-मार्गमे ही नही, जीवन-यात्रामे भी अनेक असफलताओ और असुविधाओका मुँह देखना पडता है। तब वह ऐसे निकृष्ट जीवनसे मृत्युको श्रेष्ठ समझता है :—

जो सच कहूँ तो मुझे मौत नागवार नही।
× × ×
यह ग़म बहुत है मेरी जिन्दगी मिटानेको।

किन्तु सहसा उसे प्रकाश मिलता है। प्रेम और जीवन-सम्बन्धी

आवश्यकताएँ ही जीवनका ध्येय नही, उसका कर्त्तव्य कुछ और भी है। आपदाओं और असफलताओंके आगे रोने-बिसूरनेसे क्या लाभ ? मर्दको तो मर्दानावार इन सबका सामना करना चाहिए। प्रकाश मिलनेसे पूर्व जहाँ वह पहले जीवन-आपदाओसे घिरे रहनेपर बाध्य होकर कहता था :—

अभी न छेड़ मुहब्बतके गीत ऐ मुतरिब !
अभी हयातका माहौल खुशगवार नहीं॥

× × ×

मेरी महबूब ! यह हंगामये तजदीदे वफ़ा।
मेरी अफ़सुर्दा जवानीके लिए रास नहीं॥

× × ×

प्रकाश मिलते ही जाग उठता है :—

सोचता हूँ कि मुहब्बत है जुनूने रुसवा।
चन्द बेकारसे बेहूदा ख़यालोंका हुजूम॥

× × ×

'साहिर' प्रेम-मार्गकी असफलताओ और जीवन सम्बन्धी विघ्न बाधाओंके प्रति विद्रोही हो उठता है। सामाजिक रीत-रिवाजो, धार्मिक धारणाओ और आर्थिक झमेलोके प्रति घृणासे भर उठता है। ऊँच-नीच, अमीर-गरीबका भेद भी उसे असह्य हो उठता है। यहाँ तक कि वह ताजमहलमे अपनी प्रेयसीसे मिलनेमे भी संकोच करता है क्योकि वह बादशाहका बनवाया हुआ है और साहिरका विश्वास है कि शाहजहाँने यह प्रेम-स्मारक बनवाकर गरीबोकी मुहब्बतका मज़ाक़ उड़ाया है। इसीलिए वह कहता है :—

मेरी महबूब कहीं और मिलाकर मुझसे।

ताजमहल

ताज तेरे लिए एक मजहरेउलफ़त[1] ही सही।
तुझको इस वादियेरंगींसे[2] अक़ीदत[3] ही सही।
मेरी महबूब[4] कहीं और मिलाकर मुझसे।

बज़्मेशाहीमें[5] ग़रीबोंका गुज़र क्या मानी?
सब्त[6] जिस राहपै हों सतवतेशाही[7]के निशाँ।
उसपै उलफत भरी रूहोंका सफर क्या मानी?

मेरी महबूब पसेपरदए[8] तशहीरेवफ़ा[9],
तूने सतवतके[10] निशानोंको तो देखा होता?
मुर्दाशाहोंके मक़ाबिर[11]से बहलनेवाली,
अपने तारीक[12] मकानोंको तो देखा होता?

अनगिनत लोगोंने दुनियामें मुहब्बत की है।
कौन कहता है कि सादिक़[13] न थे जज़्बे[14] उनके?
लेकिन उनके लिए तशरीहका सामान नहीं,
क्योंकि वे लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस थे॥

यह इमारत, यह मकाबिर, यह फसीलें,[15] ये हिसार[16],
मुतलक़ुलहुक्म[17] शहन्शाहोंकी अज़मत[18]केसतूँ।

---

[1] प्रेमका द्योतक; [2] रमणीय स्थानसे; [3] भक्ति; [4] प्रेयसी, [5] बादशाही दरबारमें; [6] अंकित, [7] बादशाही वैभव, [8] परदेके पीछे; [9] वफाका विज्ञापन; [10] वैभव; [11] मक़बरो; [12] अँधेरे; [13] सच्चे; [14] भाव, [15] परिकोटा; [16] किला; [17] हुक्म देनेमें स्वतन्त्र, मनमानी करनेवाले; [18] वैभवके स्तम्भ।

सीनयेदहरके[१] नासूर हैं, कुहना[२] नासूर,
जज़्ब[३] है उनमें तेरे और मेरे अजदाद[४]का ख़ूं।

मेरी महबूब इन्हें भी तो मुहब्बत होगी?
जिनकी सन्नाईने[५] बख़्शी है उसे शक्ले[६]जमील
उनके प्यारोंके मक़ाबिर रहे बेनामोनमूद[७],
आज तक उनपै जलाई न किसीने न क़न्दील।

यह चमनज़ार,[८] यह जमनाका किनारा, यह महल,
यह मुनक़्क़श[९] दरोदीवार, यह महराब, यह ताक़;
एक शहन्शाहने दौलतका सहारा लेकर,
हम ग़रीबोंकी मुहब्बतका उड़ाया है मज़ाक़।

मेरी महबूब कहीं और मिलाकर मुझसे।

कभी-कभी

कभी-कभी मेरे दिलमें ख़याल आता है।
कि ज़िन्दगी तेरी ज़ुल्फ़ोंकी नर्म छाओंमें,
गुज़रने पाती तो शादाब[१०] हो भी सकती थी।
यह तीरगी जो मेरे ज़ीस्त[११]का मुक़द्दर[१२] है,
तेरी नज़रकी शुआओंमें खो भी सकती थी।

अजब न था कि मैं बेगानएअलम[१३] रहकर,
तेरे जमालकी[१४] रानाइयों[१५]में खो रहता।

---

[१] संसारके वक्षस्थलके; [२] पुराने; [३] रमे हुए, समाये हुए; [४] पूर्वजों; [५] कारीगरीने; [६] सुन्दर रूप; [७] बेनामोनिशाँ; [८] उद्यान; [९] नक़्शनिगारी की हुई; [१०] प्रफुल्ल; [११] जीवनका; [१२] लेखा, भाग्य; [१३] संसारसे बेख़बर; [१४] सौन्दर्यकी; [१५] रंगीनियों।

तेरा गुदाज़[1] बदन तेरी नीमबाज़[2] आँखें,
इन्हीं हसीन फ़िसानोंमें महव[3] हो रहता।
पुकारतीं मुझे जब तल्ख़ियाँ[4] ज़मानेकी
तेरे लबोंसे हलावत[5]के घूंट पी लेता।
हयात[6] चीख़ती फिरती बिरहनासर[7] और मैं,
घनेरी ज़ुल्फ़ोंके साएमें छुपके जी लेता।
मगर यह हो न सका और अब ये आलम है,
कि तू नहीं, तेरा गम, तेरी जुस्तजू[8] भी नहीं।
गुज़र रही है कुछ इस तरह जिन्दगी जैसे,
उसे किसीके सहारेकी आरज़ू भी नहीं।
ज़माने भरके दुखोंको लगा चुका हूँ गले,
गुज़र रहा हूँ कुछ अनजानी रहगुज़ारोंसे[9]।
महीब[10] साए मेरी सिम्त बढ़ते आते हैं
हयातोमौतके पुरहौल[11] ख़ारज़ारोंसे[12]।
न कोई जादह,[13] न मंज़िल, न रोशनीका सुराग़,
भटक रही है ख़लाओंमें[14] जिन्दगी मेरी।
इन्हीं ख़लाओंमें रह जाऊँगा कभी खोकर,
मैं जानता हूँ मेरी हमनफ़स! मगर यूँही।
कभी-कभी मेरे दिलमें ख़याल आता है।

---

[1] गुदगुदा; [2] अर्द्धखुली; [3] तन्मय; [4] कड़वाहट; [5] मधुरता; [6] जिन्दगी, [7] नंगे सिर; [8] पानेकी इच्छा, [9] अनजाने मार्गोंसे; [10] डरावने; [11] हृदय दहलानेवाले, [12] कटकाकीर्ण मार्गोंसे; [13] सामान; [14] शून्यमे, वियावानमे।

फ़रार

(१)

अपने माज़ीके[1] तसव्वुर[2]से हिरासाँ हूँ मैं,
अपने गुज़रे हुए ऐय्यामसे नफ़रत है मुझे।
अपनी बेकार तमन्नाओंपे शरमिन्दा हूँ,
अपनी बेसूद उमीदोंपै नदामत है मुझे।

(२)

मेरे माज़ीको अँधेरेमें दबा रहने दो,
मेरा माज़ी मेरी ज़िल्लतके सिवा कुछ भी नहीं।
मेरी उम्मीदोंका हासिल, मेरी काविशका[3] सिला,
एक बेनाम अज़ीयतके सिवा कुछ भी नहीं।

(३)

कितनी बेकार उम्मीदोंका सहारा लेकर,
मैंने ईवान[4] सजाए थे किसीकी ख़ातिर।
कितनी बेरब्त तमन्नाओंके मुबहम[5] ख़ाके,
अपने ख़्वाबोंमें बसाये थे किसीकी ख़ातिर।

(४)

मुझसे अब मेरी मुहब्बतके फ़िसाने न कहो,
मुझको कहने दो कि मैंने उन्हें चाहा ही नहीं।
और वे मस्त निगाहें जो मुझे भूल गईं,
मैंने उन मस्त निगाहोंको सराहा ही नहीं।

---

[1] भूतकालीन; [2] कल्पनासे; [3] तलाशका; [4] महल; [5] अस्पष्ट।

(५)

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हूँ,
इश्क नाकाम सही, जिन्दगी नाकाम नहीं।
उन्हें अपनानेकी ख्वाहिश, उन्हें पानेकी तलब,
शौके बेकार सही, सईएग़म[1]अंजाम नहीं।

(६)

वही गेसू, वही नजरें, वही आरिज, वही जिस्म,
मैं जो चाहूँ तो मुझे और भी मिल सकते हैं।
वे कँवल जिनको कभी उनके लिए खिलना था,
उनकी नजरोंसे बहुत दूर भी खिल सकते हैं॥

हिरास

तेरे होंटोंपै तबस्सुमकी[2] वोह हलकी-सी लकीर
मेरी तख़यीलमें[3] रह-रहके झलक उठती है।
यूँ अचानक तेरे आरिजका[4] ख़याल आता है,
जैसे जुल्मतमें[5] कोई शमअ् भड़क उठती है॥

तेरे पैराहनेरंगींकी[6] जुनूँख़ेज[7] महक
ख्वाब बन-बनके मेरे जहनमें लहराती है।
रातकी सर्द खमोशीमें हर इक झोंकोसे
तेरे इनफ़ास[8] तेरे जिस्मकी आँच आती है।

---

[1] दुखात चेष्टा; [2] मुस्कराहटकी; [3] कल्पनामें; [4] कपोलका; [5] अँधेरेमे; [6] रंगीन लिवासकी; [7] उन्माद भरी; [8] स्वासो।

मैं सुलगते हुए राज़ोंको[१] अयाँ[२] तो कर दूँ,
लेकिन इन राज़ोंकी तशहीरसे[३] जी डरता है।
रातके ख़्वाब उजालेमें बयाँ तो कर दूँ,
इन हसीं ख़्वाबोंकी तावीरसे[४] जी डरता है॥

तेरी साँसोंकी थकन तेरी निगाहोंका सकूत[५],
दरहक़ीक़त कोई रंगीन शरारत ही न हो।
मैं जिसे प्यारका अन्दाज़ समझ बैठा हूँ,
वो तबस्सुम वोह तकल्लुम[६] तेरी आदत ही न हो॥

सोचता हूँ कि तुझे मिलके मैं जिस सोचमें हूँ
पहले उस सोचका मक़सूम समझ लूँ तो कहूँ।
मैं तेरे शहरमें अनजान हूँ परदेशी हूँ
तेरे इल्ताफ़का[७] मफ़हूम[८] समझ लूँ तो कहूँ।

कहीं ऐसा न हो पाँव मेरे थर्रा जाएँ,
और तेरी मरमरीं[९] बाहोंका सहारा न मिले।
अश्क बहते रहें ख़ामोश सियह रातोंमें
और तेरे रेशमी आँचलका किनारा न मिले॥

शाकिस्त

अपने सीनेसे लगाए हुए उम्मीदकी लाश।
मुद्दतों जीस्तको[१०] नाशाद[११] किया है मैंने॥

---

[१] भेदोको; [२] प्रकट; [३] विज्ञापनसे, डोंडी पीटनेसे, पब्लिसिटीसे; [४] परिणामसे; [५] ख़ामोशी; [६] बातचीत करना; [७] भाग्य, परिणाम; [८] कृपाओंका; [९] तात्पर्य; [१०] धवल-गोरी; [११] ज़िन्दगीको; [१२] अप्रसन्न।

तूने तो एक ही सदमेसे किया था दो-चार।
दिलको हर तरहसे बरबाद किया है मैंने।
जब भी राहोंमें नजर आए हरीरी[1] मलबूस[2]।
सर्द आहोंमें तुझे याद किया है मैंने॥

और अब जब कि मेरी रूहकी पहनाईमें[3]।
एक सुनसान-सी मग़मूम घटा छाई है॥
तू दमकते हुए आरिजकी[4] शुआएँ[5] लेकर।
गुलशुदाशमअ[6] जलानेको चली आई है॥

मेरी महबूब! यह हंगामियेतजदीदे[7] वफ़ा।
मेरी अफ़सुर्दा[8] जवानीके लिए रास नहीं॥
मैंने जो फूल चुने थे तेरे क़दमोंके लिए।
उनका धुँधला-सा तसव्वुर भी मेरे पास नहीं॥

एक यख़बस्ता[9] उदासी है दिलोजाँपै मुहीत[10]।
अब मेरी रूहमें बाक़ी है न उम्मीद न जोश॥
रह गया दबके गिराँबार[11] सलासिल[12]के तले।
मेरी दरमान्दह[13]जवानीकी उमंगोका ख़रोश[14]॥

रहगुजारोंमें बगोलोके सिवा कुछ भी नही।
सायए अब्रे गुरेजाँसे मुझे क्या लेना?
बुझ चुके है मेरे सीनेमें मुहब्बतके कँवल।
अब तेरे हुस्ने पशेमाँसे मुझे क्या लेना?

---

[1] रंगबिरंगे; [2] लिवास; [3] हृदयकी विशालता; [4] कपोलोकी; [5] किरणे; [6] बुझा दीपक; [7] फिर नये ढगसे प्रेम करना; [8] मुर्झाई; [9] जमी हुई; [10] घिरी हुई; [11] बोझीली; [12] शृंखला; [13] साधनहीन, थकी हुई; [14] उत्साह, उमग।

तेरे आरिज़पै ये ढलके हुए सीमीं आँसू।
मेरी अफ़सुर्दगिये ग़मका मदावा तो नहीं ?
तेरी महजूब निगाहोंका पयामेतजदीद।
इक तलाफ़ी ही सही, मेरी तमन्ना तो नहीं॥

एक तसवीरे रंग

मैंने जिस वक़्त तुझे पहले पहल देखा था।
तू जवानीका कोई ख़्वाब नज़र आई थी॥
हुस्नका नग़मयेजावेद[1] हुई थी मालूम।
इश्क़का जज़्बए बेताब नज़र आई थी॥
ऐ तरबज़ारे[2] जवानीकी परेशाँ तितली।
तू भी एक बूए गिरफ़्तार है मालूम न था॥
तेरे जलवोंमें बहारें नज़र आईं थीं मुझे।
तू सितमख़ुर्दहेअदबार[3] है मालूम न था॥
तेरे नाज़ुकसे परोंपर यह ज़रोसीमका[4] बोझ।
तेरी परवाज़को आज़ाद न होने देगा॥
तूने राहतकी तमन्नामें जो ग़म पाला है।
वोह तेरी रूहको आबाद न होने देगा॥
तूने सरमायेकी छाओंमें पनपनेके लिए।
अपने दिल अपनी मुहब्बतका लहू बेचा है॥
इससे क्या फ़ायदा रंगीन लबादोंके तले।
रूह जलती रहे गलती रहे पज़मुर्दा[5] रहे॥

---

[1] जीवनसंगीत; [2] जवानीके लहलहाते उद्यानकी, [3] दुर्भाग्यसे पीड़ित, [4] सोनेचाँदीका; [5] मुर्झाई हुई।

होंट हँसते हों दिखावेके तबस्सुमके लिए।
दिल ग़मेजीस्तसे[1] बोझल रहे आज़ुर्दा[2] रहे।
दिलकी तस्कीं[3] भी है आसाइशे[4]हस्तीकी दलील।
जिन्दगी सिर्फ़ जरोसीमका पैमाना नहीं॥
जीस्त[5] एहसास[6] भी है शौक भी है, दर्द भी है।
सिर्फ़ अनफ़ासकी[7] तरतीबका अफसाना नहीं॥
अभी न छेड़ मुहब्बतका राग ऐ मुतरिब[8]!
अभी हयातका[9] माहोल[10] साजगार नहीं॥

मादाम

आप बेवजह परीशान-सी क्यों है मादाम[11]!
लोग कहते है तो फिर ठीक ही कहते होंगे॥
मेरे अहबाबने[12] तहजीब न सीखी होगी।
मेरे माहोलमें[13] इन्सान न रहते होंगे॥
नूरेसरमायेसे[14] है रूएतमद्दुनकी[15] जिला[16]।
हम जहाँ है वहाँ तहजीब नही पल सकती॥
मुफलिसी हिस्से[17]लताफ़तको मिटा देती है।
भूख आदावके साँचोंमें नही ढल सकती॥

---

[1] ज़िन्दगीके, [2] गमसे, चिन्तित; [3] शान्ति, [4] जीवन-सुखकी, [5] जिन्दगी, [6] अनुभव करना, [7] इन्द्रिय-भोगकी, [8] मधुर गानेवाली प्रेयसी, [9] जीवनका; [10] वातावरण, [11] मैडमका उर्दू रूपान्तर, [12] इष्ट मित्रोंने; [13] वातावरणमे; [14] धनके प्रकाशसे; [15] सभ्यताके चहरेकी; [16] चमक, [17] कोमलताकी गति।

लोग कहते हैं तो लोगोंपै ताज्जुब कैसा ?
सच तो कहते हैं कि नादारोंकी इज्ज़त कैसी ?
लोग कहते हैं मगर आप अभी तक चुप हैं।
आप भी कहिए, ग़रीबोंमें शराफ़त कैसी ?
नेक मादाम ! बहुत जल्द वोह वक़्त आयेगा।
जब हमें ज़ीस्तके[1] अदवार परखने होंगे।
अपनी ज़िल्लतकी क़सम आपकी अज़मतकी क़सम।
हमको ताज़ीमके मेयार परखने होंगे।
हमने हर दौरमें तज़लील[2] सही है लेकिन।
हमने हर दौरके चेहरेको ज़िया बख़्शी है॥
हमने हर दौरमें महनतके सितम झेले हैं।
हमने हर दौरके हाथोंको हिना बख़्शी है॥
लेकिन इन तल्ख़ मबाहससे भला क्या हासिल ?
लोग कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते होंगे॥
मेरे अहबाबने तहज़ीब न सीखी होगी।
मैं जहाँ हूँ वहाँ इन्सान न रहते होंगे॥

२८ अप्रैल १९४८

---

[1] ज़िन्दगीके; [2] अपमान।

मधुर प्रवाह

: १० :

[अतीत युगकी ग़ज़लके वर्त्तमान समर्थ शायर]
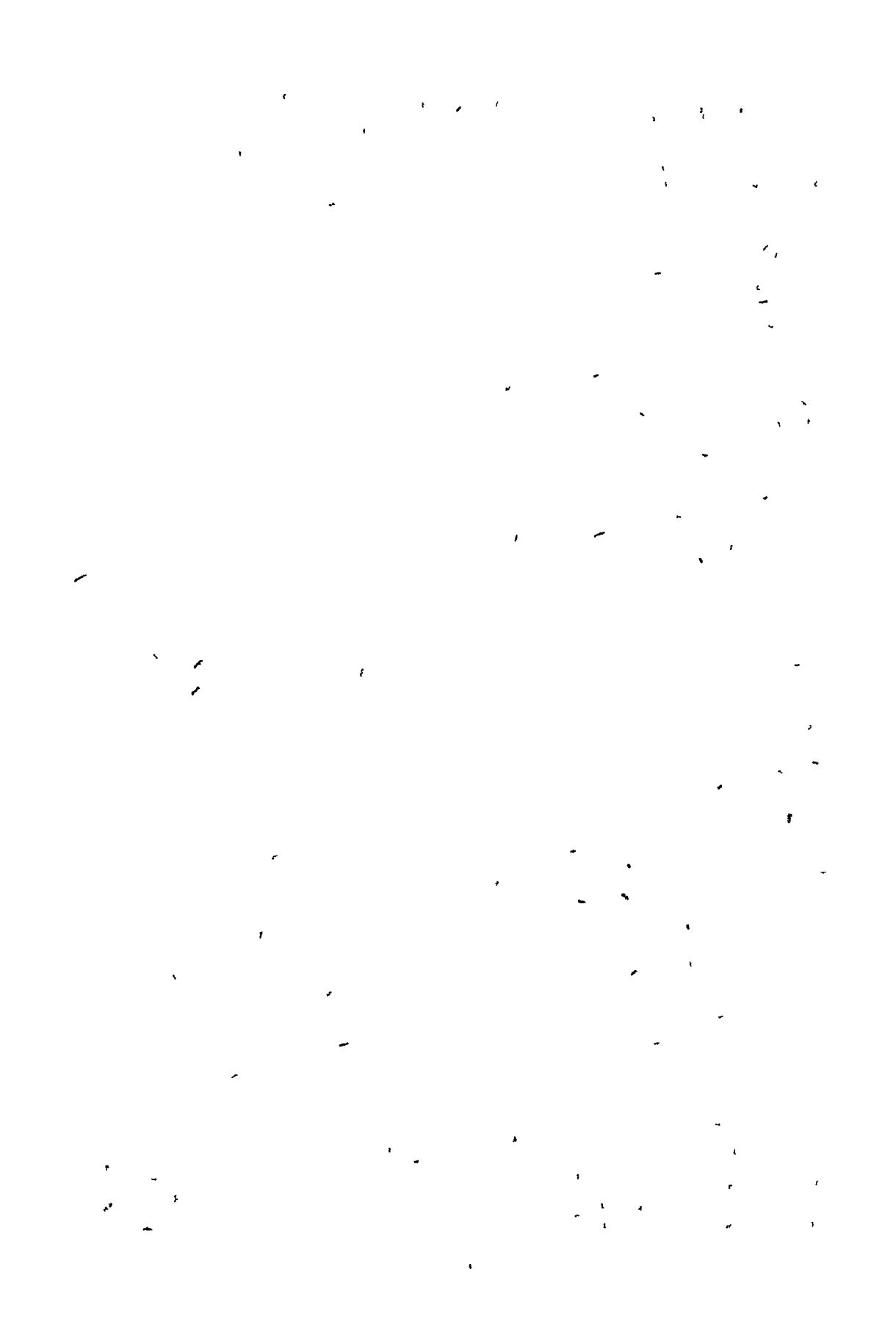
पिछले पृष्ठोंमे प्राचीन शायरी (गज़लगोई) और नवीन शाय
(नज़्मगोई) का प्रसगानुसार उल्लेख हुआ है। उर्दू-शायरीका उद्ग
गज़लगोईसे हुआ। किसी भी देश और जातिके उत्थान और पतन
दिग्दर्शन उसके साहित्यसे किया जा सकता है। गज़लका अर्थ ही हुस्न
इश्कका वर्णन, स्त्रियोका उल्लेख है। गज़लका जन्म भी नवाबो औ
बादशाहोके दरबारोमें हुआ। इसलिये गज़लमे विलासिता, मादकत
दरबारी रीति-रिवाज वगैरहका वर्णन पाया जाता है। १८५७के ब
ज़मानेने करवट ली और यह पुराना रग लोगोको नही जँचा। य
नही कि ये नये ज़मानेके शायर उन पुराने शायरोके आलोचक थे। अपि
'आजाद' ज़ौकके, 'हाली' गालिबके, और 'इकबाल' दागके शि
थे। उनकी शायराना विद्वताकी इनपर गहरी छाप थी। आज़ाद
'आबेहयात'—हालीने 'यादगारे गालिब', और इकबालने दाग
नौहा, लिखकर अपनी श्रद्धाका परिचय दिया है। इन नये ज़माने
शायरोको उनकी विद्वता और शायरीके जादूने ही उनके खिलाफ नज़्म
आन्दोलन करनेका अवसर दिया। क्योकि ये जानते थे कि इन उस्तादोक
कलाम हमारे समाजको मदहोश बना डालेगा और वह हमे इस योग्य
रक्खेगा कि हम आनेवाली मुसीबतोका मुकाविला कर सके। मनुष्यक
यह स्वभाव है कि वह प्रेम, शृंगार, काम सम्वन्धी कविताओकी ओ
आकर्षित होता है। वह सवसे अधिक ऐसी ही गोपनीय कृतियोको पढन
चाहता है। यहाँ तक कि वडे-वडे ऋषि और आचार्य भी जब अप
हृदयमे दुवकी हुई आगको अधिक नही दवा सकते है तो वह काव्य औ
उपदेशके रूपमे प्रस्फुटित हो जाती है। स्त्रियो का नख–शिख वर्णन
कामका नग्न-रूप, रतिका वीभत्स वर्णन उपदेशके वहाने करते है। य
मनुष्यका स्वभाव है। इश्किया शायरी कभी मर नही सकती, लेकि

उनके सामने तो प्रश्न यह था कि दुश्मन जब दरवाज़े पर मारू बाजा बजाता हुआ आ धमका हो, तब भी हुस्नोइश्ककी दास्ताँ कहते रहना क्या मुनासिब होगा ? मादक संगीत, प्रेम-विभोर कविताएँ दार्शनिक तत्व-चर्चाएँ ये सब सुखी और निराकुल संसारके लिये शोभनीय हैं। न कि परतन्त्रता और आपदाओंसे जकड़े हुए मनुष्योंके लिये। वक़्त-वक़्तकी रागनी और वक़्त-वक़्तके गीत ही सुहावने लगते हैं। जैसा कि 'सलाम' मछलीशहरी फ़र्माते हैं :—

मुझे नफ़रत नहीं है इश्किया अशआरसे लेकिन।
अभी उनको ग़ुलामाबादमें मैं गा नहीं सकता॥

मुझे नफ़रत नहीं है हुस्नें जन्नत ज़ारसे लेकिन।
अभी दोज़ख़में इस जन्नतसे दिल बहला नहीं सकता॥

मुझे नफ़रत नहीं पाज़ेबकी झनकारसे लेकिन।
अभी ताबे निशाते रक़्सेमहफ़िल ला नहीं सकता॥

अभी हिन्दोस्ताँको आतशीं नग़मे सुनाने दो।
अभी चिनगारियोंसे इक गुलेरंगीं बनाने दो॥

श्रीमती गायत्री देवी इसी तरहके भावोंको यूँ व्यक्त करती हैं :—

यह हुस्नोइश्क़की रंगीनियाँ नहीं दरकार।
शबेफ़िराक़की बेचैनियाँ नहीं दरकार॥

शराबे इश्क़की मस्तीका अहतियाज नहीं।
किसीका क़ुर्ब मेरे शौक़का इलाज नहीं॥

ललाफ़तें मेरे हक़में अभी हैं 'दारोरसन'।
मुझे पुकार रहा है मेरा अज़ीज़ वतन॥

अभी तो सोई हुई कौमको जगाना है।
वतनको जन्नते अरज़ी अभी बनाना है।।

इसलिये हिन्दुस्तानकी उस वक़्तकी आवश्यकताको देखकर पुरानी शायरीके विरोधमें उन्होने एक आन्दोलन उठाया। इतिहास हमें बताता है कि कोई आन्दोलन कितना ही प्रबल क्यों न हो, उसके विपक्षी अंकुर कभी नष्ट नही होते। कांग्रेसका आन्दोलन जब प्रबल होता है तब भी हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक मनोवृत्तियाँ छिपी-छिपी पनपती रहती है। गांधीका अहिंसावाद देखने-सुननेको सारे भारत पर कोहरेकी तरह छाया रहता है, मगर यदा-कदा उन्हीके साथियोमे हिंसात्मक आन्दोलनके रूपमे भी फूटता रहता है। इसी तरह गज़लोके खिलाफ काफी आन्दोलन होने पर भी पुरानी शायरीके दिलदादा बने ही रहे और आजतक वही मुशायरोकी धूम, वही गजलोका रग मौजूद है। यहाँ तक कि जो मशहूर नज्मगो शायर है, उनका श्रीगणेश गज़लगोईसे ही हुआ, और अब भी मुशायरोके लिये गजले लिखते रहते है। गज़लोके लिये सबसे बड़ा एतराज ये है, कि गजलगो अपनी धुनमे मस्त रहते है। इनक़लाबकी आँधियाँ इनके ऊपरसे गुजर जायँ, इनको मालूम नही होती। घरके बाहर क़त्लेआम होता रहे, ये ज़ुल्फेपेचाँमे फँसे नजर आते है। मगर ईमानकी बात यह है कि सामयिक साहित्य तो ज़मानेकी रुचिके अनुसार बनता है और नष्ट हो जाता है। अमर साहित्य वही है जो सामयिक न हो। ज़मानेके मुताबिक उसमें खूबियाँ पैदा होती जायँ। नज्म लिखनेवाले बातको बढ़ाकर और स्पष्ट रूपमे कहते है। गजलगो शायर एक शेरमे ही सब कुछ कह जाते है। मगर सीधा और साफ नही। चोट तो वह भी करते है, मगर दुशालेमे लपेट कर।

अलाउद्दीन चितौड़ पर हमला करता है। राजपूत सब युद्धमे जूझ मरते है। राजपूतानियाँ पद्मिनीके साथ चितामे भस्म हो जाती है।

अलाउद्दीन वहाँ जाता है तो पद्मिनीके बजाय राखका ढेर देखता है। तब एक शायरके मुँहसे निकल पड़ता है :—

तासहर वोह भी न छोड़ी तूने ऐ बादेसबा !
यादगारे रौनक़ेमहफ़िल थी परवानेकी ख़ाक ॥

सुभाषको अपने ही देशवासी ग़द्दार पंचमाङ्गी कहते हैं, उधर हिटलर अपनेसे भी बड़ा मानकर उनका सत्कार करता है। तब मुँहसे बरबस निकल पड़ता है :—

पढ़ी नमाजेजनाजा तो अपनी ग़ैरोंने।
मरे थे जिनके लिये वे रहे वज़ू करते ॥

वो क़ौम जो पुरानी लकीरको पीटती चली आ रही है, उसको यह कहकर ग़जलगो शायर ग़ैरत दिलाता है :—

वस्लसे इनकार करना यह पुरानी बात थी।
अब नये अन्दाज सीखो दिल जलानेके लिये ॥

उर्दू गजलोंमें गुलो बुलबुलकी आड़में, राजनैतिक दाव-पेंच, स्वतंत्रताका सन्देश, अत्याचारियोके प्रति बगावत, प्रेम, विरहका वर्णन बड़ी खूबीसे किया गया है। शराब, साकी, जाहिदकी आड़में बड़ी-बड़ी आध्यात्मिक बातें कही गई हैं। यह सब हम पुस्तकके प्रारम्भमे ही दिखला चुके हैं। उस प्राचीन शायरीके समर्थक वर्त्तमान युग मे भी बड़े-बडे लब्ध-प्रतिष्ठ शायर मौजूद हैं। रियाज ख़ैराबादी, सफ़ी लखनवी, अज़ीज लखनवी, आरजू लखनवी, जरीफ लखनवी, दिल शाहजहाँपुरी, यगाना चंगेज़ी, वहशत कलकतवी नूह नारवी, बिस्मिल इलाहाबादी, जलील मानक-पुरी, साइल, बेख़ुद, आगाशायर, कैफी, साहिर देहलवी, एहसन माहरहरवी, अलम मुजफ्फर नगरी, साकिव लखनवी, हसरत मोहानी, फानी, असगर, जिगर,

फिराक जैसे बाकमाल उस्ताद इस रंगमे नई-नई गुलकारियाँ कर रहे हैं।[1]

हम इनमेसे यहाँ केवल छहका परिचय दे रहे है । यद्यपि अपने-अपने रंगमे उक्त कवियोको कमाल हासिल है, मगर निश्चित संख्याकी कैदके कारण हम मजबूर है । अगर पाठकोको हमारा यह परिश्रम रुचिकर हुआ तो और बाकी अदीबोका परिचय और कलाम भी पाठकोके सम्मुख किसी दूसरी पुस्तकमे देनेका प्रयास करेगे ।

१३ अक्तूबर १९४६ ई०

[1] यद्यपि उक्त शायरोमेसे कई महानुभाव इस दुनियाए फानीसे नजात पा चुके है, फिर भी ये सब इसी बीसवीं सदीमे हुए है और वर्त्तमानयुगके शायर कहलाते है, इसीलिये हमने उनका उल्लेख वर्त्तमानयुगमे किया है ।

२६

ज़ाकिर हुसेन 'साक़िब'

(जन्म आगरा २ जनवरी १८६९ ई०)

साक़िब साहबकी जबान 'मीर'की-सी और तख़ैयुल (विचार-कल्पना, उडान) गालिब जैसा है। इसीलिये लोग आपको जाँनशीन मीर-ओ-गालिब कहते है। मगर आप नम्रता पूर्वक अपनी लघुता प्रकट करते हुए लिखते है :—

जॉनशीनी मीरोग़ालिबकी कहाँ, और मैं कहाँ?
वोह खुदाएफ़न थे, उनसे मुझको निस्बत कुछ नहीं॥

साक़िब साहबको किशोरावस्थासे ही शेरो शायरीकी ओर रुचि थी, किन्तु पिताजीके भयसे खुलते न थे। अपने सहपाठियोमे ग़ज़लें कह-कहकर शायर बने हुए थे। दिसम्बर १८८४ ई०की एक घटनाने आपको यकायक सबके सामने ला दिया।

उन दिनों आप अपने पिताके साथ इलाहाबादमे रहते थे। उनके पास कई उच्च कोटिके शायर बैठे हुए थे। गजलोंसे महफिल गर्म थी कि आपने भी एक गजल हिम्मत करके सुना दी। सुना तो लोगोने समझा कि किसीसे लिखा ली होगी। परीक्षाके तौरपर उसी वक़्त मिसरा दिया गया :—

"पर मारते हैं चर्खके सीनेपै फटाफट"

आपने लमहे भरमे गिरह-लगाकर सुनाया :—

ऐसे है मेरे नालओफ़ुग़ाके कबूतर।
पर मारते है चर्खके सीनेपै फटाफट॥

मिसरे पर इतनी सुन्दर गिरह चस्पाँ होते देख लोगोंका कौतूहल बढ़ा। आजमाइशके लिये निम्न मिसरे पर गजल कहनेकी फिर फर्माइश की गई :—

न वह आस्माँकी है गर्दिशें न वह सुबह है न वह शाम है ॥

आपने थोड़ी देरके परिश्रममें पूरी गजल लिखकर दे दी, जिसके दो शेर नीचे दिये जा रहे हैं :—

कहूँ हसरतोंका हुजूम क्या, दरेदिल तक आके वोह बेवफ़ा।
मुझे यह सुनाके पलट गया, कि "यहाँ तो मजमये आम है" ॥
न वोह महरो-माहकी ताबिशें, न वोह अख्तरोंकी नुमाइशें।
न वोह आस्माँकी है गर्दिशें न वोह सुबह है, न वोह शाम है ॥

गज़ल सुनी तो लोग सकतेमें आ गये। सुकुमार साकिबको लोग हैरत-से देखने लगे। शम्सउलउलेमा[1] मौलवी ज़काउल्लाह साहबने तो यहाँ तक कह दिया कि :—

"मियाँ साहबज़ादे अगर जिन्दा रहे तो अपने वक्तके मीर होंगे।"[2]

उत्साह बढा, तो विकसित होनेके अवसर मिलने लगे। मुशायरो और पत्र-पत्रिकाओंमे इनके कलामकी धूम-सी मच गई। १९१८में अली-गढ यूनीवर्सिटीकी सिलवर जुबली पर मुशायरेका भी वृहद आयोजन किया गया था। भारतके ख्याति-प्राप्त शायर कोने-कोनेसे आये थे। साकिब साहबकी गज़लकी खूब तारीफ हुई। सदरके अलावा एक साहब-ने वज्दकी हालतमें फर्माया—"हमारी दिली तमन्ना थी कि मिर्ज़ा गालिब मरहूमको देख लेते। खुदाका शुक्र है कि वह तमन्ना आज पूरी हो गई।"

साकिब साहब १८८७से १८९१ तक आगरा कालेजमे शिक्षा पाते रहे, स्थायी रूपसे लखनऊ रहते हैं।

---

[1]महामहोपाध्याय जितनी कोटिकी सरकारी उपाधि।
[2]दीवानेसाकिब, पृ० ३६।

(१)

जो सरपै बला आई, वोह ग़फ़लतसे ही आई।
बे सोये हुए ख़्वाबेपरीशाँ[1] नहीं देखा॥

(२)

कुछ न पूछो हाल अपना कुश्तयेतक़दीर[2] हैं।
मौतने खींचा है जिसको हम वही तसवीर हैं॥

(३)

मेरी दास्तानेग़मको वोह ग़लत समझ रहे हैं।
कुछ उन्हींकी बात बनती अगर एतबार होता॥

(४)

वही रात मेरी वही रात उनकी।
कहीं बढ़ गई है कहीं घट गई है[3]॥

---

[1] चिन्ताओंका स्वप्न; [2] अभागे।

[3] जब मैं चलूँ तो साया भी अपना न साथ दे।
जब तुम चलो ज़मीन चले, आस्माँ चले॥

—जलील

तेरी गलीमें मैं न चलूँ और सबा चले।
जब चाहे ये ख़ुदा ही तो बन्देकी क्या चले॥

—अज्ञात्

(५)

ख़ाली है जामेज़ीस्त[1] मगर कह रही है मौत।
'लबरेज़ तेरी उम्रका पैमाना हो गया'॥

(६)

जो अच्छा कर नहीं सकते तो क्यों तड़पूँ मैं बिस्तरपर।
दुआ देना नहीं आता तो सीखो बद्‌दुआ देना॥

(७)

मेरे पहलूसे अगर निकला तो मेरा क्या गया?
गुमशुदा दिल आप ही का एक मख़फ़ी[2] राज़ था॥

(८)

रोशनी डालके दुनियाको दिखाता था मशाल[3]।
यह चिराग़े सरेतुरबत[4] मेरा बेकार न था॥

(९)

पूछा न ज़िन्दगीमें यूँ तो किसीने आकर।
मरनेके बाद जो था, वह मुझको पूछता था॥

(१०)

मैं तो च्यूँटीके कुचलनेसे हज़र[5] रखता था।
फिर मुझे किसने तहेख़ानुएजल्लाद[6] किया?

---

[1] जीवन-प्याला; [2] गुप्त, छिपा हुआ; [3] अन्त; [4] क़ब्रपर; [5] परहेज़; [6] वधिकके घुटनेके नीचे।

(११)

दिल जलाकर मैंने दुनिया भरकी आँखें खोल दीं।
इस तरहका सुरमए अहले नजर पहले न था॥

(१२)

हवास तो हैं मुन्तशिर[1] खयाल मुन्तशिर नहीं।
जो देखता मैं जागकर वह देखता हूँ ख़्वाबमें॥

(१३)

यह न समझो कि फ़लक़ बरसरेबेदाद[2] नहीं।
बात ये है कि मुझे आदते फ़रियाद नहीं॥

(१४)

थी वफ़ादारोंके दमतक पुरसिशो,[3] क़दरेजफ़ा[4]।
फेंक दो अब क्या लिए बैठे हो खंजर हाथमें॥

(१५)

बाँट लें दुनियाको हम तुम मिलके ऐशोरंजमें।
एक जानिब क़हक़हे हों, एक तरफ़ फ़रियाद हो॥

(१६)

कौन ले मुफ़्तका झगड़ा कोई दीवाना है?
उनके सर कौन चढ़े दिलसे उतरनेके लिये॥

---

[1] बिखरे हुए; [2] अत्याचारी; [3] पूछ-ताछ; [4] अत्याचार-की क़दर।

(१७)

लूटनेवाले हमारी नींदके।
रात भर किस चैनसे सोते रहे!

(१८)

जान हाज़िर है लिये जाओ अमानत अपनी।
फिर ख़ुदा जाने, रहे या न रहे होश मुझे॥

(१९)

सदाएँ देके हमने एक दुनिया आज़मा देखी।
यही सुनते चले आये, 'बढ़ो आगे यहाँ क्या है'?

(२०,२१,२२)

हिज्रकी[1] शब[2] नालयेदिल[3] वोह सदा[4] देने लगे।
सुननेवाले रात कटनेकी दुआ देने लगे॥
सुननेवाले रो दिये सुनकर मरीज़ेग़मका हाल।
देखनेवाले तरस खाकर दुआ देने लगे॥
मुट्ठियोंमें ख़ाक लेकर दोस्त आये वक़्ते दफ़्न।
जिन्दगी भरकी मुहब्बतका सिला देने लगे॥

(२३)

जल्वेकी सैर देख तो लेती शुआएहुस्न[5]।
यह क्या कि दिलमें आग लगाकर निकल गई॥

---

[1]विरहकी, [2]रात्रि; [3]हृदयकी पुकार; [4]आवाज़;
[5]रूपकी किरण।

(२४)

किसीका रंज देखूँ यह नहीं होगा मेरे दिलसे।
नज़र सैयादकी[1] झपके तो कुछ कह दूँ अनादिलसे[2] ॥

(२५)

चमन न देख नशेमनको[3] देख ऐ बुलबुल!
बहार ही में कभी आग भी बरसती है ॥

(२६)

हम उनसे मिलके भी फ़ुरक़तका हाल कह न सके।
मज़ा विसालका[4] खोते अगर गिला[5] करते ॥

(२७)

इन्कार कीजिये क्यों सब राज़[6] खुल चुके हैं।
कुछ मेरे हालेग़मसे, कुछ आपके बयाँसे[7] ॥

(२८-२९)

सुलझ सकीं न मेरी मुश्किलें, मगर देखा,
उलझ गये थे जो गेसू[8] उन्हें सँवार आये ॥
बहुतसे याद हैं महफ़िलमें बैठनेवाले।
कभी तो भूलके कोई सरेमज़ार आये ॥

---

[1] शिकारीकी; [2] बुलबुलोंसे।
[3] घोंसले; [4] मिलनका।
[5] शिकायत; [6] भेद; [7] कथनसे।
[8] जुल्फ।

(३०)

कभी उठा कभी बैठा उमीदोयासके[१] हाथों।
बड़ी मुश्किलसे नामेइश्कको[२] ऊँचा किया मैंने॥

(३१)

दिल ही पाबन्देअलम[३] था वर्ना बज्मेऐशमें।
हम तेरी खातिरसे ता-इमकान[४] हँसते-बोलते॥

(३२)

शौकेपाबोसियेमहबूब[५] था वर्ना 'साकिब'!
संगेदरपै[६] कोई मौका था जबींसाईका[७]?

(३३)

बरगिश्ता[८] हुई दुनिया रस्मोरहे उल्फतसे।
एक मेरी तबीयत है जो बाज नहीं आती॥

(३४)

ज़माना बड़े शौकसे सुन रहा था।
हमीं सो गये दास्ताँ कहते-कहते॥

(३५)

जफ़ा उठानेकी आदत पड़ी तो क्योंकर जाय।
सितम सहे मगर इतने कहाँ कि जी भर जाय॥

---

[१] आशा-निराशाके; [२] प्रेमके नामको; [३] दुखी; [४] जहाँ तक सम्भव होता; [५] प्रेयसीके पाँव पडनेका चाव; [६] पत्थरके दरवाजे पर; [७] मस्तक रगड़नेका; [८] विरुद्ध।

(३६)

वह उलटकर जो आस्तीं निकले।
ज़ुल्म जामेसे अपने बाहर था॥

(३७)

दिलने रग-रगसे छिपा रक्खा है राज़े इश्क़े दोस्त।
जिसको कहदे नब्ज़ ऐसी मेरी बीमारी नहीं॥

(३८)

विसालोहिज्रमें छिपता है दिलका हाल कहीं?
बुझे तो प्यास सिवा हो, जले तो बू आये॥

(३९)

इत्तहादे बाहमीका है नतीजा ज़िन्दगी।
ज़र्रे क्या शैं थे मगर मिलनेसे इन्सॉं हो गया॥

(४०)

उनकी बज़्मेनाज़में तो साँस भी दिलने न ली।
नालाकश बरसोंका एक तसवीर बनके रह गया॥

(४१)

दिलने अपने हसरतोंके क़ाफ़िले ठहरा दिये।
इस क़दर आबाद पहले कूचयेक़ातिल न था॥

(४२)

शिकायत ज़ुल्मेखंजरकी नहीं, ग़म है तो इतना है।
ज़बानेग़ैरसे क्यों मौतका पैग़ाम आता है॥

(४३)

दिलमें दो बूँदें लहूकी है मगर ऐ तेग़ज़न[1]!
एक दामनपर रहेगी और एक शमशीरपर॥

(४४)

न आँख बन्द करूँ गर तो क्या करूँ या रब!
वोह आ रहे हैं तमाशायेजाँकनीके[2] लिये॥

(४५)

तीरगी[3] नाम है दिलवालोंके उठ जानेका।
जिसको शब कहते हैं, मक़तल[4] है वह परवानेका॥

(४६)

बला है, अहदेजवानीसे खुश न हो ऐ दिल!
सम्हल कि उम्रकी दुनियामें इनकलाब आया॥

(४७)

यह किसने 'गमकदा'[5] दुनियाका नाम रक्खा है।
हमें तो कोई यहाँ दर्द-आश्ना[6] न मिला॥

(४८)

नाजोअदाकी चोटें सहना तो और शै है।
ज़ख्मोंको देख लेता कोई, तो देखता मैं॥

---

[1] तलवार मारनेवाले, अर्थात् प्रेमपात्र; [2] मृत्युका तमाशा देखनेके; [3] अन्धेरा; [4] वध-स्थान; [5] विपत्ति-स्थान; [6] सहानुभूति वाला।

(४९)

ऊरूसे[1]दहरको दिल देके आजमाऊँ क्या ?
सँवारनेमें जो बिगड़े उसे बनाऊँ क्या ?

(५०)

अपने ही दिलकी आगमें आखिर पिघल गई।
शमएहयात[2] मौतके साँचेमें ढल गई॥

(५१)

शादीमें भी कुछ ग़मके पहलू निकल आते हैं।
बेसाख्ता हँसनेमें आँसू निकल आते हैं॥

४ नवम्बर १९४६ ई०

---

[1]संसार-रूपी दुल्हन; [2]जीवन रूपी मोमबत्ती।

२७

मौलाना फ़ज़्लुलहसन 'हसरत' मोहानी

(जन्म—मोहाना १८७५ ई०)

हसरतकी शायरी इश्ककी शायरी है और वह सासारिक प्रेम (मजाजी इश्क)से प्रारम्भ होकर ईश्वरीय प्रेम (हकीक़ी इश्क) और देश-प्रेम पर समाप्त होती है। आपने उर्दू-साहित्यकी प्रशसनीय सेवाएँ की है।

हसरत सन् १८७५मे मोहाना (जिला उन्नाव)मे-उत्पन्न हुए। एण्ट्रेन्स पास करनेसे पहले ही शेर कहने लगे थे। १९०३ मे अलीगढ़से बी० ए० पास किया और १९०४से कांग्रेसमे शामिल हो गये। १९०८मे दो वर्षकी सख्त कैद और फिर १९१६में दो वर्षकी सादा कैद देश-भक्तिके पुरस्कार-स्वरूप मिली। नजरबन्द भी रहे और १९२०के बाद असहयोग आन्दोलनमे आगे आये और कई बार जेल गये। आपने राज-नैतिक क्षेत्रोमे अपने उग्र विचारो और त्यागके कारण काफी ख्याति प्राप्त की। १९३२के बाद आप साम्प्रदायिक आन्दोलनोमे भाग लेने लगे है। हसरतने देश, उर्दू-साहित्य और मुस्लिम कौमकी जितनी भी सेवाएँ की है वे अनुपम है। आप बहुत दिनोसे कानपुरमे रहते है। और इस युगके 'मीर' समझे जाते है।

(१)

हालाँ कि इब्तदा भी नहीं है शबाबकी।
उनको कमालेहुस्नका दावा अभीसे है॥

(२)

खुलके हमसे कभी वोह मिल न सके।
बावजूदे कमाले दिलसोजी[1] ॥

(३)

ग़ैरकी जद्दोजहदपर तकिया न कर कि है गुनाह।
कोशिशे जाते ख़ासपर नाजकर, ऐतमाद कर॥

(४)

वह जुर्मेआरज़ूपर जिस क़दर चाहें सजा दे लें।
मुझे खुद ख़ाहिशेताजीर है मुलज़िम हूँ इक़बाली॥

(५-६)

वोह शर्माए बैठे हैं गर्दन झुकाए।
गजब हो गया इक नजर देख लेना॥
न भूलेगा वह वक़्तेरुखसत किसीका।
मुझे मुड़के फिर इक नजर देख लेना॥*

---

[1] प्रेमाग्निमे झुलसते हुए भी।

*क़यामत बनके पलटी है निगाहेनाज क़ातिलकी।
यह मौजेवापिसीं किश्ती डुबो देगी मेरे दिलकी॥
—शेरी भोपाली

(७)

मैं क्या कहूँ कि शर्मसे कैसे झुकाके सिर।
पूछा उन्होंने हसरतेबीमारका मिज़ाज॥

(८)

नाकामियोंपै अपनी हँसी आ गई थी आज।
सो, कितने शर्मसार हुए बेकसीसे हम॥

(९)

वोह् दर्दमन्द हूँ 'हसरत' कि अब बजाये सितम।
करे जो लुत्फ़ भी कोई तो अश्कबार हूँ मैं॥

(१०)

मिलते हैं इस अदासे कि गोया ख़फा नहीं।
क्या आपकी निगाहसे मैं आश्ना नही?

(११)

अदा न हमसे हुआ हक़ तेरी गुलामी का।
नसीबे शौक़ रहा दाग नातमामीका॥

(१२)

तुम जो अफ़सुर्दा[१] हुए सुनके मेरा हाल सो क्यों?
सरसरी तौरसे बातोंमें उड़ा देना था॥

---

[१] मुर्झाना, वुझना।

(१३)

वोह बिगड़े बहुत बदगुमानीके बाइस ।
न तड़पे जो हम नातवानीके[1] बाइस[2] ॥

(१४)

रानाइये ख़यालको ठहरा दिया गुनाह ।
जाहिद भी किस क़दर है मजाक़ेसख़ुनसे दूर ॥

(१५)

यह क्या मुन्सिफ़ी है कि महफ़िलमें तेरी ।
किसीका भी हो जुर्म पाएँ सजा हम ॥

(१६)

खन्दये[3] अहले जहाँकी मुझे परवाह क्या थी ।
तुम भी हँसते हो मेरे हालपै रोना है यही ॥

(१७-१८)

छिपे जो मुझसे तो क्या यह भी इक अदा न हुई ।
वोह चाहते थे न देखे कोई अदा मेरी ॥
कहीं वह आके मिटा दें न इन्तजारका लुत्फ़ ।
कहीं क़बूल न हो जाय इल्तिजा मेरी ॥

(१९-२०)

आईनेमें वोह देख रहे थे बहारेहुस्न ।
आया मेरा ख़याल तो शर्माके रह गए ॥

---

[1] निर्बलताके; [2] कारण; [3] मुस्कान ।

दावाए आशिक़ी है तो 'हसरत' करो निबाह।
यह क्या कि इब्तदा हीमें घबराके रह गये॥

(२१)

देखा जो कहीं गर्मेनज़र बज़्मेउदूमें।
वोह डाट गये मुझको बराबरसे निकलकर॥

(२२-२३)

क्या करें ख़ूसे[1] हूं मजबूर कि पीना है ज़रूर।
वर्ना 'हसरत' रमजाँका यह महीना है ज़रूर॥
उम्र ही क्या है, वोह कमसिन है अभी नामेख़ुदा।
उनपै मरना हो तो कुछ दिन हमें जीना है ज़रूर॥

(२४-२६)

मालूम सब है पूछते हो फिर भी मुद्दआ।
अब तुमसे दिलकी बात कहें क्या ज़बाँसे हम?
ऐ ज़ुहदेख़ुश्क तेरी हिदायतके वास्ते।
सौगाते इश्क लाये हैं कूए बुताँसे हम॥
'हसरत' फिर और जाके करें किसकी बन्दगी।
अच्छा जो सर उठाएँ भी, उस आस्ताँसे हम॥

(२७)

सुनके कासिदसे मेरा हाल, कहा तो यह कहा।
है वह बदनाम, कहीं हमको भी रुसवा न करे॥

---

[1] अभ्याससे।

(२८)

फिर भी है तुमको मसीहाईका दावा देखो।
मुझको देखो, मेरे मरनेकी तमन्ना देखो॥

(२९-३०)

हमें वक़्फ़ेग़म सरब सर देख लेते।
वोह तुम कुछ न करते मगर देख लेते॥
तमन्नाको फिर कुछ शिकायत न रहती।
जो तुम भूलकर भी इधर देख लेते॥

(३१)

क्या कहते हो कि और लगालो किसीसे दिल।
तुम-सा नज़र भी आए कोई दूसरा मुझे॥

(३२)

रायगाँ[1] 'हसरत' न जायेगा मेरा मुश्तेग़ुबार[2]।
कुछ जमीं ले जायेगी, कुछ आस्माँ ले जायेगा॥

(३३)

वोह कहना तेरा याद है वक़्तेरुख़सत।
"कभी ख़त भी हमको लिखा कीजिएगा"॥

(३४)

जब उनसे अदबने न कुछ मुँहसे माँगा।
तो इक पैकरेइल्तिजा हो गये हम॥

---

[1] व्यर्थ; [2] मुट्ठी भर खाक।

(३५)

वोह जब यह कहते हैं 'तुझसे ख़ता जरूर हुई।'
'मैं वेकुसूर भी कह दूँ कि 'हाँ जरूर हुई'॥

(३६)

वोह बेपरदह सोते हैं जाहिरमें लेकिन।
दुपट्टा यूँ ही मुँहपै डाले हुए हैं॥

(३७)

खुल सके जबतलक न राहेमुराद।
मंज़िलेसब्रमें कयाम करो॥

(३८)

मालूम है दुनियाको यह 'हसरत'की हकीकत।
ख़िलवतमें[1] वोह मयख्वार है जिल्वतमें[2] नमाज़ी॥

(३९)

वोह चुप हो गए मुझसे 'क्या' कहते-कहते।
कि दिल रह गया मुद्दआ कहते-कहते॥

(४०)

लिक्खा था अपने हाथसे तुमने जो एक बार।
अबतक हमारे पास है वोह यादगार ख़त॥

---

[1] एकान्तमें; [2] ज़ाहिरामें।

(४१)

उसने कहीं न हर्फ़तसल्ली भी हो लिखा।
पढ़ते हैं इस उम्मीदपर हम बार-बार ख़त॥

(४२)

हमको यही क्या कम है कि बन्दे हैं तुम्हारे।
दावाए मुहब्बतके सज़ावार कहाँ हैं॥

(४३)

पढ़िये इसके सिवा न कोई सबक़।
"ख़िदमतेख़ल्क़ औ इश्क़ हज़रते हक़"॥

(४४)

बनकर गदायेइश्क़ गये थे, मगर फिरे।
सुलतान होके यारकी दौलत सरासे हम॥

(४५)

हम हाल उन्हें यूँ दिलका सुनानेमें लगे हैं।
कुछ कहते नहीं, पाँव दबानेमें लगे हैं॥

(४६)

न सूरत कहीं शादमानीकी देखी।
बहुत सैर दुनियाएफ़ानीकी देखी॥

(४७)

ग़मे आरज़ूका 'हसरत'! सबब और क्या बताऊँ?
मेरी हिम्मतोंकी पस्ती, मेरे शौककी बलन्दी॥

(४८-४९)

मेरी खतापै आपको लाजिम नहीं नजर।
यह देखिये मुनासिवे शानेअता है क्या।।

हम क्या करें न तेरी अगर आरजू करें।
दुनियामें और भी कोई तेरे सिवा है क्या ?

(५०)

शिकवयेगम तेरे हुजूर किया।
हमने वेशक वडा कुसूर किया।।

(५१)

रियायत जो उस शोखकी थी जरूरी।
खता बन गई खुद मेरी बेकुसूरी।।

१५ नवम्बर १९४६

२८

शौकत अलीख़ाँ 'फ़ानी'

(जन्म ज़िला बदायूँ १८७९ मृत्यु १९४१ ई०)

सन १८७९मे ज़िला बदायूँके इस्लामनगरमे उत्पन्न हुए। १९०१में बी० ए० और १९०८मे एल०-एल० बी०की डिग्री प्राप्त की। ११ वर्षकी आयुसे ही शेर कहने लगे और २० सालकी उम्रमे पहला दीवान पूर्ण कर लिया। किन्तु खेद है कि न जानें कैसे नष्ट हो गया। १९०६में दूसरा दीवान तैयार किया तो वह भी गुम हो गया। इससे फानीके हृदयको बड़ी ठेस पहुँची और उन्होने फिर १९१७ तक शेरोशायरीकी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। इसके बाद जो कुछ लिखा वह 'नकीब' बदायूँके दफ्तरसे पहले दीवानकी सूरतमे और दूसरा दीवान 'वाकयाते फानी' १९२६मे और एक 'वजदानियाते फ़ानी' नामसे प्रकाशित हुए। हमने अन्तिम दो पुस्तकोसे फ़ानीके कलामका सकलन किया है।

फानीका जीवन असुविधाओ, चिन्ताओं और वेदनाओंसे परिपूर्ण रहा है। ऐसी स्थितिमे उनका कलाम भी व्यथा-पूर्ण होना निश्चित था। फ़ानीने 'ग़ालिब'का मस्तिष्क और 'मीर'का हृदय पाया था। १६ अगस्त १९४१को हैदराबादमे आपका अन्तकाल हो गया।

(१)

वो है मुख़्तार, सज़ा दे कि जज़ा दे 'फ़ानी' !
दो घड़ी होशमें आनेके गुनहगार हैं हम ।।

(२)

दुनियामें हाले आमदोरफ़्ते बशर न पूछ ।
बेअख़्तियार आके रहा, बेख़बर गया ।।

(३)

देख 'फ़ानी' ! वोह तेरी तदबीरकी मैयत[1] न हो ।
इक जनाज़ा जा रहा है, दोशपर[2] तक़दीरके ।।

(४)

क़िस्मतके हर्फ़ सिजदये दरसे मिटा तो दूँ ।
दिल काँपता है शोख़ियेतद्‌बीर देखकर ।।

(५)

हमको मरना भी मयस्सर नहीं जीनेके बग़ैर ।
मौतने उम्रेदोरोज़ाका बहाना चाहा ।।

(६)

मेरी हविसको ऐशे दो आलम भी था क़ुबूल ।
तेरा करम कि तूने दिया दिल दुखा हुआ ।।

---

[1] अर्थी; [2] कन्धा ।

(७)

'फ़ानी' हम तो जीते जी वोह मैयत हैं बेगोरोकफ़न।
ग़ुरबत[1] जिसको रास न आई, और वतन भी छूट गया॥

(८)

ज़िन्दगी जब्र है और जब्रके आसार नहीं।
हाय इस क़ैदको ज़ंजीर भी दरकार नहीं॥

(९)

जिये जानेकी तोहमत किससे उठती, किस तरह उठती?
तेरे ग़मने बचाई ज़िन्दगीकी आबरू बरसों॥

(१०)

ख़फा न हो तो यह पुछूँ कि तेरी जानसे दूर।
जो तेरे हिज्रमें जीता है, मर भी सकता है?

(११)

इसीको तुम मगर ऐ अहलेदुनिया! जान कहते हो।
वोह काँटा जो मेरी रग-रगमें रह-रहकर खटकता है॥

(१२)

ज़िक्र जब छिड़ गया क़यामतका।
बात पहुँची तेरी जवानी तक॥

---

[1] परदेश।

(१३-१४)

'फ़ानी' को या जुनूँ है, या तेरी आरज़ू है।
कल नाम लेके तेरा दीवानावार रोया ॥

आया है बादे मुद्दत बिछुड़े हुए मिले हैं।
दिलसे लिपट-लिपटकर ग़म बार-बार रोया ॥

(१५)

अहदेजवानी ख़त्म हुआ अब मरते हैं ना जीते हैं।
हम भी जीते थे जबतक, मर जानेका ज़माना था ॥

(१६)

नामुरादी हदसे गुज़री हालेफानी कुछ न पूछ।
हर नफस है इक जनाज़ा आह बेतासीरका ॥

(१७)

नहीं ज़रूर कि मर जाएँ जाँनिसार तेरे।
यही है मौत कि जीना हराम हो जाये ॥

(१८)

अब लबपै वोह हंगामये फरियाद नहीं है।
अल्लाह रे तेरी याद कि कुछ याद नहीं है ॥

(१९-२०)

बर्कको[1] अब क्या गरज़, क्या रह गया, क्या जल गया ?
जल गया ख़िरमनमें[2] जो कुछ था मेरी तक्दीरका ॥

---

[1] बिजलीको; [2] खलिहानमें।

फ़िक्रेराहत छोड़ बैठे हम तो राहत मिल गई।
हमने किस्मतसे लिया जो काम था तद्बीरका ॥

(२१)

ग़मके ठहोके कुछ हों बलासे, आके जगा तो जाते हैं।
हम हैं मगर वह नींदके माते, जागते ही सो जाते हैं ॥

(२२)

भड़कके शोलयेगुल तू ही अब लगा दे आग।
कि बिजलियोंको मेरा आशियाँ नहीं मालूम ॥

(२३)

जब तेरा जिक्र आगया हम दफ़अतन चुप हो गये।
वोह छिपाया राजेदिल हमने कि अफशाँ[1] कर दिया ॥

(२४)

ग़म मिटा दिया, ग़मको लज्जतआश्ना[2] करके।
क्या किया सितमगरने खूगरेजफा[3] करके ॥

(२५)

कलतक यही गुलशन था, सैयाद भी, बिजली भी।
दुनिया ही बदल दी है तामीरेनशेमनने[4] ॥

---

[1] प्रकट; [2] स्वादको जानने वाला।
[3] अत्याचार-सहनका अभ्यस्त।
[4] घोंसलोंके निर्माणने।

(२६)

माना हिजाबेदीद[1] मेरी बेखुदी[2] हुई।
तुम वजहे बेखुदी नहीं, यह एक ही हुई!

(२७)

मेरे शौकने सिखाया उसे शेवयेतग़ाफुल[3]।
न मुझे नियाज़[4] होता, न वोह बेनियाज़[5] होता॥

(२८)

हमें तेरी मुहब्बतमें फकत दो काम आते हैं।
जो रोनेसे कभी फ़ुर्सत मिली खामोश हो जाना॥

(२९)

इक फिसाना सुन गये इक कह गये,।
मैं जो रोया मुस्कराकर रह गये॥

(३०)

दिल उनके न आनेतक लबरेज़ शिकायत था।
वोह आए तो अपनी ही तकसीर नज़र आई॥

(३१-३२)

सुनके तेरा नाम आँखें खोल देता था कोई।
आज तेरा नाम लेकर कोई ग़ाफिल हो गया॥

---

[1] सम्मुख देखनेमें बाधक पर्दा; [2] आत्मविस्मृति।
[3] उपेक्षाका अभ्यास; [4] कामना, प्रेम-प्रदर्शन; [5] लापरवाह।

मौत आनेतक न आये अब जो आये हो, तो हाय !
ज़िन्दगी मुश्किल ही थी, मरना भी मुश्किल हो गया ।।

(३३)

आप मेरी लाशपर हुज़ूर, मौतको कोसते तो हैं ।
आपको यह भी होश है किसने किसे मिटा दिया ?

(३४)

ख़ुद मसीहा, ख़ुद ही क़ातिल हैं तो वे भी क्या करें ?
ज़ख्मेदिल पैदा करें या ज़ख्मेदिल अच्छा करें ।।

(३५)

छुटे जब क़ैदेहस्तीसे तो आये कुंजेतुरबतमें[1] ।
रिहा होते हैं हम, यानी बदल देते हैं ज़िन्दाँको[2] ।।

(३६-३६)

दिल है वो ताक[3] ग़मकदएउम्रेदोशका[4] ।
रक्खी है जिसपै शमएतमन्ना बुझी हुई ।।

मैं मंज़िलेफ़नाका निशानेशकिस्ता हूँ ।
तसवीरेगर्द बादेवफ़ा हूँ मिटी हुई ।।

कीजे दुआ कि उफ़ तो करे दर्दमन्देइश्क़ ।
अव्वल तो दिलकी चोट, फिर इतनी दुखी हुई ।।

---

[1] क़ब्ररूपी उद्यानमे; [2] कारागृहको ।
[3] आला; [4] जीवनकी विपत्तियोका ।

लाज़िम है अहतियात, नदामत नहीं ज़रूर।
ले अब छुरी तो फेंक लहूसे भरी हुई॥

(४०)

तुरबतके फूल शामसे मुर्झाके रह गये।
रो-रोके सुबह की मेरी शमयेमज़ारने॥

(४१)

मेरी मैयतपै उनका तर्ज़ेमातम किस बलाका है!
दिले बेमुद्दआसे पूछते है 'मुद्दआ क्या है' ?

(४२)

नाउमीदी मौतसे कहती है अपना काम कर।
आस कहती है ठहर, ख़तका जवाब आनेको है॥

(४३)

बिजलियोसे ग़ुरबतमें कुछ भरम तो बाकी है।
जल गया मकाँ यानी था कोई मकाँ अपना॥

(४४)

वादेके ये तेवर है कह दूँ कि यक़ीं आया।
अब उनसे कोई क्योंकर कह दे कि नहीं आया॥

(४५)

अपने कमालेशौकपर हश्रका दिन है मुनहसिर।
वादयेदीद चाहिये, ज़हमतेइंतज़ार क्या ?

(४६)

किसीकी कश्ती तहे गरदाबे फ़ना जा पहुँची ।
शोर-लबएक जो 'फ़ानी' लबेसाहिलसे उठा ॥

(४७)

हूँ असीरे फ़रेबे आजादी ।
पर हैं, और मश्क़े हीलयेपरवाज ॥

(४८)

दुनिया मेरी बला जाने मँहगी है या सस्ती है ।
मौत मिले तो मुफ़्त न लूँ, हस्तीकी क्या हस्ती है ?

(४९)

जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते ।
क्या तुमने मुहब्बतकी हर रस्म उठा डाली ?

(५०)

मुस्कराये वोह हालेदिल सुनकर ।
और गोया जवाब था ही नहीं ॥

(५१)

कुछ कटी हिम्मतेसवालमें उम्र ।
कुछ उम्मीदेजवाबमें गुज़री* ॥
२२ नवम्बर १९४६

---

* इसी मजमूनका किसीका शेर याद आया :—
उम्रेदराज माँगकर लाया था चार रोज ।
दो आरज़ूमें कट गए, दो इन्तज़ारमें ॥

२६

असग़रहुसैन 'असग़र' गोण्डवी

(जन्म जिला गोन्डा १८८४ मृ० १९३६)

असग़रकी शायरी बहुत उच्च कोटिकी है। मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद और डा० सर तेज बहादुर सप्रू जैसे ख्याति-प्राप्त विद्वानोने उनके कलामकी मुक्त कठसे प्रशसा की है। उन्होने उर्दू गज़लमें नवीन चमत्कार पैदा कर दिया है।

असगर एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। जिगर मुरादाबादी जैसे रिन्द जो मुशायरोमे भी बैठे हुए पीते रहते हैं आपके यहाँ जानेपर शराबकी ओर देखते भी नही थे। जिगरने अपने 'शोलयेतूर, मे' स्थान-स्थान पर असगरके प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट की है।

असग़र १ मार्च १८८४को गोण्डेमें उत्पन्न हुए और १९३६ ई०में समाधि पाई। अंगरेज़ी, अरबी, फारसीकी अच्छी योग्यता रखते थे। चश्मेका कारखाना था। जीवनके अन्तिम दिनोमें हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबादके त्रयमासिक पत्र 'हिन्दुस्तानी'के सम्पादक थे।

(१)

सुनता हूँ बड़े ग़ौरसे अफ़सानएहस्ती।
कुछ ख्वाब है, कुछ अस्ल है, कुछ तर्जेअदा है॥

(२)

रूदादेचमन[1] सुनता हूँ इस तरह क़फ़समें।
जैसे कभी आँखोंसे गुलिस्ताँ नहीं देखा॥

(३)

नियाज़ेइश्कको[2] समझा है क्या ऐ वाइजेनादाँ!
हज़ारों बन गये काबे जबीं मैंने जहाँ रख दी॥

(४)

असीरानेबलाकी[3] हसरतोंको[4] आह क्या कहिये।
तड़पके साथ ऊँची हो गई दीवार जिन्दाँकी[5]॥

(५)

बारेअलम[6] उठाया, रंगेनिशात[7] देखा।
आये नहीं हैं यूँही अन्दाज़ बेहिसीके[8]॥

---

[1] उद्यानका वृत्तान्त; [2] प्रेम पद्धतिको।
[3] विपत्तियोंके शिकारियोंकी, कैदियोकी।
[4] अभिलाषाओंको, प्रयत्नों; [5] कारावास; [6] दुखका बोझ।
[7] भोगविलास के अनुभव; [8] बेहोशी, आत्मरत।

(६)

न मैं दीवाना हूँ 'असगर' न मुझको शौके उरियानी[1]।
कोई खींचे लिये जाता है खुद जेबोगिरेबाँको ॥

(७)

जीना भी आ गया मुझे मरना भी आ गया।
पहिचानने लगा हूँ तुम्हारी नजरको मैं ॥

(८)

आलमकी फिज़ा पूछो महरूमेतमन्नासे।
बैठा हुआ दुनियामें, उठ जाय जो दुनियासे ॥

(९)

होश किसीका भी न रख जल्वागहे[2]नियाज़में[3]।
बल्कि खुदाको भूल जा, सज्दयेबेनियाज़में[4] ॥

(१०)

यह दीन है, वोह दुनिया, यह काबा वोह बुतखाना।
इक और कदम बढ़कर ऐ हिम्मते मर्दाना ॥

(११)

तेरा जमाल है, तेरा खयाल है, तू है।
मुझे यह फुरसतेकाविश कहाँ कि क्या हूँ मैं ?

---

[1] नग्न रहनेका चाव, [2-3] ईश्वरके प्रासाद, प्रेममन्दिरमें; [4] भक्तिकी तल्लीनतामें।

(१२)

वे शोरशें, निजामे जहाँ जिनके दमसे हैं।
जब मुख़्तसिर किया, उन्हें इन्साँ बना दिया ॥

(१३)

क़फ़स क्या, हल्क़ाहाये दाम क्या, रंजेअसीरी क्या ?
चमनपर मिट गया जो हर तरह आज़ाद होता है ॥

(१४)

क्या दर्देहिज्र और क्या यह लज्ज़तेविसाल !
इससे भी कुछ बुलन्द मिली है नज़र मुझे ॥

(१५)

जिसपै मेरी जुस्तजू ने डाल रक्खे थे हिजाब।
बेख़ुदीने अब उसे महसूसोउरियाँ कर दिया ॥

(१६)

खस्तगीने[१] कर दिया उसको रगेजाँसे क़रीब।
जुस्तजू ज़ालिम कहे जाती थी मंज़िल दूर है ॥

(१७)

बच, हुस्नेतअय्युनसे ज़ाहिर हो कि बातिन हो।
यह क़ैद नज़रकी है, वोह फ़िक्रका ज़िन्दाँ है ॥

---

[१] थकान, ग़रीबी।

(१८)

लौ शमअ़ हकीकतको अपनी ही जगहपर है।
फ़ानूसकी गर्दिशसे, क्या-क्या नजर आता है॥

(१९)

बहुत लतीफ इशारे थे चश्मेसाकीके।
न मैं हुआ कभी बेखुद न होशियार हुआ॥

(२०)

आगोशमें साहिलके क्या लुत्फ़ेसकूँ उसको।
यह जान अजल ही से परवरदए तूफाँ है॥

(२१)

सारा हुसूल इश्ककी नाकामियोंमें है।
जो उम्र रायगाँ है वही रायगाँ नहीं॥

(२२)

सौ बार तेरा दामन हाथोंमें मेरे आया।
जब आँख खुली देखा अपना ही गिरेबाँ है॥

(२३)

रख दिये दैरोहरम, सर मारनेके वास्ते।
बन्दगीको बेनियाजे कुफ़्र-ओ-ईमाँ कर दिया॥

(२४)

तू वर्केहुस्न और तजल्लीसे यह गुरेज।
मैं ख़ाक और जौके तमाशा लिए हुए॥

(२५)

बुलबुलेज़ारसे गो सहनेचमन छूट गया।
उसके सीनेमें हैं इक शोलयेगुलफ़ाम अभी॥

(२६)

यहाँ तो उम्र गुज़री है इसी मौजेतलातुममें।
वे कोई और होंगे, सैरेसाहिल देखनेवाले॥

(२७)

जो नक़्श है हस्तीका धोका नज़र आता है।
पर्देपै मुसव्वर ही तनहा नज़र आता है॥

(२८)

दास्ताँ उनकी अदाओंकी है रंगीं, लेकिन।
उसमें कुछ ख़ूनेतमन्ना भी है शामिल मेरा॥

(२९)

दैरोहरम भी मंज़िले जानाँमें आये थे।
पर शुक्र है कि बढ़ गये दामन बचाके हम॥

(३०)

चमक दमकपर मिटा हुआ है, यह बाग़वाँ तुझको क्या हुआ है?
फ़रेबे शबनममें मुब्तिला है, चमनकी अबतक ख़बर नहीं है॥

(३१)

सहने हरम नहीं है, ये कूएबुताँ नहीं।
अब कुछ न पूछिए कि कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥

(३२)

कहर है थोड़ी-सी भी ग़फलत तरीके इश्क़में ।
आँख झपकी क़ैसकी और सामने महमिल न था ॥

(३३)

तड़पना है, न जलना है, न जलकर ख़ाक होना है ।
यह क्यों सोई हुई है, फ़ितरते परवाना बरसोंसे ॥

(३४)

यह आस्ताने यार है सहनेहरम नहीं ।
जब रख दिया है सर तो उठाना न चाहिये ॥

(३५,३६,३७)

एक ऐसी भी तजल्ली आज मयख़ानेमें है ।
लुत्फ पीनेमें नहीं है, बल्कि खो जानेमें है ॥

जल्वये हुस्ने परिस्तिश, गर्मिये हुस्नेनियाज़ ।
वर्ना कुछ काबेमें रक्खा है न बुतख़ानेमें है ॥

मैं यह कहता हूँ फनाको भी अता कर ज़िन्दगी ।
तू कमालेज़िन्दगी कहता है मर जानेमें है ॥

(३८)

पहली नज़र भी आपकी, उफ ! किस बलाकी थी ।
हम आजतक वोह चोट है दिलपर लिए हुए ॥

(३९)

रिन्द जो ज़र्फ़ उठालें वही साग़िर बन जाय ।
जिस जगह बैठके पी लें वही मयख़ाना बने ॥

(४०)

वे इश्क़की अज़मतसे शायद नहीं वाक़िफ़ हैं।
सौ हुस्न करूँ पैदा, एक-एक तमन्नासे॥

(४१)

तूने यह एजाज क्या ऐ सोजेपिन्हा कर दिया ?
इस तरह फूँका कि आख़िर जिस्मको जाँ कर दिया॥

(४२)

कीजिये आज किस तरह दौड़के सजदये नियाज़।
यह भी तो होश अब नहीं, पाँव कहाँ है, सर कहाँ॥

(४३)

सौ बार जला है तो यह सौ बार बना है।
हम सोख़्ता जानोंका नशेमन भी बला है॥

(४४)

यह भी फ़रेब-से हैं कुछ दर्दआशिक़ीके।
हम मरके क्या करेंगे, क्या कर लिया है जीके ?

(४५)

अगर ख़ामोश रहूँ मैं तो तू ही सब कुछ है।
जो कुछ कहा तो तेरा हुस्न हो गया महदूद॥

(४६)

मजनूँकी नज़रमें भी शायद कोई लैली है।
एक-एक बगोलेको दीवाना बना आई॥

(४७-४८)

इक जहदे कशाकश है, हस्ती जिसे कहते हैं।
कफ़्फ़ारका मिट जाना, खुद मर्गेमुसलमाँ है।।
एक-एक नफ़समें है सदमर्ग बला मुज़मिर।
जीना है बहुत मुश्किल, मरना बहुत आसाँ है।।

(४६)

आदमी नहीं सुनता आदमीकी बातोंको।
पैकरे अमल बनकर ग़ैबकी सदा हो जा।।

(५०)

ऐ काश ! मैं हक़ीक़ते हस्ती न जानता।
अब लुत्फ़ेख्वाब भी नहीं अहसासेख्वाबमें।।

(५१)

उभरना हो जहाँ, जी चाहता है डूब मरनेको।
जहाँ उठती हो मौजें हम वहाँ साहिल समझते हैं।।

२६ नवम्बर १६४६

३०

सिकन्दरअली 'जिगर' मुरादाबादी

(जन्म १८९० ई०)

मालूम होता है अल्लाहमियाँ जब अपने बन्दोको हुस्न तकसीम कर रहे थे, तब हजरते जिगर कौसर पर बैठे पी रहे थे । उन्हे जिगरकी यह मस्ती और बेपरवाही शायद पसन्द न आई और कुढकर हुस्नके एवज इश्क अता फर्माया ताकि जिगर उम्रभर जलते और बुझते रहे ।

रंग आबनूसी, मुँहपर चेचकके दाग, बूटा-सा कद, सरके बाल घने, रूखे और बेतरतीब । मशहूर रिन्द ऐसे कि मुशायरोमे भी पीकर आये और मुनासिब समझे तो वहाँ बैठकर भी पिये और झूम-झूम कर गजल पढे । चाल-ढालमे मस्ती और रिन्दी । शक्लोशबाहतसे शायर होनेका कतई यकीन न आये । मगर बड़े-बडे मुशायरो और रेडियोके अच्छे मुशायरेके प्रोग्रामोमे आपका होना लाजमी । हजरते जिगर मुशायरोके रूहेंरवाँ है । आप न हो तो सब फीका-फीका मालूम होता है ।

हजरते जिगरके कलामकी अपनी विशेषता है । वे इश्किया गजल लिखते है । हुस्नो इश्क और शराबो रिन्दीकी आसान लफ्जोमे ऐसी दिलकश तसवीर खीचते है कि सुननेवाले कलेजा थाम कर रह जाते है । और फिर कहनेका ढंग भी उनका अपना है । मालूम होता है कोई जादूगर मोहनी-सी डाल रहा है ।

लोगोका खयाल था कि जिगर पीना छोड़ दे तो फिर उनसे ऐसा

चुटीला कलाम नही लिखा जायगा । मगर उनकी रिन्दी उनके कलेजेको खुरच-खुरच कर खाये जा रही थी——उनके लिये वबाले जान हो रही थी। आखिर उन्हे तौबा करनी पडी । और शुक्र है कि इस तौबासे उनकी सेहत और कलाम पहलेसे ज्यादा निखरे है ।

गजलकी दुनियाँमें वे अपना एक खास मर्तबा रखते है ।

(१)

तेरी आँखोंका कुछ क़ुसूर नहीं।
हाँ, मुझीको ख़राब होना था॥

(२)

जो पड़ी दिलपै सह गये लेकिन।
एक नाज़ुक-सी बातने मारा॥

(३)

अर्ज़े नियाज़े ग़मको लब आश्ना न करना।
यह भी इक इल्तिजा है, कुछ इल्तिजा न करना॥

(४)

कोई समझ सके तो कम्बख़्त दिलसे समझे।
दिलमें भी उसके रहना, फिर दिलमें जा न करना॥

(५)

मेरा जो हाल हो सो हो बर्क़ेनजर गिराये जा।
मैं यूँही नालाकश रहूँ, तू यूँही मुस्कराये जा॥

(६-९)

जो अब भी न तकलीफ़ फ़र्माइयेगा।
तो बस हाथ मलते ही रह जाइयेगा॥

मिटाकर हमें आप पछताइयेगा।
कमी कोई महसूस फ़र्माइयेगा॥

सितम, इश्कमें आप आसाँ न समझें।
तड़प जाइयेगा, जो तड़पाइयेगा॥
हमीं जब न होंगे तो क्या रंगेमहफ़िल।
किसे देखकर आप शर्माइयेगा॥

(१०)

महव तसबीह तो सब हैं मगर इदराक कहाँ?
जिन्दगी ख़ुद ही इबादत है, मगर होश नहीं॥

(११)

हिजवेमयने तेरा ऐ शेख! भरम खोल दिया।
तू तो मस्जिदमें है, नीयत तेरी मयख़ानेमें॥

(१२)

बताओ, क्या तुम्हारे दिलपै गुज़रे।
अगर कोई तुम्हीं सा बेवफ़ा हो॥

(१३-१४)

शौक़का मर्सिया न पढ़, इश्ककी बेबसी न देख।
उसको ख़ुशी ख़ुशी समझ, अपनी ख़ुशी ख़ुशी न देख॥
यह भी तेरी तरह कभी रुख़से नकाब उलट न दे।
हुस्नपै अपने रहमकर, इश्ककी सादगी न देख॥

(१५-१७)

सुनता हूँ कि हर हालमें वह दिलके करीं हैं।
जिस हालमें हूँ अब मुझे अफसोस नहीं है॥

वे आये हैं, ऐ दिल ! तेरे कहनेका यक़ीं है।
लेकिन मैं करूँ क्या ? मुझे फ़ुर्सत ही नहीं है ॥
क्या शौक़ है, क्या ज़ौक़ है, क्या रब्त है क्या ज़ब्त ?
सजदा है जबींमें, कभी सज्देमें जबीं है ॥

(१८)

अज़ल ही से चमनबन्दे मुहब्बत।
यही नैरंगियाँ दिखला रहा है ॥
कली कोई जहाँपर खिल रही है।
वहीं एक फूल भी मुर्झा रहा है ॥

(१९)

मेरे ग़मख़ानये मुसीबतकी।
चाँदनी भी स्याह होती है ॥

(२०)

हम इश्क़के मारोंका इतना ही फ़िसाना है।
रोनेको नहीं कोई, हँसनेको ज़माना है ॥

(२१-२४)

मेरा किस्सये इश्क़ फ़ानी नहीं है।
यह मुर्दा दिलोंकी कहानी नहीं है ॥
मुहब्बत है अपनी भी लेकिन न अंधी।
जवानी है लेकिन दिवानी नहीं है ॥
खिजल जिससे होना पडे दिल ही दिलमें।
वोह कुछ और है महर्बानी नहीं है ॥

न सुनिये, न सुनिये ग़मोदर्द मेरा।
ये है आप-बीती, कहानी नहीं है॥

(२५)

मै तो जब मानूँ मेरी तौबाके बाद।
करके मजबूर पिला दे साकी॥

(२६)

तकदीरसे शिकायत कोई न आस्माँसे।
शिकवा है सिर्फ अपने एक खास महर्बांसे॥

(२७-२८)

अल्लाह अल्लाह हस्तिये शाइर।
कल्ब गुंचेका, आँख शबनमकी॥

इस जमानेका इनकलाब न पूछ।
रूह शैतानकी शक्ल आदमकी॥

(२९)

एक जगह बैठके पीलूँ मेरा दस्तूर नही।
मैकदा तंग बना दूँ मुझे मंजूर नहीं॥

(३०)

यह नशा भी क्या नशा है, कहते है जिसे हुस्न।
जब देखिये कुछ नीद-सी आँखोमें भरी है॥

(३१)

मुझको खुदायेइश्कने जो भी दिया बजा दिया।
उतनी ही ताबेज़ब्त दी, जितना कि ग़म सिवा दिया॥

(३२)

फ़ितरतने मुहब्बतकी इस तरह बिना डाली।
जो क़ैद नज़र आई, इक बार उठा डाली॥

(३३)

उनको अपनी शानेरहमतपर ग़रूर।
मुझको अपनी बेबसीपर नाज़ है॥

(३४)

वोह मेरी तरफ़ बढ़ा दें गुलचीं।
जिन फूलोंमें रंग है न बू है॥

(३५)

इधर दामन किसीका झाड़कर महफ़िलसे उठ जाना।
उधर नज़रोंमें हर-हर चीज़का बेकार हो जाना॥

(३६)

उदासी तबियतपै छा जायगी।
उन्हें जब मेरी याद आ जायगी॥

(३७)

सदमोंकी जान, दर्दका क़ालिब दिया मुझे।
जो कुछ दिया किसीने मुनासिब दिया मुझे॥

(३८)

पाँव लटकाये हुए क़ब्रमें बैठे हैं 'जिगर'!
देर चलनेमें नहीं, सुबह चले, शाम चले॥

(३९)

इन्हें आँसू समझकर यूँ न मिट्टीमें मिला ज़ालिम !
पयामे दर्देदिल है और आँखोंकी ज़बानी है ॥

(४०)

मौतोहयातमें है सिर्फ़ एक क़दमका फ़ासिला ।
अपनेको ज़िन्दगी बना, जल्वयेज़िन्दगी न देख ॥

(४१-४२)

सबपै तू महर्बान है प्यारे !
कुछ हमारा भी ध्यान है प्यारे ?

हमसे जो हो सका सो कर गुज़रे ।
अब तेरा इम्तहान है प्यारे ॥

(४३)

सोज़े तमाम चाहिये, रंगे दवाम चाहिये ।
शमअ़ तहेमज़ार हो, शमअ़ सरेमज़ार क्या ?

(४४-४५)

हँसी फिर उड़ने लगी इश्कके फिसानेकी ।
नकाब उठाओ, बदल दो फिज़ा ज़मानेकी ॥

चली कुछ ऐसी मुख़ालिफ हवा ज़मानेकी ।
पनाह बर्क़ने ली मेरे आशियानेकी ॥

(४६)

दिलमें बाकी नहीं, वोह जोशेजुनूँ ही, वर्ना ।
दामनोंकी न कमी है न गिरेबानोंकी ॥

(४७)

पहले कहाँ ये नाज़ थे, ये उश्वयेवादा।
दिलको दुआएँ दो, तुम्हें क़ातिल बना दिया॥

(४८)

आँखोंमें नूर, जिस्ममें बनकर वोह जाँ रहे।
यानी हमींसे रहके वोह हमसे निहाँ रहे॥

(४९)

ज़ाहिद ! यह मेरी शोखियेरिन्दाना देखना।
रहमतको बातों-बातोंमें बहलाके पी गया॥

(५०)

बुतख़ानेमें आ निकले, तो काबेकी बिना डाल।
काबेमें पहुँच जाये तो बुतखाना बना दे॥

(५१)

दरियाकी ज़िन्दगीपर सदक़े हज़ार जानें।
मुझको नहीं गवारा, साहिलकी मौत मरना॥

५ दिसम्बर १९४६

३१

प्रोफ़ेसर रघुपतिसहाय 'फ़िराक़' गोरखपुरी

फिराक साहब गोरखपुरके रहनेवाले है। आपके पिता मुशी गोरखप्रसाद 'इबरत' उपनामसे शायरी करते थे। फिराक साहब काग्रेस आन्दोलनमें जेलयात्रा और काग्रेसके अण्डर सेक्रेटरीका कार्य भी कर चुके है। १९३०से आप इलाहाबाद यूनिवर्सिटीमे अग्रेजीके लेक्चरार है। आपकी शायरीका प्रारम्भ गजलगोईसे हुआ है और मोमिनके रंगमे इश्किया गजल कहते है। प्रसिद्ध आलोचक 'नियाज' फहतपुरीने फिराक साहबके कलामकी आलोचना करते हुए फर्माया है—

"दौरेहाजर (वर्तमान युग) इसमे शक नही तरक्किये सखुन का दौर (शायरीकी उन्नतिका युग) है। और मगरिबी तालीम (पश्चिमी शिक्षा)ने जहनियते इन्सानी (मनुष्य-स्वभाव)को इतना बुलन्द और वसीह कर दिया है कि हमको हर जगह अच्छे-अच्छे सखुनगो नजर आ रहे है। लेकिन मुझसे यह सवाल किया जाय कि इनमे कितने ऐसे है कि जिनके शानदार मुस्तकबिलका पता उनके हालसे चलता है तो यह फहरिस्त बहुत मुख्तसिर हो जायगी। इतनी मुख्तसिर कि अगर मुझसे कहा जाय कि मै बिना ताम्मुल उनमेसे किसी एकका इन्तखाब करदू तो मेरी जबानसे फौरन 'फिराक' गोरखपुरीका नाम निकल जायगा।

". . . . शायरीके लिये अल्फाजका इन्तख़ाब और तर्जेअदा दो निहायत जरूरी चीज़े है, लेकिन अगर इसीके साथ ख़याल भी पाकीजा हो तो क्या कहना? इसको दो आतिशा सह आतिशा (दुगना

तिगुना दहकता हुआ जाज्वल्यमान कथन) जो कुछ कहिये कम है। चूँकि 'फिराकके' क़लाममें इन तीनोंका इज्तमा (मिश्रण) है; इस लिये कोई वजह नही कि उसे 'कदरे अव्वल' का मर्तबा (प्रथम-श्रेणीका सन्मान) न दिया जाय।"[१]

---

[१] इन्तकादयात हिस्सा अव्वल, पृ० ३४२।

ग़ज़लोंके कुछ अशआर

(१-३)

सरमें सौदा भी नही, दिलमें तमन्ना भी नही।
लेकिन इस तर्कमुहब्बतका भरोसा भी नहीं॥

मुद्दतें गुजरीं तेरी याद भी आई न हमें।
और हम भूल गये हो, तुझे ऐसा भी नही[1]

महर्बानीको मुहब्बत नहीं कहते ऐ दोस्त!
आह! अब मुझसे तुझे रंजिशेबेजा भी नहीं॥

(४)

न समझनेकी है बातें न यह समझानेकी।
जिन्दगी उचटी हुई नींद है दीवानेकी॥

(५)

कैद क्या, रिहाई क्या, है हमींमें हर आलम।
चल पड़े तो सहरा है, रुक गये तो जिन्दाँ है॥

(६)

कहाँका वस्ल तनहाईने शायद भेस बदला है।
तेरे दमभरके आजानेको हम भी क्या समझते हैं॥

---

[1] नहीं आती तो याद उनकी महीनोतक नहीं आती।
मगर जब याद आते हैं तो अकसर याद आते हैं॥
—हसरत मोहानी

(७)

तू न चाहे तो तुझे पाके भी नाकाम रहें।
तू जो चाहे तो ग़मेहिज्र[1] भी आसाँ हो जाए॥

(८)

पर्दयेयासमें[2] उम्मीदने करवट बदली।
ख़ाबेग़म तुझमें कमी थी इसी अफ़सानेकी॥

(९)

फ़रेबेसब्र खाकर मौतको हस्ती समझ बैठे।
न आया बेकरारीको हयातेजाविदाँ[3] होना॥

(१०)

न कोई वादा, न कोई यक़ीन, न कोई उमीद।
मगर हमें तो तेरा इन्तज़ार करना था॥

(११)

गरज़ कि काट दिये जिन्दगीके दिन ऐ दोस्त !
वोह तेरी यादमें हों या तुझे भुलानेमें॥

(१२)

जिनकी सदाएदर्दसे नींदें हराम थीं।
नाले अब उनके बन्द हैं तूने सुना नहीं ?

---

[1] विरह-दुख; [2] निराशाके पर्देमें।
[3] अमर जीवन।

(१३)

नैरंगिये उमीदेकरम उनसे पूछिये।
जिनको जफायेयारका भी आसरा नही॥

(१४)

था हासिलेपयाम तेरा ऐ निगाहेनाज़!
वोह राजेआशिकी जिसे तूने कहा नही॥

(१५)

हर गर्दिशेहयात है, दौरेहयाते नौ।
दुनियाको जो बदल न दे वोह मैकदा नहीं॥

(१६)

उस रहगुज़ारपर है रवाँ कारवाने इश्क।
कोसो जहाँ किसीको ख़ुद अपना पता नहीं॥

(१७)

मैं हूँ, दिल है, तनहाई है।
तुम भी जो होते अच्छा होता॥

(१८)

वादियेइश्क़से कौन यह निकला।
आँसू रोके, दिलको सम्हाले॥

(१९)

थरथरी-सी है आस्मानोंमें।
ज़ोर कितना है नातवानोंमें॥

(२०-२१)

चुपके-चुपके उठ रहे हैं मदभरे सीनोंमें दर्द ।
धीमे-धीमे चल रही है इश्क़की पुरवाइयाँ ॥

पूछ मत कैफीयतें उनकी, न पूछ उनका शुमार ।
चलती-फिरती हैं मेरे सीनेमें जो परछाइयाँ ॥

(२२)

यूँही 'फ़िराक़'ने उम्र बसर की ।
कुछ ग़मेजानाँ, कुछ ग़मेदौराँ ॥

(२३)

थी यूँ तो शामेहिज्र, मगर पिछली रातको ।
वह दर्द उठा 'फ़िराक़' कि मैं मुस्करा दिया ॥

(२४)

अभी तो ऐ ग़मे पिन्हाँ जहान बदला है ।
अभी कुछ और ज़मानेके काम आयेगा ॥

(२५)

जिनकी तामीर इश्क करता है ।
कौन रहता है इन मकानोंमें ॥

(२६)

दिल भी था कुछ उदास-उदास, शाम भी थी धुआँ-धुआँ ।
दिलको कई कहानियाँ याद-सी आके रह गई ॥

(२७)

तू याद आए मगर जोरोसितम तेरे न याद आएँ।
तसव्वुरमें यह मायूसी बड़ी मुश्किलसे आती है ॥

(२८)

तेरे ख़यालमें तेरी जफ़ा शरीक नहीं।
बहुत भुलाके तुझे कर सका हूँ याद तुझे ॥

(२९)

जो ज़हर हलाहल है, अमृत भी वही लेकिन।
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ ही पीनेके ॥

(३०)

एक फ़सूँ सामाँ निगाहेआश्नाकी देर थी।
इस भरी दुनियामें हम तनहा नज़र आने लगे ॥

(३१)

रफ़्ता-रफ़्ता इश्क मानूसेजहाँ होने लगा।
ख़ुदको तेरे हिज्रमें तनहा समझ बैठे थे हम ॥

फिराक साहब सिर्फ लिखनेके लिये ही नही लिखते, बल्कि जब वे हृदयगत भावोको दबा कर रखनेमे मज़बूर हो जाते है, तभी कुछ लिखते हैं। नियाज़ साहबको एक पत्रमे लिखते है—"जिस तरह रोनेसे कुछ फायदा नही होता, फिर भी आँसू निकल ही आते है, उसी तरह गज़ल कहने से होता क्या है ? मगर मजबूरियाँ और मायूसियाँ झख मारनेको मजबूर कर देती है।" यही वजह है कि आप बडे-बडे उस्तादोके होते हुए भी इस क्षेत्र में बहुत जल्द चमक उठे।

फ़िराक साहब अस्थिर स्वभाव और भावुक प्रकृतिके मनुष्य हैं उनकी यह अस्थिरता और भावुकता उन्हें किसी एकरंगमें नही रहने देती। प्रारम्भ उन्होंने ग़ज़ल-गोई से की किन्तु सहसा वे 'आसी' गाजीपुरीकी रुबाइयोसे प्रभावित होकर रुबाइयाँ कहने लगे। 'जोश' मलीहाबादीके रंगमे भी लिखनेका प्रयत्न किया। और धीरे-धीरे अपना जुदागाना रंग अख़्तियार कर लिया। नमूना देखिये :—

रूप

यह रुबाइयाँ उनकी 'रूप' पुस्तक से ३५१ रुबाइयोमेंसे ५ बतौर नमूना दी जा रही हैं। इनमें जिस तरहके भाव, भाषा और उपमाएँ व्यक्त की गई है, आजकल यह रंग फ़िराक साहबके अधिकांश कलाममें पाया जाता है।

(३२)

अब्र घुलते हैं या लचकती है कटार,
यह रूप कि रहमतोंकी जैसे चुमकार।
यह लोच, यह धज, यह मुस्कराहट, यह निगाह,
यह मौजेनफ़्स कि साँस लेती है बहार॥

(३३)

इन्सानके पैकरमें उतर आया है माह।
क़द या चढ़ती नदी है अमरितकी अथाह।
लहराते हुए बदनपर पड़ती है जब आँख,
रसके सागरमें डूब जाती है निगाह॥

(३४)

है रूपमें वह ख़टक, वोह रस, वोह झंकार,
कलियोंके चटखते वक़्त जैसे गुलज़ार।

या नूरकी उँगलियोंसे देवी कोई,
जैसे शबेमाहमें बजाती हो सितार ॥

(३५)

वोह पेंग है रूपमें कि बिजली लहराये,
वह रस आवाज़में कि अमरित ललचाए।
रफ़्तारमें वोह लचक पवन-रस बलखाये,
गेसुओंमें वोह लटक कि बादल मँडलाये ॥

(३६)

कतरे अरकेजिस्मके मोतीकी लड़ी,
है पैकरे नाज़नीं कि फूलोंकी छड़ी।
गर्दिशमें निगाह है कि बटती है हयात,
जन्नत भी है आज उम्मीदवारोंमें खड़ी ॥

३७ आज दुनिया पै रात भारी है

फिराक साहब वर्त्तमान युगकी प्रगतिशील शायरीसे प्रभावित होकर कभी सामाजिक, इन्कलाबी और कभी इश्किया नज़्म लिखते हैं :—

. . . .

आपसे डर रही है यह दुनिया, यह भी किन आफ़तोंकी मारी है।

. . . .

नींद आती नहीं सितारोंको, आज दुनियापै रात भारी है।
गर्दिशें बन्द है ज़मानेकी. बेकरारी-सी बेकरारी है॥

. . . .

हस्तिए नेस्तीनुमाँकी क़सम, जिन्दगी जिन्दगी से भारी है।
डर रहे हैं शकिस्ते दुश्मनसे, लड़नेवालोंकी वजअ़दारी है॥

. . . .

सुलहको हार बैठे, जीतके जंग, वाह क्या मुद्दआबरआरी है।

. . . .

हमसे लड़ती हैं मौतकी आँखें, अपनी ऐसों ही से तो यारी है।

. . . .

मिट चला इम्तयाजे रंजोनिशात, वाह क्या शाने ग़मगुसारी है।

. . . .

मौतसे खेलते हैं हम उश्शाक़, जिन्दगी है तो बस हमारी है।

. . . .

३८ नई आवाज़

अफ़सुर्दा से क्यों ऐ दिल ! सब दाग़ हैं सीनेके।
तुझको तो सलीक़े हैं, मरनेके न जीनेके॥
माजीके भँवरसे अब मासूमियत उभरेगी।
वोह पाल नजर आए क़िस्मतके सफ़ीनेके॥

मजहब कोई लौटाले और उसकी जगह दे दे।
तहज़ीब सलीक़ेकी, इन्सान क़रीनेके॥

३९ तक़दीरे आदम

नसीबेख़ुफ़्ताके शाने झिंझोड़ सकता हूँ,
तिलस्मे ग़फ़लते कोनैन तोड़ सकता हूँ।

न पूछ है मेरी मजबूरियोंमें क्या कसबल ?
मुसीबतोंकी कलाई मरोड़ सकता हूँ।
उबल पड़ें अभी आबेहयातके चश्मे,
शरारो संगको ऐसा निचोड़ सकता हूँ॥

४० कुछ ग़मे जाना कुछ ग़मे दौराँ

तेरे आनेकी महफ़िलने कुछ आहट-सी जो पाई है।
हर इकने साफ़ देखा शमअकी लौ लड़बड़ाई है॥
तपाक और मुस्कराहटमें भी आँसू थरथराते हैं।
निशाते दोद भी चमका हुआ दर्देजुदाई है॥

सकूते बहरोबरकी ख़िलवतोंमें खो गया हूँ जब,
उन्हीं मौक़ोंपै कानोंमें तेरी आवाज़ आई है॥
बहुत कुछ यूँतो था दिलमें मगर लब सी लिये मैंने।
अगर सुन लो तो आज इक बात मेरे दिलमें आई है॥

तेरी दुनिया तेरे उकबे तो कबके मिट चुके वाइज़ !,
ज़मानेमें नई इन्सानियतकी अब खुदाई है।

४१ शामे अयादत

फिराक साहबने यह ४६० अशआरकी तूल नज्म भिन्न-भिन्न अवसरोपर अपनी प्रेयसी के लिये १९४२-४४मे लिखी है। प्रेयसीके नख, शिख, स्वभाव, प्रेम आदिका बडा ही सजीव चित्रण किया है। स्थानाभावके कारण केवल ७ शेर पेश किये जाते है। सिविल अस्पताल इलाहावादमे रुग्ण शैयापर पडे हुए फिराक फर्माते है :—

यह कौन मुस्कराहटोंका कारवाँ लिये हुए,
शबाबो शेरो रंगो नूरका धुआँ लिये हुए।

धुआँ कि बर्क़ेहुस्नका महकता शोला है कोई,
चुटीली जिन्दगीकी शादमानियाँ लिये हुए।

लबोंसे पंखड़ी गुलाबकी हयात माँगे है,
कँवल-सी आँख सौ निगाह महबाँ लिये हुए।

क़दम-क़दमपै दे उठी है लौ जमीनेरहगुजर,
अदा-अदामें बेशुमार बिजलियाँ लिये हुए।

. . . .

जगानेवाले नग़मयेसहर लबोंपै मौजजन,
निगाहें नींद लानेवाली लोरियाँ लिये हुए।

. . . .

स्वस्थ होने पर—

हर अदा गोया पयामे जिन्दगी देती हुई,
सुबह तेरे हुस्नमें अँगड़ाइयाँ लेती हुई।

जिस्मकी ऐसी सजावट रंगका ऐसा निखार,
सरबसर साँचेमें गोया ढल गई रूहेबहार।

. . . .

४२ क्या कहना!

रसमें डूबा हुआ लहराता बदन क्या कहना!
करवटें लेती हुई सुबहेचमन क्या कहना!!

मदभरी आँखोंकी अलसाई नजर पिछली रात।
नींदमें डूबी हुई चन्द्रकिरन क्या कहना!!

दिलके आइनेमें इस तरह उतरती है निगाह ।
जैसे पानीमें लचक जाये किरन क्या कहना !!
तेरी आवाज़ सवेरा तेरी बातें तड़का ।
आँखें खुल जाती हैं एजाजेसख़ुन क्या कहना !!

. .. .

फिराक साहब किसीके अनुयायी नही । पहले आप मोमिनके रगमें लिखते थे, परन्तु अब अपना जुदागाना रग अख्तियार किया है । गजलो, रुबाइयो और नज्मोमे आप नये-नये अनोखे शब्द, विचित्र-विचित्र उपमाएँ और कल्पनातीत कल्पनाएँ ऐसे ढंगसे समोते है कि आपके आलोचक और प्रशसक आश्चर्यचकित रह जाते है । इस तरह के रगमे लिखनेवाले फिराक साहब उर्दू-साहित्यमे अकेले और यकताँ है । फिराक साहबके इस तरहके कलामको कुछ लोग मोहमिल (अर्थहीन, दुरूह) कहकर मज़ाक उड़ाते है और कुछ लोग अछूती कल्पना समझकर प्यार करते है । नमूना देखिये :—

आधीरातको—

अब आप अपनी ही परछाईंमें है घने अशजार,
फ़लकपै तारोंको पहली जम्हाइयाँ आईं ।
तम्बोलियोंकी दुकानें कहीं-कहीं है खुली,
कुछ ऊँघती हुई बढ़ती है शाहराहोंपर ।
सवारियोंके बड़े घुंगरुओंकी झनकारें ।।
खड़े है सिमटे हुए ऐसे हारसिंगारके पेड़ ।
जवानी जैसे हयाकी सुगन्धसे बोझल ।।
यह मौजेनूर, यह खामोश और खुली हुई रात,
कि जैसे खिलता चला जाए इक सफ़ेद कँवल ।

. . . . . .

कँवलकी मुट्ठियोंमें बन्द है नदीका सुहाग,
जहाँमें जाग उठा आधीरातका जादू ॥
न मुफ़लिसी हो तो कितनी हसीन है दुनिया,
यह भाँय-भाँय-सी रह-रहके एक झींगरकी।
हिनाकी टट्टियोंमें जैसे सरसराहट-सी,
यह सरनगूँ है सरेशाख़ फूल गुड़हलके,
कि जैसे बेबुझे अंगारे ठण्डे पड़ जाएँ।

. . . .

क़रीब चाँदके मँडला रही है इक चिड़या,
भँवरमें नूरके करवटसे जैसे नाव चले।

. . . .

मेरे ख़यालसे अब एक बज रहा होगा।

. . . .

कुछ आलोचकोका मत है कि फिराक़ साहब चन्द सालसे प्रगतिशील शायरीके हमाममें नंगे कूद पड़े है।[१] और उनकी नग्न तथा अश्लील शायरीके प्रमाणमे उनके इस तरहके अशआर पेश करते है :—

यह भीगी मसें रूपकी जगमगाहट।
यह महकी हुई रसमसी मुस्कराहट॥
तुझे भींचते वक़्त नाजुक बदनपर।
वोह कुछ जामयेनर्मकी सरसराहट॥
पसेख़्वाब पहलूए आशिकसे उठना।
धुले सादा जोड़ेकी वह मलजगाहट॥

. . . .

---

[१] 'शायर' फ़रवरी-मार्च-१९४६, पृ० ५५।

यह वस्लका है करिश्मा कि हुस्न जाग उठा।
तेरे बदनकी कोई अब खुद आगही देखे॥
ज़रा विसालके बाद आइना तो देख ऐ दोस्त !
तेरे जमालकी दोशीज़गी निखर आई॥

कुछ समालोचकोका कथन है कि कलाको कलाकी दृष्टिसे देखना चाहिये। कला न चरित्रसे सम्बन्ध रखती है न दोषोसे। वह केवल सौन्दर्यसे सम्बन्ध रखती है। जिसका अन्तरग और वाह्य सुन्दर है वह कला है। चाहे वह नग्न ही क्यो न हो। असुन्दरता कला नही। अच्छे-अच्छे परिधानोसे वेष्टित और मूल्यवान आभूषणोसे अलकृति भी आकर्षण हीन है, यदि उसमे कला नही है तो। फिराक साहबका भी यही सिद्धान्त मालूम होता है। वे इस बातकी चिन्ता नही करते कि नग्न चित्र हमारे सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव डालेगा और उसका क्या घातक प्रभाव हमारी पीढियो पर पडेगा। वह तो कला-उपासक है और कलाका सौन्दर्य निखारनेमे वह नग्न, अश्लील सब कुछ लिख सकते है। इसलिये हमने फिराक साहबको उन प्रगतिशील शायरोके साथ नही रखा है जो कलाको जीवनके लिये उपयोगी मानते है। मनुष्यके हृदयगत भावोके व्यक्त करनेका नाम शायरी है। वह चाहे गद्यमे प्रस्फुटित हो या पद्यमे। गद्य और पद्यमे अन्तर केवल इतना ही है कि गद्यका क्षेत्र विस्तृत है और पद्यका अत्यन्त सीमित।

फिराक साहब अपने मनोभावोको वडी खूबीसे गद्य और पद्यमे प्रकट करते है। उनके जो अन्तस्थलमे होता है वह कलाकी साधनासे उभर आता है। इसीलिये वह कभी इश्किया गज़ल कहते-कहते जव वाह्य सामाजिक जीवनसे प्रभावित होते है तो यकायक इन्कलावी नज्म कहने लगते है, और फिर जब उन्हे अपना महवूब दिखाई देता है या याद आता है तो फिर मादक स्वर अलापने लगते है। क्या कहना चाहिये और क्या नही, प्रेमोन्मादमे उन्हे पता नही रहता।

फिराक साहबकी शायरी नये-नये मार्गोको खोजती हुई बढ रही है। देखें कब वह अपने ठीक लक्ष्यको पहुँचती है। फ़िराक़ साहब यूँ तो नज्म भी लिखते हैं मगर मुख्य अधिकार आपको गज़लगोई पर है, और इस क्षेत्रमें आप अपना विशेष स्थान रखते हैं। इस परिच्छेदमें हमने अनुभवी वयोवृद्ध उस्तादोंके पास नौज़वान गजलगो शायरोमेंसे सिर्फ फ़िराक को बैठाया है। क्योंकि फ़िराक साहब नौजवान ग़ज़लगो शायरोमें इम्तियाजी हैसियत रखते हैं।

१२ मार्च १९४८

सहायक ग्रंथ-सूची

प्रस्तुत पुस्तकमे ३१ शायरोका कलाम उनकी निम्न-लिखित कृतियोसे सकलित किया गया है :—

१ मीर

इन्तखाबे मीर—मौलवी नूरअलरहमान (मकतबेजामा, देहली, १६४१)

२ दर्द

दीवानेदर्द (मुज़फ्फर बुकडिपो, लाहौर)

३ नज़ीर

कुलयातेनज़ीर (नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, १६२२)

४ ज़ौक़

दीवानेज़ौक—मुहम्मदहुसेन आज़ाद (आजाद वुकडिपो, लाहौर १६३२)

५ ग़ालिब

दीवानेगालिव—अलीहैदर तबातबाई (अनवर मतालिस प्रेस, लखनऊ)

६ मोमिन

दीवानेमोमिन—ज़ियाअहमद एम० ए० (शान्तिप्रेस, इलाहाबाद १६३४)

७ अमीर मीनाई

(खेद है कि इनका दीवान हमे नही मिल पाया। लाचार, कलामका सकलन 'मज़ामीने चकवस्त' वग़ैरहसे करना पडा।)

८ दाग़

मुन्तख़िबेदाग—अहसन माहरहरवी

९ आज़ाद

नज्मेआज़ाद—मौ० मुहम्मदहुसेन आज़ाद (लाहौर, १६४४)

१० हाली

मुसद्दसेहाली (ताजप्रेस, लाहौर)

दीवानेहाली (एम० फरमान अली बुकसेलर, लाहौर)

११ अकबर

कुलियातेअकबर (तीन भाग)

१२ इक़बाल

बाँगेदराँ—चौधरी मुहम्मद हुसेन एम० ए०
(जावेदइकबाल, मेयोरोड, लाहौर, १९४२)

बालेजिबरील—चौधरी मुहम्मद हुसेन एम० ए०
(जावेदइकबाल, मेयोरोड, लाहौर, १९४६)

१३ चकबस्त

सुबहेवतन (हिन्दी)—(इंडियन प्रेस, प्रयाग, १९४४)

१४ जोश

रूहेअदब— (मकतबेउर्दू, लाहौर, १९४२)
हर्फो हिकायत— (" " " १९४३)
शोलओ शबनम—(" " " १९४३)
फिक्रो निशात— (" " तृतीय सस्करण)
आयातो नग्मात—(" " " १९४१)
सेफोसुबू—
नक्शो निगार—(कुतुबख़ाना रशीद, देहली, १९३९)
अर्शो फर्श

१५ सीमाब

सोजो आहग—(दफ्तर शाइर, आगरा, १९४१)
कारेअमरोज़—(" " " १९३४)

१६ अहसान

आतिशेख़ामोश—(मकतबेदानिश, लाहौर)
नवाये कारगर—(" ")
दर्दे जिन्दगी— (" ")
जादेहनौ— (" ")

१७ वर्क़
मतलयेअनवार—(आर्य बुकडिपो, नई सडक, देहली, १६२६)
हर्फ़ेनातमाम—शीगचन्द्र सकसेना (चावडी बाजार, देहली, १६४१)

१८ हफ़ीज
नग्मयेजार—(कुतुबखाना शाहनामा, लाहौर, १६३२)
सोजो साज़—("   " ,   "   १६३३)
तस्वीरे काश्मीर—(उर्दू एकेडमी, लाहौर, ३ मई, १६३७)

१६ सागर
रगमहल—(इदारहे इशाअते उर्दू, हैदराबाद, १६४३)
रस-सागर (हिन्दी)

२० अख़्तर शीरानी
सुवहे वहार—(हामिद एण्ड सन्स, अलीगज टौक स्टेट)
नग्मये बहार—(मकतवे उर्दू, लाहौर, १६३६)
शेरस्तान—(उर्दू एकेडमी, लाहौर, १६४१)

२१ अर्श मलसियानी
(उर्दू पत्र-पत्रिकाओसे सकलित)

२२ फ़ैज
नक्शे फरियादी

२३ मजाज
आहग—(मकतबे उर्दू, लाहौर, जनवरी १६४३)

२४ जज्बी
फिरोजाँ—(मकतवे उर्दू, लाहौर, १६४२ के करीब)

२५ साहिर लुधियानवी
तलखियाँ—(नया इदारा, लाहौर, तीसरी आवृत्ति)

२६ साकिब
दीवाने साकिब—(निजामी प्रेस, लखनऊ १६३६)

२७ हसरत
इन्तखाबे हसरत—(जामे देहली)
कुलियाते हसरत मोहानी—(हसरत मोहानी, कानपुर, १६४३)

२८ फ़ानी

वजदानियत—(हैदराबाद, १६४०)
वाकयाते फ़ानी (जलील बुकडिपो, हैदराबाद)

२६ असग़र

सरूरे जिन्दगी—(ताज कम्पनी, लाहौर)
निशाते रूह—(सद्दीक बुकडिपो, लखनऊ)

३० जिगर

शोलयेतूर—(मकतबे जामा, देहली, १६४२)

३१ फ़िराक़

रूहे कायनात—(सगम पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, १६४५)
शबनमिस्तान—(" " " १६४७)
रमजोकनायात—(" " " १६४७)
मशग्रल—(नसरादे नौ, लखनऊ १६४६)
रूप—(सगम पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद १६४६)

शायरोका जोवन-वृत्तान्त, उर्दू-शायरीकी प्रगतिका ऐतिहासिक और आलोचनात्मक परिचय मुझे उपर्युक्त पुस्तकोकी भूमिकाओके अतिरिक्त निम्न-पुस्तको और पत्र-पत्रिकाओंके सैकडो लेखोसे मिला है। इनके प्रकाशमे जो मै देख सका हूँ, वही जबाने कलमसे बयान किया है। आवश्यकतानुसार प्रमाण-स्वरूप जिन पुस्तकोंके उद्धरण आदि दिए गये है, उनका यथा-स्थान उल्लेख भी कर दिया है।

आबेहयात—मौ० मुहम्मदहुसेन आजाद
तारीखे अदबे उर्दू—रामबाबू सक्सेना, डिप्टी कलेक्टर (नवल किशोर प्रेस, लखनऊ)
नये अदबी रुजाहनात—सैयद एजाज हुसेन एम० ए० (इसरार करीमी प्रेस, इलाहाबाद)
यादगारे गालिब—हाली
मज़ामीने चकबस्त—प० बृजनारायण 'चकबस्त'

हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी (हिन्दी)—स्व० प० पद्मसिंह शर्मा (हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद)
आजकल (उर्दू पाक्षिक)—सम्पा० सैयद वकार अजीम एम० ए० (देहली, जून, '४४ से अक्टूबर, '४७ तक)
निगार (मासिक)—नियाज़ फतेहपुरी (जुलाई, '४५ से मई, '४८ तक। अमीनाबाद पार्क लखनऊ)
शायर (मासिक)—एजाज सद्दीकी (जनवरी, '४४ से मई, '४८ तक। आगरा)
एशिया (मासिक)—सागिर निजामी (वम्बई, सितम्बर १९४३ और जनवरी अप्रैल १९४४ के तीन अक)
नक्दोनजर—हामिद हुसेन कादरी (शाह एण्ड क०, आगरा १९४२)
इन्तकादयात—भाग दो—नियाज फतहपुरी (अब्दुल हक एकेडमी, हैदराबाद दकन १९४४)
अन्दाजे—फिराक गोरखपुरी (हिन्दोस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद)
नया अदब मेरी नजरमें—आगा सरखुश कज़लवाश (हिन्दोस्तानी पब्लिशर्स, देहली, १९४४)
तनकीदी ज़ाविये—सैयद एहतमाम हुसेन (इदारहे इशाअत उर्दू, हैदरावाद)
हिन्दीके मुसलमान शायर—अब्दुल्ला बट (मकतबे उर्दू, लाहौर)
रहिमन-विलास (हिन्दी)—ब्रजरत्न दास बी० ए०, एल०-एल०बी० (रामनारायणलाल इलाहाबाद सं० १९८७)
रसखान (हिन्दी—चन्द्रशेखर पाण्डेय एम० ए० (हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग स० १९९९)
अच्छी हिन्दी—रामचन्द्र वर्मा (साहित्य रत्न माला, वनारस, स० २००१)
३१ शायरोंके अतिरिक्त और जिन शायरोंकी नज़्म या अशआर

पुस्तकमे दिए गए है, उनका सकलन ऊपर लिखी किताबोके अलावा नीचे लिखी किताबोंसे भी किया गया है :—

ईरानके सूफी कवि (हिन्दी)—बाके बिहारी, कन्हैयालाल (भारती भण्डार, इलाहाबाद)

चिरागे तूर—बहजाद लखनवी

मयखानये रियाज़—तस्लीम मीनाई

तराना—यगाना चगेज़ी

वादहे सरजोश—जोशमलसियानी

गुलकदा—अजीज लखनवी

गुफ्तारे बेखुद—बेखुद देहलवी

तीरोनश्तर—आगा शाइर देहलवी

इल्मे मजलिसी भाग ७

उर्दू-शब्दोके अर्थ लिखनेमे विशेषकर इन दो कोषोंसे सहायता ली गई है :—

सईदी डिक्शनरी—मौ० मुहम्मदमुनीर (मतबये मजीदी, कानपुर १९४०)

उर्दू-हिन्दी कोष—रामचन्द्र वर्मा (हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर का० वम्बई १९४०)

शेरो शायरीके निर्माण में ३००-४०० ग्रन्थोंका परिशीलन हुआ है। सैकडो मुशायरो और उर्दू-साहित्यक मित्रोंकी अदबी चर्चाओसे भी अनुभूति मिली है। जिन पुस्तकोके उद्धहरण दिये गए है या जिनसे जीवन वृत्तात मालूम हुआ है, और शेर सकलित हुए है, केवल उन्ही पुस्तकोका ऊपर उल्लेख किया गया है। हम उन सभी शायरों, लेखको, सम्पादको और प्रकाशकोके अत्यन्त कृतज्ञ है जिनकी रचनाओं, सम्पादित ग्रन्थो और प्रकाशनोसे शेरोशायरीके निर्माणमे सहायता या अनुभूति मिलीहै।

डालमियानगर, विहार
१२ अगस्त, १९४८

—गोयलीय

अनुक्रमणिका

शायर, लेखक, विशेष व्यक्ति

अ

अकवर इलाहावादी ३६, ६०, ६५, ६८, ७४, ७५, ७८, ६२, ६४, ६८, १०१, १०४, १५८, १७५, २०६, २३१, (२५८ से २७० तक) २६४, २६६, ३११, ३१५, ४१७,

अकवर वादशाह २१, २५८

अकवर मेरठी ७२, ७६

अकवरशाह १६०, १६३

अख्तर शीरानी ४१६, (४६७ से ४७५ तक)

अज़मत अल्लाह खाँ ४१६

अज़ीज लखनवी ३२, ४७, ७३, ७७, ६१, ६२, ६३, ५३८

अजीम (डाक्टर) ३०, ४६५

अजीम वेग चगताई ४५

अर्जुन १४३, २४१, ४२१

अर्जुनलाल सेठी १६६,

अताहुसेन 'तहसीन' २३, २४,

अताउल्लाह 'पालवी' २६,

अदव, ६३,

अनवरी ४२५,

अनीस ३२, २३०, २४०

अन्दलीव शादानी (डा०) २५, ४५

अव्दुल्ला मुअर्री ३०६,

अव्वुलकलाम 'आजाद' २६०, ५६६

अमरचन्द 'कैस' ४१६

अमीन अजीमावादी ७६,

अमीनुद्दीन १७६

अमीर खुसरो १६, २०, २३, ११७, १४३, १४४, ४१७

अमीर मीनाई ३२, ५०, ६६, ६८, ७२, ८१, ८६, १०१, १३६, (२०६ से २१६ तक) २२८ ४१७

अरशद देहलवी ६६,

असलम मुजफ्फरनगरी ७४, ६४, ५३८,

अलाउद्दीन ४३७, ५३८,

अर्श मलसियानी ४१६, (४७६ से ४७६ तक)

अर्शी भोपाली ५०,

अली, ३१,
असगर गोण्डवी ४६, ५८, ५९, ६५, २५८, ३९७, ४२४, ५३८, (५६९ से ५७७ तक)
अशफ़ाक-अल्लाह ४९२,
असीर लखनवी ९७,
अहमदनदीम कासिमी ४१९, ४९५
अहसन माहरहरवी ४७, २१९, ५३८,
अहसान दानिश ७९, ४१९, (३८१ से ३८५ तक), ४९३, ५१२,

आ

आगाशाइर देहलवी ४७, ७३, ८१, ९८, २१९, ३९७, ४१७, ५३८
आजाद (मुहम्मदहुसेन) ३०, ३५, ९७, १५६, १५९, १६१, २३१, (२३२ से २३७ तक), २४१, २७१, ३४०, ३९६, ५३५,
आतिश ४७, ५७, ७७, ८३, ८६, १०६, १४४, १७३, २२९,
आनन्दनारायण मुल्ला २९९,
आबरू २३, ६५, ११८
आरजू लखनवी ४७, ७६, ११८, ४१७, ५३८,
आरिफ हस्वी देहलवी ९९,
आसफ़अली (गवर्नर) ३९७,
आसफुद्दौला २३, १२५, १२६, १२७,
आसी गाज़ीपुरी ५९४
आसी लखनवी ५३, ५५, ७७, ७९, ८१, ८३,

इ

इक़बाल (डाक्टर, सर) ५०, ५४, ५५, ५८, ८०, ८३, १५९, १७१, १७४, २१९, २२७, २२८, २३१, २४१, (२७१ से ३१० तक), ३१२, ३०५, ३४०, ३९९, ४२४, ४२५, ४९२, ४९३, ५३५,
इकबाल मारूफ़ ४९०,
इकबाल सलमा ४८९,
इन्द्रजीत शर्मा ४१९
इम्दाद इमाम असर ९१
इन्शा २९, ३१, ९७, १२७, १२८, १४३

उ

उमर ख़ैयाम ३३, ६३

ए

एजाज (प्रोफेसर) २३०, २८६, ३१२

औ

औरंगज़ेब ११७

क

कर्जन लॉर्ड २६१
क़दर विलगिरामी १००
कनीज़ फ़ातमा 'हया' ४६०
कबीर २०, १४३, ४१७
कायम २३, ११६
कायम चाँदपुरी १०४, १०६
किशनचन्द ज़ेबा ३३६
कुदरत ११६
कुर्रेसी ४६५
कैफी ४७, २६७, ३४५, ५३८,
कैसर देहलवी ६७, ७६, ६१, ६६,
कृष्ण १४४, ४२० ४२८

ख

ख्वाजा वजीर १०१
खानखाना २१

ग

गणेशशंकर विद्यार्थी २५१
गयासुद्दीन १६
गायत्री देवी ५३६
गालिब २३, ४७, ६७, ७२, ८२, ८६, १११, १२१, १५६, १६६, (१७० से १६६ तक), १६७, २११, २१४, २१७, २१८, २२८, २३८ २४१, ३६७, ४२०, ४२४, ४६२, ५३५, ५४०, ५६०,
गोरखप्रसाद इवरत ५८७

च

चकवस्त ३५, २०७, २०६, २११, २२८, २२६, २३१, २४१, २७१, (३११ से ३३४ तक), ३४०
चन्द्रशेखर 'आजाद' ४६२,

ज

जकाउल्लाह ५४१,
जगन्नाथ 'आजाद' ४६५
जज्बी ४६५, (५१५ से ५२० तक)
जफर ३३६
जमील ४२२
ज़रीफ लखनवी ४७
जलील ४७, ७५, ७६, ८१, ८५, ६८, १०२, १०७, ४१७, ५३८, ५४२
जहाँगीर १४३
ज़ाकिर देहलवी ८६,
जानजाना ११६,
जामी ४२५
जायसी २१, १४३, ४१७

जुर्रत लखनवी १०२, १०५,

जिगर मुरादाबादी ४६, ७३, ७६, ४१७, ५३८, ५६६, (५७८ से ५८६ तक)

जिन्ना २६०, २६६,

जिनेश्वरदास जैन 'माइल' ४७, ६८, ७१, ३६७

ज़िया ८३, ११६

जुरअ़त २३, १४३

जोश मलसियानी ६८, ८५, ६१, ६५, १११, ४७६

जोश मलीहाबादी ३४, (३४० से ३६८ तक), ४६३, ५११, ५६४

जौक ३१, ४६, ६७, ८४, १००, ११२, ११३, १२१, १२४, १५६, (१५७ से १६६ तक), १७७, १८१, १६७, २१८, २२८, २२६, २३२, ३६७, ४८७, ५३५

त

तनहा ८०

तसकीन ८७

तसलीम ६६

तासीर ४६५

तुलसीदास (गोस्वामी) २३

तेजबहादुर सप्रू ३१२, ५६६

तोला बदायूँनी १००

तौक़ीर ३८३

द

दर्द ११६, १४३, २२८, (१३५ से १३६)

दबीर ३२, २३०, २४०

दाग ४६, ६०, ६६, ६७, ६६, ७६, ८७, ८८, ६०, ६३, ६७, १००, १०१, १०६, १०७, १५६, १६३, १६४, १८५, २०१, २०६, २०७, २०८, २१३, २१४, २१५, २१६, (२१७ से २२४ तक) २२८, ३१०, ३१५, ३६६, ३६६, ३६७, ४८७, ५३५,

दिल शाहजहाँपुरी ४७, ४१७

दिल अजीमाबादी ८८

न

नजीर अकबराबादी ३५, (१४३ से १५४ तक) २३०, २४० ४१७

नरसी भगत १४४

नल-दमयन्ती ४२२

नबी १४४

नाजनीन ३१
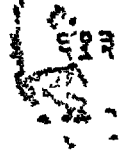
नाज़िम १०५,
नाज़ी ११८
नातिक गुलाठवी ४२३,
नानक १४४
नाशाद आजमगढी १०७
नासिख़ ४७, ५७, ६६, ६६, १२१, १४४,
नसीम ३१, ४७, ६७, ६८
निज़ाम ८०, ६४, ६६, १०२, १०४, ४३३
नियाज फ़तहपुरी १६७, ३७०, ५८७, ५६३
नून-मीम-राशिद ४६५
नूर बिजनौरी ४८६
नूरजहाँ १४३,
नूह नारवी ४७, १०१, १०३, २१६, ४१७, ५३८

प

पद्मिनी १४३, ५३०, ५३८
परवेज़ ४६५
परमिन्दर शर्मा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

फ

फ़रहाद १४३, ४२२
फ़ानी बदायूनी ४६, ५३, १७३, १८८, १६४, १६५, ४२४, ५१५, ५३८, (५६० से ५६८ तक)
फ़िराक़ गोरखपुरी ५२६, (५८७ से ६०२ तक)
फ़ुग़ाँ ११८
फ़ैज ४६५, (४६६ से ५०३ तक).

ब

बर्क़ ५६
बर्क़ देहलवी ३६६ से ४१४ तक
बर्क़ लखनवी २०८, २८७
बन्दा ३०
बयाँ ११६
बशीर अहमद ४१६
बहर १०४
बहज़ाद लखनवी ४७, ८४, ४१७, ४१६
बहादुरशाह १५०, १५८, १७८, २१८
बाक़र 'फ़र्मान' १५६
बिस्मिल इलाहाबादी ४७, १०७, १०६, ४१७, ५३८

बिस्मिल देहलवी ८६
बीमार ८५
बेखुद देहलवी ४७, ७१, ८७, ८६, १००, २१६, ३६७, ४१७, ५३८
बेनजीर शाह वारसी ७६
बैरम खाँ २१

भ

भगतसिंह ४६२
भीम १४३, ४२१,
भैरों १४४

म

मकबूल हुसेन ४१६, ४६५
मखमूर जालन्धरी ४६५, ५१२
मजनू १४३, ५०५
मजरूह ७३
मजाज ४६५,(५०४ से ५१४ तक)
मदहोश ग्वालियरी ५३, ७७
महसफी १४३
महमूद ८६
मँहदी अलीखाँ ४१६
महशर ३१६
महशर लखनवी ८४
महात्मा गाधी ३३८, ४६३, ५३७
महादेव १४४
मीर हसन ३१, १४३
मीर २३, ४६, ११८, ११६, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १३४, १३५, १४३, १७७, २२८, ४६२, ५४०, ५५१ ५६०
मीराजी ४१६, ४६५
मुख्तार सद्दीकी ४६५
मुगल जान तसलीम ८७
मुजतर खैराबादी ७८
मुश्ताक देहलवी ८८
मुसोलिनी ४६३
मुहम्मद ३२
मुहम्मद तुगलक १६
मुहम्मददीन तासीर (प्र०) ४१६
मुहम्मद शाह ११७
मोमिन ७१, ८२, ८५, ८६, ६३, १००, १०३, १०६, (१६७ से २०५ तक), १५६, २१७, २२८, ३६७, ५८७, ५६६
मौज ४८५,

य

यकरंग ११८
यकीन ७५, ११६

यगाना चंगेज़ी ६०, १०८
यतीन्द्रनाथ ४६२

र

रवीन्द्रनाथ ठाकुर २७३, ३४५, ३४७,
रविश सद्दीकी ४७, ४६५
रसखान ४१७
रसा रामपुरी ६२
रसूल १४४
रहमत ७६
रहमत अज़कावुर्ला ५८
रहीम २१, २२, १४३, ४१७
रामचन्द्र वर्मा ४२३,
रामप्रसाद बिस्मिल ६६२
रिन्द ५२, ६०
रिगाज़ खैराबादी ४६, ४७, ६४, ६५, ६६, ६६, ७५, ८३, ६२, ६७, ४१७, ५३८
रुजबेल्ट ४६३
रुस्तम १४३, ४२१

ल

लालचन्द्र फलक ३३६
लैला १४३, ५०५

व

वली २३, ११७, ११८, ११६, १४३, ११४, ४१७
वहशत कलकतवी ८४
वाजिदअली शाह २०६
विकार अम्बालवी ४१६
बूम मेरठी ५१२

श

शाह अजीमाबादी ५०, ६०, ६२, १०३, २२६
शाह आलम १२२, १२६, १३५
शाह आलम गुलशन ११७, ११८
शाह मुबारिक २३
शाह हातम २०
शीरी १४३, ४२२
शुजाउद्दौला २३
शेफ़्ता ७१
शेरी भोपाली ५५२
शैदा ३६७
शौकत थानवी ४६

स

सआदत अलीखाँ १२७
सफ़ी ४७, ८४, १०७, ५३८
सलाम मछलीशहरी ४६५, ५१२, ५३६

सर्ग्रंगिता १४३
सरशार ३१५
सर सैयद अहमद २६०
सरोजनी नायडू २४५
सबा मथरावी ४९३
साइल देहलवी ४७, ६६, १०४, २१६, ३९७, ४१७, ५३८
साकिब लखनवी, ४९, ५१, ५२, ५३, ५४, ५४, ५५, ५६, ६०, ६१, ६५, ७३, ७६, ८२, ८४, ९०, ९४, ९५, १०५, १०८, ५३८, (५४० से ५५० तक)
साकिर, ७१,
सागर निजामी ४१६, (४४० से ४६६ तक) ४९३, ५१२,
सादी २३, १७१, ४२५
साबित लखनवी १०६
साहिर ४७, ४९५
साहिर लुधियानवी (५२१ से ५३२)
साहिर देहलवी ५३८
सिराजुद्दीन जफर ४१९
सीमाब अकबराबादी २१६, (३६६ से ३८० तक) ४२३, ४२४
सुमत प्र० जैन २९७, ३४४
सुहराब ४२१
सोज़ ११६
सौदा २०, २३, ३१, ४७, ७८, ८३, ९७, ११८, ११६, १२६, १४३, ४२२

ह

हमदम अकबराबादी ८०
हसन निजामी ४५
हसरत मोहानी २७, ५३८, ५८६, (५५१ से ५५९ तक)
हरिश्चन्द्र अख्तर ४७, ४२१
हफीज जालन्धरी ६६, १०५, १७२, ४१८, ४१९, (४२० से ४३९ तक),
हफीज होशियारपुरी ४१६
हातिम ११८
हाफिज ३३, ६४, ८८, १७१, ४२५
हामिद अल्लाह अफसर ४१६
हामिद अली खाँ ४१६
हामिद हुसेन कादरी २१७
हाली ३५, ५७, १५६, २१८, २२७, २३१, २३२, (२३८ से २५७ तक), २५६, २६०, २७१, ३१५, ३४०, ३९६, ५३५,
हिदायत ११६

हिराजा ४२०
हुकम मदरासी १०३
हैरत बदायूनी ८८
हिटलर ४९३, ५३८

श्र

श्रीराम ३९

त्र

त्रिलोकचन्द्र महरुम ४७

ग्रन्थ

उर्दूए कदीम २०,
उर्दूए मुअल्ला २३,
उपनिषद् १४४
कुरान १४४, २२९,
कोलतार ४५,
खालिकबारी २०
गुलक्दा ३२
चहारदरवेश २३
तारीखे नस्रेउर्दू २०
पजाबमें उर्दू २०
पद्मावत २१,
पुराण १४४
महाभारत १७१,
रामायण १७१
वेद १४४
शाहनामाए इस्लाम ४२८
हदीस १४४

साहित्य सम्बन्धी

अपभ्रंश भाषा १९
अभारतीय भाषा २३
अरबी-फारसी १९, २३, ११७, ११८, ११९, १२०, २८२, ४१८, ४२५, ४३०
अजुमने उर्दू २३३
आज़ादनज्म २४
उर्दू २०, २३, २४, २५, २९, ३०, ३१, ३३, ३५, ३६, ४५, ८६, ११७, ११९, १३६, २१८, २३२, २८२, ३१०, ३३९, ३६९, ४१८, ४१९ ४२३, ४२६, ४७६, ४९२, ५३८, ५६९
उर्दू-अदीब १९, १७०, २१८,
उर्दू-गज़ल २४, २५, २६, ३०
उर्दू-पद्य २४
उर्दू-शायर ३२, ४६, ४७

उर्दू-शायरी १७, २६, ४३, ४७, ११५, ११७, ११६, १२०, १२१, १५६, १७०, २२५, २३०, २३३, २३६, २७१, २८६, ३१५, ३३७, ३३८, ३४०, ३६६, ४१५, ४२३, ४२८, ४८३, ४८८, ५३५,
उर्दू-साहित्यिक ४२१
क़सीदा ३१, १४४, २३६
ग़ज़ल २४, २५, २६, २८, २६, ३३, ४७, ६६, ११७, १२०, १२१, १२६, १४५, १५६, २३६, २७१, ३७०, ३६६, ४१८, ४७६, ४६५, ४६६, ५३३, ५३५, ५३७, ५३८, ५६६, ५७८, ५७६, ५८७, ५६३, ५६६,
गद्य ३०,
गीत २४, १४४, २४१,
तारीख़ ३४, ३५
तुर्की भाषा २३,
नज़्म २४, ११५, ४१८, ४६५, ५६७, ५६६
नात ३२
पद्य ३०
प्राकृत १६,
भाषा २०, ३०, ११७, ११८, ११६, १२१, १४३, १४७,
मसनवी २४, ३१, १४४,
मर्सिया २४, ३१, ३२, १४४,
मुक्त छन्द २४, ३५,
मुसलमान ३११
मुसलमान लेखक २०
मुस्लिम कवि १६
राष्ट्रीयभाषा १६, २०, ११७
रुबाई २४, ३३, २४१, ५५६
रेख़्ता २०, २३, २६, ३०, ११७
रेख़्ती २६, ३१,
ब्रज १६,
सस्कृत १६, २४१, ३८२, ४२५, ४२६, ४६२,
सॉनेट २४,
हिन्दी १६, २०, २३, २६, ३०, ११७, ११८, ११६, ३८२, ४१७, ४१८, ४१६, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४६२,
हिन्दवी १६, २०, २३, ३०, ११७,
हिन्दू कवि १६,
हिन्दी-कविता १६, २६, २६,

हिन्दी-उर्दू २६७,
हिन्दी-साहित्यिक १६,
हिन्दू-मुस्लमान १६, ३२, १४३, २६०, २७२, ४१७, ४४०, ५३७,
हिन्दू लेखक २०
हिन्दुस्तानी ४१७, ४२५,
शृंगारिक कविता २४, २६

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

लोकमत

पुस्तकें हर दृष्टिसे सुन्दर और उपादेय हैं।

—सम्पूर्णानन्द

ऐसे सुन्दर प्रकाशनके लिए बधाई है।

—मैथिलीशरण गुप्त

भारतीय ज्ञानपीठ बहुत अच्छा काम कर रही है, भगवान करे आपको खूब सफलता हो।

—सुन्दरलाल

प्राचीन जैन कहानियाँ और जैन-शासनको मैंने बहुत पसन्द किया।

—वासुदेवशरण अग्रवाल

ज्ञानपीठ द्वारा भारतीय प्रकाशनमें बहुत उपयुक्त वृद्धि होगी। हमारे देशकी ज्ञान-ज्योतिमें उससे मूल्यवान् वृद्धि होगी।

—आचार्य जिनविजय मुनि

भारतीय ज्ञानपीठ, काशीका संकल्प और जो कृतियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हो रही हैं उन्हें देखकर बड़ा सन्तोष हुआ।

—राहुल सांकृत्यायन

आपकी आयोजनासे मुझे पूर्ण सहानुभूति है।

—बच्चन

प्रकाशन बड़ा सुन्दर हुआ है। सामग्री भी स्तुत्य है।

—डॉ० हीरालाल जैन

आप जिस दृष्टिकोणसे प्रकाशन क्षेत्रमे उतर रहे है, उसका हार्दिक स्वागत है।

—रामप्रताप त्रिपाठी

(सा० मंत्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग)

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह ज्ञानपीठ इन तीनों कार्यों (प्राचीन ग्रन्थ-सम्पादन, संकलन, लोकोदयकारी नूतन निर्माण)को समान श्रद्धाके साथ करना चाहता है।

—भदन्त आनन्द कौसल्यायन

इस संस्थाके उद्देश्य बहुत उदार है। मेरा सद्भाग्य है कि मै अपने जीवनमे ही अपनी इच्छाके अनुरूप इस संस्थाका उदय देख सका।

—नाथूराम 'प्रेमी'

पुस्तकोंकी छपाई अतीव सुन्दर, स्वच्छ और शुद्ध है। अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग तन-मन-नयनके लिए आनन्दप्रद और शान्तिदायक है।

—शिवपूजन सहाय

सभी पुस्तके महत्वपूर्ण है। ज्ञानपीठ साहित्यकी बडी सेवा कर रही है।

—अमरनाथ झा

इसमे कोई सन्देह नही कि पुस्तके बहुत उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक है।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

पुस्तकोके विषय और उनके लिये सिद्धहस्त अधिकारी लेखक दोनोका समुचित चुनाव उत्कृष्ट उद्देश्यके अनुकूल ही हुआ है। साम्प्रदायिक सकुचित भावनाके स्थानमे पुस्तकोका विशुद्ध सांस्कृतिक दृष्टिकोण उनकी उपयोगिता और महत्वके क्षेत्रको और भी बढ़ा देता है। आशा है हिन्दी संसार इसका समुचित आदर करेगा।

—डा० मंगलदेव शास्त्री

भारतीय ज्ञानपीठ, काशीके प्रकाशन

[हिन्दी ग्रन्थ]

१ मुक्तिदूत—अञ्जना-पवनञ्जय का पुण्य चरित्र (पौराणिक रोमांस) लेखक—वीरेन्द्रकुमार जैन, एम० ए०। मूल्य ४।।)

२ पथचिह्न—(हिन्दी-साहित्यकी अनुपम पुस्तक) स्मृति-रेखाएँ और निबन्ध। लेखक-सुप्रसिद्ध साहित्यिक श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी। पृ०१२८। मू० २) "इसके लेखक द्विवेदीजी ने हिन्दी साहित्य को कई कृतियाँ प्रदान की है। इसमे लेखकने अपनी स्वर्गीया बहनके सस्मरण मर्मस्पर्शी ढग पर प्रस्तुत किये है। उनकी कला मे कोमलता है।"

—सम्मेलन पत्रिका

३ दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ—(जैन कहानियां) लेखक—डा० जगदीशचन्द्र जैन, एम० ए०, पी-एच० डी०। पृ० २१२। व्याख्यान तथा प्रवचनो मे उदाहरण देने योग्य। मूल्य ३)—"सकलन कार्य मे काफी श्रम करना पडा होगा। पुस्तक संग्रहणीय है।"—दैनिक सन्मार्ग काशी। "इन कहानियो मे प्राचीन भारत के मनीषियो की सजीवता, सूझ एव मनोरजन कल्पना के दर्शन होते है।" —विश्व भारती "कदाचित ही किसी देश की कहानियाँ इतनी प्राचीन मिल सकेगी। इन कहानियो के झरोखो से भारतीय संस्कृति के शाश्वत-स्वरूप की झाँकी मिलती है, उसे देख कर

कौन भारतीय ऐसा होगा जो अपने अतीत की महानता से पुलकित न हो उठे।"

—सम्मेलन पत्रिका

४ **कुन्दकुन्दाचार्यके तीन रत्न**—लेखक श्री गोपालदासजी पटेल। अनुवादक—प० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल न्यायतीर्थ, ब्यावर। पृ० १६०। मूल्य २)।

५ **आधुनिक जैन कवि**—वर्त्तमान कवियोंका कलात्मक परिचय और सुन्दर रचनाएँ। स० रमा जैन। पृ० २६६। मूल्य ३॥)। पुस्तक सग्रह योग्य है।—वीरवाणी

६ **जैनशासन**—जैनधर्मका परिचय तथा विवेचन करनेवाली सुन्दर रचना। हिन्दू विश्वविद्यालयके जैन रिलीजनके एफ० ए०के पाठ्यक्रममे निर्धारित। कवरपर महावीर स्वामीका तिरगा चित्र। लेखक—प० सुमेरुचन्द्र दिवाकर शास्त्री। पृ० ४२०। मूल्य ४।-) "जैनधर्मके सम्बन्धमे बहुत-सी जानकारी इस पुस्तकसे मिल सकती है"।—सगम, "जैनधर्म, दर्शन और साहित्यका वडा सुन्दर अध्ययन पेश किया गया है"।—विश्वभारती

७ **हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास**—हिन्दी जैन साहित्यका इतिहास तथा परिचय। लेखक—कामताप्रसाद जैन। पृ० २८८। मूल्य २॥।≈)। "लेखकने एक बडे अभावकी पूर्ति की है। वृत्तिपूर्ण और पठनीय है"।—विश्वभारती पत्रिका

[संस्कृत प्राकृत ग्रन्थ]

८ **मदनपराजय**—कवि नागदेव विरचित (मूल सस्कृत) भाषानुवाद तथा विस्तृत प्रस्तावना सहित। जिनदेवके कामके पराजयका

सरस रूपक। स्वाध्यायके योग्य। सम्पादक और अनुवादक—पं० राजकुमारजी साहित्याचार्य। ग्रन्थ साइजके पृ० २३०। मूल्य ८) काशी विश्वविद्यालयके वाइस चान्सलर श्री० अमरनाथ झा लिखते है:—मदनपराजयकी भूमिका बडी योग्यतासे लिखी गई है और उससे कई नई बातोका ज्ञान होता है। इस ग्रन्थकी तुलना प्रबोध चन्द्रोदयसे हो सकती है।

९ **कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थ सूची**—(हिन्दी) मूडबिद्रीके जैन-मठ, जैनभवन, सिद्धान्तवसदि तथा अन्य फुटकर ग्रन्थभण्डार, कारकल और अलियूरके अलभ्य ताडपत्रीय ग्रन्थोका सविवरण परिचय। प्रत्येक मन्दिरमे तथा शास्त्रभण्डारमे विराजमान करने योग्य। सम्पादक—प० के० भुजबली शास्त्री, मूडबिद्री। मूल्य १३)।

१० **महाबन्ध**—(महाधवल सिद्धान्त शास्त्र) प्रथम भाग। हिन्दी टीका सहित। पक्की जिल्द। कवरपर बाहुबलिका सुन्दर चित्र। द्वादशाङ्गसे साक्षात् सम्बन्ध रखनेवाली, भगवत भूतबलिकी सैद्धान्तिक कृति, जिसकी समाज सदियोसे प्रतीक्षा कर रहा था। सं०—प० सुमेरुचन्द्र दिवाकर शास्त्री। ग्रन्थ साइजके पृ० ४५०। मूल्य १२)। "ग्रन्थका कलेवर सर्वांग सुन्दर है"।

—स्वामी सत्यभक्त

११ **करलक्खण**—(सामुद्रिक शास्त्र) हिन्दी अनुवाद सहित। हस्त-रेखा विज्ञानका नवीन ग्रन्थ। सम्पादक—प्रो० प्रफुल्लचन्द्र मोदी एम० ए०, अमरावती। मूल्य १)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस।

है कामयाब वही इस जहाने फ़ानीमें।
जो बेनियाज़े तमन्ना है जिन्दगानीमें॥

—अलम मुज़फ़्फ़रनगरी

अकबरने सुना है अहलेग़ैरतसे यही—
"जीना जिल्लतसे हो तो, मरना अच्छा॥"

—अकबर इलाहाबादी

कुछ हम खिचे-खिचे रहे कुछ तुम खिचे-खिचे।
इस कशमकशमें टूट गया रिश्ता चाहका॥

—अज्ञात्

यह गवारा न किया दिलने की माँगूँ तो मिले।
वर्ना साक़ीको पिलानेमें कुछ इनकार न था॥

—साक़िब लखनवी

पेशे अरबाबे[१] करम हाथ वह क्या फैलाता।
जिसको तिनकेका भी अहसान गवारा न हुआ॥

—साक़िब लखनवी

जिसने कुछ एहसाँ किया इक बोझ हमपर रख दिया।
सरसे तिनका क्या उतारा, सरपै छप्पर रख दिया॥

—अज्ञात्

रूठकर बैठे हो उनसे किस तवक़्क़ापर 'निज़ाम'!
होशमें आओ, वोह आएँगे मनानेके लिये?

—निज़ाम शाह

---

[१] कृपालुओंके आगे।

हश्र[1]—जब इस दुनियामे अभिलाषा पूरी न हुई तो प्रलय (कयामत) के बाद हश्रमे फ़रियाद की :—

ऊँचे-ऊँचे मुजरिमोंकी पूछ होगी हश्रमें।
कौन पूछेगा मुझे मैं किन गुनहगारोंमें हूँ ?
—अज्ञात्

मेरी रुसवाईका हाल ऐ दावरेमहशर[2] ! न पूछ।
मैं भरी महफिलमें यह क़िस्सा सुना सकता नही ॥
—जोश मलसियानी

वह दुनिया थी जहाँ तुम बन्द रखते थे जबाँ मेरी।
ये महशर[3] है यहाँ सुननी पड़ेगी दास्ताँ मेरी ॥
—अज्ञात्

महशरमें कोई पूछनेवाला तो मिल गया।
रहमत[4] बढ़ी है मुझको गुनहगार देखकर ॥
—साकिब लखनवी

सवाब[5] कहते है किसे दिखादे हश्रमें मुझे।
करीम ! पहली जिन्दगी तो कट गई अजाब[6] में ॥
—साकिब लखनवी

---

[1] कयामत—जब कि सब मुर्दे खड़े होगे और उनके शुभ-अशुभ कर्मोका हिसाब (चेकिंग ?) होगा; [2]स्वर्गका न्यायाधीश, [3]मुसलमानी धर्मके अनुसार वह अन्तिम दिन जिसमे ईश्वर सब प्राणियोंका न्याय क़रेगा। [4]दया; [5]पुण्य, [6]विपदाओं।

माशूक़=प्रेमपात्र

गजलके माशूककी खूबियाँ :—

रूपकी खान, प्रारम्भमे कमसिन, शर्मीला, नाजुक, फिर धीरे-धीरे शोख़, बेअदव, बेवफा, जालिम, बेमुरव्वत, वायदाफरामोश, बुत[1], काफिर, कातिल, हरजाई,[2] पर्देदार।

रूप=शोखी, अदा

तुम्हारा हुस्न,[3] हुस्नेमाहेअनवरसे[4] दुबाला है।
यह कोई हुस्नमें है हुस्न जो बढ़ता हो घटता हो?

—क़ैसर देहलवी

हुस्नका इन्साफ़ है अहले नजरके सामने।
आज ले बैठे है उनको हम कमर[5]के सामने॥

—तस्लीम

दरियाए हुस्न और भी दो हाथ बढ़ गया।
अँगड़ाई उसने नशेमें ली जब उठाके हाथ॥

—नासिख

अँगड़ाई भी वह लेने न पाये उठाके हाथ।
देखा जो मुझको छोड़ दिये मुस्कराके हाथ॥

—निजाम रामपुरी

---

[1] पत्थर-हृदय; [2] छिनाल, [3] रूप; [4] चन्द्रमा के रूप से; [5] चन्द्रमा।

क्या कहूँ इस सफ़ाए-आरिज़[1]को।
वाँ निगहका क़दम रपटता है॥
—सौदा

थी सलसलाहट ऐसी ही कुछ नर्म गातमें।
जब वाँ निगहका ध्यान पड़ा झट रपट गई॥
—इन्शा

कमसिन—

यही दिन थे सौ-सौ तरह तुम सँवरते।
जवानी तो आई सँवरना न आया॥
—रियाज़ खैराबादी

अभी कमसिन हो, नादाँ हो, कहीं खो दोगे दिल मेरा।
तुम्हारे ही लिये रक्खा है ले लेना जवाँ होकर॥
—अज्ञात

शर्मीला—

दिलमें तुम, आँखोंमें तुम, छिपते हो फिर किस वास्ते?
तुमको शर्म आती नहीं आशिकसे शरमाते हुए!
—आज़ाद

मिलाकर खाकमें भी हाय! शर्म उनकी नहीं जाती।
निगह नीची किये वे सामने मदफनके बैठे हैं॥
—असीर लखनवी

उन्हींसे फिर आख़िरको खेल खेलते हैं।
वो करते हैं जिनमे हिजाब अव्वल-अव्वल॥
—दाग़

---

[1] कपोल।

शर्मसे भी है तेरी परले सिरेकी शोख़ियाँ।
आँख नीची करके बुरका रुखसे ऊँचा कर दिया॥

—अज्ञात्

बताओ तो नीची नज़र आज क्यों है ?
यह क्यों बार पड़ता है ओछा तुम्हारा ?
मनाएँ तो अब जान देकर मनाएँ।
क़यामत है यह रूठ जाना तुम्हारा॥

—आग़ाशाइर देहलवी

है वस्लकी शब तुमको अफ़सोस हिजाब इतना।
किस शरअमें जाइज़ है ख़िलवतमें छुपा करना ?

—नसीम

आपकी प्यारी हया पामाल होकर रह गई।
और चलिये नाज़से जोबनपै इतराते हुए॥

—जलील

नाज़ुक—

यही बातें है जिनकी याद तड़पा देती है दिलको।
मेरा अँगड़ाइयाँ लेना और उस ज़ालिमका डर जाना॥

—अकबर इलाहाबादी

कौन कहता है ज़ुबाँ यारकी तुतलाती है।
कसरतेनाज़[1]से ओठोंपै गिरह आती है॥

—अज्ञात्

---

[1] नज़ाकतके कारण।

शानों[1] पै जुल्फ़, जुल्फमें दिल, दिलमें हसरतें[2]।
इतना तो बोझ सरपै, नजाकत कहाँ रही ?

—अज्ञात्

क्या नजाकत है कि आरिज़[3] उनके नीले पड़गये।
मैंने तो बोसा[4] लिया था ख्वाबमें तसवीरका ॥

—अज्ञात्

बड़े गुस्ताख़ हैं झुककर तेरा मुँह चूम लेते हैं।
बहुत-सा तूने जालिम गेसुओं[5] को सर चढ़ाया है ॥

—अज्ञात्

यूँ नजाकतसे गराँ[6] सुर्मा है चश्मेयारको।
जिस तरह हो रात भारी मर्दुमे बीमारको ॥

—नासिख़

सँभालें बारे-जेवर क्या, तेरा नाजुक बदन प्यारी।
कजी रफ्तारको कहती है बारे हुस्न है भारी ॥

—देवीप्रसाद 'प्रीतम'

सीधे स्वाभाव चल भी नहीं सकते अब तो वह।
फ़ैफ़े-शबाब भी उन्हें एक बार हो गया ॥

—आरिफ हुस्वी

नाजुक हैं न खिंचवाऊँगा तस्वीर मैं उसकी।
चेहरा न कहीं अक्सके बदलेमें उतर आये ॥

—अर्शद देहलवी

---

[1] कान्धों; [2] इच्छाएँ; [3] कपोल, [4] चुम्बन; [5] केश; [6] बोझल।

कस्रते सजदासे वह नक़्शे क़दम।
कहीं पामाले सर न हो जाये ॥

—मोमिन

शोख़—

या रब ! दिलोंकी ख़ैर वह कहता है दिलफ़रेब—
"देखें तो कोई देखे हमें और न आये दिल।"

—अज्ञात्

अभी कफ़न मुर्दे फाड़ डालें, अभी मज़ारोंसे सर निकालें।
अभी जो महशरको चलके चालें, ज़रा क़यामत बपा करो तुम ॥

—क़दर बिलगिरामी

मौतसे बदतर बुढ़ापा आयगा।
जानसे अच्छी जवानी जायगी ॥

—दाग़

मस्जिदमें उसने हमको आँखें दिखाके मारा।
काफ़िरकी देखो शोख़ी, घरमें ख़ुदाके मारा ॥

—ज़ौक़

आप ही तो बन सँवरकर कर दिया बेख़ुद हमें।
पूछना फिर, उसपै बन-ठनके तुम्हें क्या हो गया ?

—तोला बदायूनी

यह शोख़ी है नई, यह शर्म, दुनियासे निराली है।
मिलाकर आँख कहते हैं, "इधर देखे तो अन्धा हो" ॥

—बेख़ुद देहलवी

आप ही ज़ौर करें आप ही पूछें मुझसे—
"यह तो फ़रमाइये, है आज तबीयत कैसी ?" ॥

—दाग़

कहा जो मैंने कि "दिल चाहता है प्यार करूँ"।
तो मुस्कराके वह कहने लगे कि "प्यारके बाद"?

—अकबर इलाहाबादी

जो कहा मैंने कि "प्यार आता है मुझको तुमपर"।
हँसके कहने लगे "और आपको आता क्या है"?

—अकबर इलाहाबादी

साथ शोखीके कुछ हिजाब भी है।
इस अदाका कोई जवाब भी है?

—दाग़

वही है इक निगाहेनाज़ लेकिन अपने मौक़ेपर।
कभी नश्तर, कभी नाविक, कभी तलवार होती है॥

—नूह नारवी

तिर्छी नज़रोंसे न देखो आशिक़े दिलगीरको।
कैसे तीरन्दाज़ हो, सीधा तो कर लो तीरको॥

—ख्वाजा वज़ीर

यह भी इक बात है अदावतकी।
रोज़ा रक्खा जो हमने दावतकी॥

—अमीर मीनाई

मुझीको सब यह कहते हैं, कि रख नीची नज़र अपनी।
कोई उनको नहीं कहता, न निकलो यूँ अयाँ होकर॥

—अकबर इलाहाबादी

चोट देकर आज़माते हो दिले आशिक़का सब्र।
काम शीशेसे नहीं लेता कोई फौलादका॥

अन्दाज अपना देखते हैं आइनेमें वोह।
और यह भी देखते है, कोई देखता न हो॥

—निज़ाम

मुझको सुना-सुनाके वोह कहना किसीका हाय!
"जिससे कि जीमें रंज हो उससे कलाम क्या?"

—निज़ाम

यूँ वोह उठ जाएँ सम्भाले हुए दामन अपना।
और मेरे हाथ दुपट्टेका न आँचल आये॥

—अज्ञात्

मेरी रगेगुलू है कि इक शाहराह है।
ख़ंजर चले, छूरी चले, तेग़ेरवाँ चले॥

—जलील

यह अपने चाहनेवालोंसे आपका बरताव।
यहाँतक आती है आवाज लनतरानीकी॥

जो बचपना है तो मेरी तरफ़से फेर लो मुँह।
यह कोई खेल नही, मौत है जवानीकी॥

—जावेद लखनवी

यह कत्लअजमर्ग वावेला, यह बेबाकी तबीयतकी।
अभी ज़िन्दा हूँ मै, लेकिन उन्हें है फ़िक्र तुरबतकी॥

न खटका उसको दोज़ख़से न ख्वाहिश उसको जन्नतकी।
ख़ुदा रक्खे अलग दुनियासे, है दुनिया मुहब्बतकी॥

तुम्हारी खुशख़रामी सैकड़ों फ़ितने उठाती है।
कयामत कह दिया उसको तो मैंने क्या कयामत की?

"बगोले किस तरह उठते हैं उठकर फैल जाते हैं।"
यह कह-कहकर उड़ाई ख़ाक उसने मेरी तुरबतकी ॥
ज़मानेमें हज़ारों नाम किसको याद रहते हैं।
बना लें आप इक फ़ेहरिस्त अरबाबे मुहब्बतकी ॥

—नूह नारवी

ख्वाबमें उनको किसीने रात छेड़ा है ज़रूर।
देखते हैं ग़ौरसे मुझको बुलाके सामने ॥

—अज्ञात्

बेअदब=उद्दण्ड—

और चल फिर ले ज़रा तन-तनके ऐ बाँके जवाँ !
चार दिनके बाद फिर टेढ़ी कमर हो जायगी ॥

—अज्ञात्

उनकी ज़बान चलती है तलवारकी तरह !
और हम अदबसे चुप हैं, गुनहगारकी तरह ॥

—हुक्म मदरासी

तेरे सवालपै चुप हैं, इसे ग़नीमत जान।
कहीं जवाब न दे दे कि "मैं नहीं सुनता" ॥

—शाद

बेवफ़ा=कृतघ्न—

हम भी कुछ ख़ुश नहीं वफ़ा करके।
तुमने अच्छा किया निबाह न की ॥

—मोमिन

ज़ालिम—

मैंने कहा जो उससे ठुकराके चल न ज़ालिम!
हैरतमें आके बोला "क्या आप जी रहे हैं"?

—अकबर इलाहाबादी

किस-किस तरह सताते हैं, ये बुत हमें 'निज़ाम'।
हम ऐसे हैं कि जैसे किसीका ख़ुदा न हो॥

—निज़ाम रामपुरी

सितमगारीकी तालीमें उन्हें दी है ये कह-कहकर—
"कि रोता जिस किसीको देख लेना, मुस्करा देना"॥

—साइल देहलवी

निकला ग़ुबार दिलसे, सफ़ाई तो हो गई।
अच्छा हुआ जो ख़ाक में तुमने मिला दिया॥

—बर्क़ लखनवी

ज़ालिम हमारी आजकी यह बात याद रख।
"इतना भी दिलजलोंका सताना भला नहीं॥"

—बहर

सितमकी कामयाबीपर मुबारिकबाद देता हूँ।
यह उनकी बदगुमानी है, कि फ़रियादी समझते हैं॥

—अकबर इलाहाबादी

ज़ालिम! तू मेरी सादादिलीपर तो रहम कर।
रूठा था आप तुझसे मैं और आप मन गया॥

—क़ायम चाँदपुरी

बेमुरव्वत—

हज़ार वार रखा उसने हाथ सीनेपर।
कि मेरे दमके निकलनेका ऐतबार न था॥
—जावेद लखनवी

वायदा फ़रामोश—

साफ़ कह दीजिये "वायदा ही किया था किसने ?"
उज्र क्या चाहिये, झूठोंको मुकरनेके लिये ?
—साकिब लखनवी

मैंने कहा कि दावये उलफ़त, मगर ग़लत।
कहने लगे कि "हाँ ग़लत और किस क़दर ग़लत" ॥
—नाज़िम

बुत—

तामीर जब कि ख़ानये काबा की हो चुकी।
जो संग[1] बच रहा था सो उस बुतका दिल बना॥
—अज्ञात्

क़ातिल—

हमींको क़त्ल करते हैं, हमींसे पूछते हैं वोह—
"शहोदेनाज़ बतलाओ मेरी तलवार कैसी है ?"
—अज्ञात्

बवक़्ते कत्ल मक़तलमें कोई हमदम न था अपना।
निगह कुछ देरतक लड़ती रही शमशीरे क़ातिलसे॥
—हफ़ीज़ जालन्धरी

---

[1] पत्थर।

हरजाई—

गिरे होते उलझ कर आस्ताँ से ।
चले आते हो घबराये कहाँ से ?

—दाग़

आये भी लोग बैठे भी उठ भी खड़े हुए ।
मैं जा ही देखता तेरी महफ़िलमें रह गया ॥

—आतिश

ग़ैरसे मिलना तुम्हारा सुनके गो हम चुप रहे ।
पर सुना होगा कि तुमको इक जहाँ ने क्या कहा ?

—क़ाइम चाँदपुरी

ग़ैरके हमराह वोह आता है मैं हैरान हूँ ।
किसके इस्तक़बालको जी तनसे मेरा जाए है ॥

जाँ न खा, वस्लेउदू सच ही सही पर क्या करूँ ?
जब गिला करता हूँ हमदम ! वह क़सम खा जाए है ॥

—मोमिन

पर्देदार—

नक़ाब डालके, मुँहपर वह बाग़में आये ।
कि छनके निकहतेगुल[1] भी दिमाग़में आये ॥

—साबित लखनवी

सबब खुला यह हमें, उनके मुँह छिपानेका ।
उड़ा न ले कोई अन्दाज़ मुस्करानेका ॥

—दाग़

---

[1] फूलकी सुगन्ध ।

पर्देकी और कुछ वजह अहले जहाँ नही।
दुनियाको मुँह दिखानेके काबिल नहीं रहे॥

—अज्ञात्

नकाब कहती है "मैं परदये क़यामत हूँ।
अगर यकीन न हो देख लो उठाके मुझे॥"

—जलील

आँखें बचाके आँखोंके परदेमें आके बैठ।
मैं भी यह चाहता हूँ, तू परदानशी रहे॥

—नौशा आज़मगढ़ी

आप परदेमें छुपे बैठे हैं, किस दिनके लिये?
रूबरू अब आइये दुनिया बड़ी मुश्किलमें है॥

—बिस्मिल इलाहाबादी

शमा[1]—परवाना[2]

अब तक तो हजरते इन्सानके इश्कका तमाशा देखा, अब तनिक शमा परवानेका इश्क भी देखिये —

शबे विसाल है बुझवा दो इन चिरागोंको।
खुशीकी बज्ममें क्या काम जलनेवालोंका?

—दाग़

जो जलना ही क़िस्मतमें था, शानअ़ होते।
तो पूछे तो जाते किसी अंजुमनमें॥

—सफ़ी लखनवी

---

[1] चराग, [2] पतगा।

घूरते हैं सैकड़ों परवाने उरियाँ देखकर।
मारे ग़ैरतके गड़ी जाती है महफ़िलमें शमा॥

—अज्ञात्

आया है हमको हाथ यह मज़मूँ चराग़से।
रोशन उसीका नाम रहे जो जलाये दिल॥

—असीर

उम्रभर जलता रहा दिल और ख़ामोशीके साथ।
शमअ़को एक रातकी सोज़े दिलीपर नाज़ था॥

—साक़िब लखनवी

ज़रा देख परवाने करवट बदलकर।
सती हो गई शमअ़ महफ़िलमें जलकर॥

—साक़िब लखनवी

रोनेसे हया शमअ़की ज़ाहिर हो तो क्योंकर?
उरियाँ है मगर बीचमें महफ़िलके खड़ी है॥

—साक़िब लखनवी

दौरे फ़लक था जिसको बुझानेकी फ़िक्रमें।
वह शमअ़ रात सुबहसे पहले ही जल गई॥

—साक़िब लखनवी

अरे ओ जलनेवाले! काश जलना ही तुझे आता।
यह जलना कोई जलना है, कि रह जाए धुआँ होकर॥

—यगाना चंगेज़ी

आहसे दिलका दाग़ जलता है।
यह हवामें चराग़ जलता है॥

तरंग—माशूक=प्रेमपात्र

ख़ुद-बख़ुद दिलका दाग़ जलता है।
बे जलाए चराग जलता है॥

ख़ानए दिलमें दाग़ जलता है।
बन्द घरमें चराग़ जलता है॥

दाग़े दिल काम आया मरनेपर।
क़ब्रमें यह चराग़ जलता है॥

बेकसी है ग़ज़बकी मदफ़नपर।
झिलमिलाकर चराग़ जलता है॥

शामसे सुबह तक शबे फ़ुरकत।
साथ मेरे चराग़ जलता है॥

मर रहे हैं पतङ्गे जल-जलकर।
इसी ग़ममें चराग़ जलता है॥

आहे मज़लूम गुल करेगी उसे।
ज़ुल्मका कब चराग़ जलता है?

—बिस्मिल इलाहाबादी

सहरा=जंगल

जब इश्क जवान हो जाता है और हुस्न क़यामत ढाने लगता है तो आशिक़ अपने माशूककी बेवफ़ाई और बेएतनाईसे तग आकर घर छोडने-पर मजबूर हो जाता है, और प्रेमोन्मत्त अवस्थामें जंगलोकी खाक छानने लगता है :—

इश्क़का मन्सब लिखा जिस दिन मेरी तक़दीरमें।
आहकी नकदी मिली, सहरा मिला जागीरमें ॥

—अज्ञात्

इन सहराओमे न जाने कितने असफल प्रेमियोने अपनी जवानियाँ बखेरी हैं, यहाँ केवल २-४ प्रेमी-प्रेमिकाओ, तत्सम्बन्धी और जगलोमे विचरनेवाले व्यक्तियोंका परिचय दिया जाता है :—

आदम—मुसलमानी धर्मके प्रथम पैगम्बर जो मनुष्य-मात्रके आदि पुरुष माने जाते हैं।

हव्वा—आदमकी पत्नी जो मनुष्यमात्रकी माता मानी जाती है।

मुसलमानी धर्मके अनुसार खुदाने इन दोनोको माता-पिताके सयोग बिना बनाया था। निर्विकार होनेके कारण ये दोनो जन्नतमे नग्न रहते थे और फल-फूल खाते थे। खुदाने गेहूँ खानेका इन्हे निषेध किया था, परन्तु ये शैतानके बहकावेमें आकर भूल कर बैठे। गेहूँ खाते ही इन्हें वासना सम्बन्धी ज्ञान हो गया, तब तत्काल इन्होंने अपने गुह्य-अंग पत्तोसे ढक लिये। खुदाको इनकी हरकतका पता चला, तो उसने इन्हें जन्नतसे निकाल दिया, फिर इन्हीके संयोगसे मनुष्यकी सृष्टि हुई।

निकलना खुल्दसे आदमका सुनते आये थे लेकिन ।
बहुत बे-आबरू होकर तेरे कूचेसे हम निकले ।।
—गालिब

शैतान—मनुष्योको वहकाकर कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करता रहता है। यह पहले खुदाका बहुत बड़ा उपासक था। जब खुदाने आदम बनाया तो, सब फरिश्तोको उसने सजदा करनेका हुक्म दिया। अन्य फरिश्तोने तो हुक्मकी तामील की, मगर इसने यह कहकर मना कर दिया कि—"जब मै लाखों बरस खुदाको सजदा करता रहा हूँ, तो एक मिट्टीसे बने मामूली पुतलेको मै सजदा नही कर सकता।" खुदाने अपने आदेशकी अवहेलना करनेके कारण इसे शैतान कहकर जन्नतसे बाहर कर दिया। तवसे यह हजरत प्रतिहिंसाकी भावनाको लिये सारे ससारमे घूम-घूमकर मनुष्योको कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करते फिरते है।

खिज्र—एक प्रसिद्ध पैगम्बर जो जल और स्थल-मार्गमे भूले-भटकोको राह वतलाते रहते है :—

कामिलको जो पूछो तो नहीं खिज्र भी कामिल ।
जीना उसे आता है तो मरना नहीं आता ।।
—जोश मलसियानी

ईसा—ईसाई धर्मके प्रवर्त्तक माने जाते है। ये वडे दयालु और दीन-वन्धु थे। लोगोका विश्वास है कि यह रोगियोको स्वास्थ्य और मृतकोको जीवनदान करते थे।

मसीहा तू ठोकर लगाये चलाजा ।
मै मरता रहूँ तू जिलाये चलाजा ।।

लैला-मजनूँ—मजनूँका वास्तविक नाम कैस था। यह अरवके नज्द नामक प्रान्तका रहनेवाला और लैला नामक एक अरव युवतीपर आसक्त था। इसकी आसक्तिका यह हाल था, कि एक रोज कैसके

पिता इसे लैलाके पिताके पास इस ख़यालसे ले गये कि इसकी हालतपर तरस खाकर शायद वह इससे लैलाका विवाह कर दे। क़ैस सजीला और रूपवान युवक था। लैलाका पिता स्वीकृति देना ही चाहता था कि भाग्यकी बात, लैलाका कुत्ता वहाँ आ निकला। कैसको जब यह मालूम हुआ कि यह लैलाका कुत्ता है तो वह बेअख्तियार उससे लिपटकर प्यार करने लगा। क़ैसके इस भावावेशको उन्माद समझकर लैलाके पिताने उसे घरसे निकाल दिया। लैलाके मिलनका जब कोई उपाय नहीं रहा, तब प्रेमोन्मत्त कैस जंगलोमे निकल गया और वहाँ जीवन-पर्यन्त भटकता फिरा। उसने इतने कष्ट उठाये कि उसके प्रेमकी चर्चा समूचे अरबमे फैल गई। इसके प्रेम-आकर्षणसे खिचकर लैला भी इसे खोजनेपर मजबूर हो गई। वह अपनी ऊँटनीपर सवार होकर क़ैसको जंगल-जंगल खोजती फिरी, परन्तु मिलन न हो सका। कैसका फूल-सा शरीर विरह-तापसे सूखकर कॉटा हो गया, लेकिन वह अविरामगतिसे प्रेम-मार्गमे चलता ही रहा। उसे यह सोचकर आत्म-सन्तोष होता था :—

आ रहेगा दश्त[1]में लैला तेरे नाक़े[2]के काम।
हो गया मजनूँ जो कॉटा सूखकर अच्छा हुआ॥

—ज़ौक़

मजनूँ विरह-ताप सहन करते-करते इतना क्षीण और अशक्त हो गया कि हवाके झोकेसे वह पेडसे जा टकराया। तभी उसके कानमें लैलाके पुकारनेकी आवाज़ आई। लेकिन बेसूद! अब न मजनूँमें प्रत्युत्तर देनेकी शक्ति रह गई थी और न हिलने-डुलनेकी ताकत। जीवनभरके घोर तपश्चर्याके फलस्वरूप लैला उसको पुकार रही है, पर हायरी असमर्थता! वह अपनी प्रेयसीको न तो पुकारकर अपने झाड़मे

---

[1] मार्ग में, जगल में; [2] ऊँटनीके।

उलझे रहनेका समाचार दे सकता है, और न उसके पास तक जा ही सकता है :—

आती है सदायेजरसे[१] नाक़येलैला[२]।
सदहैफ़ कि मजनूँका कदम उठ नहीं सकता ॥

—ज़ौक

ज़ुलेखा और यूसुफ—यूसुफ हज़रत याकूबके पुत्र और मुसलमानोके एक पैगम्बर थे। मुसलमानी धर्मके अनुसार ससारका तीन चौथाई सौन्दर्य खुदाने इनको दिया था। इनके भाइयोंने ईर्ष्या-वश इन्हे मिस्रके सौदागरके हाथ बेच डाला था। मिस्रके बादशाहकी रूपवती मलका ज़ुलेखा इनपर आसक्त हो गई थी। इन दोनोंको अपने जीवनमे काफी कष्ट झेलने पडे थे :—

किसीकी कुछ नहीं चलती कि जब तक़दीर फिरती है।
ज़ुलेखा हर गली, कूचेमें बेतौकीर फिरती है ॥

—अज्ञात्

शीरीं-फरहाद—फ़रहाद एक चीनी शिल्पकार था, जो ईरानकी रूप-लावण्यवती शीरीपर आसक्त था। शीरी भी फरहादको हृदयसे चाहती थी। ईरानका बादशाह खुसरो भी शीरीको चाहता था। अत. वह शीरीको बलात् अपने महलमे ले गया। खुसरो शीरीके तनपर तो कब्ज़ा कर सका, पर मनपर अधिकार न जमा सका। शीरीके मनमे तो फरहाद समाया हुआ था, वह कैसे और किसको उसमें आने देती? अन्तमें रीझकर बादशाहने शीरीसे कहा कि—"यदि प्रेम-परीक्षामें फ़रहाद उत्तीर्ण निकले तो मै तुझे उसके सुपुर्द कर सकता हूँ।" 'बादशाहकी

[१] घंटीकी आवाज़; [२] लैलाकी ऊँटनी।